इँगलैंड का इतिहास

संपादक

श्रीदुलारेलाल भार्गव
(सुधा-संपादक)

गंगा-पुस्तकमाला का सत्रहवाँ पुष्प

इँगलैंड का इतिहास

प्रणेता

प्राणनाथ विद्यालंकार

जिससे होता चित्त में स्वाधीनता-विकास,

पढ़िए-सुनिए धन्य वह देशोन्नति-इतिहास।

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क

लखनऊ

द्वितीय संशोधित और संवर्द्धित संस्करण

सजिल्द १॥)] १९२८ [सादी १)

प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

मुद्रक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

द्वितीय संस्करण की भूमिका

गंगा-पुस्तकमाला द्वारा प्रकाशित 'इँगलैंड का इतिहास' पाठकों के लिये कितना उपयोगी सिद्ध हुआ है, यह इसी से जान पड़ता है कि आज इसका द्वितीय संस्करण आपके हाथों में है और हमें विश्वास है कि इस बार इसे इतने अच्छे रूप में प्रकाशित देखकर पाठकों को हर्ष होगा। इतिहास की पुस्तकें प्रायः एकांगीन विषयक होने के कारण बहुधा कम रोचक होती एवं बिकती हैं, फिर भी पुस्तक की उपयोगिता ने इसके द्वितीय संस्करण का जो हमें अवसर दिया है, उसके लिये हम भिन्न-भिन्न प्रांतीय शिक्षा-विभागों की पाठ्य-पुस्तक-निर्धारिणी कमेटियों का धन्यवाद देते हैं। मध्यप्रांत और बिहार की कमेटियों ने तो हमें, इसी पुस्तक को अपने-अपने प्रांत में पाठ्य-पुस्तक नियत करके, विशेष उत्साहित किया है। सच पूछा जाय, तो भिन्न-भिन्न प्रांतीय शिक्षा-विभागों और उनके गुणग्राही ख्यातनामा सदस्यों की प्रेरणा ने ही हमें पुस्तक को इस रूप में प्रकाशित करने का अवसर दिया है।

इसीलिये इस संस्करण में कुछ ख़ास विशेषताएँ पाठकों—

विशेषत: विद्यार्थियों—को मिलेंगी। काग़ज़ चिकना लगाया गया है। साथ ही विद्यार्थियों के सुबीते के लिये सुंदर मोटे टाइप में पुस्तक छपवाई गई है। प्रथम संस्करण में प्रसिद्ध-प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुरुषों के चित्र एवं महत्व-पूर्ण घटनाओं के मानचित्र नहीं दिये गए थे। इस संस्करण में उनका भी समावेश कर दिया गया है। आकार भी बदल दिया गया है। सहूलियत के लिये पुस्तक तीन भागों में विभक्त कर दी गई है। पुन: हिंदी-माध्यम का ख़याल करके हिंदी के साथ-साथ अँगरेज़ी में भी नाम आदि दे दिए गए हैं। इन विशेषताओं के साथ शुद्ध छपाई का खास तौर से ख़याल रक्खा गया है और ख़ास विशेषता इस संस्करण की यह है कि मध्यप्रांत के सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ, हितकारिणी-हाई स्कूल के प्रिंसिपल स्वर्गीय राय साहब पं० रघुबरप्रसादजी द्विवेदी बी० ए० ने इसका, विद्यार्थियों की दृष्टि से, संशोधन कर इसे अधिक उपयोगी बना दिया है। प्रयाग-विश्वविद्यालय के इतिहास के प्रोफेसर डॉ० बेणीप्रसाद ने भी इसे एक बार देखने की कृपा की है और अपनी सम्मति से लाभ उठाने का हमें मौक़ा दिया है। इस प्रकार हमने इस संस्करण को विद्यार्थियों के लिये अधिक-से-अधिक उपयोगी बनाने की चेष्टा की है।

एक बात और। प्रथम संस्करण में केवल १९०१ तक का इतिहास दिया गया था। किंतु इस संस्करण में पुस्तक अप-टु-

डेट कर दी गई है। इसके लिये हम स्व० पं० रघुबरप्रसादजी द्विवेदी को धन्यवाद देते हैं। १९०१ के आगे का भाग उन्हीं का लिखा हुआ है और उन्हीं की प्रेरणा से जोड़ा गया है। पुनश्च केवल ट्यूडर-काल से आरंभ करके जो पाठक पुस्तक को पढ़ते, उन्हें इतिहास की शृंखला टूटी हुई-सी जान पड़ती। इसी सुबीते के लिए द्विवेदीजी ने ट्यूडर-काल से पूर्व तक के इतिहास को संक्षेप में लिख देने की कृपा की है। यह अंश भी 'भौगोलिक प्रस्तावना' के नाम से इसमें जोड़ दिया गया है। आशा है, इतिहास के शिक्षकों की दृष्टि में भी हमारा इतिहास अन्य सब इतिहास-पुस्तकों से, प्रत्येक बात का ख़याल करके, पठन-पाठन के उपयुक्त जँचेगा और वे इसके प्रचार में सहायक होकर हमें इसका इससे भी सुंदर संस्करण निकालने का अवसर देंगे।

संपादक

वक्तव्य

[प्रथम संस्करण से]

प्रिय पाठक,

इँगलैंड के इतिहास का यह दूसरा भाग भी आज सेवा में उपस्थित किया जाता है। इसमें संदेह नहीं कि यह भाग प्रकाशित होने में बड़ी देर हो गई है—और इसके लिये उलाहने भी हमारे पास कम नहीं आए; परंतु इसमें हमारा कुछ विशेष दोष नहीं। इस इतिहास के संशोधन और संपादन में बहुत अधिक समय हमको लगाना पड़ा है, और फिर भी हमारे मन के माफ़िक़ सर्वांगसुंदर, सर्वथा शुद्ध संस्करण नहीं प्रकाशित हो सका। आशा है, इस बार जो कुछ छोटी-मोटी त्रुटियाँ रह भी गई हैं, वे अगले संस्करण में बिलकुल न रह जायँगी। एक और त्रुटि यह रह गई है कि इसका छपना बीच-बीच में अनिश्चित समय तक स्थगित रखने के लिये विवश होने के कारण कुछ शब्द, भिन्न-भिन्न स्थलों पर, भिन्न-भिन्न रूप में छप गए हैं। यह अनिच्छा-कृत अल्प त्रुटि भी आगे सुधार दी जायगी। इन त्रुटियों का उल्लेख हमने इसलिये स्वयं कर दिया है कि समालोचक सज्जनों को व्यर्थ इनके वर्णन में अपना अमूल्य समय नष्ट न करना पड़े।

इन क्षुद्र-क्षुद्र त्रुटियों के रह जाने पर भी इस इतिहास की उपयोगिता अथवा असाधारणता अणु-मात्र भी कम नहीं होती। हिंदी-संसार में इसके प्रथम भाग का यथेष्ट आदर और प्रचार हो चुका है और यही इसकी उत्तमता अथवा उपयोगिता का प्रबल प्रमाण है।

प्रथम भाग साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग की मध्यमा-परीक्षा के कोर्स में स्वीकृत हो चुका है। आशा है, यह दूसरा भाग भी हिंदी-साहित्य में अपना उचित स्थान ग्रहण करेगा। हिंदी-साहित्य में ऐसे इतिहास आदि के सर्वांग-पूर्ण संपूर्ण सुलिखित ग्रंथों का अभी अभाव ही है, जिन्हें उच्च कक्षाओं के लिये पाठ्य-ग्रंथ बनाया जा सके। इसी अभाव की आंशिक पूर्ति करने के लिये हमने यह इतिहास प्रकाशित किया है। यदि इसका यथेष्ट आदर और प्रचार होगा, तो उससे उत्साहित होकर हम अन्य इसी कोटि के ग्रंथ लिखाकर प्रकाशित करने के लिये उद्योग करेंगे। इस पुस्तक में काग़ज़ अच्छा लगाया गया है, छपाई और शुद्धता पर भी यथेष्ट ध्यान दिया गया है, जिसके देखते मूल्य अधिक नहीं रक्खा गया है।

१ । ६ । २५ } संपादक

भौगोलिक प्रस्तावना

अथवा

ट्यूडर-काल के पूर्व इँगलैंड

(प्रथम खंड का संक्षेप)

भौगोलिक प्रस्तावना

अथवा

ट्यूडर-काल के पूर्व इँगलैंड

आंग्लद्वीप-निवासियों पर उन द्वीपों की भौगोलिक परिस्थिति का प्रभाव पड़ने से ही उनके चरित्र में कई विशेषताएँ पाई जाती हैं, जो ऐसे द्वीप-निवासियो में ही संभव हैं। इसमें संदेह नहीं कि मनुष्य-जाति के चरित्र-गठन के अनेक कारणों में से देश की भौगोलिक परिस्थिति भी प्रधान होती है। यदि इँगलैंड एक द्वीप न होकर किसी महाद्वीप का एक देश होता और चारों ओर दूसरे देशों से घिरा होता, तो समुद्र पर उसका इतना आधिपत्य न जमता, अर्थात् नाविक-विद्या में आंग्ल-जाति इतनी प्रवीण न होती। चारों ओर समुद्र होने से ही इँगलैंड-निवासियों में यह गुण जन्म-सिद्ध है। यदि आंग्ल-जाति किसी अति उष्ण या अति शीत-प्रधान देश में रहती होती, तो उसमें इतनी कर्मण्यता, इतना अध्यवसाय और इतना उत्साह न होता; और तब उसका इतिहास ही दूसरा हो जाता। आईसलैंड (Iceland), मेडागास्कर (Madagasker) आदि भी

तो द्वीप हैं; पर उनके निवासियों में ये गुण क्यों नहीं आए? इसका कारण वहाँ की अधिक शीतलता या अधिक उष्णता है। इसी से इँगलैंड-निवासी अँगरेज़ों की प्रकृति, उनका चरित्र आदि बातें भली भाँति समझने के लिये हमें इँगलैंड का भौगोलिक ज्ञान पहले ही प्राप्त कर लेना चाहिए। तभी हम उस देश के इतिहास की अनेक घटनाओं को भली भाँति समझ सकेंगे।

इँगलैंड एक द्वीप-देश है। पहले वह योरप महाद्वीप से जुड़ा हुआ था, पर अब न-जाने कितने काल से वह समुद्र से घिरा हुआ स्वतंत्र द्वीप बन गया है। केवल इसी एक कारण से इँगलैंड पर विदेशी विजेताओं के उतने अधिक धावे नहीं हुए, जिससे उसे अपनी रक्षा की इतनी अधिक चिंता नहीं रही। अन्य देशों से दूर रहने के कारण न तो उसे किसी से झगड़ा करने की आवश्यकता हुई और न दूसरों ने उस पर आक्रमण करने की हिम्मत की। इँगलैंड की जल-सेना को हराए बिना इँगलैंड पर धावा करना दुस्साध्य होगा। फ़्रांस के १४वें लूई और योरप-विजेता नेपोलियन तथा स्पेन के फिलिप द्वितीय ने इँगलैंड पर आक्रमण करने का बहुत प्रयत्न किया; पर अँगरेज़ों की जल-सेना के कारण ही किसी को सफलता नहीं मिल पाई। युद्धों से इँगलैंड जितना

बचा है, और कोई देश शायद ही बचा हो। क्यों ? इसी लिये कि वह एक द्वीप है। साथ ही जब कभी उसे युद्ध करना पड़ा, तो अपनी जल-सेना के बल पर विजय उसी ने पाई।

एकांत होने से इँगलैंड को उपर्युक्त लाभ तो हुए; पर योरप के बहुत समीप होने के कारण दूसरे योरपीय देशों से उसका संबंध भी बराबर रहा, जिससे वह कूप-मंडूक बनकर किसी से पिछड़ा भी नहीं। साथ ही उसने नेपोलियन-जैसे विजेता के दाँत खट्टे किए, जो योरप के किसी और देश से नहीं बन पड़ा। वह स्वयं स्वतंत्र रहा और उसने अन्य देशों की स्वतंत्रता की भी रक्षा की। गत महायुद्ध के समय उसी ने बेलजियम, फ़्रांस आदि देशों को सहायता देकर जर्मनों की दासता से बचाया।

यदि जर्मन लोग फ्रांस के समान इँगलैंड को भी अपने अधिकार में कर लेते, तो क्या युद्ध का फल यह होता, जो अंत में हुआ ? जर्मनों ने इँगलैंड पर आक्रमण करने के लिये कोई प्रयत्न उठा नहीं रक्खा; पर उसके द्वीप होने से उनकी सारी चेष्टाएँ व्यर्थ गईं। जर्मनों की प्रबल नौ-सेना भी कुछ न कर सकी। प्रश्न हो सकता है कि आयर्लैंड भी तो इँगलैंड के समान एक द्वीप है, फिर वह उसके समान अपनी श्रीवृद्धि क्यों नहीं कर सका और इँगलैंड का आधिपत्य उस पर क्यों

हो गया ? उत्तर यह है कि केवल द्वीप में रहने से किसी जाति का उत्कर्ष नहीं बढ़ जाता। इसके लिये कई दूसरे ऐसे गुण भी तो चाहिए, जैसे अँगरेज़-जाति में पाए जाते हैं।

इँगलैंड का बहुत-सा भाग पहाड़ी होने से खेती-पाती के लायक़ नहीं है। हाँ, दक्षिण-पूर्वी देशों में खेती हो सकती है। यही कारण है कि इँगलैंड में भोज्यान्नों की कमी केवल वहीं की फ़सल से पूरी नहीं हो सकती। इसी से उसे भोजन-सामग्री अन्य देशों से लानी पड़ती है, अर्थात् व्यापार करना उसके लिये बहुत ही आवश्यक है। इँगलैंड के विस्तीर्ण व्यापार की जड़ यही एक प्राकृतिक कारण है।

इँगलैंड का समुद्र-तट हिंदुस्थान या आफ्रिका के समुद्र-तट के समान सीधा नहीं, बहुत छिन्न-भिन्न है, अर्थात् उसमें छोटी-बड़ी खाड़ियाँ बहुत पाई जाती हैं, जिससे जहाज़ों के ठहरने के लिये अनेक बंदरगाह बन गए हैं। यह बात व्यापार के लिये बहुत उपयोगी है। देश की चौड़ाई कम होने से उसका अधिकांश समुद्र से बहुत दूर नहीं पड़ता। इससे भी माल ढोने की कठिनाई बहुत कम हो जाती है। इन्हीं सब प्राकृतिक सुविधाओं के कारण इँगलैंड के व्यापार ने इतनी अधिक उन्नति की है, जिसकी बराबरी अन्य देश बहुत परिश्रम करने पर भी अनायास नहीं कर सकते।

इँगलैंड उद्योग-धंधों अर्थात् कल-कारखानों में भी बहुत बढ़ा-चढ़ा है। इसका संबंध भी इँगलैंड की प्राकृतिक स्थिति से है। इस देश में लोहे और कोयले की खदानें समीप-समीप होने से कल-कारखाने स्थापित करना सहज है। ये धातुएँ भी यहाँ अधिक परिमाण में हैं।

यह सब तो है; पर यदि आंग्ल-जाति में कई मानसिक और शारीरिक गुण न होते, तो क्या वह इतनी समृद्धिशालिनी बन सकती? फिर, प्रश्न यह है कि इस जाति में ये सब गुण हैं क्यों? क्या इनका संबंध भी किसी भौगोलिक कारण से है? हाँ, वह कारण इँगलैंड की आब-हवा है। यह ऐसी अच्छी है कि वहाँ काम करनेवाले जल्द नहीं थकते। गरमी तो बहुत कम होती ही है और कटिबंध के अनुसार सर्दी भी इतनी अधिक नहीं पड़ती। रूस आदि देशों के जो भाग इँगलैंड के समान ही शीत-कटिबंध में विद्यमान हैं, उनमें वर्ष के ६ महीने इतन ठंढे होते हैं कि उन दिनों कोई काम नहीं हो सकता। इँगलैंड का यह हाल नहीं है। यहाँ काम बराबर चलता रहता है, न गरमी से ही रुकता है, न सर्दी से।

प्राचीन और माध्यमिक काल

इटली की प्रसिद्ध रोमन जाति के एक बड़े सेनापति

प्राचीन इँगलैंड

जूलियस-सीज़र (Julius Cæsar) ने

जब गाल (वर्तमान फ़्रांस)-देश जीता, तो उसे संदेह हुआ कि हो-नं-हो, समुद्र में कहीं समीप ही कोई दूसरा देश है, जिसके निवासी गाल-जाति को सहायता पहुँचाया करते हैं। सन् ईस्वी से ५५ वर्ष पूर्व वह इस देश का पता लगाने के लिये सेना-सहित नौकाओं पर चढ़कर आगे बढ़ा। थोड़े ही समय में उसे ब्रिटेन (Britain)-नाम का द्वीप मिला। इस द्वीप में केल्ट (Celt) लोगों की कई जातियाँ बसी हुई थीं। ये सब ब्रिटन (Breton) कहलाती थीं। इनको जीतकर जूलियस सीज़र अपने देश को लौट गया। ब्रिटन लोग फिर स्वतंत्र होकर रहने लगे। पर रोमन लोगों को इस देश का पता लग जाने से, सन् ईस्वी से ४३ वर्ष पूर्व उन लोगों ने ब्रिटेन को जीतकर रोमन साम्राज्य का एक प्रांत बना लिया। समय पाकर ब्रिटन लोग शिक्षा, रीति-रिवाज तथा चाल-ढाल में ख़ासे रोमन बन गए। इन लोगों ने रोमन सभ्यता में तो अच्छी उन्नति की; पर ये लड़ना बिलकुल भूल गए।

सन् ४१० में रोमन लोगों को ब्रिटेन छोड़ देना पड़ा। उत्तर की असभ्य जातियों ने इन्हें कई बार हराया और साम्राज्य के कई भागों में अपना अधिकार जमा लिया। इन लोगों ने जब इटली पर ही चढ़ाई कर दी, तो उसकी रक्षा के लिये रोमनों ने अपनी सेना ब्रिटेन से बुला ली।

रोमन अधिकारियों तथा सैनिकों के चले जाने पर सभ्य ब्रिटनों की बड़ी दुर्गति होने लगी। ये लोग लड़ना तो भूल ही गए थे, इसलिये स्कॉटलैंड के निवासी पिक्ट (Pict) और स्कॉट (Scot) आ-आकर इन्हें लूटने और सताने लगे। साथ ही, उत्तरीय जर्मनी में रहनेवाली जातियों के कुछ असभ्य नौकाओं द्वारा जर्मन-समुद्र को पार कर ब्रिटेन के तटस्थ स्थानों को लूटने लगे। ये लोग ऐंगिल (Angles), जूट (Jutes) और सैक्सन (Saxsons) कहलाते थे। ब्रिटन लोगों ने स्कॉटलैंड से आनेवाले शत्रुओं को रोकने के लिये इन लोगों के सरदार हेंजिस्ट और हॉर्सा (Hengist and Horsa) को राज़ी किया। इन सरदारों ने उत्तरीय जातियों के हमले तो बंद करा दिए, पर ब्रिटेन से ये फिर नहीं लौटे। १०० वर्ष के भीतर जूट लोगों ने केंट (Kent), सैक्सनों ने एसैक्स (Essex), ससैक्स (Sussex) और वेसैक्स (Wessex), और ऐंगिलों ने नार्थंब्रिया (Nerthumbria), ऐंग्लिया (Anglea) और मर्सिया (Mercia) पर अपना आधिकार कर लिया। इन जातियों ने बेचारे ब्रिटनों को मार भगाया और वे वेल्स (Wales) के पहाड़ों में जा बसे।

७वीं शताब्दी के आरंभ होते-होते ब्रिटेन में ७ राजा हो गए और इस नृपति-समूह का नाम हेप्टार्की (Hept-

archy) पड़ा। ये जर्मन जातियाँ सभ्यता में बहुत पिछड़ी हुई थीं और ओडन (Woden), थॉर (Thor) आदि देवी-देवतों को पूजती थीं। इनमें दासों (Slaves) का क्रय-विक्रय बहुत होता था। ऐसी गिरी हुई दशा में भी इनके राजा देश के बुद्धिमानों की एक सभा विटनेजिमाट (Witenagemort) की सलाह से काम करते थे। इस सभा की आज्ञा पाए विना राजा किसी दूसरे राजा से युद्ध या संधि नहीं कर सकता था। यही सभा वर्तमान पार्लिमेंट सभा की जननी है।

सन् ५८४ में इन जातियों में ईसाई-धर्म का प्रचार शुरू हुआ और थोड़े ही समय के भीतर मर्सिया को छोड़कर सारा देश ईसाई हो गया। इस मत के ग्रहण करने से ये लोग, रोमन पादरियों के उपदेश से, अपनी बर्बरता छोड़ते गए और धीरे-धीरे इनमें धार्मिक भाव प्रबल होने से इनके आचरण भी सुधरते गए। एक रोमन पादरी ने इन्हें 'एंगिल' कह दिया, जिससे ये सब इसी नाम से प्रसिद्ध हुए और ब्रिटेन, इनका देश होने से, 'एंगिललैंड' (Angle's land) और पीछे से इँगलैंड कहलाया।

धीरे-धीरे इन राज्यों के तीन बने और अंतमें समूचे देश पर एक ही राजा राज्य करने लगा।

डेनमार्क और नार्वे के किनारे के लोग अब भी पुराना धर्म मानते और असभ्य थे; पर वे नाविक-विद्या में कुशल तथा वीर योद्धा होते थे। इतिहास में इन लोगों को डेन (Dane) कहा है। इन डेनों के दल-के-दल नौकाओं में आ-आकर इँगलैंड के तटस्थ स्थानों पर आक्रमण करने लगे। इसी प्रकार इन्होंने फ़्रांस के उत्तरीय भागों में भी बड़ा ऊधम मचाया। फ़्रांस के लोग इन्हें नार्थमैन (Northman) या नार्मन (Norman) कहते थे। उस समय वेसैक्स का राजा एग्बर्ट (Egbert) सारे इँगलैंड पर राज्य करता था। इसने डेनों से कई लड़ाइयाँ लड़ीं, पर इन लोगों के हमले वैसे ही होते गए। राजा एल्फ़्रेड (Alfred) ने भी बहुत लड़ाई करने के बाद, सन् ८७८ में उनसे वेडमोर (Wedmore) की संधि कर देश का उत्तरीय भाग उनको दे दिया। उसने यह बड़ी बुद्धिमानी का काम किया, क्योंकि दो-ही-तीन पुश्तों में एल्फ़्रेड के एक वंशज के हाथ में सारा इँगलैंड फिर से आ गया और डेन लोग ईसाई हो आंग्ल-जाति में मिल गए।

डेन जाति के आक्रमण

वेसैक्स के राजे में एल्फ़्रेड सबसे उत्तम राजा कहलाता है और इसी से उसकी पदवी "दि ग्रेट" या महान् है। यह इसलिये

एल्फ़्रेड महान् (Alfred, the Great)

कि वह अपनी प्रजा का सच्चा हितेच्छु था और उसकी उन्नति में सदा लगा रहता था। उसने शिक्षा-प्रचार में बड़ा उद्योग किया; लैटिन-भाषा के कई ग्रंथों का अनुवाद करके या कराकर उनका प्रचार अपने देश में किया। वह बड़ा पराक्रमी और दूरदर्शी था। डेनों से संधि कर उसने अपने देश को बचा लिया। समाज, सेना तथा शासन-नीति में भी उसने कई सुधार किए।

निदान एडवर्ड दि कॉनफ़ेसर (Edward, the Confessor) नाम के एक आंग्ल-राजा के समय में इँगलैंड में बड़ी अशांति फैली और झगड़े बढ़े। एडवर्ड निस्संतान था, इसलिये उसने गॉडविन के अर्ल (The Earl of Godwin) को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। एडवर्ड की मृत्यु सन् १०६६ में हुई और गॉडविन का बेटा हैरल्ड (Harold) इँगलैंड का राजा हुआ। पर वह शांति-पूर्वक राज्य न कर सका। उत्तरीय इँगलैंड पर उसके भाई टॉस्टिग (Tostig) की सहायता के लिये नार्वे का राजा चढ़ आया। हैरल्ड ने स्टैंफ़ोर्ड ब्रिज (Stamford Bridge) की लड़ाई में उसे हराया ही था कि दक्षिण में नार्मंडी के ड्यूक विलियम की चढ़ाई की ख़बर मिली। हैरल्ड अपनी सेना ले दक्षिण की ओर दौड़ा और सिनलैक या हेस्टिंग्ज (Senlac or Hastings) की लड़ाई में मारा गया। खेत

ड्यूक विलियम के हाथ रहा। निदान इँगलैंड पर फिर से एक विदेशी विजेता राज्य करने लगा।

ड्यूक विलियम ने इँगलैंड पर राज्य करना आरंभ कर दिया। उसने आंग्लों से ज़मीन छीनकर अपने साथ नार्मंडी से आए हुए नार्मन सरदारों को दी। उसने आंग्ल-ज़मींदारों पर यह अपराध लगाया कि ये लोग मुझसे लड़े। एडवर्ड के मरने पर मेरा ही हक़ था, हैरल्ड का नहीं; पर इन लोगों ने एक बाग़ी का साथ दिया, इसलिये इनको यह दंड दिया गया। विलियम ने जो सबसे बढ़कर कार्य किया, वह समाज-व्यवस्था का कार्य था। उसने इँगलैंड में फ्यूडेल सिस्टम (Feudal System) का प्रचार किया। यह एक प्रकार का भूमि का प्रबंध था। इसके अनुसार राजा ही भूमि का स्वामी (Leige lord) समझा जाता था और वह देश की ज़मीन जिन ज़मींदारों के बीच में बाँट देता था, वे उसके वैसल(Vassals)या अधीन भूमिपति कहलाते थे। इन भूमिपतियों को शपथ-पूर्वक वचन देना पड़ता था कि हम सदा राजभक्त रहेंगे, युद्ध के अवसर पर रसद-समेत इतने सिपाही लेकर, इतने दिनों के लिये उपस्थित होंगे और राज-सेना में मिलकर लड़ेंगें। इन्हें भूमिकर नहीं देना पड़ता था। ये लोग भी अपने हिस्से की ज़मीन नाइट (Knights) या ठाकुरों को बाँटकर प्रत्येक से वैसी

ही शपथ ले लेते थे। नाइट लोग अपने हिस्से की भूमि उसी शर्त पर किसानों को देते थे।

भूमिपति सरदार, नाइट और किसान योद्धा होते और ज़मीन के जोतने-बोने का काम उनके हरवाहे किया करते थे। ये हरवाहे एक प्रकार के दास (Serf) थे और इनको अपना काम छोड़ दूसरे स्वामी के यहाँ जाने की आज्ञा नहीं थी। उन दिनों यह भूमि-व्यवस्था फ्रांस आदि योरप के देशों में थोड़ी-बहुत सभी जगह प्रचलित थी। इँगलैंड में इसका इतना ज़ोर न था, पर विलियम ने इसे वहाँ भी संगठित रूप से चला दिया। इसमें बड़ा दोष यह था कि अधीन भूमिपति ऐसे-वैसे राजा को कुछ नहीं समझते और बग़ावत कर बैठते थे। वे मज़बूत क़िलों में रहते और सैनिक भी रखते थे। इसलिये राजा उन्हें सहज में नहीं दबा सकता था। हाँ, विजेता विलियम का अंकुश तो इनको मानना ही पड़ता था; पर आगे कई दुर्बल राजों को इन लोगों ने खूब तंग कर डाला। विलियम ने अपने नार्मन-सरदारों के बीच भूमि बाँटने में भी चतुराई की थी। उसने एक ही भूमिपति (Baron) को एक ही ज़िले में बहुत-सी भूमि न देकर भिन्न-भिन्न ज़िलों में दे रक्खी थी, जिससे वे अपने अधीन भूमिपतियों और उनके सैनिकों को सहज

ही एकत्र नहीं कर सकते थे। उन्हें आने में समय लगता था। बस, इतने में राजा को उनके दबाने का मौक़ा मिल जाता था।

विलियम ने एक दूसरा बड़ा काम और किया था। उसने एक रजिस्टर (गणाना-पुस्तक) तैयार कराया था, जिसमें प्रत्येक प्रजा की भूमि की माप, उपज, पशुओं की संख्या आदि, सब विवरण रहता था। यह रजिस्टर 'डूम्स डे' (Domesday Book) के नाम से प्रसिद्ध था। इस रजिस्टर से राजा को देश का रत्ती-रत्ती पता रहता था।

निदान विलियम के इस प्रबंध से राजा की शक्ति बहुत बढ़ी-चढ़ी रहती थी। भूमिपतियों के अत्याचार के भय से प्रजा अपने राजा की सहायता करने को सदा तत्पर रहती थी।

विजेता विलियम ने धर्म-संबंधी परिवर्तन भी किया और फ्रांस के समान धर्म का प्रबंध इँगलैंड में भी हो गया। पहले तो आंग्ल-पादरियों के स्थान पर नार्मन पादरी नियुक्त किए गए; दूसरे रोम के पोप का अधिकार इँगलैंड के धार्मिक शासन पर बहुत बढ़ गया। पोप ग्रेगरी ने तो धार्मिक शासन को राज्य-शासन से अलग करके स्वतंत्र बना देने की चेष्टा की। बड़े-बड़े धर्माध्यक्षों (Arch Bishop or Bishop) की

पोप नियुक्ति करने लगा और पादरियों के मामले तय करने के लिये अलग अदालतें स्थापित हो गईं। फल यह हुआ कि धार्मिक बातों (Church) पर राजा का अधिकार बहुत कम हो गया, जिससे आगे बड़े-बड़े अनर्थ हुए। विलियम ने यह सब इस-लिये होने दिया कि धार्मिक विषयों में भूमिपति (Barons) अपना सिक्का न जमाने पावें। उसने अपना अधिकार रक्षित रखने के लिये यह नियम रक्खा कि पादरी लोग उसकी सम्मति लिए विना पोप की आज्ञाओं का पालन न करें और न पादरियों की सभा उसकी अनुमति पाए विना कोई नया नियम ही बना सके। पर आगे उसके इन नियमों से राजा के अधिकारों की रक्षा होने के बदले राजा और धर्माध्यक्षों के बीच तनातनी रहने लगी और कई बार बड़े-बड़े झगड़े भी हुए।

नार्मन-विजय से इँगलैंड को कुछ समय के लिये हानि तो हुई ही, पर साथ-ही-साथ लाभ भी हुआ। नार्मन लोग सभ्यता और शिक्षा में आंग्लों की अपेक्षा अधिक बढ़े-चढ़े थे, इसलिये उनके समय में बड़े-बड़े नए नगर बने और पुराने नगरों की उन्नति हुई। व्यापार की भी उन्नति हुई और व्यापारियों के संघ(Merchant guilds) भी स्थापित हुए। भिन्न-भिन्न देशों से आकर यहूदी महाजन भी यहाँ बस गए

और व्यापारियों को पूँजी मिलने का सुबीता हो गया। ये यहूदी बड़े सूदख़ोर होते थे, इसलिये प्रजागण इन्हें घृणा की दृष्टि से देखने लगे। इन थोड़ी-सी बातों से स्पष्ट है कि नार्मन-विजय से इँगलैंड को अंत में लाभ ही हुआ, ख़ासकर जब आंग्ल और नार्मन जातियाँ समय पाकर एक हो गईं। आंग्ल, डेन, नार्मन आदि के सम्मिश्रण से अंत में जो एक आंग्ल-जाति बनी, उसमें इन सबके गुण एकत्र पाए जाने लगे।

स्टीवन ११३४-११५४

विलियम के बाद उसके घराने के जो शासक हुए, उनमें स्टीवन (Stephen) के राजत्व-काल में भूमिपति बैरनों का ज़ोर बहुत बढ़ गया और वे साधारण जनता पर बड़ा अत्याचार करने लगे। राजा भी उनका कुछ नहीं कर सकता था। वे अपने दुर्गम क़िलों से निकलकर अपने प्रतिद्वंद्वी बैरन का इलाक़ा लूटते और अपने क़िले में जा बैठते थे। साधारण जनता पर बड़ा अत्याचार होता था, उसका तो कोई हक़ ही नहीं था।

हेनरी द्वितीय (११५४-११८९)

स्टीवन के मरने पर हेनरी द्वितीय इँगलैंड का राजा हुआ। इसका पिता फ़्रांस के आंजो-प्रांत (Anjou) का था, इसलिये हेनरी द्वितीय और उसके वंशज एंजविन राजा' (Angevin) कहलाए।

राजा हेनरी द्वितीय बड़ा पराक्रमी राजा हुआ। उसने

पहले तो बैरनों के ११०० क़िले नष्ट कर मानो उनके दाँत और नख तोड़ डाले। फ़्रांस के कई प्रांतों और आयर्लैंड, स्कॉटलैंड तथा वेल्स पर भी अपना अधिकार जमा लिया। इन कार्यों से प्रजा हेनरी को बहुत मानने और शांति-पूर्वक सुख से रहने लगी।

हेनरी ने देखा कि पादरियों के न्यायालयों को फाँसी देने का अधिकार न होने से हत्यारे पादरी भी प्राणदंड से बच जाते हैं। इसलिये उसने यह नियम बना दिया कि प्राणदंड का अपराध करनेवाले पादरियों के मुकदमे पादरियों की अदालत में नहीं, राजकीय अदालतों में दायर हुआ करें। उस समय इँगलैंड का महाधर्माध्यक्ष (Arch Bishop) टॉमस बेकेट नाम का एक पादरी था। उसने इस नए नियम के विरुद्ध घोर आपत्ति की। उसके इस विरोध से व्याकुल हो हेनरी के मुँह से मारे क्रोध के यह उद्गार निकला कि "क्या कोई ऐसा राजभक्त नहीं है, जो इस दुष्ट पादरी से मेरा पिंड छुड़ावे ?" कदाचित् ये निरे उद्गार ही थे, बेकेट की हत्या वह नहीं चाहता था; पर ४ राज-भक्त नाइटों ने जाकर उसका काम ही तमाम कर दिया।

अब तो हेनरी को उलटे लेने के देने पड़ गए। गिरजाघर की पवित्र वेदी पर महाधर्माध्यक्ष की हत्या होने से सारे देश में

हाहाकार छा गया। राजा भी बड़ा धार्मिक था, उसे भी बड़ी ग्लानि हुई; और यद्यपि उसने यह हत्या नहीं की थी, फिर भी उसे घोर प्रायश्चित करना ही पड़ा। वह कई दिनों तक बेकेट की समाधि पर भूखा-प्यासा पड़ा रहा और अंत में अपने शरीर पर इतने कोड़े लगवाए कि छल-छल ख़ून बहने लगा। राजा का बनाया हुआ राज्य-नियम भी जारी न हो सका। इस एक घटना से स्पष्ट विदित होता है कि उन दिनों पादरियों का कैसा ज़ोर था।

इन्हीं दिनों पैलेस्टाइन (Palestine) पर तुर्कों का राज्य हो जाने से योरप के ईसाइयों को ईसा की समाधि के पवित्र तीर्थ जरुस्सलम को यात्रा करना कठिन हो गया। इस पर सभी ईसाई देशों से ईसाइयों के बड़े-बड़े जत्थे मुसलमानों से लड़ने को जाने लगे। ये लड़ाइयाँ 'क्रुज़ेड्स' (Crusades) कहलाती थीं। स्मरण रहे, जिस तरह चंद्रकला (Crescent) मुसलमानी धर्म का चिह्न है, उसी तरह 'क्रूस' (Cross) ईसाइयों का धर्म-संकेत है। इसीलिये ये युद्ध 'क्रूस' के अर्थात् ईसाइयों के धर्म-युद्ध कहलाते हैं।

इँगलैंड का राजा रिचर्ड प्रथम (Richard I) बड़ा बहादुर था और इस लड़ाई में भाग लेने के लिये पैलेस्टाइन गया था। उसकी अनुपस्थिति में बैरनों का ज़ोर फिर से बढ़ गया। सन्

११९९ में उसका भाई जॉन (John) राजा चुना गया। इसने राज्य पर अधिकार पाते ही बड़ा अत्याचार शुरू किया, यहाँ तक कि पादरियों को भी सताकर ईसाइयों के जगद्‌गुरु पोप (Pope) को भी असंतुष्ट कर दिया। हार जाने से फ्रांस का अँगरेजी राज्य भी उसके हाथ से निकल गया। सारांश यह कि जॉन बहुत अधम राजा निकला। थोड़े ही समय के भीतर सभी दर्जे के लोग उससे असंतुष्ट हो गए।

महास्वतंत्रता-पत्र (Magna Carta) १२१५ ई०

निदान महा-धर्माध्यक्ष (Arch Bishop) स्टीवन लैंगटन (Stephen Langton) की सलाह से भूमि-पति बैरनों ने एक सभा करके राजा के अधिकारों को नियंत्रित कर देना चाहा और एक नियमावली तैयार करके यह निश्चय किया कि राजा जॉन से इस पर हस्ताक्षर कराकर उससे प्रतिज्ञा कराई जाय कि वह इसी नियमावली के अनुसार शासन करे। इस नियमावली का नाम इँगलैंड के इतिहास में मेगनाकार्टा (Magna Carta) है, जिसका अर्थ ग्रेट चार्टर (The Great Charter) अर्थात् बड़ी सनद होता है। इस सनद में दो बड़ी शर्तें रक्खी गई थीं, जिनमें से एक यह थी कि राजा ने जिन भूमि-पतियों को भूमि दी है, उनसे कुछ निश्चित विषयों को छोड़ शेष प्रसंगों पर उनकी

सम्मति के विना कर आदि लगाकर धन न ले और दूसरी यह कि वह अपनी प्रजा के जान-माल को मनमानी हानि न पहुँचा सके अर्थात् क़ानूनी कारवाई किए विना वह किसी को गिरफ़्तार या क़ैद न करे और न किसी की जायदाद ही ज़ब्त कर सके। ऐसी सब कारवाई न्यायालयों द्वारा की जाय, अर्थात् किसी को वारंट निकालकर गिरफ़्तार करने और अपराध साबित होने पर दंड देने का अधिकार न्यायाधीश को रहे, न कि राजा को।

यह बड़ी सनद अँगरेज़ों की स्वतंत्रता और क़ानून की जड़ है। आगे उनकी स्वतंत्रता के संबंध में जो-जो राज्य-नियम बनाए गए, वे सब इसी सनद के आधार पर बने। इसके सिद्धांतों को स्वीकार कर लेने से इँगलैंड का राजा निरंकुश न रह सका। न तो उसके हाथ में मनमाना कर लगाना रहा और न किसी से चिढ़कर उसे दंड देना।

उन दिनों में पोप तथा पादरियों का कितना चलता था, यह तो कुछ-कुछ हेनरी द्वितीय और बेकेट के झगड़े का परिणाम देखकर मालूम हो गया होगा। जॉन का हाल और भी बुरा हुआ। स्टीवन लैंगटन (Stephen Langton) को पोप ने इँगलैंड का आर्चबिशप या प्रधान धर्माध्यक्ष बनाया। जॉन को यह नियुक्ति पसंद न आई और उसने लंगटन को इँगलैंड में न

घुसने दिया तथा पादरियों को लूटना आरंभ कर दिया। पोप ने पादरियों को आज्ञा दी कि तुम विवाह, मृत्यु, बपतिस्मा आदि संस्कारों के साथ जो धार्मिक कृत्य किए जाते हैं, उन्हें करना छोड़ दो। ऐसा होने से प्रजा में बड़ी खलबली पड़ गई। लोग समझे कि इन धार्मिक संस्कारों के न होने से हम सब नरक-गामी होंगे। इस प्रकार स्वर्ग का द्वार बंद होते देख बेचारे धर्म-भीरु अँगरेज़ घबरा गए; पर जॉन को इसकी परवा ही क्या! वह उन आदमियों का सर्वस्व छीनने और उनके गिरजे बंद करने लगा, जो पोप की आज्ञा मानकर हड़ताल कर बैठे थे और धार्मिक संस्कार नहीं कराते थे। जॉन की यह धृष्टता देख पोप ने अपना एक बहुत ही भयं-कर अस्त्र चलाया, अर्थात् ईसाई-समाज (Church) से ही जॉन के बहिष्कार की आज्ञा निकाल दी। जिस आदमी का बहिष्कार (Ex-communication) पोप इस तरह कर दिया करता था, उससे कोई भी श्रद्धालु ईसाई किसी प्रकार का सरोकार नहीं रखता था, न कोई उसकी नौकरी करता, न उसके कोई चीज़ बेचता, न उसके यहाँ का मुर्दा उठाता और न उसके पास उठता-बैठता था। निदान ऐसे बहिष्कृत मनुष्य का जीना तक कठिन हो जाता था।

जॉन था राजा, उसने अपने बहिष्कार की भी परवा न

की। तब तो उसने अपना अंतिम अस्त्र छोड़ा, अर्थात् फ़्रांस के राजा फ़िलिप द्वितीय (Philip II) को आज्ञा दी कि तुम एक ऐसे नास्तिक राजा का राज्य छीनकर अपने अधिकार में कर लो। अब जॉन से कुछ करते-धरते न बना, उसने अपना राज-मुकुट पोप के प्रतिनिधि के चरणों पर रखकर बड़ी दीनता से निवेदन किया कि मैं अपना राज्य पोप को देता हूँ और यदि उसकी कृपा हुई, तो उसका दास बनकर राज्य करूँगा।

इस वृत्तांत के यहाँ लिखने का अभिप्राय यही है कि पाठक जान लें कि उन दिनों में पोप और उसके पादरियों का कितना ज़ोर था, उनके सामने बड़े-बड़े राजे मस्तक झुकाते थे, क्योंकि उनसे भिड़कर पार पाना कठिन था।

हेनरी तृतीय

जॉन के पुत्र हेनरी तृतीय के समय में इँगलैंड को एक बड़ा लाभ हुआ, अर्थात् वहाँ पार्लिमेंट सभा की स्थापना हुई। वैसे तो बैरनों की सभा आगे भी थी और कुछ दिनों से उसको पार्लिमेंट कहने लगे थे। बड़ी सनद की धारा के अनुसार राजा को कर आदि लगाकर रुपया वसूल करने के पूर्व इस सभा की अनुमति लेनी पड़ती थी। हेनरी को बार-बार रुपए की ज़रूरत पड़ती थी, इसलिये वह इस सभा का बार-बार आमंत्रण करता था। इससे बैरन लोग असंतुष्ट

हो गए और सन् १२६४ में हेनरी को क़ैद कर लिया। इस समय बैरनों का नेता अर्ल साइमन डि मांटफ़ोर्ट (Simon de Montfort) था। सन् १२६५ में उसने एक सभा बैठाई। इसमें आगे के समान केवल बैरन लोग और बड़े-बड़े पादरी ही नहीं, बल्कि प्रत्येक नगर और काउंटी (County) या ज़िले के तथा छोटे-छोटे ज़मीदारों (Knights) की ओर से भी दो-दो प्रतिनिधि बुलाए गए। इस तरह समस्त जनता के प्रतिनिधियों को इस सभा में बैठने का अधिकार मिल गया। यह सभा "साइमन की पार्लिमेंट" कहलाती है। यही वर्तमान पार्लिमेंट-सभा की जननी है, इसलिये अँगरेज़ी इतिहास में इसका बड़ा महत्त्व है।

एडवर्ड प्रथम

हेनरी तृतीय के पुत्र एडवर्ड प्रथम ने उद्योग कर अर्ल साइमन को युद्ध में परास्त किया और वह मारा भी गया। पर उसने साइमन की नीति का अनुसरण कर पार्लिमेंट-सभा को वैसा ही रहने दिया। साथ ही पार्लिमेंट के दो भाग भी कर दिए, जो लॉर्ड और कामंस (The House of Lords & the House of Commons) कहलाए। लार्ड-सभा में बैरन और बड़े-बड़े पादरी तथा कामंस-सभा में नगरों और ज़िलों (Counties) के प्रतिनिधि बैठने लगे। ऐसी बड़ी पार्लिमेंट का अधिवेशन

पहली बार सन १२९५ में हुआ। इसके सम्मुख राजा ने शपथ-पूर्वक प्रतिज्ञा की कि पार्लिमेंट की अनुमति लिए बिना किसी प्रकार का कर न लगाया जायगा। पार्लिमेंट का अधिकार आगे यहाँ तक बढ़ा कि उसने एडवर्ड द्वितीय को अयोग्य देख पदच्युत कर दिया। इसी राजा की अयोग्यता के कारण स्कॉटलैंड अँगरेज़ों से युद्ध करके उनके एडवर्ड द्वितीय के हाथ से निकल गया।

एडवर्ड तृतीय

एडवर्ड तृतीय के समय में इँगलैंड और फ्रांस के बीच शत-वार्षिक युद्ध का आरंभ हुआ। यह युद्ध शत-वार्षिक इसलिये कहलाया कि यह समय-समय पर होता हुआ कहीं सौ वर्ष में समाप्त हुआ, लगातार सौ वर्ष नहीं चला। पहले तो अँगरेज़ों की विजय-पर-विजय हुई और फ्रांस का बहुतसा भाग उन लोगों ने जीत लिया; पर अंत में कैले (Calais) नगर के सिवा उनके हाथ में कुछ न बच रहा।

काली मृत्यु या प्लेग (The Black Death) और किसान-मज़दूरों का विद्रोह (The Peasants' revolt)

सन १३४८ में इँगलैंड एक भयंकर महामारी का शिकार बना, जिससे उसकी जन-संख्या केवल आधी रह गई। इसका परिणाम यह हुआ कि मज़दूर कम हो जाने से मज़दूरी की दर बढ़ गई। उन दिनों में बेचारे मज़दूरों के कोई हक़ तो थे नहीं। पार्लिमेंट में

ज़मींदारों का ज़ोर था, इसलिये मज़दूरों का क़ानून (Statute of Labourers) बनाकर यह नियम कर दिया गया कि मज़दूरी की दर बढ़ न सकेगी, आगे के समान रहेगी। इस ज़बरदस्ती का फल यह हुआ कि किसान और मजदूरों ने बग़ावत (Peasants' revolt) कर दी। पर वे कर ही क्या सकते थे, बुरी तरह कुचले गए।

१४५५-१४८६ गुलाब-युद्ध (The Wars of the Roses) पार्लिमेंट ने रिचर्ड द्वितीय (Richard) की अयोग्यता के कारण उसे राज-सिंहासन से उतार एडवर्ड तृतीय के तीसरे पुत्र जॉन ऑफ़् गांट (John of Gaunt) के वंश के हेनरी चतुर्थ को राजा बनाया। उसके बाद हेनरी पंचम और हेनरी षष्ठ ने राज्य किया। ये राजा लेंकास्टर-वंश के राजा कहलाते थे, क्योंकि जॉन ऑफ़् गांट को लेंकास्टर के ड्यूक की पदवी थी। हेनरी चतुर्थ को पार्लिमेंट ने राजा बनाया था, इसलिये उसका ज़ोर इन लेंकास्टर-वंशी राजों पर बहुत था। इन राजों का पैदायशी हक़ तो था नहीं, क्योंकि ये लोग एडवर्ड तृतीय के तीसरे लड़के के वंशज थे। उसका प्रथम पुत्र ब्लैक प्रिंस (Black Prince) मर गया था और द्वितीय पुत्र के एक लड़की थी, इसलिये तृतीय पुत्र के वंशजों को गद्दी मिली थी। पीछे से

द्वितीय पुत्र के वंश में, कन्या से, यार्क का ड्यूक हुआ। यह अपने को सच्चा हक़दार समझता था। निदान इँगलैंड की जनता, शत-वार्षिक युद्ध में कैले को छोड़ फ्रांस से जीता हुआ सब देश खो बैठने से, लेंकास्टर-वंश के हेनरी षष्ठ से बहुत अप्रसन्न हो गई और बहुत-से बैरनों ने यार्क के ड्यूक का पक्ष ग्रहण किया। अंत में इन दोनों पक्षों के बीच घरू-युद्ध (Civil War) छिड़ गया। इसी का नाम इतिहास में गुलाब-युद्ध (Wars of Roses) पड़ा है। ऐसा नाम पड़ने का कारण यह है कि यार्क के ड्यूक का चिह्न सफ़ेद गुलाब और लेंकास्टर-वंश का लाल गुलाब था।

इस युद्ध से एक बड़ा लाभ यह हुआ कि इँगलैंड के भूमि-पति बैरन, जो दोनों पक्षों में मिलकर लड़े थे, अधिकांश कट मरे और जो बचे, वे बहुत निर्बल पड़ गए। कहना चाहिए कि विजेता विलियम की चलाई हुई भूमि-पतियों की प्रणाली (Fendal system) की कमर टूट गई। इस युद्ध के साथ-साथ माध्यमिक काल (The Middle Ages) का अंत हो गया और सन् १४८५ में आधुनिक काल (The Modern Times) का आरंभ हुआ, मानो अँधेरी रात बीतकर सूर्य की लालिमा पूर्व में दिखाई देने लगी। विलियम कैस्टन ने एडवर्ड चतुर्थ के राजत्व-काल में, सन् १४७६ में, लंदन-नगर में अपना

छापाखाना खोला और इस तरह विद्योन्नति का मार्ग विशद कर दिया। माध्यमिक काल का दूसरा नाम "अंधकारमय काल" (The Dark Ages) भी पड़ा है, क्योंकि उस काल में जनता विद्यांधकार में पड़ी हुई थी, जिससे पादरियों तथा भूमि-पतियों को मनमाना करने का अवसर प्राप्त था। आधुनिक काल में उत्तरोत्तर जागृति होती गई और निरंकुशता तथा अंधविश्वास के दिनों का धीरे-धीरे लोप हो गया।

द्वितीय खंड

विषय-सूची

प्रथम अध्याय

द्वितीय परिच्छेद

तृतीय परिच्छेद

चतुर्थ परिच्छेद

द्वितीय अध्याय

द्वितीय परिच्छेद

तृतीय परिच्छेद

सप्तम परिच्छेद

इँगलैंड का इतिहास

प्रथम अध्याय

ट्यूडर-वंश का राज्य

(१४८५-१५५८)

प्रथम परिच्छेद

हेनरी सप्तम (१४८५-१५०६)

अल्पावस्था में ही कारागार-जीवन व्यतीत करने के कारण हेनरी सप्तम को अपनी इच्छाओं और इंद्रियों को वश में रखने का पर्याप्त अभ्यास था। वह शांत-प्रकृति, अविश्वासी, संदिग्ध-हृदय तथा मितभाषी था। अधिक स्वार्थी होने के कारण वह सर्वप्रिय कभी नहीं हो सका। शत्रुओं के साथ उसका व्यवहार कठोर रहता था। अपने को उसने सारी जाति का नेता बनाने का प्रयत्न किया और इसीलिये लेंकास्टर-वंशी होते हुए भी उसने यार्क-वंशी लेडी एलिज़बेथ के साथ विवाह कर लिया। ये सब बुद्धिमत्ता-पूर्ण कार्य करते हुए भी, आरंभ में, उसे अनेक विद्रोहों का सामना करना पड़ा।

(१) हेनरी सप्तम तथा विद्रोह

लेंकास्टर तथा यार्क-वंश की कलह एक दिन में तो समाप्त हो ही नहीं सकती थी। हेनरी ने राज्य पर आते ही लेंकास्टर-दल के लोगों को उच्च-उच्च राज्य-पद दिए और यार्क-वंशियों को कई विश्वास-योग्य स्थानों से हटा दिया। इससे उनका विद्रोह करने पर सन्नद्ध हो जाना स्वाभाविक ही था। लॉर्ड लावेल तथा स्टफ़फ़ोर्ड ने १४८६ में विद्रोह किया, परंतु वे कृतकार्य न हो सके।

(क) लैंबर्ट सिम्नल का विद्रोह (Rebellion of Lambert Simnel) (१४८७)

इँगलैंड से बाहर यार्क-दल की शक्ति बहुत अधिक थी। एडवर्ड चतुर्थ की बहन मार्गरैट का नार्थंबरलैंड (Northumberland) में बहुत प्रभाव था। इसने हेनरी सप्तम (Henry VII) के विरुद्ध एक षड्यंत्र रचने का प्रयत्न किया। इस कार्य में किल्डयर के अर्ल ने इसका साथ दिया। किल्डेयर हेनरी से बहुत रुष्ट था, क्योंकि हेनरी ने उसको आयर्लैंड के शासकत्व से हटाकर 'जस्पर ट्यूडर' (Jasper Tuor) को वहाँ का शासक नियुक्त कर दिया था। इन विद्रोहियों की सहायता प्राप्त करके, १४८७ में, एक द्वादश-वर्षीय बालक आयर्लैंड पहुचा। बालक

के साथ एक पादरी था, जो यह बतलाता फिरता था कि यह बालक ही वारिक (Warwick) का अर्ल 'एडवर्ड' है ; यह लंदन-टावर से भाग आया है। परिणाम यह हुआ कि 'फ़िटज़ेरल्डज़' (Fitzgeralds) ने उसका डब्लिन में राज्याभिषेक-संस्कार किया, और उसको इँगलैंड का राजा उद्घोषित कर दिया। किंतु वास्तव में वह बालक एडवर्ड नहीं था। किंवदंती है कि वह ऑक्सफ़ोर्ड के घर बनानेवाले लैंबर्ट सिम्नल (Lambert Simnel) का पुत्र था। जो कुछ हो, हेनरी ने असली एडवर्ड को लंदन-टावर से निकालकर जनता को दिखला दिया, तथा एक बड़ी सेना के साथ लैंबर्ट सिम्नल को स्टोक के युद्ध (Battle of Stolke) में पराजित किया और उसको क़ैद करके अपना रसोइया बना लिया। हेनरी ने अपने को निःशक्त देखकर किल्डेयर के अर्ल का अपराध भी क्षमा कर दिया।

(ख) पर्किन वार्बिक (Perkin War beck) का विद्रोह (१४९२)

हेनरी के शत्रुओं ने उसको कष्ट पहुँचाने के लिये एक और षड्यंत्र रचा। मार्गरेट ने तूरनाई-निवासी एक युवक को बहकाया और कहा कि तू आयर्लैंड जाकर अपने को एडवर्ड चतुर्थ का कनिष्ठ पुत्र 'रिचर्ड' (Richard) प्रकट कर। मैं तेरी सहायता करूँगी और तुझको इँगलैंड का राजा बना दूँगी।

उसका वास्तविक नाम पार्किन वार्बिक (Perkin Warbeck) था। उसने इस बुद्धिमत्ता से सारा काम किया कि आंग्ल-जनता उसको चिरकाल तक रिचर्ड ही समझती रही। पार्किन वार्बिक ने सात वर्ष तक हेनरी को अनंत कष्ट पहुँचाया। सबसे पहले उसने किल्डेयर तथा फ़िट्ज़ेरल्डज़ से सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न किया; परंतु जब उनसे उसको कोरा जवाब मिल गया, तो वह फ़्रांस के राजा के समीप गया।

चार्ल्स अष्टम ने उसको इँगलैंड का राजा मान लिया और 'ईटाप्ले' की संधि (Treaty of Itapley) से पहले तक उसको सहायता देता रहा। सर विलियम स्टैनले (Stanley) ने भी उसको गुप्त रूप से सहायता पहुँचाई। स्टैनले की गुप्त कार्रवाई हेनरी को मालूम हो गई। इस पर स्टैनले को प्राण-दंड दे दिया गया। पार्किन ने कैंट (Kent) तथा आयर्लैंड से सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न किया, परंतु सब ओर से निराश होकर अंत को उसने स्कॉटलैंड के बादशाह जेम्स चतुर्थ से भी सहायता की याचना की। जेम्स ने उसको सहायता देने का प्रण किया और उसके साथ अपनी भतीजी का विवाह भी कर दिया। इस ख़बर को सुनते ही हेनरी के क्रोध की सीमा न रही।

उसने जेम्स को स्कॉटलैंड पर आक्रमण करने की धमकी दी। इस पर जेम्स ने भी उसका साथ छोड़ दिया। इन्हीं दिनों कार्नवाल (Cornwal) की आंग्ल-प्रजा अधिक करों के कारण हेनरी से रुष्ट थी। 'पार्किन' ने कार्नवाल पहुँचकर हेनरी के विरुद्ध युद्ध ठान दिया। टांटन (Taunton)-नामक स्थान पर, शाही सेना द्वारा चारों ओर से घिर जाने पर पार्किन ने हथियार रख दिए। फिर वह लंदन-टावर में क़ैद कर दिया गया। कुछ ही दिनों बाद हेनरी ने पर्किन तथा लैंबर्ट सिम्नल को इस अपराध पर फाँसी दे दी कि ये दोनों षड्यंत्र रचकर लंदन-टावर को ही अपने हस्तगत करने का यत्न कर रहे हैं।

(२) हेनरी सप्तम की विदेशी नीति

(क) इटाप्ले की संधि (Treaty of Itapley)

राज्य प्राप्त करने में हेनरी को बहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं। स्काटलैंड तथा फ्रांस की शत्रुता के कारण उसका राज्य पूर्ववत् अस्थिर ही बना रहा। फ्रांस से अपने को बचाने के लिये उसने ब्रिटनी (Brittany) के शासक के साथ मित्रता कर ली। सन् १४८८ में ब्रिटनी का शासक मर गया और उसकी कन्या एन (Anne) उसके राज्य की शासिका बनी। फ्रांस के राजा चार्ल्स अष्टम (Charles VIII)

ने एन से विवाह करने का यत्न किया, परंतु हेनरी तथा योरप के अन्य राजों ने उसके इस कार्य में विघ्न डालना चाहा। सब विघ्नों को पार करते हुए चार्ल्स ने एन के साथ विवाह कर ही लिया। इस पर हेनरी ने फ़्रांस पर आक्रमण कर दिया। चार्ल्स ने उससे युद्ध न करके उसके साथ ईटाप्ले की संधि कर ली, और उसको बहुत-सा धन भी दिया। इस संधि से हेनरी के मित्र हेनरी से रुष्ट हो गए।

(ख) व्यापार की निकृष्ट तथा उत्कृष्ट संधि

पर्किन वार्बिक को ईटाप्ले की संधि द्वारा फ़्रांस से निकलवाकर, हेनरी ने उसको फ़्लैंडर्ज़ (Flanders) से भी निकालने का प्रयत्न किया। 'मैक्समिलियन' (Maxmilian) से उसने प्रार्थना की कि पर्किन को अपने देश से निकाल दो; परंतु मैक्समिलियन ने जब उसकी यह बात न मानी, तो उसने इँगलैंड का फ़्लैंडर्ज़ के साथ संपूर्ण व्यापार बंद कर दिया। परिणाम यह हुआ कि हेनरी का कहना उसको मानना पड़ा। १४९६ की 'उत्कृष्ट संधि' (Magnus Intercursus) के अनुसार फ़्लैंडर्ज़ तथा इँगलैंड में व्यापार प्रारंभ हो गया और दोनों ही देशों ने एक-दूसरे के शत्रुओं को सहायता न देने का प्रण किया।

इस संधि के दस वर्ष बाद १५०६ में मैक्समिलियन के पुत्र, फ़िलिप का जहाज़ एक आंग्ल-बंदरगाह में आ लगा। हेनरी

ने उसका बहुत अच्छी तरह सम्मान किया, परंतु उसको अपने देश लौट जाने की आज्ञा नहीं दी। लाचार होकर उसको हेनरी के कथनानुसार व्यापार की कुछ शर्तों पर हस्ताक्षर करना पड़ा। इन शर्तों से फ़्लैंडर्ज़ को बहुत हानि हुई और आंग्लों को बहुत ही लाभ पहुँचा। आंग्ल-इतिहास में यह संधि 'निकृष्ट संधि' के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि फ़्लैंडर्ज़-निवासी इस संधि को इसी नाम से पुकारते थे।

(ग) योरप में राष्ट्रीय शक्ति-संतुलन (Balance of Power)

हेनरी सप्तम के समय से ही योरपियन राजों ने योरप में राष्ट्रीय शक्ति संतुलन की नीति का अवलंबन किया। इसका मुख्य कारण यही था कि उस समय योरप में कोई युद्ध नहीं हो रहे थे। प्रत्येक राजा एक-दूसरे की शक्ति-वृद्धि को तीव्र दृष्टि से देख रहा था। ब्रिटनी की विजय के अनंतर फ़्रांस के राजा चार्ल्स अष्टम ने इटली पर आक्रमण किया और १४९४ में अपने को नेपल्ज़ (Naples) का राजा बना लिया। अन्य योरपियन राजे भी चुप नहीं बैठे थे। उन्होंने फ़्रांस के विरुद्ध इटली को सहायता पहुँचाई। परिणाम यह हुआ कि इटली शीघ्र ही फ़्रांस के क़ब्ज़े से निकल गया। चार्ल्स के अनंतर स्पेन के राजा फ़र्दिनंद (Ferdinand) ने 'कैस्टाइन'(Castile) की रानी से विवाह कर लिया और संपूर्ण स्पेन एकछत्र के नीचे हो गया।

हेनरी सप्तम ने फ़र्दिनंद से मित्रता कर ली, क्योंकि उसको फ़्रांस से सर्वदा भय रहता था। अरागान (Aragon) की रानी कैथराइन (Catherine) से अपने पुत्र आर्थर का विवाह करके उसने स्पेन से इँगलैंड का संबंध और भी अधिक घनिष्ठ कर दिया। विवाह के कुछ ही समय बाद आर्थर की मृत्यु हो गई। इस पर उसने अपने द्वितीय पुत्र हेनरी के साथ कैथराइन का विवाह कर दिया।

स्कॉटलैंड के राजा जेम्स को फ़्रांस से न मिलने देना ही हेनरी सप्तम का उद्देश था। इस उद्देश की पूर्ति के लिये उसने अपनी बड़ी पुत्री मार्गरैट का जेम्स के साथ विवाह कर दिया। आगे चलकर इसी वंश का एक राजा स्कॉटलैंड तथा इँगलैंड, दोनों पर ही अकेला राज्य करेगा और आंग्ल-जाति की एकता-वृद्धि में बड़ा भारी भाग लेगा।

(३) हेनरी सप्तम की गृह-नीति (Home Policy)

हेनरी सप्तम ने देश में शांति स्थापित करने का जो निरंतर प्रयत्न किया, वह सर्वथा प्रशंसनीय था। पार्लिमेंट के नियमों के अनुसार ही उसने देश में शासन किया और १४९५ में यह नियम पास किया कि आंग्ल-राज्य-सिंहासन पर बैठे हुए राजा की आज्ञा का पालन करनेवाला कोई भी व्यक्ति देश-द्रोही नहीं

कहलावेगा, चाहे वह राजा राज्य का वास्तविक अधिकारी न हो।

कैंटबरी के आर्च-बिशप, (The Arch-Bishop of Canterbury) 'मार्टन' (Marton) ने हेनरी को धनाभाव की चिंता कभी नहीं होने दी। इसने नियम-भंग किए बिना ही बीसों तरीक़ों से प्रजा से रुपया प्राप्त किया। इसकी मृत्यु के अनंतर एडमंड डडले (Edmund Dudley) तथा रिचर्ड एंपसन (Richard Ampson) ने इसकी कमी को पूरा कर दिया और कृपण-से-कृपण व्यक्तियों की जेबों से राजा के लिये रुपया निकल गया।

लॉर्डों के पास बहुत-से नौकर रहते थे, जो समय-कुसमय सैनिक का काम भी दे देते थे। ये नौकर आंग्ल-प्रजा को सताते थे। उन पर अभियोग चलाना प्रजा के लिये निरर्थक था, क्योंकि लॉर्ड लोग उनका पक्ष लेकर न्यायाधीशों के द्वारा उनको छुड़ा देते थे। इस दूषण को दूर करने के लिये हेनरी ने एक नवीन न्यायालय बनाया, जिसमें बड़े-बड़े योग्य व्यक्तियों को न्यायाधीश नियत किया।

हेनरी ने आयर्लैंड में पॉयनिङ् (Poyning) को भेजकर आयर्लैंड की स्वतंत्रता नष्ट करने में बड़ा भारी भाग लिया। पॉयनिङ् ने वहाँ आंग्ल-नियम प्रचलित कर दिए

और आयरिश पार्लिमेंट को आंग्ल-पार्लिमेंट के अधीन कर दिया। १५०६ में हेनरी का स्वर्गवास हो गया। उसके शासनकाल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१४८५	हेनरी सप्तम का राज्याधिरोहण
१४८७	लैंबर्ट सिम्नल का विद्रोह
१४६२	ईटाले की संधि, पर्किन वार्बिक का विद्रोह
१४६४	पॉयनिङ के राज्य-नियम
१४६६	व्यापार की उत्कृष्ट संधि
१४६६	पर्किन तथा सिम्नल को फाँसी
१५०३	मार्गरैट के साथ जेम्स का विवाह
१५०६	हेनरी सप्तम की मृत्यु

द्वितीय परिच्छेद

हेनरी सप्तम के समय में इँगलैंड की दशा

(१) राजनीतिक दशा

हेनरी सप्तम के समय से इँगलैंड के इतिहास में एक नवीन काल (New Era) प्रारंभ होता है। अतः यह आवश्यक प्रतीत होता है कि उसके समय में पार्लिमेंट की क्या नीति थी, इसको स्पष्ट कर दिया जाय। हेनरी सप्तम को राज्य प्राप्त करते ही निम्न-लिखित पाँच प्रण करने पड़े—

(१) मैं पार्लिमेंट के सभ्यों (बड़े-बड़े लॉर्ड, और पादरी—Bishops—ग्राम, नगर तथा मंडल और और साधारण जनों के प्रतिनिधि) की अनुमति के विना आंग्ल-प्रजा पर किसी प्रकार का भी राज्य-कर नहीं लगाऊँगा।

(२) पार्लिमेंट की स्वीकृति के विना कोई भी नवीन राज्य-नियम नहीं बनाऊँगा।

(३) वारंट के विना किसी भी आंग्ल को क़ैद नहीं करूँगा और साथ ही क़ैद में पड़े हुए व्यक्ति के अपराध का शीघ्र ही निर्णय करूँगा।

(४) राजकीय न्यायालय में ही फ़ौजदारी मुक़दमों का

निर्णय होना चाहिए। यदि कार्य-वशात् वहाँ पर ऐसा न किया जा सके, तो उस मुक़दमे का निर्णय १२ साक्षियों के द्वारा वहीं पर किया जाना चाहिए, जहाँ अपराधी ने अपराध किया हो।

(५) राज्याधिकारियों पर न्यायालय में अभियोग चलाया जा सकता है। उनके छुड़ाने में राजा को किसी प्रकार का भी प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

इन शर्तों पर चलने का प्रण करके भी हेनरी ने प्रजा से ख़ूब रुपया वसूल किया। किंवदंती है कि वह राज-कोष में १८,००,००० पौंड धन छोड़कर मरा था। हेनरी सप्तम ने बुद्धिमत्ता से राज्य-नियमों पर चलते हुए भी स्वेच्छा-चारित्व को प्राप्त किया। पादरियों की शक्ति नष्ट करने के लिये उसने यह नियम बनाया कि 'सर्व-प्रकाशित पापमय जीवनवाले पादरियों पर अभियोग चलाया जा सकता है। अपराध के सिद्ध होने पर बड़ा पादरी उसको क़ैद तक दे सकता है।'

(२) सामाजिक अवस्था

बहुत-से ऐतिहासिकों का मत है कि हेनरी सप्तम के समय में इँगलैंड की संपत्ति पहले की अपेक्षा बढ़ रही थी, और वह दिन-पर-दिन समृद्ध हो रहा था। तो भी इँगलैंड

की जन-संख्या संतोषप्रद नहीं थी। 'वैनीशियन'(Venitian) ने लिखा है—"डोवर से ऑक्सफ़ोर्ड तक जाते हुए संपूर्ण प्रदेश निर्जन प्रतीत होता है, कहीं पर भी जनता की कोई भी घनी बस्ती दृष्टिगोचर नहीं होती। दक्षिण के ही सदृश इँगलैंड के उत्तर की भी अवस्था है। संपूर्ण इँगलैंड में ४० लाख से अधिक मनुष्य नहीं हैं।" बहुत-से राज्य-नियमों के देखने से भी वैनीशियन का कथन सत्य प्रतीत होता है। 'आइल ऑफ़ वाइट' (Isle of Wight) में जहाँ पहले २०० मनुष्य रहते थे, हेनरी सप्तम के समय में केवल दो या
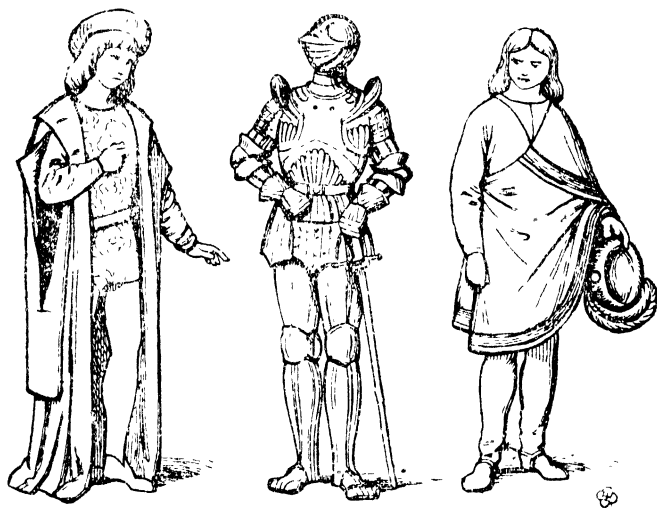
हेनरी सप्तम के शासन-काल की मुल्की और जंगी पोशाक

तीन गड़रिए ही झोपड़ी डाले दिखाई पड़ते थे। जन-संख्या

की इस भयंकर कमी का मुख्य कारण इँगलैंड में कृषि का नाश हो जाना ही कहा जा सकता है। ऊन का व्यापार बढ़ने से उसका मूल्य पूर्व की अपेक्षा अधिक हो गया था। क्यों? आंग्ल-जनता को कृषि की अपेक्षा ऊन उत्पन्न करने में अधिक लाभ था। परिणाम यह हुआ कि कृषि की भूमि चरागाहों में परिवर्तित हो गई और कृषकों ने गड़रियों का रूप धारण कर लिया। सर टी०मोर(Sir T. More)ने अपने आलंकारिक शब्दों में इसी घटना का उल्लेख इस प्रकार किया है—

"हे परमात्मन्, मैं आपकी शपथ खाकर कहता हूँ, कि आपकी भोलीभाली, नम्र, मिताशी भेड़ें आजकल बहुत अधिक खानेवाली हो गई हैं। उन्होंने इँगलैंड के बहुत-से मनुष्यों को—खेत, मकान तथा नगरों को—चर डाला है।"

इसमें संदेह करना भी वृथा है कि ऊन के व्यापार से आंग्ल-जनता खूब समृद्ध हो गई थी। चाँदी प्राप्त करने की इच्छा उसमें दिन-पर-दिन बढ़ती जाती थी। एक यात्री का कथन है—

"इँगलैंड में ऐसा एक भठियारा भी न होगा (चाहे वह कितना ही दरिद्र तथा दुरवस्था में क्यों न हो), जिसके गृह में चाँदी की थाली तथा प्याले विद्यमान न हों। इसका मुख्य कारण यह है कि आंग्ल-जनता उसको किसी भी हैसियत

का नहीं समझती, जिसके गृह में चाँदी के बर्तन न हों,......
लंदन में सबसे अधिक दर्शनीय वस्तु चाँदी की राशि है।"

हेनरी के समय में ब्याज पर उधार रुपया लेकर व्यापार-व्यवसाय करना आंग्लों के लिये साधारण-सी बात थी। साथ ही उन दिनों आंग्लों का यह विश्वास था कि "समृद्ध तथा धनाढ्य बनने का एक यही मार्ग है कि दूसरे देशों से सोना-चाँदी प्राप्त किया जाय और अपने देश से बाहर न जाने दिया जाय।" इस विश्वास की भयंकरता का अनुमान इसी से कर लेना चाहिए कि आंग्ल-राज्य अक्सर अपने अधिकारियों द्वारा विदेशियों की संपत्ति लुटवा लेता था। एक बार ईरासमस- (Erasmus)-जैसे विद्वान् के साथ भी ऐसा ही क्रूर व्यवहार किया गया था। क्यों ?

हेनरी के समय में राज्य ही बहुत प्रकार के माल का मूल्य नियत करता था और ऐसा होते हुए भी वह अधिक होता था। कई पदार्थों का उत्पत्ति-व्यय (Cost of production) १६ पेंस होते हुए भी उनकी बिक्री का मूल्य ३ शिलिंग तक था। ५० वर्ष तक राज्य ने मजदूरों की 'भृति' (मजदूरी—Wages) नियत करने का भी प्रयत्न किया, परंतु यह नियम चल नहीं सका। १४६५ में इस प्रकार के प्रयत्न करना राज्य ने छोड़ दिया। हेनरी के समय में राज्य-नियम बहुत ही

कठोर थे। मोर का कथन है कि "साधारण-से-साधारण अपराध पर श्रमियों के साथ दासों के सदृश ही व्यवहार किया जाता था। उनको क़ैद में डालकर कष्ट देना तो साधारण-सी बात थी।"

ट्यूडर-काल तक आंग्लों का आचार बहुत निकृष्ट था। ईरासमस का कथन है कि "आंग्लों-जैसे चोर तथा डाकू कदाचित् ही किसी देश में हों, क्योंकि इँगलैंड में इस बात का बाज़ार सदा गर्म रहता है। भयंकर-से-भयंकर अपराधों की संख्या बहुत है।" ईरासमस के सदृश ही एक दूसरे यात्री का कथन है कि "संसार में शायद ही ऐसा कोई देश होगा, जिसमें इतने चोर तथा लुटेरे हों, जितने कि इँगलैंड में हैं।" हेनरी सप्तम के काल में शराब, पाँसे तथा ताशों का घर-घर प्रचार था। लोगों में भारी अज्ञानता फैली हुई थी। विद्वत्ता का सबसे मुख्य चिह्न बाइबिल की एक पंक्ति का बाँच लेना था।

सदाचार के सदृश ही स्वच्छता से भी आंग्ल-जनता दूर भागती थी। १६वीं सदी के स्वेदक रोग (Sweating Sickness) तथा १७वीं सदी के प्लेग का बहुत कुछ संबंध आंग्लों की अस्वच्छता के साथ ही था। घर उनके इस प्रकार बने हुए थे कि उनमें वायु का प्रवेश सर्वथा असंभव था।

ईरासमस ने लिखा है कि "आंग्ल अपने गृहों में एक भी खिड़की नहीं रखते। जब मैं ३० वर्ष से कुछ कम आयु का था, तब मैं यदि किसी आंग्ल के गृह में सोता था, तो मुझे ज्वर आ जाता था।" राटडर्म का कथन है कि "इँगलैंड में मकानों के फ़र्श कच्ची ज़मीन के और छतें फूस की हैं। समय-समय पर इन मकानों पर फूस की नई छतें भी डाली जाती हैं, परंतु पुरानी छतों को हटाया नहीं जाता; और यह दशा प्रायः २० वर्ष तक चली जाती है।" गृहों के सदृश ही आंग्लों के भोजन के विषय में उल्लिखित यात्री का कथन है कि "बहुत ही अच्छा होता, यदि ये लोग इतनी अधिक शराब न पीते और नमक डालकर सुखाए हुए पुराने मांस की जगह ताज़ा मांस ही खाते।"

हेनरी सप्तम के समय में, आंग्लों में, वर्तमान काल के सदृश ही सहभोजों का प्रचार था। वैनीशियन ने अपनी पुस्तक में एक सहभोज का वर्णन किया है, जिसमें एक सहस्र मनुष्य समुपस्थित थे। साथ ही वह कहता है कि इस सहभोज में आंग्लों का शांति तथा नियम से बैठना प्रशंसा के योग्य था। इतने बड़े-बड़े सहभोजों का मुख्य कारण आंग्लों का यह विश्वास था कि किसी मनुष्य का सबसे अधिक मान इसी में है कि उसको सहभोज दे दिया जाय।

आंग्लों के जाति तथा मातृ-भूमि के प्रति प्रेम के विषय में ईरासमस ने लिखा है—"आंग्ल अपनी जाति तथा मातृ-भूमि के परम भक्त थे। उनको अपने देश की प्रत्येक वस्तु प्रिय थी।" इसी प्रकार वैनीशियन की सम्मति में—"आंग्ल समझते हैं कि संसार में उनके सिवा और कोई मनुष्य ही नहीं रहते और इँगलैंड के सिवा अन्य कोई देश ही नहीं है। और, जब कभी आंग्ल किसी सुंदर आकृतिवाले विदेशी को देखते हैं, तो कहते हैं कि यह तो आंग्ल मालूम पड़ता है।"

(३) विद्या का पुनर्जीवन (Rennaissance)

ट्यूडर-काल योरपीय संसार के लिये बहुत प्रसिद्ध काल है। 'पृथ्वी गोल है'—इसका ज्ञान प्राप्त होते ही योरपीय जनता में भयंकर आक्रांति उत्पन्न हो गई। नवीन-नवीन देशों का ज्ञान प्राप्त किया गया, जिसमें से कुछ के नाम ये हैं—

(१) केप ऑफ़ गुड-होप

(२) कोलंबस ने अमेरिका का ज्ञान प्राप्त किया।

(३) पुर्तगालवालों ने भारतवर्ष को ढूँढ़ निकाला।

(४) 'सिवैस्टियन कैबट, (Sebastian Cabot) ने आइसबर्ग तक अपने जहाज़ पहुँचाए।

इस प्रकार संसार के भिन्न-भिन्न देशों तथा धर्मों के ज्ञान से योरप में हलचल मच गई। भिन्न-भिन्न सामुद्रिक यात्रियों

के वृत्तांत की पुस्तकें प्रत्येक मनुष्य के हाथ में दिखाई देने लगीं। इन्हीं दिनों तुर्कों ने कांस्टैंटिनोल (Constantinople) पर आक्रमण किया और उसको अपने हस्तगत कर लिया। यूनानी विद्वान् कांस्टैंटिनोल से भागकर इटली तथा संपूर्ण योरप में फैल गए। इटली ने उनका पूर्ण स्वागत किया। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही दिनों में फ़्लॉरंस (Florence) ने विद्यापीठ का रूप धारण कर लिया। अभी तक ईसाई पादरी यूनान और इटली के मूर्ति-पूजक साहित्य को पढ़ना व्यर्थ ही नहीं, पाप समझते थे। योरप में और कोई दूसरा साहित्य तो था नहीं, इसलिये ईसाई मत फैलने के बाद विद्यान्धकार छा गया था। अब फिर ग्रीक-साहित्य की ओर लोगों की रुचि हुई और इस परिवर्तन का नाम 'विद्या का पुनर्जीवन' पड़ा। होमर (Homer) की कविता, सोफ़ाक्लीज़ (Sophocles) के नाटक, अरस्तु (Aristltoe) और प्लेटो (Plato) के दर्शन पुन:जीवित हो गए। फ़्लारंस की संपूर्ण शक्ति विद्या-वृद्धि में लग गई। यूनान की प्राचीन पुस्तकें और स्मारकों के क्रय-विक्रय ने फ़्लॉरंस में पूर्ण प्रबलता प्राप्त की। योरपीय विद्या-प्रेमी अल्प्स (Alpes) के शिखर को पार करके यूनानी भाषा पढ़ने के लिये फ़्लारंस में एकत्र होने लगे। 'ग्रासिन'-नामक आंग्ल भी फ़्लारंस में पढ़ने गया। वहाँ से पढ़कर लौटते ही

आँखें दिन-प्रति-दिन खुलती जाती थीं। उनको कार्य करने के लिये एक विस्तृत क्षेत्र दिखलाई देने लगा। शीघ्र ही विज्ञान, दर्शन, साहित्य तथा राजनीति में योरपीय जनता ने उन्नति करनी प्रारंभ कर दी।

इँगलैंड के विद्या-प्रचार में पादरियों ने जो भाग लिया, वह सर्वथा सराहनीय था। विंचस्टर के बिशप 'लैंग्टन' (Langton) ने तथा कैंटर्बरी के आर्च-बिशप वारहम (Warham) ने आंग्लों का विद्या के प्रति प्रेम बढ़ाया और उनको विदेश जाकर शिक्षा प्राप्त करने के लिये उत्साहित किया।

किंतु हेनरी सप्तम के समय में राज्य की सहायता प्राप्त न होने के कारण इँगलैंड में विद्या-विस्तार की गति अति प्रबल नहीं हो सकी। एंपसन और डडले के अत्याचारों तथा रुपया चूसने के कार्य ने भी आंग्लों में विद्या-वृद्धि को बहुत रोका। सारांश यह कि हेनरी सप्तम के काल में 'विद्या-ज्योति' अंकुरावस्था में ही थी, जिसका विकास राजा की विशेष सहायता न होने के कारण सर्वथा रुका हुआ था *।

---

* Historians' History of the World, Vol. XIX—England, (1485-1642), Chapt. I.

तृतीय परिच्छेद

हेनरी अष्टम तथा (Wolsey) वूल्जे (१५०६-१५२६)

अठारह वर्ष की आयु में हेनरी अष्टम राज्य-सिंहासन पर बैठा। ईसाई-साम्राज्य (Christ iandom)-भर में हेनरी सुंदरता में एक ही था। वह टेनिस तथा शिकार खेलने में भी बहुत चतुर था, बहुत-सी भाषाएँ जानता था और विद्या का बहुत ही प्रेमी था। प्रसन्न-चित्त तथा हास्य-प्रिय होने के कारण वह धनी और निर्धनी, सभी का समान-रूप से प्रेम-पात्र था। उसके अंग-अंग से राजसी भाव टपकता था। वह अपनी इच्छाएँ पूर्ण करने में दृढ़-निश्चय था, बात-की-बात में दूसरों को परख लेता था। इसने अपने मंत्रियों को बड़ी सावधानी के साथ नियुक्त किया था और उनसे काम भी पूरा-पूरा लेता था। अपने जीवन के अंतिम दिनों में वह कठोर-प्रकृति तथा क्रूर हो गया था।

राज्य-सिंहासन पर बैठते ही इसने अपने पिता के भूतपूर्व मंत्री एंपसन तथा डड्ले को क़ैद में डाल दिया। ऐसा करने का मुख्य कारण हेनरी ने उनका प्रजा से रुपया चूसना

ही प्रकट किया। हेनरी के इस कार्य से प्रजा उससे बहुत प्रसन्न हो गई। एंपसन तथा डड्ले के अतिरिक्त अन्य सब उच्च राज्याधिकारी अपने-अपने पदों पर ही स्थिर रहे। हेनरी के सौभाग्य से उसको वूल्ज़े-नामक एक बहुत योग्य व्यक्ति चांसलर (Chanceller) के पद के लिये मिल गया। चांसलर नियुक्त होने से पहले यह यार्क का आर्च-बिशप (Arch Bishop of York) था। नीति-निपुण तथा अत्यंत परिश्रमी होने के कारण इसने इँगलैंड की उन्नति में बड़ा भारी भाग लिया। हेनरी अष्टम का आरंभिक इतिहास वास्तव में वूल्ज़े (Wolsey) का ही इतिहास है।

(१) हेनरी अष्टम तथा योरपीय शक्ति-संतुलन

हेनरी सप्तम के काल में योरपीय राजनीति में इँगलैंड का बहुत प्रवेश नहीं था। वूल्ज़े ने अपनी अपूर्व नीति से योरपीय राजनीति में इँगलैंड को जो उच्च पद दिलाया, उसका उल्लेख आगे किया जायगा। हेनरी के राज्य-सिंहासन पर बैठते ही, 'वेनिस' (Venice) को नष्ट करने के उद्देश से, उत्तरीय इटली का राजा लूइस और नेपल्ज़ का राजा फर्दिनंद परस्पर मिल गए। सम्राट् मैक्समिलियन ने इन दोनों राजों का साथ दिया। इस प्रकार संपूर्ण योरप की मुख्य-

मुख्य शक्तियाँ वेनिस के अधःपतन के लिये प्रयत्न करने लगीं। वेनिस के राजनीतिज्ञ भी शांत नहीं थे। उन्होंने कई वर्षों के लगातार परिश्रम के अनंतर, १५११ में, कैंब्रे (Pact of Cambrey) के संघटन को तोड़ दिया; फर्दिनंद, मैक्समिलियन तथा पोप को अपने साथ मिला लिया तथा इस संघटन को 'पवित्र संघटन' (Holy League) का नाम दिया। वीनस के राजनीतिज्ञों की चतुरता से फ़्रांस निःसहाय हो गया। फ़्रांस को नीचा दिखाने के लिये इँगलैंड ने भी 'पवित्र संघटन' का ही साथ दिया। वूल्ज़े ने अथक श्रम से सेना तथा रुपया एकत्र किया और वह फ़्रांस पर आक्रमण करने का अवसर देखने लगा।

१५१२ में संपूर्ण योरप युद्ध की रंगभूमि हो गया। हेनरी ने भी स्पेन के उत्तर में फ़्रांस के प्रदेश को जीतने के लिये 'मार्क़िस डॉर्सेट्' (Marquise of Dorset) के आधिपत्य में सेना भेजी, परंतु उसका कुछ भी फल न निकला। १५१३ में वूल्ज़े तथा हेनरी आंग्ल-सेना लेकर स्वयं ही फ़्रांस गए। इन्होंने एड़ी के युद्ध (Battle of the Spurs) में फ़्रांसीसी सेना को पराजित किया और थिरान तथा तूर्नोई (Tourney) के नगर अपने हस्तगत कर लिए। इसी समय फर्दिनंद, नावर तथा पोप के

संघटन ने मीलान (Milan)-नगर को फ़्रांस से छीन लिया।

सोलहवीं सदी में ब्रिटिश-द्वीप

आंग्लों से अपना पीछा छुड़ाने के लिये फ़्रांस ने स्कॉटलैंड को भड़का दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि हेनरी अष्टम का साला होते हुए भी जेम्स चतुर्थ ने इँगलैंड पर आक्रमण कर दिया और बहुत-से आंग्ल-दुर्गों को हस्तगत कर लिया। इस विपद्काल में सर्रे के अर्ल (Earl of Surrey) ने एक आंग्ल-सेना के साथ स्कॉटलैंड के राजा को आगे बढ़ने से रोकना चाहा। 'फ़्लॉडन-क्षेत्र' (Flodden Field) पर एक भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें जेम्स चतुर्थ ससैन्य मारा गया। इस महान् वीरतामय कार्य के लिये हेनरी ने सर्रे को नार्फ़ाक का ड्यूक (Duke of Norfolk) बना दिया।

फ़्लॉडन-क्षेत्र के युद्ध के अनंतर स्कॉटलैंड का शासन मार्गरैट ट्यूडर (Margaret Tudor) करती रही। इसने हेनरी अष्टम के साथ मित्रता का व्यवहार रक्खा। इन्हीं दिनों पोप जूलियस (Pope Julius II) द्वितीय स्वर्ग-वासी हो गया था। और 'लियो दशम' पोप बन गया था। यह युद्ध के विशेष पक्ष में न था। फ़्रांस का राजा लूइस (Louis) द्वादश वृद्ध था। यह अपने अंतिम दिन शांति ही में काटना चाहता था। परिणाम यह हुआ कि १५१४ में इँगलैंड ने फ़्रांस से संधि कर ली। हेनरी ने अपनी छोटी बहन मेरी का विवाह लूइस से कर दिया।

सात वर्ष तक योरप तथा इँगलैंड में शांति रही। इसके अनंतर सम्राट् 'चार्ल्स' (Charles) ने योरप में अनंत शक्ति प्राप्त कर ली। स्पेन (Spain), नीदरलैंड (Netherlands) तथा जर्मनी (Germany) आदि के राज्य इसी के एकछत्र शासन में आ गए।

जर्मनी स्पेन

फर्दिनंद(Ferdinand) + इज़बेला (Isabella)
(कैस्टाइल की शासिक)

मैक्सिमिलियन + स्त्री मेरी (बरगंडी की डचेज —
Deeches of Burguny)

आर्च ड्यूक फिलिप (Arch Philip) + स्त्री जौना (Joana) कैथराइन (Catherine)

चार्ल्स पंचम (Charles V) (हेनरी अष्टम की स्त्री)

चार्ल्स पंचम (Charles V) को मैक्सिमिलियन की मृत्यु होने पर जर्मनी और फर्दिनंद की मृत्यु होने पर स्पेन प्राप्त हुए नीदरलैंड का प्रदेश उसका था ही। फ्रांस का राजा फ्रांसिस प्रथम इस प्रबल सम्राट् के विरुद्ध इँगलैंड की सहायता प्राप्त करना चाहता था। चार्ल्स पंचम भी हेनरी से मित्रता का व्यवहार रखने का इच्छुक था। नीति-निपुण वूल्ज़े ने दोनों ही राजों को खूब छकाया। फ्रांसिस ने हेनरी का (Bolougne) के

समीप ख़ूब स्वागत किया। जिस स्थान पर स्वागत किया गया था, वह अपनी चमक-दमक के कारण 'स्वर्ण-वस्त्रीय-क्षेत्र' के नाम से पुकारा जाता है।

योरपीय शक्ति-संतुलन की नीति चिरकाल तक नहीं चल सकी। वूल्ज़े की इच्छा न होते हुए भी हेनरी ने लोभ-वश चार्ल्स का साथ दे दिया और फ़्रांस को लूटने का अवसर देखने लगा। १५२१ से १५२६ तक चार्ल्स तथा फ़्रांसिस के बीच भयंकर युद्ध होता रहा। १५२५ में फ़्रांसीसी अश्वारोही अल्प्स को पार करके मीलान-विजय के लिये रवाना हुए। अभी मीलान की विजय पूर्ण नहीं हुई थी कि फ़्रांसिस 'पेविया' (Pavia) में चार्ल्स के हाथ क़ैद हो गया। इस घटना के होते ही वूल्ज़े ने हेनरी को चार्ल्स के विरुद्ध हो जाने की सलाह दी, क्योंकि यदि वह ऐसा न करता, तो चार्ल्स अधिक प्रबल हो जाने के कारण इँगलैंड पर भी आक्रमण कर सकता था। यह शक्ति-संतुलन-नीति के विरुद्ध था, क्योंकि इस नीति का उद्देश्य तो यही था कि फ़्रांस या स्पेन परस्पर अधिक प्रबल न होने पावे और इँगलैंड पर आक्रमण करने के योग्य बन बैठे। सारांश यह कि इँग-लैंड इनमें से जिस देश को दूसरे से निर्बल पड़ते देखता, उसी को सहायता देकर शक्ति में दूसरे के बराबर कर देता

था। हेनरी ने वूल्ज़े का कहना मान लिया और फ़्रांस से मित्रता कर ली। १५२६ में चार्ल्स ने फ़्रांसिस को क़ैद से मुक्त कर दिया। इटली के राजों ने तथा पोप ने फ़्रांसिस का साथ दिया और पवित्र संघटन के सदृश ही एक दूसरा संघटन बनाया।

चार्ल्स की शक्ति भी अपरिमित थी। इन सब संघटनों के होते हुए भी उसने रोम पर विजय प्राप्त की और पोप को क़ैद कर लिया। इस घटना से संपूर्ण योरप में तहलक़ा मच गया। परंतु कोई कर ही क्या सकता था? १५२६ में फ़्रांसिस ने चार्ल्स को इटली का स्वामी मान लिया और कैंब्रे की संधि के द्वारा (Treatyof Cambray) युद्ध बंद कर दिया।

(२) इँगलैंड की आंतरिक अवस्था

हेनरी अष्टम के स्वेच्छाचारित्व तथा वूल्ज़े के महत्त्व से बहुत-से नोबुल रुष्ट थे। इन असंतोषियों का मुखिया बाकिंघेम का (Duke of Buckingham) ड्यूक एडवर्ड था। यह मूर्ख, स्वार्थी तथा अभिमानी था। राजा के विषय में इसके मन में जो कुछ आता, बक देता था। १५२१ में हेनरी ने इसे सहसा पकड़वा लिया और देश-द्रोह का अपराध लगाकर फाँसी पर चढ़ा दिया। इस

घटना से नोबुल लोगों में हेनरी का आतंक छा गया। किसी को भी उसके विरुद्ध चूँ करने का साहस न हुआ। फ्रांसीसी युद्ध में धन अधिक व्यय हो जाने के कारण राज-कोष धन-शून्य हो गया था। १५१२ की पार्लिमेंट ने उसको यथेष्ट धन दे दिया। इसका कारण यह था कि लोक-सभा को बने अभी थोड़े ही दिन हुए थे, अतः वह राजा के पक्ष में ही थी। १५२२ तथा १५२३ में राजा को और अधिक रुपयों की आवश्यकता हुई, परंतु इस बार पार्लिमेंट ने उसको यथेष्ट रुपया नहीं दिया। इससे क्रुद्ध होकर उसने अगले छः वर्ष तक पार्लिमेंट का अधिवेशन ही नहीं किया।

धन की अधिक आवश्यकता के कारण हेनरी तथा वूल्जे ने १५२५ में प्रत्येक आंग्ल से उसकी आय का $\frac{1}{6}$ भाग ऋण के तौर पर लेना प्रारंभ किया। इस प्रकार के ऋणों को रिचर्ड तृतीय के काल में ही नियम-विरुद्ध ठहरा दिया गया था। हेनरी ने अपनी धूर्तता संपूर्ण दोष वूल्जे पर ही थोप दिया। इससे नोबुल लोगों के सदृश ही प्रजा भी वूल्जे से रुष्ट हो गई।

(क) विद्योद्धार

योरप में ईसाई मत फैलने के पूर्व यूनान, इटली, जर्मनी आदि

सभी देशों में देवी-देवतों का पूजन होता था और यूनान तथा रोम (इटली) के ग्रीक और लैटिन-साहित्य के उत्तमोत्तम ग्रंथों में इन्हीं देवी-देवतों की चर्चा थी। जब योरप में ईसाई-धर्म का प्रचार हुआ, तो इन ग्रंथों का पढ़ना धर्म-विरुद्ध समझा जाने लगा। पादरियों ने अपना प्रभाव जमाने के लिये सर्वसाधारण को मूर्ख रखना ही उचित समझा। लोग बाइबिल भी नहीं पढ़ने पाते थे। इस ज़माने में विद्या का लोप हो जाने से वह अंधकार का समय (Dark ages) कहलाया।

कई शताब्दियों तक यही हाल रहा और पोप-लीला का ख़ूब ज़ोर बढ़ा। पर यूनान के कुछ विद्वान् ग्रीक-साहित्य का परिशीलन करते ही रहे। उन दिनों यूनान पूर्वी रूमी साम्राज्य का एक भाग था। पीछे से ८ वीं शताब्दी में जब तुर्कों ने पूर्वी रूमी साम्राज्य की राजधानी कुस्तुंतुनियाँ (Constanti) nople) को जीत लिया, तो यूनानी लोग भी उनकी प्रजा बन गए। इसके पश्चात् यूनानी विद्वान भागकर फ्लारेंस (Flore-nce) आदि इटली के प्रांतों में जा बसे, उनकी संगति से उन प्रांतों में प्राचीन यूनानी-साहित्य का पठन-पाठन फिर से चल निकला। इसी का नाम विद्योद्धार (Rennaisance or Revival of Learning) हुआ। योरप के अन्य देशों के विद्या-प्रेमियों ने इटली जा-जाकर

ग्रीक-साहित्य का अध्ययन किया। साथ ही इटली के प्राचीन लैटिन-साहित्य का अध्ययन भी होने लगा। इँगलैंड से काले (Collet) ने जाकर ग्रीक-भाषा और साहित्य का ज्ञान प्राप्त किया। हालैंड का ईरासमस (Erasmus) ग्रीक-साहित्य सीखकर इँगलैंड आया और केंब्रिज-विश्वविद्यालय में उस साहित्य का अध्यापक नियुक्त किया गया। उसी से सर-टामस मोर(Sir Thomas More)ने, जो हेनरी अष्टम के काल में उच्च राज-कर्मचारी था, ग्रीक-भाषा और साहित्य सीखा। इसी प्रकार योरप के देश-देश में ग्रीक विद्वान् दिखाई देने लगे।

(ख) धर्मोद्धार

स्मरण रहे कि बाइबिल सबसे पहले इब्रानो-भाषा में लिखी गई थी और पीछे-से उसका अनुवाद ग्रीक में हुआ था। इसी से इँगलैंड आदि देशों की जनता बाइबिल नहीं पढ़ सकती थी। पादरी लोग अपने यजमानों को मनमाना धर्म, जिससे उन्हें लाभ था, सिखाते थे। पादरियों के सिखाए हुए धर्म का बाइबिल में कहीं पता न था। ईसामसीह ने कहीं उपदेश नहीं दिया था कि स्वर्ग के द्वार की कुंजी पोप और उनके पादरियों के हाथ में है, और जो लोग उन्हें दान-दक्षिणा देंगे, वही मरने पर स्वर्ग में प्रवेश कर सकेंगे। पर अपना धर्म-ग्रंथ बाइबिल न पढ़ सकने से लोग यह नहीं जान सकते थे। पादरी लोग

जैसा सिखाते, उसी को वे धर्म मान बैठे थे। इसी से ये लोग अपने अनुयायियों को न तो बाइबिल का अनुवाद मातृ-भाषा में करने देते और न उसे पढ़ने ही देते थे।

अब जिन लोगों ने ग्रीक-भाषा और साहित्य का अध्ययन किया, उन्हें ग्रीक-बाइबिल का पढ़ना सहज हो गया। देश-देश में विद्वानों ने छिपे-छिपे बाइबिल का अच्छा अध्ययन किया। इन लोगों को मालूम हुआ कि ईसाई जनता जिन बातों को धर्म समझे बैठी है, वे बाइबिल में कहीं नहीं हैं। इस तरह वे पोप और पादरियों की धूर्त लीला तो समझ गए; पर उनको इतना साहस न हुआ कि इसका भंडा-फोड़ करें।

निदान उस समय के पोप ने रोम में एक विशाल धर्म-भवन (गिरजा) बनवाने की ठानी और उसका सारा ख़र्च श्रद्धालु ईसाइयों से वसूल करना चाहा। पोप ने कई पादरी देश-देश भेजे। ये लोग जनता को समझाते कि तुम जितना धन दोगे, उतने ही पुण्य के भागी होगे। इन लोगों ने रसीदें तैयार कीं और उन्हें खुल्लमखुल्ला बेचने लगे। लोग अपने पाप-मोचन की आशा से इन्हें ख़रीदने भी लगे। ये ही पादरी जर्मनी के उस ग्राम में पहुँचे, जहाँ मार्टिन लूथर नाम का एक पादरी रहता था। उससे इन लोगों ने इस कार्य में

सहायता माँगी। लूथर ने बाइबिल अच्छी तरह पढ़ी थी। वह इसे निरी धूर्तता समझता था। इसलिये उसने सत्य के लिये पोप का विरोध उठाया। जर्मनी के कई राजों ने उसका समर्थन किया और इस प्रकार एक नया पोप-विरोधी संप्रदाय खड़ा हो गया। धीरे-धीरे यह अन्य देशों में भी बढ़ता गया और प्रोटेस्टेंट (Protestant) अर्थात् विरोध करनेवाला कहलाया, क्योंकि पुराना मत रोमन कैथलिक कहलाता था और उसके माननेवाले कैथलिक (Catholic) कहलाते थे।

इस प्रकार योरप में विद्योद्धार होने के कारण ही धर्मोद्धार (Reformation) होना संभव हुआ।

हेनरी अष्टम को अपनी विद्या का अभिमान था। उसने लैटिन में, पोप के पक्ष में, एक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक को देखकर पोप ने हेनरी को धर्म-रक्षक (Defender of the Faith) की उपाधि दी। योरप के अन्य देशों में जिस शीघ्रता से धार्मिक परिवर्तन हो रहा था, इँगलैंड ने उसमें भाग नहीं लिया। इँगलैंड तो पूर्ववत् धीरे-धीरे उन्नति करता हुआ चिरकाल में अपने-आप ही प्रोटेस्टेंट मत में परिवर्तित हो गया।

(ग) कैथराइन का तलाक़ और वूल्जे का अधःपतन

'कैथराइन' हेनरी से पाँच वर्ष बड़ी थी। इसकी सब संतानें

मर चुकी थीं, केवल 'मेरी' (Mary) नाम की एक कन्या ही बची थी। हेनरी को पुत्र की इच्छा थी। अतः वह कैथराइन को तलाक़ देकर 'एन बोलीन' (Anne Boleyn) से विवाह करना चाहता था। मध्य-काल में यौरपीय देशों में तलाक़ की विधि प्रचलित नहीं थी। १५२७ में हेनरी ने पोप क्लिमंट सप्तम (Clement VII) से प्रार्थना की कि तुम मुझको कैथराइन के तलाक़ की आज्ञा दे दो। पोप ने इस कार्य में टालमटोल करनी प्रारंभ की। अंत को हेनरी ने तंग आकर 'एन बोलीन' से विवाह कर लेने का दृढ़ निश्चय कर किया। वूल्ज़े इस विवाह का विरोधी था, अतः हेनरी ने उसको चांसलर-पद से हटा दिया और उसकी बहुत-सी संपत्ति भी छीन ली। वूल्ज़े ने राजा को वचन दिया कि मैं यार्क में रहते हुए शांति मे अपने अंतिम दिन व्यतीत करना चाहता हूँ। यार्क में पहुँचकर उसने अपना प्रण तोड़ दिया और चांसलर बनने का पुनः प्रयत्न किया। इससे हेनरी ने उस पर 'देश-द्रोह' का दोष लगाया और उसको लंदन में उपस्थित होने की आज्ञा दी। लंदन को जाते हुए स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण, १५३० के नवंबर में, लीस्टर (Leicester) के गिरजा-घर में, वूल्ज़े का देहांत हो गया और उसके देहांत के साथ ही हेनरी के शासन-काल का अर्द्धभाग भी समाप्त हो गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५०६	हेनरी अष्टम का राज्याधिरोहण (Accession of Henry VIII)
१५११	पवित्र संघटन (The Holy League)
१५१३	एड़ी तथा फ़्लॉडन-क्षेत्र की लड़ाइयाँ (The battles of Spurs and Flodden)
१५१५	युटोपिया-नामक ग्रंथ का मुद्रण
१५१७	जर्मनी में धार्मिक परिवर्तन का आरंभ (The Reformation in Germany)
१५१६	चार्ल्स पंचम सम्राट् बना (Charles V as Emperor)
१५२१-१५२५	फ़्रांस से युद्ध (The French War)
१५२५	बार्किंघम का अधःपतन (Fall of Bukingham)
१५२५	पेविया (Pavia) की लड़ाई
१५२७	कैथराइन को तलाक़ देने के लिये हेनरी का पोप से पूछना
१५२६	वूल्जे का अधःपतन

चतुर्थ परिच्छेद

हेनरी अष्टम और धर्म-सुधार

वूल्ज़े के देहांत के अनंतर भी हेनरी के सिर पर कैथराइन के तलाक़ का भूत पूर्ववत् ही चढ़ा रहा। पोप को अपने पक्ष में करने के लिये उसने फ़्रांस के राजा फ़्रांसिस से मित्रता करने का प्रयत्न किया। परंतु जब इस कार्य में वह सफल न हुआ, तो उसने योरपीय चर्चों से तलाक़ के औचित्य तथा अनौचित्य का निर्णय करवाया। जर्मनी के चर्चों ने हेनरी के विरुद्ध सम्मति दी और पोप ने भी उसका पक्ष नहीं लिया। इस कठिन दशा में उसने आंग्ल-पार्लिमेंट तथा चर्च की धार्मिक सभा का अधिवेशन किया। उसने दोनों ही सभाओं में परस्पर कलह करवाना चाहा, परंतु इस कार्य में भी वह निष्फल-प्रयत्न हुआ।

(१) हेनरी का स्वेच्छाचारित्व

टॉमस क्रांवल (Thomas Cromwell) एक लुहार का पुत्र था। इसने अपने बाहुबल से बड़ी उन्नति कर ली और अंत तक वूल्ज़े का साथ दिया। अतः संपूर्ण आंग्ल-जनता इसको विश्वास-पात्र और स्वामि-भक्त सेवक समझती थी। एक दिन एकांत में बातें करते हुए हेनरी को इसने सलाह दी

कि आप स्वयं शक्ति प्राप्त कीजिए और कैथराइन को तलाक़ दे दीजिए। क्रांवल की यह बात हेनरी की समझ में आ गई। इसके अनंतर इसी को लक्ष्य बनाकर हेनरी ने कार्य प्रारंभ किया। उसने पार्लिमेंट में बहुत-से नियम पास करवाकर अपने को स्वेच्छाचारी बना लिया। एक ही पार्लिमेंट १५२६ से १५३६ तक लगातार बैठती रही। पार्लिमेंट की प्रथम बैठक के समय इँगलैंड पुराना था और अंतिम बैठक के समय नवीन हो गया। यह महान् क्रांति कैसे आ गई, अब इसी का उल्लेख किया जायगा।

आरंभ में हेनरी ने 'प्रिमुनायर' के नियम की ओर पार्लिमेंट का ध्यान खींचा और पादरियों से कहा कि तुमने वूल्ज़े को पोप का प्रतिनिधि मानकर एडवर्ड तृतीय के राज्य-नियम को भंग किया है। इस पर पादरी लोग डर गए और उन्होंने उसको बहुत-सा रुपया जुर्माने के तौर पर दिया। इससे संतुष्ट न होकर हेनरी ने अपने को आंग्ल-चर्च का मुखिया (Supreme-head of the English Church) नियुक्त करवाया।

आंग्ल-चर्च का स्वामी बनते ही उसने पोप को धमकाना शुरू किया और उसके विरुद्ध बहुत-से नियम पास करवाए। उसने १५३२ में, राज्य-नियम के द्वारा, पादरियों की प्रथम आय को पोप के स्थान पर स्वयं लेना आरंभ किया। यही

नहीं, १५३३ में अपील-नियम (Act of Appeals) के द्वारा उसने संपूर्ण आंग्ल-अभियोगों का पोप के पास निर्ण-यार्थ भेजना 'देश-द्रोह' ठहराया। इसी प्रकार १५३४ में मुख्यत्व-नियम (Act of Supremacy) के अनुसार पोप को मुखिया मानना भी देश-द्रोह में सम्मिलित हो गया। यह स्पष्ट ही है कि इन नियमों को पास करवाकर हेनरी कैसा स्वेच्छाचारी हो गया।

एन बोलीन टॉमस हावर्ड कार्डिनल वूल्ज़े

वूल्ज़े की मृत्यु के अनंतर आर्च-बिशप के पद पर टॉमस क्रैनमर (Thomas Cranmer) नियुक्त किया गया। यह बहुत विद्वान् था। हठी न होने के कारण यह प्रायः अपनी

सम्मति बदल देता और दूसरे के कहने के अनुसार चलने लगता था। पोप से अपनी इच्छा पूर्ण होते न देखकर हेनरी ने 'एन बोलीन' से चुपचाप विवाह कर लिया, कैथराइन को तलाक़ दे दी और आर्च-बिशप को इस बात पर विवश किया कि वह कैथराइन के तलाक़ को चर्च-सभा (Church-Council) द्वारा नियमानुकूल ठहरा दे। चर्च-सभा को भी कैथराइन के तलाक़ को उचित ठहराना पड़ा, क्योंकि ऐसा न करने से उसके पास बचने का और उपाय ही कौन-सा था? यह सारा मामला पोप के पास ले जाना असंभव था और जो ऐसा करता भी, उसको अपील-नियम के अनुसार फाँसी पर चढ़ना पड़ता। वास्तविक बात तो यह थी कि हेनरी ने अपनी चतुराई से आंग्ल-चर्च को रोम से सर्वदा के लिये पृथक् कर दिया और पोप की शक्ति स्वयं प्राप्त करके वह स्वेच्छाचारी बन गया।

(२) हेनरी का धर्म-परिवर्तन

हेनरी के ऊपर-लिखे स्वेच्छा-पूर्ण कार्यों से कुछ आंग्ल-विद्वान् असंतुष्ट थे। जान फ़िशर (John Fisher) तथा सर टॉमस मोर (Sir Thomas More) इन असंतोषियों के प्रधान थे। १५३३ के अंत में एन बोलीन के 'एलिज़बेथ' (Elizabeth)-नामक एक कन्या उत्पन्न हुई।

इस कन्या को आंग्ल-रानी बनाने के उद्देश से हेनरी ने, १५३४ में, 'उत्तराधिकारित्व-नियम' (Act of Succession) पास करवाया और एलिज़बेथ को राज्य-नियम द्वारा आंग्ल-चर्च का मुखिया तथा आंग्ल-राज्य की वास्तविक अधिकारिणी नियुक्त किया। यही नहीं, उसने एक नवीन राज-द्रोह-नियम (Treason Act) पास किया, जिसके अनुसार राजा तथा उसकी उपाधियों का अपलाप करनेवाले को मृत्यु-दंड दिया जा सकता था। मोर तथा फ़िशर (More and Fisher) ने इन नियमों का विरोध किया। परिणाम यह हुआ कि इन दोनों को ही फाँसी पर चढ़ना पड़ा।

हेनरी को रुपयों की आवश्यकता थी, गिरजाघरों की संपत्ति लूटकर उसने रुपया प्राप्त करने का यत्न किया। इस उद्देश की पूर्ति के लिये उसने टॉमस क्रांवल को अपना विकर जेनरल (Vicar General) नियुक्त किया। उन दिनों आंग्ल-विहारों में बहुत-सी बुराइयाँ विद्यमान थीं। भिक्षु तथा भिक्षुनियों के अविवाहित रहने के कारण व्यभिचार की कमी नहीं थी। १५३५ में क्रांवल ने इन विहारों (Abbeys and Nunneries) की आंतरिक अवस्था का पता लगाने के लिये बहुत-से राज्याधिकारी भेजे। उनकी सारी सूचनाएँ १५३६ की पार्लिमेंट में पेश की गईं। इस पर पार्लिमेंट ने २०० पाउंड

से न्यून वार्षिक आयवाले विहारों को तोड़ देने का क़ानून पास कर दिया। साथ ही उसने यह भी स्वीकृत किया कि टूटे हुए विहारों की संपत्ति राजा की ही संपत्ति समझी जाय।

छोटे-छोटे विहारों का नाश होते देख आंग्ल-जनता में असंतोष फैल गया। लिंकनशायर तथा यार्कशायर में विद्रोह हो गया। इसका कारण यह था कि इन विहारों से ग़रीब जनता को लाभ था, उसका उदर-पोषण होता था। इस विद्रोह को आंग्ल-इतिहास में 'पिल्प्रिमेज ऑफ़ ग्रेस' (The Pilgrimage of Grace) के नाम से पुकारते हैं। हेनरी ने नार्फ़ाक के ड्यूक को विद्रोह शांत करने के लिये भेजा। उसने विद्रोहियों को समझा-बुझाकर शांत किया और उनको वचन दिया कि तुम्हारी प्रार्थनाओं को राजा मान लेगा। ड्यूक के चले जाने पर अपनी इच्छाएँ पूर्ण होते न देखकर विद्रोहियों ने पुनः विद्रोह कर दिया। हेनरी ने सेना भेजकर विद्रोह शांत किया और विद्रोहियों के नेताओं को मरवा डाला। उत्तर में पुनः विद्रोह न हो, इस उद्देश से उत्तरीय प्रांतों के निरीक्षणार्थ उसने 'उत्तरीय समिति' (Council of North) नाम की एक समिति स्थापित कर दी कि वह विद्रोहों को शांत करती रहे।

उत्तरीय विद्रोह के अनंतर हेनरी ने बड़े-बड़े विहारों तथा

गिरजाघरों को भी तोड़ना प्रारंभ किया। इस कार्य में उसने बहुत-से उपायों का सहारा लिया। कभी-कभी वह किसी पादरी पर उत्तरीय विद्रोह में सम्मिलित होने का दोष लगाता और उसके विहार को तोड़ देता था। कभी-कभी कुछ विहारों की संपत्ति इस अपराध पर भी लूट लेता था कि वे धूर्तता करके जनता के रुपए लूटते हैं।

धार्मिक विषयों में राजा की श्रद्धा न देखकर क्रैनमर तथा क्रांवल ने प्रोटेस्टेंटधर्मावलंबियों को ही शनैः-शनैः संपूर्ण चर्चों का मुखिया बनाना प्रारंभ किया। उन्होंने 'नवीन बाइबिल' को चर्चों में प्रचलित करने के लिये हेनरी से आज्ञा निकलवा दी। इन सब सुधारों के कारण जनता में भयंकर असंतोष फैल गया। १५३६ की पार्लिमेंट में हेनरी ने यह अधिकार प्राप्त कर लिया कि उसकी आज्ञाएँ भी राज्य-नियम ही समझी जायँ। उसने उसी पार्लिमेंट से धर्म-संबंधी छः धाराएँ* (The Statute of Six Articles) पास करवाईं, जिनका मानना संपूर्ण

---

* छः धाराए निम्न-लिखित हैं—

(१) लॉर्ड्ज़ सपर (Lords 'Supper) में मांस-शराब का उपयोग करना ईसा के मांस तथा रक्त का पान करना है।

(२) पादरियों का गुप्त रूप से अपना अपराध स्वीकृत करना ठीक है।

जनता के लिये आवश्यक था । ये धाराएँ प्रोटेस्टेंट-मत के विरुद्ध थीं । परिणाम यह हुआ कि प्रोटेस्टेंटों से क़ैदख़ाने भर गए । लैटिमर ने अपने को बिशप-पद से हटा लिया । भावी भयंकर विपत्ति आती देखकर क्रैनमर ने भी अपने परिवार को जर्मनी भेज दिया ।

हेनरी की इस गंगा-जमुनी नीति में जो विरोध देख पड़ता है, वह वास्तव में विरोध नहीं है । हेनरी ने पुराने कैथलिक-मत का त्याग नहीं किया था । उसकी लड़ाई केवल पोप से थी, क्योंकि उसने कैथराइन को तलाक़ देने में उसकी सहायता नहीं की थी। कैथराइन सम्राट् चार्ल्स पंचम की बुवा थी । उस कठिन काल में चार्ल्स, पोप का प्रधान समर्थक और योरप में प्रतापी सम्राट् था । यदि पोप हेनरी का कहना मानता, तो चार्ल्स से बुराई लेता । इसी कारण पोप इस विषय में टालमटोल करता गया । यह हेनरी को असह्य हो गया और उसने पोप से लड़ाई ठान दी ।

---

(३) पादरी लोग ब्रह्मचारी रहें ।

(४) व्रत रखना चाहिए ।

(५) निज का पूजा-पाठ करना आवश्यक है ।

(६) पादरियों के लिये परस्पर मिलकर धर्म पर विचार करना आवश्यक है ।

इँगलैंड पर जो पोप का धार्मिक अधिकार था, उसे छीनकर वह स्वतंत्र बन बैठा और उसने धर्मोद्धार-समर्थक जो-जो कार्य किए, वह इसलिये नहीं कि वह प्रोटेस्टेंट था। वह था तो कैथलिक, पर पोप को नीचा दिखाने के लिये उसने ऊपर-लिखे धर्म-परिवर्तन किए थे। इसी से उसकी नीति दुरंगी मालूम पड़ती है। प्रोटेस्टेंटों पर अत्याचार करना वह उचित समझता था, क्योंकि उसका मत वही पुराना कैथलिक मत था।

(३) हेनरी के विवाह तथा राज्य-प्रबंध

(क) विवाह

एन बोलीन के भी एक कन्या के अतिरिक्त कोई पुत्र नहीं हुआ। हेनरी को पुत्र की इच्छा थी ही। १५३६ में हेनरी ने एन बोलीन पर व्यभिचार का दोष लगाया और शीघ्र ही उसको फाँसी पर चढ़ा दिया। उसके अगले ही दिन उसने लेडी जेन सेमर (Seymour) से विवाह कर लिया। रानी जेन के १५३७ में एक पुत्र उत्पन्न हुआ। परंतु पुत्र की उत्पत्ति के बाद ही वह मर गई। पुत्रोत्पत्ति से पूर्व ही, मेरी के ही सदृश, एलिज़बेथ भी कामज (दोगली) ठहरा दी गई थी। हेनरी के पोप-विरोध के कारण चार्ल्स तथा फ्रांसिस (Francis), पोप की सहायता से, इँगलैंड पर आक्रमण करना चाहते थे। उसको इस महासंघटन से बचाने के लिये क्रांवल

(Cromwel) ने जर्मन राजकुमारों से मित्रता कर लेने की सलाह दी और एक जर्मन राजकुमारी 'एन' (Anne) से उसका विवाह भी करा दिया। एन बदसूरत थी और आंग्ल-भाषा नहीं समझती थी। अतः इस विवाह से हेनरी असंतुष्ट हो गया। उसने क्रांवल को फाँसी पर चढ़ा दिया और क्रांवल की फाँसी के पूर्व ही कैथराइन हावर्ड (Haward) से विवाह भी कर लिया। १५४२ में इसके भी अधःपतन की बारी आई और 'कैथराइन पार' (Catharine Parr) को हेनरी से विवाह करने का अवसर मिला। यह अतिशय बुद्धिमती थी। राजनीतिक मामलों में इसने हस्तक्षेप नहीं किया और इसीलिये हेनरी के जीवन-पर्यंत इसका अधःपतन नहीं हुआ।

(ख) राज्य-प्रबंध

जब तक स्कॉटलैंड का शासन उसकी बहन मार्गरैट के हाथ में रहा, तब तक हेनरी को उस ओर से कोई भय नहीं रहा। कुछ वर्षों के अनंतर उसका पुत्र जेम्स पंचम युवावस्था को प्राप्त करके राज्य-सिंहासन पर बैठा। यह फ़्रांसीसियों का मित्र था। अतः इसने इँगलैंड पर आक्रमण किया, परंतु १५४२ में 'साल्वेमास' (Solwaymass) की लड़ाई में मारा गया। जेम्स के 'मेरी' (Mary) नाम की एक कन्या थी। हेनरी

अष्टम ने मेरी का विवाह अपने पुत्र से करना चाहा और उसके लिये वह युक्तियाँ सोचने लगा।

स्कॉटलैंड के विद्वेष के समय फ़्रांस ने भी उसको बहुत कष्ट दिया। १५४४ में उसने चार्ल्स पंचम से मित्रता करके फ़्रांस पर आक्रमण कर दिया और 'बोलोन' (Bolougne) छीन लिया। इसके छुड़ाने के लिये फ़्रांस ने बहुत ही यत्न किया, परंतु कृतकार्य नहीं हो सका।

हेनरी के राज्य-काल में आयर्लैंड पर भिन्न-भिन्न नार्मन-बैरनों (Norman Barons) का प्रभुत्व था। ये लोग आंग्ल-राजा को अपनी शक्ति तथा राज्य देने में सहमत नहीं थे। जब हेनरी ने इनके अधिकार छीनने का यत्न किया, तो इन्होंने १५३५ में विद्रोह कर दिया। उसने विद्रोह को शीघ्र ही शांत कर दिया और आंग्ल-राजा को ही अपना राजा मानने के लिये बैरनों को विवश किया। इस कार्य के अनंतर उसने अपने नाम के साथ 'आयर्लैंड का राजा' (King of Ireland), ये शब्द भी जोड़ना प्रारंभ कर दिया। किंतु वेल्स (Wales) के मामले में वह आयर्लैंड की अपेक्षा अधिकतर सफल नहीं हुआ। उसने वेल्स के शासन के लिये 'वेल्स-सभा' (Council of Wales)-नामक समिति नियत की और उत्तम प्रबंध करने के उद्देश से उस प्रदेश को १३

मंडलों में विभक्त कर दिया। आजकल अन्य आंग्ल-प्रदेशों के सदृश ही वेल्स के भी प्रतिनिधि आंग्ल-पार्लिमेंट में आते हैं।

हेनरी का स्वास्थ्य कुछ समय से दिन-पर-दिन अधिक ख़राब हो रहा था। १५४७ में उसका देहांत हो गया। उसके राज्य की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५२६	धर्म-सुधार-संबंधी पार्लिमेंट के अधिवेशन का प्रारंभ
१५३३	अपील-नियम (Act of Appeals)
१५३४	मुख्यत्व-नियम (Act of Supremacy)
१५३५	फ़िशर तथा मोर की हत्या
१५३६	छोटे-छोटे गिरजाघरों तथा विहारों (Monasteries) का नाश
१५३६	बड़े-बड़े गिरजाघरों का नाश तथा छः धाराओं का नियम (The Statute of the 6 Articles)
१५४०	क्रांवल की हत्या
१५४२	साल्वेमास की लड़ाई
१५४४	बोलोन (Bolougne) की विजय
१५४७	हेनरी अष्टम की मृत्यु

पंचम परिच्छेद

एडवर्ड षष्ठ (१५४७–१५५३)

हेनरी अष्टम का लड़का एडवर्ड षष्ठ दस ही वर्ष का था, जब उसके पिता की मृत्यु हो गई। छोटी उम्र के कारण वह राज्य-कार्य सँभालने के अयोग्य था। हेनरी अपने मरने से पहले ही एक 'संरक्षक-सभा' (Council of Regency) बना गया था। उसने संरक्षक-सभा में प्राचीन तथा नवीन धर्म के अनुयायियों को समान संख्या में रक्खा था। यह इसीलिये कि कोई दल प्रबल होकर दूसरे दल पर अत्याचार न कर सके। हेनरी के मरने के बाद संरक्षक-सभा का नेता सॉमर्सेट का ड्यूक (Duke of Somerset) हर्टफ़ोर्ड (Hertford) बना। यह धार्मिक संशोधनों के पक्ष में था। इसका प्रबंध बहुत उत्तम नहीं था। इसी कारण कुछ मामलों में इंगलैंड को नीचा देखना पड़ा।

(१) सॉमर्सेट का राज्य-प्रबंध

सॉमर्सेट स्वभाव का अतीव दयालु तथा बोलचाल में मीठा था। उसकी वीरता में भी किसी को कुछ संदेह न था। वह नवीन धर्म का प्रचार बहुत अधिक चाहता था। हेनरी

अष्टम के समान वह शांतिप्रिय था। उसको विदेशी राष्ट्रों से युद्ध करना नापसंद था। यह होते हुए भी उसमें कुछ दोष थे। वह निर्बल-हृदय, हठी और अदूरदर्शी था। उसको इस बात का कुछ भी विवेक न था कि कौन-सा काम हो सकता है, और कौन-सा नहीं। यही कारण है कि तीन ही वर्ष के बाद उसको संरक्षक-सभा से हटना पड़ा। १५५२ में वह मार भी डाला गया।

एडवर्ड षष्ठ

स्कॉटलैंड का आक्रमण (१५४७ —) हेनरी अष्टम

मरने से पूर्व ही फ़्रांस तथा स्कॉटलैंड से संधि कर चुका था। किंतु कुछ घटनाओं के कारण सॉमर्सेट् को स्कॉटलैंड से लड़ना पड़ा। स्कॉच-रानी मेरी के संरक्षकों में से एक ने स्कॉच-प्रोटेस्टेंटों पर भयंकर अत्याचार किया। इससे स्कॉच लोगों ने विद्रोह कर दिया। विद्रोहियों को कैथलिक (Catholic) संरक्षक ने बुरी तरह से पराजित किया। इस पर उन्होंने सॉमर्सेट् से सहायता माँगी। सॉमर्सेट् एडवर्ड षष्ठ का विवाह स्कॉट लोगों की रानी मेरी से करना चाहता था। यह इसीलिये कि दोनों ही देश एक दूसरे से मिल जायँ।

इस उद्देश से सॉमर्सेट् ने स्कॉटलैंड पर चढ़ाई की और पिंकी (Pinkie)-नामक स्थान पर स्कॉच-सेनाओं को बुरी तरह से पराजित किया। स्कॉटलैंड को उसने ख़ूब लूटा और प्रजा को भी कष्ट पहुँचाया। इससे स्कॉच-जनता उससे बहुत ही अधिक नाराज़ हो गई।

पिंकी के संग्राम के बाद ही सॉमर्सेट् को कुछ एक कारणों से इँगलैंड को लौटना पड़ा। स्कॉच-जनता ने आंग्लों को तंग करने और चिढ़ाने के लिये अपनी रानी मेरी का विवाह फ़्रांस के राजकुमार से तय कर लिया और उसे वहीं भेज भी दिया। वहीं पर उसकी शिक्षा हुई। वह कैथलिक धर्म की अनन्य भक्त हो गई।

फ्रांसीसियों ने स्कॉच् लोगों का साथ दिया। उन्होंने बोलोन पर आक्रमण कर दिया। आंग्ल-सेनाओं ने बड़ी मुश्किल से बोलोन की रक्षा की। सॉमर्सेट के अधःपतन के अनंतर एक संधि द्वारा इँगलैंड ने फ्रांसीसियों को बोलोन लौटा दिया।

(२) सॉमर्सेट के धार्मिक सुधार

सॉमर्सेट ने नए धर्म के फैलाने का बहुत ही अधिक यत्न किया। वह इसको इँगलैंड का जातीय धर्म बनाना चाहता था। कैथलिक-धर्मावलंबी लैटिन-भाषा द्वारा प्रार्थना आदि धर्म-कार्य करते थे, जैसे हिंदू संस्कृत द्वारा करते हैं। लोक-सभा के अधिवेशन से पूर्व ही आंग्ल-भाषा के द्वारा राजकीय चर्च में प्रार्थना की जाने लगी। सारे देश में राज-कर्मचारी भेजे गए। इन्होंने गिरजों की मूर्तियाँ तोड़ डालीं। सारी-की-सारी खिड़कियों के वे शीशे तोड़ डाले गए, जिन पर संतों-महंतों की तसवीरें बनी हुई थीं। गार्डिनर तथा बानर (Gardiner and Bonner)-नामक बिशपों (Bishops) ने इस बात का विरोध किया। उन्होंने कहा कि ऐसा करने के लिये लोक-सभा की आज्ञा की जरूरत है। इस पर वे क़ैद कर लिए गए। नवीन लोक-सभा से सॉमर्सेट् ने कई बातें पास करवा लीं—

(१) हेनरी अष्टम ने नवीनप्र टेस्टेंट (Protestant)-धर्म के विरुद्ध जो राज्य-नियम बनाए थे, उनको रद करवादिया।

(२) छः धाराओं का राज्य-नियम हटा दिया।

(३) उन मठों तथा विहारों को भी गिरा दिया, जिनको हेनरी अष्टम ने नहीं गिराया था।

(४) गिरजों की अंध रीति-रस्में भी हटाई गईं। पादरियों को विवाह करने की आज्ञा दे दी गई। पुराने मतानुसार ख़ास-ख़ास दिनों में मांस खाना बंद था, सो यह नियम भी हटा दिया गया।

(५) एडवर्ड की प्रथम प्रार्थना-पुस्तक (Prayer-book) १५४९ में प्रचलित की गई। सब गिरजों में यही एक पुस्तक पढ़ी जाने लगी। इससे पहले गिरजों में भिन्न-भिन्न प्रार्थनाएँ होती थीं। क्रैनमर ने ही इस पुस्तक को तैयार किया था। इस काम में उसकी सफलता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उसकी पुस्तक को सभी किरानियों ने मंजूर कर लिया। उसकी भाषा बहुत ही मधुर है। इस पुस्तक को सभी गिरजों में समान-रूप से प्रचलित करने के लिये 'समानता का नियम' (Act of Uniformity) पास किया गया। जिन-जिन पादरियों ने इस नियम को न माना, वे क़ैद कर लिए गए।

ऊपर-लिखे धार्मिक परिवर्तनों से आंग्ल-जनता नाराज़ हो गई, क्योंकि सुधारों की भी कोई हद होती है। सॉमर्सेट ने इसी हद को पार कर दिया। इसका फल उसके लिये अच्छा न हुआ। साधारण आंग्ल-जनता नवीन सुधारों के बहुत पक्ष में नहीं थी। डेवनूशायर (Devonshire) के एक गाँव में जब आंग्ल-भाषा की प्रार्थना-पुस्तक चर्च में पढ़ी गई, तो लोगों ने पुस्तक को लैटिन-भाषा में पढ़ने के लिये पादरियों को बाधित किया। ठीक ऐसे ही समय में सॉमर्सेट् ने मूर्खता से गिरजों की कुछ जायदाद अपने निजी काम में लगाई। साथ ही एक श्मशान-भूमि को उजाड़कर और उसकी हड्डियाँ निकलवाकर दूर फिकवा दीं और वहाँ पर उसने एक महल बनवाया। इस पर दो प्रांतों के लोगों ने विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह बड़ी कठिनाई से शांत किया जा सका।

१५४९ में नार्फ़ोक (Norfolk) में विद्रोह हो गया। इस विद्रोह का कर्ता-धर्ता राबर्ट केट (Robert Ket)-नामक एक रंगसाज़ था। इस विद्रोह के बहुत-से कारण थे, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

(१) ज़मींदारों ने ऊन के व्यापार में अधिक लाभ देखकर खेतों को चरागाह बना दिया और मुख्य रूप से

भेड़ों को ही पालना शुरू कर दिया। ग़रीब किसान तथा असामी भूख के मारे इधर-उधर बेकार फिर रहे थे।

(२) मोर की 'युटोपिया' (Utopia)-नामक पुस्तक से आंग्लों की आँखें खुल गईं थीं । वे लोग ज़मींदारों की बुराइयाँ देखने और उनके प्रतिकार का उपाय सोचने लगे ।

(३) सॉमर्सेट् ने बहुत धार्मिक संशोधन कर दिए थे। वारिक (Warwick) के समीप, ओक-वृक्ष के नीचे, राबर्ट कैट ने अपना दरबार लगाया । उस दरबार में धार्मिक संशोधन पर विचार किया गया और राज्य से प्रार्थना की गई कि हमारी इच्छा पूरी की जाय । बहुत दिनों तक राबर्ट कैट के साथी नियम-पूर्वक डेरा डाले पड़े रहे । निदान जब राज्य ने उचित उत्तर न दिया, तो वारिक को उसने फ़तह कर लिया । शाही फ़ौज ने उसको हराना चाहा, परंतु वह आप ही बुरी तरह से हारी। इस पर कुप्रसिद्ध डडले (Dudley) के लड़के, डडले ने जर्मन तथा इटैलियन सिपाहियों के सहारे कैट को परास्त किया । कैट क़ैद करके मरवा डाला गया । इस विजय से डडले आंग्ल-जनता का प्रियपात्र बन गया और सॉमर्सेट् का स्थान लेने का यत्न करने लगा ।

सॉमर्सेट् का भाई टॉमस सेमर (Seymour) लोभी, मूर्ख

और जल्दबाज़ था। वह सामुद्रिक सेनापति था। इस पद से संतुष्ट न होकर उसने अपने भाई के विरुद्ध गुप्त मंत्रणा शुरू कर दी। इस गुप्त मंत्रणा का भेद लोक-सभा पर खुल गया। लोक-सभा ने उसको क़ैद करके मरवा डाला। आंग्ल-जनता में डडले ने यह संवाद फैला दिया कि इस हत्या में सॉमर्सेट् का ही मुख्य भाग है। इस बात के साथ-साथ निम्न-लिखित और बातें भी थीं, जिससे सॉमर्सेट् को संरक्षक-समिति से हटना पड़ा—

(१) सॉमर्सेट प्रजा का पक्ष लेता था, अतः ज़मींदार और ताल्लुक़ेदार लोग उससे बहुत अप्रसन्न थे।

(२) उसने धार्मिक संशोधनों में अति कर दी। लोग अभी इतने अधिक संशोधनों के लिये तैयार न थे।

(३) उसने हेनरी अष्टम के बनाए हुए ताल्लुक़ेदारों के अधिकारों को कम कर दिया।

(४) स्कॉच-रानी मेरी फ़्रांस में रहने लगी। एडवर्ड का उसके साथ का विवाह न तय हो सका। इस पर आंग्ल-जनता सॉमर्सेट् से नाराज़ हो गई।

(५) वह ताल्लुक़ेदार लोगों की कुछ भी परवा न करता था। उनसे उसका व्यवहार भी अच्छा न था। शक्ति प्राप्त करके वह अभिमानी हो गया था।

(६) चर्चों, मठों और कॉलेजों के गिरवाने से पादरी लोग सॉमर्सेट से बहुत ही जल-भुन गए थे ।

(७) वह फ़्रांस के साथ इँगलैंड की मित्रता न करा सका ।

इन ऊपर-लिखे कारणों से चतुर डड्ले को सॉमर्सेट् को नीचा दिखाने का मौक़ा मिल गया । उसने संरक्षक-समिति के सभ्यों को अपने पक्ष में कर लिया और सॉमर्सेट् को प्रधान-पद से हटवाकर वह आप संरक्षक-समिति का प्रधान बन गया ।

(३) डड्ले का राज्य-प्रबंध तथा धार्मिक संशोधन

सॉमर्सेट् को संरक्षक-सभा ने लंदन-टावर (Tower of London) में क़ैद कर दिया । यह एक क़िला था, जिसमें बड़े-बड़े लोग क़ैद किए जाते थे । तीन महीने के बाद लोक-सभा ने उसको क़ैद से छोड़ दिया और संरक्षक-समिति का सभ्य भी बना दिया । इस पर डड्ले ने उसको १५५२ में मरवा डाला ।

डडले ने फ़्रांस को बोलोन (Bolougne) का शहर देकर संधि कर ली । उसकी इच्छा थी कि फ़्रांसीसी राजपुत्री का विवाह एडवर्ड के साथ हो जाय । परंतु उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हुई ।

पुराने धर्मवालों का ख़याल था कि डड्ले उनके पक्ष में होगा । गार्डिनर तथा बॉनर ने प्रार्थना की कि हम क़ैद से

छोड़ दिए जायँ, परंतु डड्ले ने उनकी प्रार्थना पर कान तक न दिया। उसका ख़याल था कि नवीन धर्म का पक्ष न लेने से नए लॉर्ड उसका साथ छोड़ देंगे। यही कारण है कि १५४६ की लोक-सभा में उसने सबसे पहला राज्य-नियम (क़ानून) यही बनवाया कि गिरजों की मूर्तियाँ तोड़ दी जायँ। पादरी हीद, डे तथा अन्य कई एक प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पादरी क़ैद कर लिए गए, क्योंकि ये लोग पुराने धर्म को मानते थे।

गिरजों की जायदाद को लूटने का काम पहले ही की तरह जारी रहा। बहुत-से पुराने पादरी हटा दिए गए और उनके स्थान पर नए रक्खे गए। ऑक्सफ़ोर्ड तथा केंब्रिज के कॉलेजों के तोड़ देने की भी धमकी दी गई।

राजपुत्री मेरी को आज्ञा दी गई कि वह रोमन-कैथलिक मत के अनुसार पूजा-पाठ न करे। इस पर उसने उत्तर दिया कि जब तक मेरा भाई नाबालिग़ है, तब तक मैं किसी की भी आज्ञा को न मानूँगी। स्पेन के सम्राट् चार्ल्स ने मेरी का पक्ष लिया। आंग्ल-दूत को नए ढंग से पूजा-पाठ करने से रोका और इँगलैंड पर हमला करने की तैयारी करने लगा।

इँगलैंड में नवीन धर्मावलंबियों का ही ज़ोर था। क्रैनमर (Cranmer), रिड्ले (Rideley), डड्ले आदि लोग नवीन धर्म फैलाने को ही उत्सुक थे। उन्होंने प्रथम प्रार्थना-

पुस्तक का संशोधन करके द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक को तैयार किया। १५५२ में लोक-सभा ने द्वितीय पुस्तक को स्वीकृत कर लिया। जो प्रोटेस्टेंट इसके विरुद्ध थे, वे दबाए गए। इसी वर्ष एक और 'नवीन समानता-नियम' (Act of Uniformity) पास किया गया, जिसके अनुसार उन मनुष्यों को दंड मिलने लगा, जो द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक का विरोध करते थे।

क्रैनमर ने ४२ नियम बनाए, जिनका मानना सब प्रोटेस्टेंटों के लिये अनिवार्य था। १५५३ में, इन ४२ नियमों पर चलना सब आंग्लों के लिये आवश्यक ठहराया गया। इन नियमों का आधार लूथर (Luther) के विचार थे।

(४) राज्य के लिये नार्थंबलैंड का प्रयत्न

डडले अर्ल ऑफ़ वारिक तो पहले से ही था। अब संरक्षक-समिति का प्रधान बनने से वह ड्यूक ऑफ़ नार्थंबलैंड (Duke of Northumberland) भी बना दिया गया। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि हेनरी अष्टम के दो लड़कियाँ थीं—(१) मेरी और (२) एलिज़बेथ। हेनरी की वसीयत के अनुसार एडवर्ड षष्ठ के निःसंतान ही मर जाने पर क्रमशः मेरी तथा एलिज़बेथ को इँगलैंड का राज्य मिलना चाहिए था और एलिज़बेथ के बाद

हेनरी की बहन मार्गरैट की लड़की मेरी स्टुवर्ट (Mary Stuart) और उसके न होने पर लेडी जेन ग्रे (Lady Jane Grey) इँगलैंड के राज्य की उत्तराधिकारिणी थीं।

एडवर्ड के बाद डड्ले अपनी पुत्र-वधू लेडी जेन ग्रे को राज्य पर बिठाना चाहता था। इसने एडवर्ड से कहा कि यदि तुम्हारे पिता ने अपनी इच्छा से वसीयत की है, तो एक वसीयत तुम भी कर सकते हो। मेरी कैथलिक है, उसका इँगलैंड की रानी बनना ठीक नहीं। अतः लेडी जेन ग्रे को ही तुम्हारे बाद आंग्ल-राज्य-सिंहासन पर बैठना चाहिए।

चतुर डडले ने संरक्षक-सभा के प्रत्येक सभ्य को तथा क्रैनमर को अपनी सम्मति के अनुकूल कर लिया। वह लोक-सभा से भी यही बात मनवा लेता, परंतु छठी जुलाई को एडवर्ड का शरीरांत तपेदिक़ की बीमारी से हो गया। दो दिन तक उसकी मृत्यु छिपाई गई। १० तारीख़ को लेडी जेन ग्रे इँगलैंड की रानी घोषित कर दी गई।

एडवर्ड के समय में योरपीय राष्ट्र नए-नए देशों का पता लगाने की फ़िक्र में थे। उनकी देखा-देखी बिलोबी (Willoughby)-नामक एक आंग्ल ने भी रूस तक के सामुद्रिक मार्ग का पता लगाया। इसका वर्णन आगे चलकर किया जायगा।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५४७	एडवर्ड का राज्याधिरोहण, पिंकी की लड़ाई
१५४६	प्रथम प्रार्थना-पुस्तक, डेवन्शायर तथा नार्फ़ाक का विद्रोह
१५५२	द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक, सॉमर्सेट् का क़त्ल
१५५३	एडवर्ड षष्ठ की मृत्यु

षष्ठ परिच्छेद

मेरी (१५५३-१५५८)

सफ़क (Suffolk) तथा नार्थंबलैंड की चालाकी से एडवर्ड ने अपनी मृत्यु से पूर्व ही लेडी जेन ग्रे को इँगलैंड को रानी के तौर पर मान लिया था ; पर आंग्ल-जनता इस बात के लिये तैयार न थी। जेन ग्रे बहुत ही पढ़ी-लिखी थी। वह यूनानी, लातीनी तथा इटालियन-भाषा की पंडिता थी। यहूदी, काल्डियन तथा अरबी-भाषा को भी वह समझती थी। वह बहुत ही धर्मात्मा और कोमल-स्वभाव थी। माता-पिता की आज्ञा पर चलना वह अपना परम कर्तव्य समझती थी। अपने ससुर तथा पिता का कहना मानकर वह इँगलैंड की रानी बनी। परंतु उन दोनों ड्यूकों का आंग्ल-जनता में आदर न था। यही कारण है कि लोगों ने जेन ग्रे को रानी नहीं माना। वह १० ही दिन राज्य कर सकी। इसके बाद मेरी ट्यूडर आंग्ल-रानी बनी। नार्थंबलैंड जेन ग्रे को रानी बनाने के अपराध में क़ैद कर लिया गया।

रानी मेरी ट्यूडर

(१) कैथलिक मत के प्रचार में मेरी का उद्योग

मेरी कैथलिक थी। अतः वह अपने पिता तथा भाई के धार्मिक सुधारों पर पानी फेरना चाहती थी। राज्य पर बैठते ही उसने नार्फ़ाक, गार्डिनर, बॉनर आदि बिशपों को क़ैद से मुक्त किया। लेडी जेन ग्रे तथा उसके पति को उसने क़ैद में डाल दिया। प्रोटेस्टेंट-बिशपों को इँगलैंड से बाहर

निकाल दिया तथा और भी बहुत-से इसी प्रकार के काम किए, जो इस प्रकार हैं—

(१) बहुत-से पुराने चर्चों में पुरानी रीति-रिवाज़ के अनुसार पूजा-पाठ शुरू हो गया।

(२) क्रैनमर तथा लैटिमर (Latimer) लंदन-टावर में क़ैद किए गए।

(३) नवंबर में पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ। उसमें एडवर्ड षष्ठ तथा हेनरी अष्टम के धार्मिक संशोधन-संबंधी सभी राज्य-नियम हटा दिए गए।

(४) कार्डिनल पोल (Cardinal Pole) पोप के प्रति-निधि के तौर पर इँगलैंड पहुँचा। क्रैनमर के क़ैद होने पर यही आर्च-बिशप बन गया।

(५) हेनरी अष्टम के समय में पोप के विरुद्ध जो-जो राज्य-नियम बने थे, वे रद कर दिए गए।

मेरी का विवाह—लोक-सभा की इच्छा थी कि मेरी किसी आंग्ल-नोबुल के साथ ही शादी करे। परंतु चार्ल्स पंचम के समझाने पर उसने स्पेन के राजा फिलिप से शादी करना मंज़ूर किया। फ़िलिप मेरी से ११ साल छोटा था। वह पक्का कैथलिक था। १५५४ के जनवरी में मेरी ने फिलिप के साथ विवाह पक्का कर लिया। इससे आंग्ल लोग चिढ़ गए। सर

टॉमस याट (Wyatt) के नेतृत्व में कैंट (Kent) के लोगों ने विद्रोह कर दिया। बड़ी मुश्किल से मेरी ने इस विद्रोह को शांत किया। उसने लेडी एलिज़बेथ को क़ैद कर दिया और टॉमस याट को फाँसी पर चढ़ा दिया। फाँसी पर चढ़ते समय याट ने स्पष्ट शब्दों में यह कहा कि एलिज़बेथ का कुछ भी अपराध नहीं है, उसको तो क़ैद से छोड़ देना चाहिए। इस पर मेरी ने एलिज़बेथ को क़ैद से मुक्त कर दिया। इसके अनंतर एलिज़बेथ ने मेरी की ख़ूब सेवा-सुश्रषा करनी शुरू की और उसके साथ चर्च में भी जाने लगी।

(२) मेरी का प्रोटेस्टेंट लोगों को ज़िंदा जलाना

फ़िलिप तथा मेरी ने आपस में मिलकर प्रोटेस्टेंट लोगों को सताना शुरू किया। ४ फ़रवरी, १५५५ से लेकर १० नवंबर, १५५८ तक २८० मनुष्य जलाए गए ! इन लोगों के जलाने से भी प्रोटेस्टेंट मत का प्रचार इँगलैंड में नहीं रुका।

रिड्ले तथा लैटिमर—लैटिमर प्रोटेस्टेंट मत में दृढ़ था। इसको योरप में भाग जाने का काफ़ी मौक़ा था। लोग इसका बहुत ही अधिक आदर-सत्कार करते थे। यह लंदन पहुँचा। रिड्ले तथा क्रैनमर भी इसको वहीं पर मिले। १५५५ में तीनों ही ऑक्सफ़ोर्ड में कैथलिक लोगों से शास्त्रार्थ करने के लिये भेजे

गए। बड़ा भारी वाद-विवाद हुआ, परंतु उसका कुछ भी फल न निकला। ऑक्टोबर की पहली तारीख़ को रिडूले तथा लैटिमर् को मृत्यु-दंड दिया गया। इन्होंने बड़ी शांति तथा धैर्य से मृत्यु-दंड को स्वीकार किया और मरते समय तक किसी प्रकार के भी निराशा या दुःख के चिह्न नहीं प्रकट किए।

क्रैनमर—ऑक्सफ़ोर्ड में क्रैनमर पाँच महीने तक लगातार क़ैद रहा। क्रैनमर के अपराध का निर्णय पोप के सिवा और कोई भी नहीं कर सकता था। क्रैनमर के स्थान पर पोप ने पोल को नियत किया और १५५६ में क्रैन-मर को मृत्यु-दंड दिया गया। क्रैनमर भीरु-स्वभाव का था, उसका दिल बहुत ही कमज़ोर था। यही कारण है कि वह कैथलिक धर्म की ओर कुछ-कुछ झुक गया। इस पर भी उसको मृत्यु-दंड दिया गया। उसको क़त्ल करने से पहले एक भारी सभा बुलाई गई। मेरी का ख़याल था कि वह उस भरी-सभा में अपने धर्म-परिवर्तन की बात मान लेगा। परंतु उसने ऐसा नहीं किया। भरी-सभा में उसने ये शब्द कहे कि अमुक हाथ ने ही ये सब पाप-कार्य किए हैं, अतः सबसे पहले मैं इसी हाथ को जला डालूँगा। उसने जो कुछ कहा, उसे बड़ी वीरता-पूर्वक करके दिखा दिया। इसका आंग्ल-जनता पर बहुत ही

अच्छा असर हुआ। लोगों की महानुभूति शहीदों के ही साथ हो गई और वे कैथलिक मत को घृणा की दृष्टि से देखने लगे।

इन ऊपर-लिखी हत्याओं से रानी मेरी तथा उसके सलाहकारों का नाम बदनाम हो गया। इसी से वह (Bloody)—'ख़ूनी मेरी' के नाम से प्रसिद्ध हुई। असल बात तो यह है कि इस प्रकार की घटनाएँ मध्यकाल में आम तौर पर होती थीं। उन दिनों लोग धार्मिक सहिष्णुता को पाप समझते थे। क्या कैथलिक और क्या प्रोटेस्टेंट, मौक़ा पड़ने पर सभी अपना भयंकर रूप प्रकट करते और अपने से विरुद्ध मत-वालों को ज़िंदा जला देते थे। एडवर्ड छठे ने 'अनाबैप्टिस्ट' (Anabaptist) लोगों को इसीलिये जला दिया था कि वे बहुत ही अधिक सुधार चाहते थे।

(३) मेरी की विदेशी नीति

मेरी अभी धार्मिक सुधार कर ही रही थी कि उस पर कई विपत्तियाँ आ पड़ीं। प्रोटेस्टेंट लोगों ने इँगलैंड के किनारों को लूटकर कैथलिक लोगों को सताना शुरू किया। स्पेन का फ़्रांस से झगड़ा था। यही कारण है कि फ़िलिप ने मेरी को भी फ़्रांस से लड़ने के लिये बाधित किया। वह यह नहीं चाहती थी।

फ़्रांस तथा जर्मनी का युद्ध (१५५२-१५५६)—१५५२

से १५५९ तक फ्रांस तथा जर्मनी का युद्ध हुआ। फ्रांस का राजा हेनरी द्वितीय बहुत ही शक्तिशाली था। उसने जर्मनी के प्रोटेस्टेंट लोगों का पक्ष लेकर सम्राट् चार्ल्स को पराजित किया। १५५६ में चार्ल्स ने राजगद्दी छोड़ दी। उसके जर्मन प्रांत तथा सम्राट् का पद उसके भाई फ़र्दिनंद को मिला। यह हेनरी और बोहीमिया (Bohemia) का राजा था। स्पेन, इंडीज़, इटली तथा नीदरलैंड (Netherland) के प्रांत फ़िलिप को मिले।

इँगलैंड का फ़्रांस से युद्ध—फ़िलिप द्वितीय फ्रांस को नीचा दिखाना चाहता था। उसने १५५७ में मेरी को अपने साथ मिलाया और फ्रांस में सेंट कैंटिन (St. Quentin)-नामक स्थान पर बड़ी भारी विजय प्राप्त की। उसने पोप को नीचा दिखाया और अपनी इच्छा के अनुसार चलना शुरू किया। फ़्रांसीसियों ने फ़िलिप से चिढ़कर इँगलैंड को तंग करना शुरू किया। उन्होंने कैले (Calais) पर आक्रमण किया और उसको फ़तह भी कर लिया। मेरी का स्वास्थ्य पहले से ही ठीक न था। कैले हाथ से निकल जाने पर उसका दिल टूट गया और वह १५५८ की १७ नवंबर को परलोक सिधारी। दैवी घटना से उसके १२ घंटे के बाद ही कार्डिनल पोल की भी मृत्यु हो गई।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५५३	मेरी का राज्याधिरोहण
१५५४	पोप का इँगलैंड के चर्च पर पुनः प्रभुत्व
१५५६	क्रैनमर की मृत्यु
१५५८	कैले का फ़्रांस के हाथ में जाना और मेरी की मृत्यु

सप्तम परिच्छेद

एलिज़बेथ तथा रानी मेरी (१५५८–१५८७)

(१) एलिज़बेथ का राज्याधिरोहण

एलिज़बेथ का स्वभाव तथा नीति—एलिज़बेथ (Elizabeth) २५ वर्ष की उम्र में इँगलैंड के सिंहासन पर बैठी। वह लंबे क़द की तथा ख़ूबसूरत थी। उसका चेहरा सुडौल तथा उसकी नाक बड़ी और आगे की ओर मुड़ी हुई थी। वह बहुत ही मिहनती थी और राजनीति को ख़ूब समझती थी। उसमें पिता के बहुत-से गुण मौजूद थे। वह गाँवों में जाकर ग्राम-वासियों का आतिथ्य प्रेम-पूर्वक ग्रहण करती थी। आंग्ल-जनता को ख़ुश रखने में ही उसका ध्यान था। इन सब उत्तम गुणों के साथ ही उसमें कुछ दुर्गुण भी थे। सच बोलना तो वह जानती ही न थी। उसका स्त्रियों का-सा स्वभाव और व्यवहार नहीं था। स्वार्थ की वह पुतली थी। अपना मतलब किस तरह पूरा किया जाता है, इसको वह अच्छी तरह जानती थी। आंग्ल-जनता के रुख़ को वह ख़ूब पहचानती थी। यही कारण है कि स्त्री होते हुए भी वह पिता के सदृश ही स्वेच्छाचारिणी बनी रही। आंग्ल-जनता उसके

स्वेच्छाचार को कम न कर सकी। उसको धर्म-कर्म से कुछ भी मतलब न था। यही कारण है कि उसने किसी भी धर्म के प्रति अपनी विशेष रुचि नहीं प्रकट की। उसी के स्वभाव ने धार्मिक सहिष्णुता को इँगलैंड में प्रचलित किया।

रानी एलिज़बेथ

एलिज़बेथ 'एन बोलीन' की पुत्री थी। बचपन ही में वह अच्छी तरह से पढ़-लिख गई थी। परंतु उसको विद्या और साहित्य से विशेष प्रेम नहीं था। उसको शक्ति

और शान की चाह थी। अपनी दूरदर्शिता, धैर्य, उत्साह, साहस तथा अभ्रांत विचार से उसने इन दोनों बातों को पूरे तौर पर प्राप्त किया। उसको शासन करने से कितना प्रेम था, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उसने विवाह तक नहीं किया। पिता के सदृश ही कुटिल और शक्तिशाली होने से वह चंचल स्वभाव की हो गई। वह ख़ुशामद को बहुत ही अधिक पसंद करती थी। सजने-धजने में उसका शौक़ हद दर्जे तक जा पहुँचा था। बुढ़ापे के दिनों में भी वह पाउडर और तेल-फुलेल के सहारे अपने को ख़ूबसूरत और चटकीला-भड़कीला बनाने का यत्न करती थी।

एलिज़बेथ का कोई उच्च उद्देश न था। ४५ वर्षों के राज्य में उसने कोई एक नीति स्थिर रूप से नहीं प्रकट की। वह समय के अनुसार काम करती थी। हज़ारों तूफ़ानों को उसने चुटकी बजाते शांत कर दिया और अपना बुढ़ापा शांति से ही गुज़ारा। उसके राज्य-काल में इँगलैंड पर भयंकर-से-भयंकर विपत्तियाँ आईं, परंतु उसने अपने धैर्य से इँगलैंड की रक्षा की। उसी ने इँगलैंड के महाशक्ति बनने की नींव डाली। सारांश यह कि एलिज़बेथ ने इँगलैंड में एक नए युग को जन्म दिया। उसी की कृपा

से इँगलैंड नौ-शक्ति-संपन्न बना और स्पेनियों को सामुद्रिक युद्ध में पराजित कर सका।

एलिज़बेथ के मंत्री—हेनरी अष्टम के सदृश एलिज़-बेथ भी मनमाना काम करती थी। अपना मंत्री वह आप थी। इसमें भी संदेह नहीं कि उसके समय में बहुत-से योग्य पुरुष आंग्ल-राज्य-कार्य में सहायता देने के लिये मौजूद थे। उसने इन सब योग्य मनुष्यों को राज्य-कार्य में रख लिया और अपनी इच्छा के अनुसार चलाया। उसने अपने किसी भी सेवक को फ़िज़ूल नहीं तंग किया। यही कारण है कि बहुत-से योग्य-योग्य आंग्लों ने उसकी सेवा में ही अपनी उमरें बिताईं। एलिज़बेथ बहुत ही कंजूस थी। वह अपने अच्छे-से-अच्छे काम करनेवालों को बहुत ही कम इनाम देती थी।

रानी का सबसे अधिक निकटस्थ और सलाहकार विलि-यम सैसिल था। इसने रानी की पूर्ण रूप से सेवा की और उसका अंत तक साथ दिया। इस प्रभु-सेवा के बदले रानी ने उसको 'बैरन बर्ले' (Burghley) बनाया। यह पद आंग्ल-लॉर्डों में सबसे नीचा पद था। इसी प्रकार सर निकोलस बेकन ने उसकी अच्छी सेवा की; परंतु रानी की अनुदारता से वह भी चांसलर के पद तक न पहुँच

सका । विलियम सैसिल (William Cecils) के पुत्र राबर्ट सैसिल ने भी रानी की अच्छी सेवा की। सर फ्रांसिस बेकन और सर फ्रांसिस वालिंसघेम (Sir Francis Walshingham) ने रानी को अनेक बार विपत्तियों से बचाया। वालिंसघेम ने ही बहुत-से ऐसे षड्यंत्रों का पता लगाया, जो रानी को मारने के लिये रचे गए थे। इन सब योग्य सेवकों के कारण रानी का राज्य बहुत अच्छी तरह चलता रहा। शांति के कारण इँगलैंड भी समृद्धिशाली हुआ।

ऊपर-लिखे योग्य राजसेवकों के सदृश ही रानी के दरबार में बहुत-से ख़ुशामदी अयोग्य आदमी भी थे। इनका काम रानी को ख़ूबसूरती तथा बुद्धि की प्रशंसा करना ही था। एक-मात्र इन्हीं लोगों के समय रानी की कृपणता दूर हो जाती थी। वह इनको ख़ूब धन तथा पद देती थी। इन ख़ुशामदियों का मुखिया, रानी की बाल्यावस्था का साथी, लॉर्ड राबर्ट डड्ले था। रानी ने इसको लीस्टर का अर्ल (Earl of Leicester) बना दिया। इसके साथ वह विवाह भी कर लेती, परंतु उसको तो शासन तथा शक्ति की बहुत ही अधिक चाह थी। यही कारण है कि उसने विवाह ही नहीं किया। डड्ले की मृत्यु-पर्यंत रानी ने उसका साथ दिया और उसको बहुत-से ऐसे राजकीय काम भी सौंपे, जिनको वह सफलता-पूर्वक न कर सका।

(२) एलिज़बेथ का धार्मिक परिवर्तन

राजगद्दी पर बैठते ही रानी का सबसे पहला काम धर्म-संबंधी झगड़ों को मिटाना था। एडवर्ड षष्ठ तथा मेरी धार्मिक मामलों के सुधारने में क्यों असफल हुए, यह वह अच्छी तरह से जानती थी। उसको यह अच्छी तरह पता था कि अधिक धार्मिक सुधारों के पीछे पड़ने का क्या नतीजा होता है। उसको अपने पिता पर अनन्य भक्ति थी और अपने पिता की नीति को ही वह पसंद करती थी। यही कारण है कि उसने मध्य का मार्ग सँभाला। धार्मिक सुधारों से जहाँ वह पीछे नहीं हटी, वहाँ उसने बहुत धार्मिक सुधार भी नहीं किए। एलिज़बेथ के राजगद्दी पर बैठते ही विदेश को भागे हुए प्रोटेस्टेंट लोग इँगलैंड में लौट आए और रानी पर धार्मिक सुधारों के लिये ज़ोर डालने लगे। रानी बड़ी कठिनाई में फँस गई, क्योंकि इँगलैंड में मुख्य-मुख्य पदों पर कैथलिक लोग ही थे। उनको राजपदों से एकदम हटाना सारे देश में गड़बड़ मचा देना था। रानी ने बड़ी बुद्धिमत्ता से इस कठिनाई को दूर किया। उसने १५५९ के जनवरी में आंग्ल-लोकसभा का अधिवेशन किया। लोकसभा ने बिशपों के विरोध करने पर भी निम्न-लिखित दो राज्य-नियम बनाए—

(१) **मुख्यता का राज्य-नियम** (Act of Supre-

macy)—यह मुख्यता का नियम हेनरी अष्टम के १५३४ के राज्य-नियम की पूरी नक़ल थी। इस नियम के अनुसार स्वयं एलिज़बेथ पोप के बदले आंग्ल-चर्च (Church of England) की मुखिया तथा संरक्षक नियत की गई।

(२) **एकता का राज्य-नियम** (Act of Uniformity)—इस नियम के अनुसार एडवर्ड षष्ठ के समय की द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक का सब चर्चों में पढ़ा जाना अनिवार्य ठहराय गया। हाँ, इसमें स्थान-स्थान पर कुछ परिवर्तन कर दिए गए।

इन दो नियमों के बाद, १५६३ तक, रानी ने अन्य कोई धार्मिक सुधार नहीं किए। १५६३ में उसने लोक-सभा को ३९ धार्मिक नियम (Thirtynine Articles) पास करने की आज्ञा दी। इन धार्मिक नियमों का आधार १५५३ के ४२ धार्मिक नियमों पर था। इन ३९ धार्मिक नियमों का स्वरूप रानी ने बदल दिया; उनके उन-उन शब्दों को हटा दिया, जिनके कारण पुराने धर्म के लोगों को बेफ़ायदा बहुत तकलीफ़ पहुँचने की संभावना थी। रानी ने ये धार्मिक सुधार राजनीतिक दृष्टि से किए। अतः इनके कारण आंग्लों का आचार-व्यवहार बहुत कुछ बदल गया।

उपरि-लिखित धार्मिक परिवर्तनों के अनंतर रानी ने अन्य

धार्मिक परिवर्तन नहीं किए। उसने यही यत्न किया कि प्रजा उपरि-लिखित धार्मिक नियमों पर पूरे तौर से चले। इसका परिणाम यह हुआ कि एक बिशप को छोड़कर रानी मेरी के समय के अन्य बिशपों ने अपने-अपने धार्मिक पदों से इस्तीफ़े दे दिए। रानी ने भी सभी बिशपों को क़ैदख़ाने में डाल दिया और उनके स्थान पर अन्य बिशपों को नियुक्त किया। मैथ्यु पार्कर (Mathew Parker) को उसने कैंटर्बरी का आर्च-बिशप बनाया। यह बहुत ही बुद्धिमान्, विचारवान् तथा शांत-स्वभाव था। यह भी रानी के सदृश ही धार्मिक सहिष्णुता को पसंद करता था। १५५९ में रानी ने एक धार्मिक कमीशन नियत किया। इसका प्रधान उसने पार्कर को ही बनाया। इस कमीशन का मुख्य उद्देश्य यही था कि उपरि-लिखित धार्मिक राज्य-नियमों पर चलने के लिये प्रजा को बाधित किया जाय।

एलिज़बेथ तथा रोमन कैथलिक—रानी की इच्छा थी कि राज्य-धर्म में सब लोग सम्मिलित हों। जो लोग आंग्ल-चर्च (Anglican Church) में सम्मिलित न हुए, उन पर रानी ने जुर्माना किया और उनको भिन्न-भिन्न प्रकार के दंड दिए। रोमन् कैथलिकों को आंग्लों ने पोपिष्ट (Popist) अर्थात् पोप के अनुयायी कहकर पुकारना शुरू किया और उनको सब

कामों में नीचा दिखाया। लाचार होकर बहुत-से छोटे-छोटे पादरियों ने रानी के धर्म को मान लिया। बड़े-बड़े पादरी इतने शक्तिशाली न थे कि रानी का विरोध कर सकते। एलिज़बेथ को उन प्रॉटेस्टेंट लोगों से ही डर था, जो उसकी सहिष्णुता की नीति के विरोधी थे। यह होने पर भी उसने अपनी नीति न छोड़ी और आंग्ल-प्रजा को अपनी इच्छाओं के अनुसार ही चलाया।

जिनोआ तथा काल्विनिस्ट (Genoa and the Calvinist)—मेरी ने जिन प्रोटेस्टेंटों को इँगलैंड से बाहर निकाल दिया था, उनमें से बहुतों का विचार योरप में पहुँचकर बदल गया। वे लोग फ़्रांसीसी महात्मा जॉन काल्विन (John Calvin) के मत को मानने लगे। जॉन काल्विन १५६४ से मृत्यु-पर्यंत जिनोआ-नगर में रहा। इसने पोप के नियमों का तिरस्कार किया और एक छोटी-सी, वयोवृद्ध पुरुषों की, जो प्रैसबिटर कहलाते थे, सभा बनाई, जिसके सब सभ्य समान अधिकारवाले थे। यह सभा ही चर्च का प्रबंध और लोगों को धार्मिक बनाने का यत्न करती थी। काल्विन का विशेष ध्यान आचार सुधारने की ओर था। वह किसी एक स्थिर प्रार्थना-पुस्तक के पक्ष में न था। ईश्वर की उपासना में उसको सादगी पसंद थी। काल्विन के मत को

प्रैस्बिटेरियानिज़्म के नाम से पुकारा जाता है। योरप में जाने से बहुत-से आंग्ल इसी मत के हो गए थे। आंग्ल-इतिहास में उनको प्यूरिटेंस (Puritans) के नाम से भी पुकारा जाता है, क्योंकि ये लोग चाहते थे कि नए मत प्रोटेस्टेंटिज़्म में पुराने रोमन कैथलिक मत का कर्म-कांड न रहने पावे। एलिज़बेथ के बनाए हुए चर्च में यह बात थी कि रानी ने दोनों मतों के कुछ-कुछ सिद्धांत लेकर एक खिचड़ी मत स्थापित किया था। उसका अभिप्राय यह था कि ऐसा करने से दोनों मतों के अनुयायी उससे संतुष्ट रहेंगे, पर यह उसकी भूल थी। धर्म-संबंधी बातों में ऐसा नहीं होता। क्या यह संभव है कि हिंदुओं से कहा जाय कि ५ दिन मंदिर में पूजन करो और २ दिन नमाज़ पढ़ा करो, और वे मान लें ?

एलिज़बेथ तथा प्यूरिटन संप्रदाय—आंग्ल-चर्च जिनोआ के चर्च के सदृश पक्का प्रोटेस्टेंट मत नहीं था। उसमें कई बातें कैथलिक मत की रक्खी गई थीं। यही कारण है कि जिनोआ से लौटकर आए हुए आंग्ल अपने देश के चर्च से संतुष्ट न थे। उन्होंने शुरू-शुरू में धार्मिक सुधार करने के लिये रानी पर बहुत ही अधिक ज़ोर डाला। परंतु उनका यत्न जब निष्फल हो गया, तब वे रानी से बहुत ही असंतुष्ट हो गए। उन्होंने आंग्ल-चर्च की प्रथाओं तथा संस्कारों को तोड़ना शुरू

किया। वे लोग शक्तिशाली थे। अतः रानी ने उनका बहुत विरोध नहीं किया। रानी की शक्ति ज्यों-ज्यों धीरे-धीरे बढ़ती गई, त्यों-त्यों रानी ने उनको नियम के अनुसार चलने के लिये बाधित किया। १६६५ से प्यूरिटन लोगों पर सख़्ती करना शुरू किया गया। 'आर्च-बिशप पार्कर' ने एक विज्ञापन निकाला और पादरियों को धर्म तथा चर्च के समय में विशेष प्रकार का कपड़ा पहनने के लिये बाधित किया। यह विज्ञापन आंग्ल-इतिहास में 'पार्कर्स एड्वर्टिज्मेंट्स' (Parker's Advertisements) के नाम से प्रसिद्ध है। प्यूरिटन लोग इस विज्ञापन के सख़्त ख़िलाफ़ हो गए। १६६६ में एक-मात्र लंदन में ही ३० के लगभग पादरियों ने अपने पद छोड़ दिए। इन्होंने शीघ्र ही आंग्ल-चर्च पर आक्षेप करना शुरु किया। इन्होंने आंग्ल-चर्च को भी जिनोआ के चर्च के सदृश प्रैस्बटेरियन (Presbyterian) चर्च बनाने के लिये जोर दिया। इनका नेता टॉमस कार्टराइट (Thomas Cartwrigh) था। यह कैंब्रिज में प्रोफ़ेसर था। इसी के दो मित्रों ने आंग्ल-चर्च के विरुद्ध दो पुस्तकें लिखीं, जो बहुत ही उत्तम थीं।

डिसेंटर्स (Dissenters) **या पृथक् दल**—बहुत-से लोगों ने आंग्ल-चर्च में जाना छोड़ दिया और डिसेंटरों (Dissenters) ने अपनी उपासना अलग करना शुरू किया। इन लोगों

ने अपने को डिसेंटर्स (Dissenters), सेक्टरीज़, सपरेटिस्ट्स, पृथक् दल आदि नामों से पुकारना शुरू किया। इनके बहुत-से नेताओं में से एक नेता रॉबर्ट ब्राउन (Robert Brown) भी था। इसका सिद्धांत यह था कि सारे देश के लिये किसी एक चर्च के होने की कुछ भी ज़रूरत नहीं। लोग अपने-अपने विचारों के अनुसार अपने अलग-अलग चर्च बना लें। यही कारण है कि बहुत-से लोग डिसेंटरों को ब्राउनिस्ट, इंडिपेंडेंट (Independent) तथा स्वतंत्र दल के नाम से भी पुकारने लगे। पृथक् दल के बहुत-से लोग आंग्ल-चर्च में नौकर रहकर उसी पर अपना जीवन-निर्वाह करते रहे, यद्यपि उनका उस चर्च में कुछ भी विश्वास न था। आजकल ये 'नॉन्कॉन्फ़र्मिस्ट' (Non-conformist) नाम से पुकारे जाते हैं। इनके शत्रु इनको मक्कार तथा छली इत्यादि कहते थे।

हूकर (Hooker) की धार्मिक नीति—एलिज़बेथ की धार्मिक सहिष्णुता की नीति का उत्तम फल शताब्दी के अंत में प्रकट हुआ, जब कि हूकर ने अपनी "धार्मिक नीति" (Ecclesiastical Policy. १५९३)-नामक पुस्तक को प्रकाशित किया। इसमें इसने उत्तम-उत्तम संस्कारों तथा प्रथाओं का छोड़ना अनुचित ठहराया। इसके अनंतर बहुत-से आंग्ल-लेखकों ने

देश के लिये एक चर्च का होना अत्यंत आवश्यक प्रकट किया।

जॉन नॉक्स—इँगलैंड में एलिज़बेथ की शक्ति तथा बुद्धिमत्ता से काल्विन का मत नहीं फैल सका। परंतु स्कॉटलैंड में यह बात न हो सकी। गाइज़ की मेरी (Mary of Guise) स्कॉटलैंड की रानी थी। यह कैथलिक थी। इसने स्कॉटलैंड के प्रोटेस्टेंटों को देश से बाहर निकाल दिया। इनमें जॉन नॉक्स (John Knox) भी था। यह बहुत ही उत्तम व्याख्याता तथा बड़ा भारी विद्वान् था। एडवर्ड षष्ठ की मृत्यु होने पर यह जिनीवा गया और काल्विन का चेला बन गया। एलिज़बेथ के गद्दी पर बैठते ही इसने इँगलैंड में आने का यत्न किया, परंतु रानी ने इस आधार पर न आने दिया कि उसने 'स्त्री-राज्य' के विरुद्ध एक पुस्तक लिखी थी। इस पर जॉन नॉक्स बड़े साहस के साथ स्कॉटलैंड में जा पहुँचा। रानी मेरी ऑफ़् गाइज़ ने उसको स्कॉटलैंड में आने से रोकना चाहा, परंतु रोक न सकी। स्कॉटलैंड में पहुँचते ही उसके बहुत-से स्कॉच् लॉर्डों ने उसका साथ दिया। नॉक्स ने वहाँ काल्विन के धर्म को फैलाना शुरू किया। मेरी ने अपने को दुर्बल तथा निःशक्त समझकर फ़्रांस से सहायता माँगी। फ़्रांस ने अपनी सेनाओं को स्कॉटलैंड में

उतार दिया और नॉक्स के पक्ष-पातियों को दबाना शुरू किया। 'मरता क्या न करता' की कहावत के अनुसार नॉक्स तथा उसके साथी लॉर्डों ने एलिज़बेथ से सहायता माँगी। एलिज़बेथ ने बुद्धिमत्ता करके अपनी सेनाओं को स्कॉटलैंड की ओर रवाना कर दिया।

आंग्लों ने लीथ (Leith)-नामक स्थान पर फ़्रांसीसियों पर आक्रमण किया। इसी अवसर में स्कॉटलैंड की रानी मेरी की मृत्यु हो गई। युद्ध निरर्थक समझकर एडिनबरा (Edinborough) में संधि हो गई और संधि के अनुसार फ़्रांसीसी तथा आंग्ल-सेनाएँ अपने-अपने देशों को लौटकर चली गईं।

विदेशी सेनाओं से छुटकारा पाते ही स्कॉच-पार्लिमेंट ने जिनोआ के चर्च का अनुकरण करते हुए अपने चर्च को प्रैस्बिटेरियन चर्च के नाम से पुकारना शुरू किया। स्कॉच जनता ने पुराने चर्च को तबाह कर दिया; उसकी संपत्ति को लूट लिया। बड़ी मुश्किल से नॉक्स ने स्कॉच जनता को शांत किया। नॉक्स ने प्रोटेस्टेंट लॉर्डों को समझाया-बुझाया और दरिद्रों के लिये भोजन तथा शिक्षा का प्रबंध करना अत्यंत आवश्यक प्रकट किया। इसका परिणाम यह हुआ कि स्कॉटलैंड में प्रत्येक 'पैरिश' (Parish) के अंदर एक-एक पाठशाला

खोल दी गई। नॉक्स तथा उसके भाई ने प्रैस्बिटेरियन चर्च की धर्म-सभा स्थापित की और उसको साधारण सभा (General Assembly) के नाम से पुकारना शुरू किया। इस सभा ने स्कॉच पार्लिमेंट से भी अधिक उत्तम ढंग से देश का प्रबंध किया।

मेरी ऑफ़् गाइज़ की मृत्यु पर द्वितीय मेरी स्कॉटलैंड के सिंहासन पर बैठी। यह स्त्रीत्व-प्रधान और धर्म में कैथलिक थी। इसका व्यवहार बहुत ही अच्छा था। अपने पति फ़्रांस-नरेश की मृत्यु के बाद फ़्रांस से लौटकर जब यह स्कॉटलैंड पहुँची, तब वहाँ का धर्म बिलकुल बदल चुका था। नॉक्स के प्रभाव से वहाँ प्रैस्बिटेरियन धर्म का ही सर्वत्र प्राधान्य था। यही कारण है कि स्कॉच-रानी मेरी का सारा जीवन झगड़े में ही गुज़रा। उसको वास्तविक सुख न मिल सका।

(३) योरप में धार्मिक परिवर्तन

एलिज़बेथ के समय में योरप के अंदर धार्मिक विरोध शुरू हुआ और भिन्न-भिन्न धर्मावलंबियों ने आपस में लड़कर ख़ून की नदियाँ बहाईं। योरप के अंदर लूथर का प्रभाव अब घट चुका था और काल्विन का मत दिन-पर-दिन ज़ोर पकड़ रहा था। स्कॉटलैंड प्रैस्बिटेरियन मत का हो ही चुका था, इधर इँगलैंड भी उसी ओर जा रहा था।

नीदरलैंड, हालैंड और बेलजियम तथा फ़्रांस में भी काल्विन के मत ने अपना सिक्का जमाया। इसके विपरीत कैथलिक मत का पुनरुद्धार योरप में होना शुरू हुआ। कैथलिक लोगों ने अपने स्कूलों के द्वारा कैथलिक मत का प्रचार करना शुरू किया। १५४० में जेज़ुएट (Jesuet)-संघ का योरप में उदय हुआ, जिसका मुख्य उद्देश योरप में कैथलिक मत की रक्षा करना था। इस संघ का स्थापक 'इग्नेशियस लायोला' (Ignatious Loyalla)-नामक स्पेनी था। यह बहुत ही उच्च आचार का विद्वान था। इसकी शिक्षा-पद्धति अनूठी थी। इसने ग्रामों तथा अशिक्षितों पर अपना रोब-दाब जमाया और अशिक्षित जनता को कैथलिक मत पर दृढ़ रहने के लिये उत्तेजित किया। इसकी शिक्षा ने बिजली का काम किया। कैथलिक मत सब ओर बड़ी तेज़ी से फैलने लगा। इससे स्पष्ट है कि किस तरह काल्विन तथा जेजिट संघ के उपदेशों तथा विचारों से सारा योरप दो भागों में विभक्त हो गया। इसका क्या परिणाम हुआ, इसी पर अब प्रकाश डाला जायगा।

योरप के राष्ट्रों का पारस्परिक झगड़ा एलिज़बेथ के राजगद्दी पर बैठने के कुछ ही दिनों बाद शुरू होता है। फ़िलिप द्वितीय (Phillip II) ने इँगलैंड की सहायता से फ्रांस पर

चढ़ाई की और फ्रांस को बुरी तरह से पराजित किया। १५५९ के एप्रिल में फ्रांस ने स्पेन से संधि की प्रार्थना की। लीकेटियो कैंब्रिसिस (Le Cateau Cambresis)-नामक स्थान पर दोनों देशों की संधि हुई और स्पेन का इटली पर प्रभुत्व स्थापित हो गया। स्पेनियों ने कैले फ्रांसीसियों के हाथ में दे दिया। इस संधि से योरप के राष्ट्रों का पुराना राजनीतिक झगड़ा मिटा और नया झगड़ा प्रारंभ हुआ।

लीकेटियो की संधि का एक मुख्य उद्देश यह भी था कि दोनों ही देशों के राजा कैथलिक थे। उनके राज्यों में बड़ी तेज़ी के साथ प्रोटेस्टेंट मत फैलता जाता था। उसको शीघ्र ही रोकना आवश्यक था।। स्पेन तथा फ्रांस यदि आपस में लड़ते रहते, तो यह बहुत ही कठिन था। दोनों ही देशों में प्रोटेस्टेंट मत पूरे तौर पर फैल जाता और उनको घरेलू झगड़ों का सामना करना पड़ता।

संधि के बाद ही फ़िलिप द्वितीय ने नीदरलैंड में कैथलिक मत फैलाने का प्रयत्न शुरू किया और काल्विन-मत को जड़ से उखाड़ना चाहा। फ्रांस ने भी इसी प्रकार की कोशिश की। फ्रांस में काल्विन के पक्षपाती ह्यूगूनाट्स (Huguenot) के नाम से पुकारे जाते थे। फ्रांसीसी राजा, फ्रांसिस द्वितीय ने इन लोगों

को जड़ से उखाड़ने का यत्न किया। यह सब होने पर भी फ़्रांस तथा स्पेन बहुत समय तक आपस में मिलकर काम न कर सके—उनमें पुराने झगड़े फिर खड़े हो गए।

इससे इँगलैंड को बहुत ही अधिक लाभ पहुँचा, क्योंकि मेरी स्टुवर्ट (Mary Stuart) फ़्रांस के साथ ही स्कॉटलैंड की भी रानी थी। उसने एलिज़बेथ को तंग करने के लिये अपने को इँगलैंड की रानी भी पुकारना शुरू किया, क्योंकि वह हेनरी सप्तम की पुत्री मार्गरैट की पौत्री थी। कैथलिक लोग एलिज़बेथ को विवाहिता स्त्री-से नहीं समझते थे, क्योंकि पोप ने, हेनरी अष्टम की जो शादी एन बोलीन के साथ हुई थी, उसकी अनुमति न दी थी। इस पर एलिज़बेथ ने मेरी स्टुवर्ट के विरुद्ध स्कॉटलैंड के प्रोटेस्टेंटों को सहायता देना शुरू किया। इसका परिणाम यह हुआ कि स्कॉटलैंड पर मेरी स्टुवर्ट का कुछ भी प्रभाव न पड़ा। वह नाम-मात्र की ही वहाँ की रानी रही। वास्तव में स्कॉटलैंड के अंदर प्रोटेस्टेंट लोगों का प्रजातंत्र राज्य ही था।

ली हैव्र(Le Havre)का हाथ से खो देना(१५६३)—कुछ ही महीनों के बाद फ़्रांसिस द्वितीय की मृत्यु हो गई। चार्ल्स नवम फ़्रांस के सिंहासन पर बैठा। इसकी स्त्री इटैलियन और बहुत ही अधिक चालाक थी। कुछ ही दिनों के बाद फ़्रांस

में धार्मिक युद्ध हो गया। बेचारे ह्यूगनाटों ने तंग आकर एलि-ज़बेथ से सहायता माँगी। रानी ने उनको सहायता पहुँचाई। इस सहायता के बदले में ह्यूगनाटों ने रानी को 'ली हैव्र' का बंदरगाह दे दिया। दुर्भाग्य से फ्रांसीसियों का पारस्परिक झगड़ा शांत हो गया और उन्होंने आपस में मिलकर ली हैव्र से आंग्लों को निकालने का यत्न किया। चार्ल्स नवम शक्तिशाली न था। अतः वह इँगलैंड को कुछ भी नुक़सान न पहुँचा सका। स्पेन ने भी फ्रांस के विरुद्ध इँगलैंड से संधि कर ली। इससे इँगलैंड सब तरह सुरक्षित हो गया, क्योंकि यदि कहीं फ्रांस तथा स्पेन आपस में मिल जाते और इँगलैंड पर आक्रमण करते, तो इँगलैंड को बहुत ही अधिक नुक़सान पहुँच सकता था।

(४) रानी मेरी तथा रानी एलिज़बेथ

१५६१ में मेरी स्टुवर्ट फ्रांस से स्कॉटलैंड चली आई। पति की मृत्यु होने पर फ्रांस में शक्ति प्राप्त करना उसके लिये असंभव था। वह कट्टर कैथलिक थी। यही कारण था कि स्कॉच्-जनता ने उसका उचित सत्कार नहीं किया। उसने धीरे-धीरे चतुरता से बहुत-से स्काच् नोबुल तथा लॉर्डों को अपने पक्ष में कर लिया। उसने अपने भाई जेम्स स्टुवर्ट को खुले तौर पर स्कॉटलैंड का शासन करने दिया। उसने स्कॉटलैंड

का काल्विन-धर्म मान लिया। उसने जनता को स्वयं धार्मिक उपदेश देने की स्कॉच्-लोकसभा से आज्ञा ले ली। इस पर जॉन नॉक्स चिढ़ गया। उसने स्पष्ट शब्दों में कहा कि रानी के उपदेश से स्कॉटलैंड को बहुत ही अधिक नुक़सान पहुँचेगा।

मेरी ने चार वर्षों तक लगातार यत्न किया, परंतु स्कॉटलैंड को वह अपने क़ाबू में न कर सकी। स्कॉटलैंड में शक्ति प्राप्त करना असंभव समझकर उसने अपनी दृष्टि इँगलैंड की ओर डाली। आंग्ल-रोमन् कैथलिक एलिज़बेथ से सख़्त नाराज़ थे। वे लोग मेरी स्टुवर्ट को अपनी रानी बनाना चाहते थे। मेरी एलिज़बेथ की मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगी। १५६५ में उसने लॉर्ड डार्नले (Lord Darnley) से शादी करने की इच्छा प्रकट की। एलिज़बेथ के अनंतर यह राज्य का उत्तराधिकारी हो सकता था, क्योंकि वह भी स्टुवर्ट (Stuart)-वंश का था। एलिज़बेथ को यह विवाह पसंद न था। अतः उसने मूर तथा स्कॉच्-लॉर्डों को विद्रोह करने के लिये उत्तेजित किया। मेरी ने डार्नले के साथ विवाह कर ही लिया और मूर को पराजित करके स्कॉटलैंड से बाहर निकाल दिया। इससे एलिज़बेथ के दिल को बहुत ही अधिक धक्का पहुँचा। वह मेरी को नीचा दिखाने के अवसर ढूँढ़ने लगा।

रिज़ियो की हत्या (१५६६)—विवाह के अनंतर मेरी को डार्नले के दुर्गुण दिखाई दिए। वह कठोर-हृदय, धूर्त और बेवक़ूफ़ था। मेरी को वह किसी प्रकार की भी सहायता नहीं पहुँचा सकता था। मेरी ने धीरे-धीरे डेविड् रिज़ियो (David Rizzio)-नामक इटैलियन विद्वान् से सलाह-मश्विरा करना शुरू किया। डार्नले को यह पसंद न था। उसको किसी कारण से यह संदेह हो गया कि रिज़ियो के साथ मेरी का अनुचित संबंध है। उसने कुछ प्रोटेस्टेंट लॉर्डों के साथ मिलकर एक रात को मेरी के साथ भोजन करते समय रिज़ियो को मरवा डाला। इस वध से मेरी के हृदय पर बड़ा आघात पहुँचा। वह उस समय गर्भवती भी थी। उसने हत्यारों को देश-निकाला दे दिया। इस घटना के तीन ही महीने बाद मेरी के जेम्स (James)-नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ, जो पीछे से स्कॉटलैंड का जेम्स षष्ठ और इँगलैंड के सिंहासन पर बैठने पर जेम्स प्रथम कहलाया।

डार्नले का वध (१५६७)—कुछ ही दिनों के बाद मेरी तथा डार्नले का फिर झगड़ा हो गया। पति के निर्दय तथा प्रेम-रहित कठोर व्यवहार से दुःखित होकर उसने किसी दूसरे पुरुष से शादी करने का इरादा किया। दैवी चक्र से बॉथवेल के अर्ल (Earl of Bothwell) जेम्स (James) से उसकी

मैत्री हो गई। मेरी बॉथवेल के कहने के अनुसार चलने लगी। वह जैसे उसको नचाता, वैसे ही वह नाचती। बॉथवेल ने डार्नले को मारने का इरादा किया और एक षड्यंत्र रचा। एडिनबरा के दक्षिण में 'कर्क ओ'फ़ील्ड' (Kirk O'field)-नामक स्थान पर बॉथवेल रहता था। बॉथवेल के षड्यंत्रकारियों ने उसके मकान को बारूद से उड़ा दिया। इस दुर्घटना से भी जब वह बच गया, तो कहते हैं कि षड्यंत्रकारियों ने उसे तलवार से मार डाला। उसकी लाश लोगों को मकान के बाहर पड़ी हुई मिली।

डार्नले के पिता, लैन्नॉक्स (Lennox) ने बॉथवेल पर मुक़द्मा चलाया। मेरी ने उस मुक़द्मे का फ़ैसला करने का दिन नियत किया। मेरी से सब लोग डरते थे, अतः किसी की भी बॉथवेल के विरुद्ध गवाही देने की हिम्मत न पड़ी। इसका परिणाम यह हुआ कि बॉथवेल बेदाग़ छूट गया। किंतु मेरी बॉथवेल के साथ विवाह करने से हिचकने लगी, क्योंकि सारे स्कॉटलैंड में यह प्रसिद्ध था कि बॉथवेल ने ही मेरी की सलाह से डार्नले को मारा है। ऐसे घातक और पापी आदमी के साथ विवाह करना मेरी के लिये खुद डर की बात थी, क्योंकि इससे स्कॉच-जनता द्वारा विद्रोह करके मेरी को स्कॉटलैंड के बाहर निकाल देने की संभावना थी। कुछ भी हो, "कामान्ध हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु" के अनुसार

मेरी ने बॉथवेल को बलपूर्वक शादी करने की सलाह दी। इस सलाह के अनुसार जब मेरी स्टर्लिंग (Sterling) से एडिनबरा जा रही थी, बॉथवेल ने उस पर आक्रमण कर दिया और उसके साथ बलपूर्वक शादी कर ली। यह भेद सारी स्कॉच-जनता पर खुल गया। सारा स्कॉटलैंड मेरी तथा बॉथवेल के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। इस पर मेरी ने अपने धर्म को छोड़ दिया और प्रोटेस्टेंट लोगों को प्रसन्न करने के लिये उनके चर्च में उपदेश सुनने गई। परंतु इसका कुछ भी फल न निकला। उसके सैनिकों ने उसका साथ छोड़ दिया। 'कार्वरी हिल' (Carvery Hill) की लड़ाई में हारने पर विद्रोही लार्डों ने उसको क़ैद कर लिया। बॉथवेल स्कॉटलैंड से भाग गया और कुछ ही समय के बाद उसकी मृत्यु हो गई। मेरी राज्यच्युत की गई और उसका पुत्र जेम्स षष्ठ के नाम से राजगद्दी पर बिठाया गया। मूर तथा प्रोटेस्टेंट लॉर्ड विदेश से लौट आए और उन्होंने जेम्स के नाम पर स्कॉटलैंड का शासन शुरू किया।

मेरी का इँगलैंड पलायन (१५६८)—एक वर्ष तक रानी मेरी किनरास-शायर (Kinross-shire) के 'लाक लिवेन' (Lock Leven)-दुर्ग में क़ैद रही। १५६८ में स्कॉच-लार्डों का आपस में झगड़ा हो गया। इस झगड़े से लाभ उठाने के

विचार से मेरी लाक लिवेन-दुर्ग से भाग खड़ी हुई। १३ मई को वह लैंड-साइड-नामक स्थान पर मूर द्वारा पराजित हुई। अब सब ओर से निराश होकर उसने एलिज़बेथ की शरण ली। रानी एलिज़बेथ ने उसको क़ैद कर लिया। इससे उसकी तकलीफ़ें बेहद हो गईं। एलिज़बेथ के बजाय मेरी को आंग्ल-सिंहासन पर बिठाने के इरादे से कैथलिक लोगों ने षड्यंत्र रचने शुरू किए।

मेरी ने एलिज़बेथ से प्रार्थना की कि मुझे क़ैद से छोड़ दो, पर उसको यह मंज़ूर न था। कारण, इससे उसके शत्रु प्रबल हो जाते। यदि मेरी फ़्रांस को भाग जाती, तो फ़्रांसीसी राजा मेरी को साधन बनाकर आंग्ल-रानी को तकलीफ़ें पहुँचाते। स्कॉच-जनता भी रानी से असंतुष्ट हो जाती, क्योंकि उसको मेरी का छूटना पसंद न था। इसके सिवा एलिज़बेथ मेरी के अद्वितीय रूप-लावण्य से बहुत ईर्षा करती थी।

ऊपर लिखे इन सब झमेलों से एलिज़बेथ बहुत ही अधिक परेशान हो गई। उसको यह न सूझता था कि इसका क्या उपाय किया जाय। इधर मेरी को इँगलैंड में रखने से कैथलिक लोग षडयंत्र रचते और उसकी जान लेने की फ़िक्र में थे; उधर उसे क़ैद से छोड़ देने पर स्कॉच-जनता नाराज़ होती थी और फ़्रांस इँगलैंड को तंग कर सकता था। लाचार

होकर उसने इँगलैंड में यह घोषणा कर दी कि मेरी के विषय में कुछ भी सोचने से पहले उसके दोषों की जाँच करना आवश्यक है। उसने नार्फ़ाक के ड्यूक के सभापतित्व में एक कमीशन नियुक्त किया और मेरी पर आरोपित अपराधों की जाँच-पड़ताल शुरू कर दी। मूर तथा स्कॉच लार्डों ने मेरी पर अभियोग चलाया और उसके सारे अपराधों को कमीशन के सामने रक्खा। मूर ने मेरी के हाथ के लिखे कुछ पत्र कमीशन को दिए। आंग्ल-जनता का ख़याल है कि ये पत्र जाली थे। कमीशन कुछ भी अंतिम निर्णय न कर सका। एलिज़बेथ ने मेरी को क़ैद में रक्खा और मूर तथा स्कॉच-लार्डों को सब प्रकार का दिलासा दिया।

उत्तर में विद्रोह (१५६९)—इँगलैंड के उत्तरीय प्रदेशों में कैथलिक मत ही प्रबल था। जो लोग प्रोटेस्टेंट थे, वे भी प्यूरिटनों के समान स्वतंत्र विचार के नहीं थे। एलिज़बेथ ने मेरी का अंतिम निर्णय न किया, इसका परिणाम उसके लिये बहुत ही भयंकर हुआ। नार्थंबरलैंड के अर्ल टॉमस पर्सी (Thomas Percy, Earl of Northumberland) और वस्ट मोर्लैंड के अर्ल चार्ल्स नेविल (Charles Neville, Earl of West Morland) के नेतृत्व में उत्तरीय प्रदेश के कैथलिक लोगों ने विद्रोह कर

और सिंहासन से शीघ्र ही उतार देने की आज्ञा निकाल दी।* मई के महीने में फ़ैल्टन-नामक व्यक्ति ने पोप का आज्ञा-पत्र लंदन के बिशप के घर पर लगा दिया। रानी ने उसको पकड़कर मरवा डाला। लोकसभा को जब इस घटना की ख़बर मिली, तो उसने पोप की आज्ञा को इँगलैंड में पहुँचाना देश-द्रोह ठहराया और रोमन कैथलिक लोगों को देश का शत्रु प्रकट किया।

एलिज़बेथ की नीति थी कि वह किसी को उसके धर्म के कारण कष्ट न पहुँचावे। परंतु इस नीति में वह सफलता नहीं पा सकी। पोप ने उसको लोगों के धर्म-विश्वास में हस्तक्षेप करने के लिये विवश किया। रानी ने भी सावधानी से काम करना शुरू किया। उसने रोमन कैथलिक लोगों पर तीव्र दृष्टि रक्खी। कारण, रोमन कैथ-

---

* पोप का जब पूरा अधिकार था, तो वह जिसको ईसाई चर्च से बहिष्कृत करने की घोषणा करता था, उसे उसके अनुयायी महापापी समझकर त्याग देते थे। उससे किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रक्खा जाता था। न कोई उसे नौकर रखता, न उसकी दूकान से सौदा ख़रीदता, न कोई उसके हाथ कुछ बेचता। स्त्री, बच्चे, संबंधी आदि, सभी उसे त्याग देते थे। और, यदि वह राजा हुआ, तो पोप दूसरे किसी राजा के द्वारा उसे पदच्युत करा देता था। पर प्रोटेस्टेंट मत के फैलने के बाद से पोप का वह ज़माना नहीं रह गया था।

लिक लोगों की प्रबलता का दूसरा अर्थ आंग्लों की जातीयता का विनाश था। कैथलिक लोग विदेशी पोप के अनन्य भक्त थे और उसकी आज्ञा पाकर अपने राजा से भी विरोध करने को तैयार रहते थे। यही सोचकर लोक-सभा ने भी पूरे तौर से रानी का साथ दिया।

रिडोल्फ़ी-षड्यंत्र (Redolfi Plot)(१५७१)—रिडोल्फ़ी फ़्लोरेंस (Florence) का रहनेवाला था। वह बहुत ही अमीर था। रिडोल्फ़ी बहुत दिनों से इँगलैंड में रहता था और फ़िलिप तथा पोप के साथ उसकी मित्रता थी। उसने नार्फ़ाक के ड्यूक को एलिज़बेथ के विरुद्ध उभाड़ा और उसे इस बात के लिये सहमत किया कि इँगलैंड के सिंहासन पर किसी-न-किसी उपाय से मेरी को बिठलाया जाय, जिससे कैथलिक लोगों का राज्य इँगलैंड में हो जाय। नार्फ़ाक पहले से ही रानी से रुष्ट था, क्योंकि उसे राज-दरबार में यथोचित सम्मान नहीं मिलता था। रिडोल्फ़ी ने उसको यह भी प्रलोभन दिखाया कि मेरी के साथ उसका विवाह कर दिया जायगा। महामंत्री लार्ड बर्ले (Lord Burghley) को किसी तरह इस सारी गुप्त मंत्रणा का पता लग गया—सब भेद मालूम हो गया। उसने दोनों को मरवा डाला। इस तरह रानी एलिज़बेथ एक बड़े

भारी संकट से बच गई। पर स्पेन से भिड़ना उसने उचित नहीं समझा।

(५) योरप में धार्मिक युद्ध

पेरिस में सेंट बार्थोलोम्यू (Bortholomew) की हत्या—घरेलू झगड़ों के कारण फ़्रांस बहुत ही अधिक शक्तिहीन हो गया था। योरप के शक्तिशाली राज्यों में वह दूसरे दर्जे पर जा पहुँचा। चार्ल्स चतुर्थ की उत्तेजना से सन् १५७२ में, २३ अगस्त को, सेंट बार्थोलोम्यू के मेले पर ह्यगूनाट लोगों की भयंकर हत्या की गई। हत्या-कांड की कथा इस प्रकार है—

सेंट बार्थोलोम्यू के मेले में, पेरिस-नगर में ह्यगूनाटों और कैथलिक लोगों की बड़ी भीड़ होती थी। सारे फ़्रांस के लोग अपने बाल-बच्चों-समेत उस मेले को देखने के लिये जाते थे। इस मेले को ह्यगूनाटों के विनाश का अच्छा अवसर समझकर चार्ल्स, उसकी स्त्री और दरबारियों ने यह गुप्त मंत्रणा की कि उस दिन सहसा ह्यगूनाटों पर आक्रमण कर दिया जाय। म्यूनीसिपैलिटी के अधिकारियों को यह सूचना दे दी गई कि मेले के दिन एक भी ह्यगूनाट शहर से बाहर न जाने पावे। ड्यूक ऑफ़ गाइज़ ने इस पाप-कर्म में बहुत बड़ा भाग लिया। उस दिन संपूर्ण ह्यगूनाटों की

हत्या की गई। इस हत्या-कांड का हाल जब योरप में पहुँचा, तो सारा-का-सारा योरप काँप उठा! इस घटना से बेचारी एलिज़बेथ डर गई। उसने रानी मेरी का अंतिम निर्णय कर डालने का निश्चय कर लिया और स्कॉटलैंड के संरक्षक मार्टन को लिखा कि 'मैं मेरी को तेरे हवाले करती हूँ। तू उसके साथ जैसा व्यवहार करना उचित समझ, वैसा कर। मैं तेरा साथ दूँगी।' अभी यह पत्र-व्यवहार हो ही रहा था कि मार्टन मर गया और मेरी एक नए संकट से बच गई।

नीदरलैंड का विद्रोह—यदि योरप के राजा लोग आंग्ल-कैथलिकों को सहायता पहुँचाते, तो एलिज़बेथ को बहुत ही अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता। वह उत्तरीय विद्रोह तथा आंग्ल-कैथलिक लोगों के षड्-यंत्रों को उस आसानी से न दबा सकती, जिस आसानी से उसने उसको दबा दिया।

स्पेन का बादशाह फ़िलिप आंग्ल-कैथलिकों को जी-जान से सहायता पहुँचाना चाहता था और आंग्ल-सिंहासन पर मेरी का बैठना पसंद करता था। परंतु कुछ भी उसके वश में नहीं था। उसे फ़्रांस की बढ़ती हुई शक्ति का भय था। फ़्रांस से अपने को बचाने के लिये उसने इँगलैंड के साथ मित्रता का ही व्यवहार किया। १५७२

में नीदरलैंड के भीतर भयंकर विद्रोह हो गया। फ़िलिप के लिये विद्रोह का दमन करना अत्यंत आवश्यक था। पाँच वर्षों तक फ़िलिप के सेनापति, राक्षसी प्रकृतिवाले आल्वा (Alva) ने स्पेनी नीदरलैंड के सात प्रांतों पर अत्याचार-पूर्ण शासन किया। उसने वहाँ पर कैथलिक-मत फैलाने का प्रयत्न किया; परंतु इसमें वह सफलता नहीं पा सका। कारण, किसी जाति के धर्म को बलपूर्वक बदलना सहज नहीं है।

आल्वा के अत्याचार और क्रूर व्यवहार से तंग आकर हालैंड और ज़ीलैंड ने विद्रोह कर दिया और वीरता के साथ स्पेन-निवासियों के आक्रमणों का सामना शुरू किया। १५७६ में अन्य प्रांतों ने भी हालैंड का साथ दिया और अपने को हालैंड के साथ 'पैसिफ़िकेशन ऑफ़ घेंट' (Pacification of Ghent) के अनुसार, पूर्ण रूप से संगठित किया।

यह संगठन चिर-काल तक स्थिर न रह सका, क्योंकि फ़िलिप के कामज भाई, आस्ट्रिया के वान जॉन ने नीदरलैंड के दस दक्षिणी प्रांतों को इस शर्त पर अलग कर दिया कि उनकी राजनीतिक स्वतंत्रता में फ़िलिप कभी किसी तरह का हस्त-क्षेप न करेगा। इस पर हालैंड के नेतृत्व में नीदरलैंड के सात

प्रांत आपस में मिल गए। उन्होंने ऑरेंज के विलियम (William of Orange) को अपना शासक नियत किया। डच-प्रजातंत्र (Republic) की उत्पत्ति इसी समय से है। एलिज़बेथ ने हालैंड के साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की। इस पर फ़िलिप उससे अत्यंत रुष्ट हो गया, पर रुष्ट होने पर भी वह रानी का बाल बाँका नहीं कर सका। कारण, उसकी सारी शक्ति हालैंड को कुचलने में लगी हुई थी।

(६) इँगलैंड में कैथलिक मत की नई लहर

सैमिनरी पादरी—एलिज़बेथ ने अपनी बुद्धिमानी, चतुरता और धर्म-संबंधी सहनशीलता की नीति से आंग्ल प्रजा को अपने वश में कर लिया। इँगलैंड में कैथलिक मत की बहुत ही अधिक दुर्गति हो चुकी थी। कैथलिक मत के नेता लोग इँगलैंड में उसके पुनरुद्धार के उपाय सोचने लगे। लंकेशायर के एक पादरी विलियम ऐलन ने स्पेनी नीदरलैंड में एक कॉलेज या सैमिनरी खोला, जिसका मुख्य उद्देश कैथलिक मत के प्रचारक तैयार करना था, जो इँगलैंड के कैथलिक मत का पुनरुद्धार कर सकें। पहले यह कॉलेज डोई में था। कई कारणों से यह डोई से हटाकर रीम (Rheims) में स्थापित किया गया। इस कॉलेज ने बहुत उन्नति की और इँगलैंड में अपने सैमिनरी पादरियों को भेजना शुरू किया।

इससे पहले आंग्ल-कैथलिक राजनीति में कुछ भी भाग नहीं लेते थे। सैमिनरी पादरियों ने इस उदासीनता को दूर कर दिया और वे राजनीति में भाग लेने लगे। बेचारी एलिज़बेथ ने घबराकर इन्हें दबाने के लिये कठोर-से-कठोर नियम बनाए। १५७७ में इनके नेता कुथबर्ट मेन (Cuthbert Mayne) की हत्या करा डाली गई। लोगों ने इसको शहीद के तौर पर पूजना शुरू किया।

जेजुइटों (Jesuits) का इँगलैंड पर आक्रमण (१५८०)—जेजुइट लोग भी १५८० में इँगलैंड के भीतर जा पहुँचे। इससे आंग्ल-प्रोटेस्टेंट लोग डर गए। इनके नेता राबर्ट पार्संज़ और एडमंड कैंपियन थे। ये दोनों बहुत चालाक और धार्मिक जोशवाले थे। इनके विरुद्ध नए-नए नियम बनाए गए; इनके चाल-चलन और व्यवहार की पूरी जाँच की गई। इस पर पार्संज़ तो योरप में भाग गया, और कैंपियन क़ैद कर लिया गया। एलिज़बेथ ने उसको भी मरवा डाला। लोगों ने उसका नाम भी शहीदों में लिख लिया। रानी के राज्य में कैथलिक प्रचारकों को यही दंड मिलता रहा और वे शहीद बनते चले गए।

प्रतिज्ञा-पत्र (१५८४)—कैथलिकों को मरवा डालने का एक मुख्य कारण यह भी था कि वे लोग रानी को मारकर मेरी को उसका पद देने के लिये दिन-रात षड्यंत्र रचा

करते थे। फ़िलिप इन षड्यंत्रकारियों को सहायता पहुँचाता था। यही कारण था कि रानी ने तंग आकर स्पेन के राजदूत को स्वदेश भेज दिया। बर्ले (Burghley) और वाशिंघेम ने एक प्रतिज्ञा-पत्र (The bond of Association) तैयार किया और उस पर सब आंग्लों के हस्ताक्षर करवाए। पत्र के अनुसार आंग्लों ने तन-मन-धन से राज्य की रक्षा का प्रबंध करना प्रारंभ किया। १५८५ की लोक-सभा ने भी इस प्रतिज्ञा-पत्र को स्वीकार कर लिया और कैथलिक लोगों के विरुद्ध नए-नए राज्य-नियमों का विधान किया।

रावर्ट डेव्रियो (एसेक्स का अर्ल) | विलियम सीसिल (लार्ड बर्ले) | रावर्ट डड्ले (लीस्टर का अर्ल)

बैबिंगटन-षड्यंत्र (Babington Conspiracy) (१५८६)—१५८६ में एक नया षडयंत्र रचा गया। इसका भी मुख्य उद्देश रानी की हत्या करना था। इस षड्यंत्र का नेता सैमिनरी पादरी जान बैलर्ड (Ballard) था। इसने ऐंथनी बैबिंगटन को अपना साधन बनाया। बैबिंग्टन ने बेवकूफ़ी से किसी से इस गुप्त मंत्रणा का हाल कह दिया। वाशिंघेम ने उसको क़ैद कर लिया। दैव-संयोग से उसके पास मेरी की चिट्ठी मिल गई, जिसमें उसने एलिज़बेथ के मार डालने की आज्ञा दी थी।

इसी चिट्ठी के सहारे मेरी पर मुक़द्दमा चलाया गया। फ़ोथरिंगहेम-दुर्ग में न्यायालय लगा। न्यायालय में बहुतों ने तो इस आधार पर गवाही ही न दी कि एलिज़बेथ को मेरी के अपराध-निर्णय का अधिकार ही क्या है। मेरी स्वयं एक रानी है; वह एलिज़बेथ की प्रजा नहीं है। इस पर भी न्यायालय ने १५८६ के ऑक्टोबर में मेरी को प्राण-दंड दे दिया। एलिज़बेथ ने १५८७ के फ़रवरी तक न्यायालय के निर्णय पर हस्ताक्षर नहीं किए और मेरी की हत्या को अनुचित ठहराया। डेवियन ने मेरी को १५८७ में, ८वीं फ़रवरी को मरवा डाला। एलिज़बेथ ने मेरी की मृत्यु के कलंक से अपने को बचाया और बेचारे डेवियन का सत्यानाश कर दिया।

लेकिन कुछ भी हो, मेरी की मृत्यु से रानी को ही विशेष लाभ हुआ। वह अब निष्कंटक राज्य करने लगी।

एलिज़बेथ और पार्लिमेंट—१५६६ से १५७१ तक रानी ने लोक-सभा का एक भी अधिवेशन नहीं किया। कारण, इधर उसे रुपयों की कोई ज़रूरत ही नहीं थी। लोक-सभा के अधिवेशन में सभ्य लोग कैथलिकों के विरुद्ध राज्य-नियम बनाते थे। रानी को यह नापसंद था। वह धार्मिक सहिष्णुता को ही पसंद करती थी। रानी ने १५७१ में लोक-सभा का अधिवेशन किया। इसमें अधिक संख्या प्यूरिटन लोगों की थी। उन्होंने कैथलिकों को सताने के लिये नए नियम बनाने चाहे, पर सफलता नहीं प्राप्त कर सके। कारण, रानी ऐसे नियमों के विरुद्ध थी। प्यूरिटन लोग सादा जीवन व्यतीत करते थे। स्वार्थत्याग, जोश और स्वतंत्र विचार में वे अद्वितीय थे। वे धर्म में नए-नए सुधार करना चाहते थे। पुराने संस्कारों और प्रथाओं के वे विरोधी थे। वे इन बातों को व्यर्थ समझते थे।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५५८	एलिज़बेथ का राज्याधिरोहण
१५५६	मुख्यता एवं एकता के नियम (Acts of Supremacy and Uniformity)

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५६१	मेरी स्टुवर्ट का स्कॉटलैंड में पहुँचना
१५६५	पार्कर का विज्ञापन
१५६८	मेरी स्टुवर्ट का एलिज़बेथ को लज्जित करना
१५६६	उत्तरीय आंग्लों का विद्रोह
१५७०	पोप का एलिज़बेथ को बहिष्कृत करना
१५७२	स्पेन से हालैंड का अलग होना
१५७६	ग्रिंडल कैंटर्बरी का आर्च-बिशप बनना
१५७७-१५८०	ड्रेक का सारे संसार का चक्कर लगाना
१५७६	भू-ट्रैक्ट का संगठन
१५८४	प्रतिज्ञा-पत्र, स्पेन से इँगलैंड का विरो
१५८६	बैबिंग्टन का षड्यंत्र
१५८७	मेरी स्टुवर्ट की हत्या

अष्टम परिच्छेद

एलिज़बेथ के अंतिम वर्ष (१५८७--१६०३)

(१) इँगलैंड का योरप के राष्ट्रों से संबंध

इँगलैंड और स्पेन का पारस्परिक संबंध—स्कॉटलैंड की रानी मेरी जब क़ैद थी, उन दिनों इँगलैंड और स्पेन का पारस्परिक संबंध दिन-दिन बिगड़ता जा रहा था। फ़िलिप ने आंग्ल-षड्यंत्रकारियों को बहुत उत्तेजित किया और मेरी को छुड़ाने के प्रयत्न में भी कोई बात उठा नहीं रक्खी। इँगलैंड ने भी स्पेन से इसका बदला लिया। उसने फ़िलिप के विरुद्ध नीदरलैंड के लोगों को पूरी सहायता पहुँचाई। फ़िलिप इँगलैंड से और भी अधिक चिढ़ गया। उसने आयर-लैंड में अपनी सेनाओं को उतार दिया और आयरिश कैथ-लिकों को विद्रोह करने पर उतारू किया। इतना ही नहीं, उसने स्कॉटलैंड को भी इँगलैंड से लड़ाने का यत्न किया। जेम्स षष्ठ को उसकी माता की क़ैद का हाल सुनाया और कैथलिक बनने के लिये पत्र लिख भेजा। किंतु स्कॉटलैंड में फ़िलिप को कुछ भी सहायता नहीं मिली।

भूमि के समान ही समुद्र पर भी आंग्लों और स्पेनियों के

संबंध अच्छे नहीं थे। दोनों ही देशों के व्यापारी एक दूसरे से हर समय लड़ते थे। स्पेनी लोग आंग्लों का शिकार करते और आंग्ल लोग स्पेनियों के सोने-चाँदी से लदे जहाज़ लूटते थे। यह झगड़ा २० वर्ष तक लगातार चलता रहा, पर स्पेन और इँगलैंड खुल्लमखुल्ला युद्ध के मैदान में नहीं उतरे। इसका मुख्य कारण यह था कि फ़िलिप और एलिज़बेथ, दोनों भीरु स्वभाव के थे, और लड़ाई में पड़ने से घबराते थे। फ़िलिप को और भी तंगियाँ थीं, जिससे वह लड़ाई नहीं छेड़ सका। स्पेनी नीदरलैंड के बहुत-से भागों ने विद्रोह कर दिया और अपने को प्रजा-तंत्र राज्य के रूप में संगठित कर लिया। स्पेन इस प्रजा-तंत्र राज्य के विरुद्ध था। वह नीदरलैंड के विद्रोही भागों पर अपना ही प्रभुत्व स्थापित रखना चाहता था। स्पेन के साथ फ़्रांस का भी संबंध अच्छा न था। १५५९ के युद्ध को हुए ३० वर्ष के लगभग गुज़र चुके थे, तो भी स्पेन और फ्रांस की शत्रता पहले की-सी ही बनी हुई थी।

स्पेन यदि इँगलैंड से युद्ध करता, तो फ़्रांस स्पेन पर अपने पूरे बल से आक्रमण कर देता। इस झमेले में पड़कर ही स्पेन ने इँगलैंड से मित्रता नहीं तोड़ी। फ़िलिप ने सोचा कि आंग्लों और स्पेनियों का झगड़ा होने दो। राज्य का इन झगड़ों

में पड़ना ठीक नहीं। झगड़े तो आपस में होते ही रहेंगे। वे आप ही शांत भी हो जायँगे। मँझधार में पड़ी नाव आखिर कहीं-न-कहीं जाकर तो लगेगी।

नीदरलैंड में आंग्लों और फ़्रांसीसियों का हस्तक्षेप—नीदरलैंड के विद्रोह को शांत करने के लिये फ़िलिप बहुत ही चटपटा रहा था। आस्ट्रिया के डान जॉन (Don John) ने फ़िलिप का बहुत बड़ा उपकार किया। उसने दक्षिणी और मध्य-नीदरलैंड को अपने वश में कर लिया। मगर उत्तरीय नीदरलैंड के लोग उसके क़ाबू में न आए। डान जॉन के मरने पर नीदरलैंड का शासक परमा का ड्यूक एलेग्ज़ेंडर फ़र्निंत बना। यह अपने समय का एक सेनापति था। इसके शासक बनते ही एलिज़बेथ और फ़्रांस का सम्राट् हेनरी तृतीय, दोनों बहुत ही डरे। हेनरी तृतीय का छोटा भाई फ़्रांसिस था। यह आंजो (Anjou) का ड्यूक था और इसी को चार्ल्स नवम के नाम से फ़्रांस के सिंहासन पर बैठना था। १५७४ में फ़्रांस और इँगलैंड का पत्र-व्यवहार शुरू हुआ। एलिज़बेथ और फ़्रांसिस के ब्याह का मामला तय होने लगा। फ़िलिप को जब यह बात मालूम हुई, तो वह बहुत ही डर गया। कारण, इससे आंजो का प्रांत भी उसके हाथ से निकल जाता।

आंजो-विवाह का विचार (१५८१)—रानी के आंग्ल-राज्य पर अधिकार करने के उपरांत उसके व्याह के बारे में इधर-उधर किंवदंतियाँ उड़ती ही रहती थीं। लोग रानी से व्याह करने के लिये कहते थे, क्योंकि लोगों की यह इच्छा थी कि रानी का कोई बालक ही आंग्ल-सिंहासन पर बैठे। परंतु रानी के मन में कुछ और ही था। उसने यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि मैं जीवन-भर व्याह नहीं करूँगी, अकेली ही मनमाने तौर पर शासन करती रहूँगी। जब कोई रानी से विवाह के लिये कहता, तो वह भी कह देती कि मैं इसके बारे में कई जगह बातचीत कर रही हूँ। जब कहीं बातचीत पक्की हो जायगी, तब तुमको बता दूँगी। तुम तैयारियाँ शुरू कर देना।

आंजो के साथ व्याह के मामले की बात शुरू होने के समय रानी की अवस्था ५० वर्ष की थी। आंजो कुरूप और रानी से २० वर्ष छोटा था। जब वह व्याह करने के लिये इँगलैंड पहुँचा, तो रानी ने बहुत अच्छी तरह उसका स्वागत किया। रानी ने उसे समझाया कि नीदरलैंड की विपत्ति दूर हो जाय, तब विवाह का विचार किया जायगा। वह भी रानी के कहने पर आंग्लों की ओर से नीदरलैंड में स्पेन के साथ लड़ने को चला गया। रानी ने उसको सेना और रुपयों के द्वारा बहुत ही अधिक सहायता पहुँचाई।

आंजो सर्वथा अयोग्य पुरुष था। वह फ़िलिप का बाल भी बाँका न कर सका। इसका परिणाम यह हुआ कि एलिज़बेथ इस विवाह के संकट से न बच सकी। कुछ ही समय के बाद स्पेनियों ने आंजो को नीदरलैंड से भगा दिया। वह भागकर फ़्रांस पहुँचा और थोड़े ही दिनों बाद मर गया।

नीदरलैंड में लीस्टर (१५८६)—आंजो-विवाह का मुख्य उद्देश यही था कि किसी-न-किसी उपाय से रानी नीदरलैंड को स्पेन के आक्रमणों से बचावे। आंजो की मृत्यु के बाद परमा (The Duke of Parma) की शक्ति दिन-पर-दिन बढ़ती ही गई। उसने बहुत-से प्रांतों को जीत लिया। १५८४ में किसी कैथलिक ने विलियम ऑफ़् ऑरेंज को क़त्ल कर डाला। इससे हालैंडवाले बहुत ही अधिक घबरा गए। वे अपनी स्वतंत्रता से निराश हो गए। इन्हीं दिनों में रानी ने स्पेनी दूत को इँगलैंड से निकाल दिया। १५८५ में परमा ने एंटवर्प (Antwerp) को जीत लिया। इस दुर्ग के पतन से दक्षिणी नीदरलैंड अशक्त हो गया।

सब ओर से निराश होकर नीदरलैंड के लोगों ने रानी एलिज़बेथ से कहा कि हम तुमको अपनी रानी बनाने के लिये तैयार हैं। तुम किसी तरह हमारी रक्षा करो—हमारी स्वतंत्रता को बचाओ। एलिज़बेथ बहुत ही चतुर और समझदार थी। उसने इस प्रलोभन से अपने को बचाया और लीस्टर के अर्ल को एक सेना के साथ

नीदरलैंड को रवाना किया। जुट-फ़ेन (Zut-phen) पर एक भयंकर युद्ध हुआ। उसमें प्रसिद्ध आंग्ल-लेखक और सेनापति सर फ़िलिप सिड्नी (Sir Philip Sydney) मारा गया। १५८६ के अंत में हालैंडवालों और लीस्टर में झगड़ा हो गया। वह इँगलैंड को लौट आया। इस घटना के कुछ ही दिनों बाद बैबिंग्टन के षड्यंत्र का भेद खुला और मेरी की हत्या की गई।

लगभग १०० वर्ष से स्पेनियों और आंग्लों के सामुद्रिक युद्ध हो रहे थे। कोलंबस ने अमेरिका का पता लगाया। इससे स्पेनियों का दक्षिण और मध्य अमेरिका पर प्रभुत्व स्थापित हो गया। स्पेनियों ने सामुद्रिक व्यापार, उपनिवेश और साम्राज्य के सहारे समृद्धि बढ़ानी आरंभ की। १५८० में फ़िलिप ने पुर्तगाल पर विजय प्राप्त की। पुर्तगालवालों के हाथ में भारत-वर्ष का व्यापार था। इस विजय से स्पेनियों की शक्ति बढ़ गई; पूर्वी व्यापार और ब्रेज़ील (Brazil) पर भी उन्हीं का प्रभुत्व स्थापित हो गया। आरंभ में स्पेनियों और पुर्तगाल-वालों का कोई भी प्रतिस्पर्द्धी नहीं था। इँगलैंड से तो उन्हें कुछ भी भय न था। कारण, उस समय आंग्ल लोग सभ्यता में बहुत पीछे थे। वे व्यापार करने का ढंग नहीं जानते थे। समुद्र की यात्रा करने और नए-नए देशों को खोज

निकालने का उन्हें कुछ भी शौक़ नहीं था। मध्य-काल (Middle ages) में आंग्ल लोग घर ही में रहना बहुत पसंद करते थे। उनको लड़ने-झगड़ने और खाने-पीने में ही बड़ा आनंद आता था। मतलब यह कि वे व्यापार करके रुपए कमाना नहीं जानते थे। विदेशी लोग उनके यहाँ व्यापार करके लाभ उठाते थे, पर उनको इसकी कुछ भी परवा नहीं थी। लेकिन ट्यूडर-काल में इँगलैंड की दशा बिलकुल ही बदल गई। आंग्ल लोग भी समुद्र-यात्रा और व्यापार की ओर ध्यान देने लगे—इन कामों में हाथ डालने लगे।

(२) एलिज़बेथ के समय मे समुद्र-यात्रा

ट्यूडर-काल में आंग्लों ने व्यापार और समुद्र-यात्रा की ओर क़दम बढ़ाया। कोलंबस और वास्कोडिगामा की खोजों से हेनरी सप्तम की आँखें खुलीं। उसने जान केबो (John Cabot)-नामक वैनीशियन(Venetian) व्यापारी को अमेरिका की ओर रवाना किया। इसने लैब्रेडार का ज्ञान प्राप्त किया। पर इससे फल कुछ भी न निकला। ब्रिस्टल के व्यापारियों ने कुछ मनुष्यों को अमेरिका की ओर फिर भेजा। इन लोगों ने न्यू-फ़ॉउंडलैंड का पता लगाया। आंग्लो ने मछलियों के व्यापार द्वारा इस जगह से लाभ उठाया। उन्होंने पश्चिमी आफ़्रिका जाना भी शुरू किया।

सामुद्रिक उन्नति में इन लोगों का बहुत बड़ा भाग है। एलिज़बेथ के समय तक आंग्लों की सामुद्रिक शक्ति कितनी कम थी, इसका अनुमान इसी से किया जा सकता है कि सन् १५४८ में ५३ छोटे जहाज़, १५५८ में २६ बड़े जहाज़, १५७५ में २४ बड़े जहाज़ और १५८८ में ३४ बड़े जहाज़ इस राज्य के पास थे। आंग्ल-राज्य जंगी जहाज़ों की कमी को व्यापारियों के जहाज़ों से पूरा करता था। आंग्ल-रानी के राज्य-काल में आंग्लों के पास दो प्रकार के जहाज़ थे। एक तो व्यापारी या सामुद्रिक स्थानों और नए-नए प्रदेशों को ढूँढ़नेवालों के पास, दूसरे स्पेन के जहाज़ों को लूटनेवाले अँगरेज़ों के पास।

समुद्र में स्पेन को लूटनेवाले आंग्लों से इँगलैंड को बहुत ही अधिक लाभ था। आंग्ल-जहाज़ों के नेता बहुत ही उत्साही, चतुर और समुद्र की लड़ाई में दक्ष थे। ये लोग दो-दो जहाज़ों से दस-दस जहाज़ों का मुक़ाबला करते थे, बीसियों बार स्पेनियों के सोने-चाँदी से भरे हुए जहाज़ों को लूट चुके थे, उनसे समुद्री लड़ाइयाँ लड़ चुके थे। नए-नए देशों का पता लगानेवाले आंग्लों को भी अनेक बार यही काम करना पड़ता था। उन्हें स्पेनियों से अपने को बचाने के लिये युद्ध करना पड़ता था। अंत में इन्हीं लोगों ने इँगलैंड को समुद्र का स्वामी बनाया।

रानी के राजगद्दी पर बैठने के पहले ही पोप ने स्पेन और पुर्तगाल को योरप के सिवा अन्य सारे महाद्वीप बाँट दिए थे। आंग्लों को पोप का यह फ़ैसला भला कैसे मंज़ूर हो सकता था? ब्रेज़ील, एशिया तथा आफ़्रिका पुर्तगालवालों को और ब्रेज़ील को छोड़कर शेष सारा अमेरिका स्पेनियों को, पहले से ही, मिल चुका था। आंग्ल लोग इन दोनों देशों के राज्य में अपने जहाज़ों को ले जाते और वहाँ मनमाने तौर पर व्यापार करते थे। इससे स्पेनवाले चिढ़ गए। उन्होंने अँगरेज़-व्यापारियों पर अत्याचार करना शुरू किया। अँगरेज़ भी उनके जहाज़ों को लूटने लगे। रानी के राज्यकाल में निम्न-लिखित आंग्लों ने समुद्र-यात्रा और सामुद्रिक डाकों के कारण इँगलैंड में प्रसिद्धि प्राप्त की—

१. हाकिंस (Hawkins)
२. ड्रेक (Drake)
३. ऑक्ज़नहम (Oxenheim)
४. फ़्रॉबिशर (Frobisher)
५. कैब्राडिश (Caverdish)
६. डेविस (Davis)
७. रैले (Raleigh)

(१) **हाकिंस**—इसने १५६२ से १५६६ तक लगा-

तार सामुद्रिक यात्राएँ कीं। इसी ने सबसे पहले दास-व्यापार शुरू किया। यह आफ़्रिका से निग्रो-दासों को ख़रीदकर अमेरिका ले जाता और वहीं बेचता था। स्पेनियों को यह नापसंद था। उन्होंने हाकिंस को स्पेनी-प्रदेशों में व्यापार करने से रोका। हाकिंस भला कब यों माननेवाला था। अमेरिका के लोग हाकिंस के पक्ष में थे। कारण, उन्हें दासों की आवश्यकता थी। अमेरिका की खानों को खोदना और वहाँ खेती करना सहज काम न था। दासों के द्वारा यह काम आसानी से किया जा सकता था। अमेरिका के प्राचीन असभ्य लोग किसी की भी मातहती में काम करने के आदी न थे। यदि उनसे काम लेने का कोई यत्न करे, तो वे शीघ्र ही बीमार पड़कर मर जाते थे। इसी कारण अमेरिकन स्पेनियों का हाकिंस से विशेष प्रेम था। यही कारण है कि वह १५६२ से १५६४ तक दो बार दासों से भरे हुए जहाज़ों को मेक्सिको (Mexico), हिस्पेनियाला (Hispaniala) आदि स्थानों में ले गया। उसने दासों को बेचकर बहुत ही लाभ उठाया था। वह बहुत ही अमीर होकर इँगलैंड लौटा।

फ़िलिप हाकिंस की बढ़ती से चिढ़ गया। उसने उसे स्पेन के प्रदेशों में व्यापार करने से रोका। पर हाकिंस ने उस निषेध की कुछ परवा नहीं की और तीसरी बार फिर दास-

व्यापार के लिये चल पड़ा। मेक्सिको के अंदर, वेराक्रूज़ पर, स्पेनी राज्याधिकारियों ने उसको दास-व्यापार करने से रोका। इसी पर उसका स्पेनियों से झगड़ा हो गया। स्पेनियों के बहुत-से जहाज़ों ने उसको सहसा आकर घेर लिया। हाकिंस समुद्र के युद्ध में चतुर था। उसने अपने जहाज़ों की कुछ भी परवा नहीं की, केवल दो-तीन जहाज़ों को लेकर बड़ी सफ़ाई से निकल भागा और इँगलैंड में पहुँच गया। उसकी वीरता और साहस ने आंग्लों के लिये पथ-प्रदर्शक का काम किया। हरएक आंग्ल अपने सौभाग्य और समृद्धि के लिये इन कामों में पड़ना आवश्यक समझने लगा।

हाकिंस से कुछ पहले इँगलैंड में 'साहसी व्यापारियों की कंपनी' (Company of Merchant Adventurers) नाम की एक कंपनी खुल चुकी थी। उसका प्रधान सिवेस्टियन केबो (Sevastian Cabot) था। इस कंपनी ने स्कैंडिनेविया (Scandinavia) और बाल्टिक प्रांतों से बहुत ही अच्छी तरह व्यापार किया और उससे ख़ूब लाभ उठाया। शुरू में वह व्यापार हंसों की स्टील यार्ड कंपनी के हाथ में था।

साहसी व्यापारी कंपनी ने १५५३ में, सर ह्यू विलोबी (Sir Hugh-Willoughby) और रिचर्ड चांसलर (Richard Chanceller) को नए-नए देशों और नए-नए सामुद्रिक

मार्गों का पता लगाने के लिये भेजा। इन्होंने आर्कटिक समुद्र की ओर से चीन में पहुँचने का मार्ग ढूँढ़ना चाहा, पर उनका यह प्रयत्न सफल नहीं हुआ। चांसलर ने श्वेत-सागर (White sea) का पता लगाया और रूस के साथ सीधे व्यापार करने की राह भी ढूँढ़ ली। यही कारण है कि इसके कुछ ही दिनों बाद इँगलैंड में 'रशिया-कंपनी' नाम की एक नई कंपनी खुल गई। रानी मेरी के समय में ये सब व्यापारी-कंपनियाँ खुल चुकी थीं।

धार्मिक परिवर्तन तथा धार्मिक सुधारों का ऊपर लिखे गए साहस से संबंध रखनेवाले कामों से बहुत अधिक घनिष्ठ संबंध था। लगभग सभी आंग्ल-व्यापारी प्रोटेस्टेंट थे। उनको पोप से घोर घृणा थी। मेरी के समय में भी आंग्लों ने कैथलिक मतावलंबी समुद्री-यात्रियों को लूटने में कसर नहीं रक्खी। कुछ ही दिनों के बाद हॉलैंड और फ्रांस के लोगों ने भी इस डाके मारने के काम में आंग्लों का अनुकरण किया। सभी लोग स्पेनी जहाजों को लूटते थे। इस लूट-मार को ये लोग पवित्र और धर्म का काम समझते थे। कारण, उनके विचार में पोप की प्रजा को लूटना कुछ भी बुरा न था। स्पेनी लोग भी इनको अपने प्रदेशों में व्यापार करने से रोकते थे। परंतु "मरता क्या न करता", इस न्याय के अनुसार अनेक बार स्पेनी औपनिवेशिक लोग (Colonists) इन डाकू और नियम-विरोधी व्यापारी जहाजों

का स्वागत करते ही थे और इनसे सामान ख़रीदकर अपनी ज़रूरतों को पूरा करने में कुछ भी कमी न करते थे। हाकिंस ने दास-व्यापार से किस तरह लाभ उठाया, इसका वर्णन किया ही जा चुका है।

(२) ड्रेक तथा (३) ऑक्ज़नहम—ड्रेक हाकिंस का संबंधी था। वह उसके साथ बहुत दफ़ा समुद्र-यात्रा कर चुका और स्पेनियों के जहाज़ों को लूट चुका था। १५७२ में १११ आदमियों के साथ ड्रेक स्पेनिश-अमेरिका की ओर रवाना हुआ। वह डेरीयन की जलग्रीवा (Straits of Darrien) को पारकर नांत्रिदिदाए-नामक बंदरगाह में जा पहुँचा। रात ही को उसने बहुत-से स्पेनी जहाज़ों पर आक्रमण किया और उनमें लदी हुई चाँदी तथा सोने को लूट लिया। इस आक्रमण में वह स्वयं भी घायल हो गया। उसने एक जहाज़ तो चाँदी से भरकर इँगलैंड की ओर रवाना कर दिया, और दो जहाज़ों को अपने साथ रक्खा। लूटमार का काम उसने पहले की ही तरह जारी रक्खा।

पनामा की ओर रवाना होते हुए, उसने एक पहाड़ी से पैसिफ़िक-महासागर को देखा और उसके द्वारा इँगलैंड पहुँचने का इरादा किया। अभी तक पैसिफ़िक-महासागर में किसी भी आंग्ल ने यात्रा न की थी। स्पेनी लोग ही पीरू (Peru)

से चाँदी प्राप्त कर पैसिफ़िक-सागर के द्वारा स्पेन पहुँचते थे। १५७७ में उसने पैसिफ़िक-सागर की यात्रा की और अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का इरादा किया। तीन वर्षों तक वह समुद्र में इधर-उधर भटकता रहा और इसी बीच में सारे संसार का चक्कर लगाकर फिर इँगलैंड जा पहुँचा। ड्रेक की संसार-यात्रा से पूर्व ही, १५७५ में, ऑक्ज़नहम ने स्पेन की चाँदी को लूटने का यत्न किया। वह अपनी तोपों तथा जहाज़ों को लेकर नांम्रिदिदाए में जा पहुँचा और यहाँ से वह पैसिफ़िक-सागर में पहुँचा वहाँ उसने। स्पेनियों के चाँदी से भरे हुए दो जहाज़ों को लूट लिया, पर बेवकूफ़ी से जहाज़ों पर के स्पेनियों को छोड़ दिया। इन बचे हुए स्पेनियों ने ऑक्ज़नहम के पीछे बहुत-से स्पेनी जहाज़ों को रवाना करवा दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि वह स्पेनियों के हाथ में पड़कर मारा गया। इस घटना के कुछ ही दिनों बाद ड्रेक ने, १५७७ में, संसार-यात्रा का साहस किया। यात्रा करने के पूर्व ड्रेक की इच्छा, मैगेलान की जल-ग्रीवा (Straits of Magellan) से गुज़रकर, पैसिफ़िक-महासागर में पहुँचने की थी। मैगेलान में पहुँचते ही भयंकर सामुद्रिक तूफ़ान आ गया। इससे उसके पाँचों जहाज़ एक दूसरे से अलग हो गए। कौन जहाज़ कहाँ गया, इसका उसको कुछ भी पता न चला। लाचार होकर उसने पैलिकान (Pelican)-नामक अपने

जहाज़ को 'गोल्डेन हाइंड' (Golden Hind) नाम देकर समुद्र-यात्रा शुरू की। मैगेलान से वह वाल्परे (Valparaiso)।
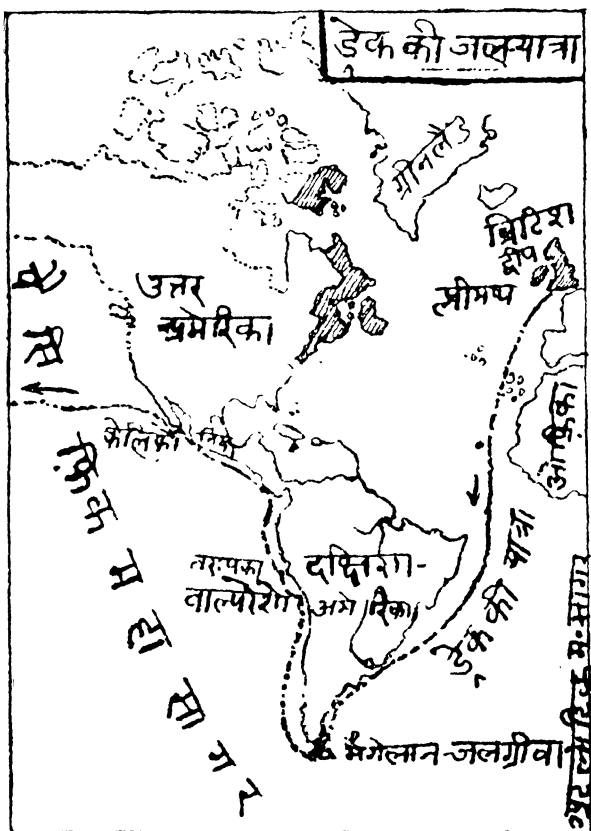
ड्रेक की समुद्र-यात्रा

पर जाकर ठहरा। वहाँ उसने स्पेनियों के चाँदी से भरे हुए जहाज़ों को लूटा। उसने उनके एक जहाज़ को अपने साथ लिया और उसके सहारे उनके एक और जहाज़ को लूटने का यत्न किया, जिसमें ख़ज़ाना था। इस यत्न में वह सफल हुआ। वह ख़ज़ाना लूटकर बड़ी तेज़ी से भाग निकला। पीरू से चलकर रास्ते में स्पेनियों के जहाज़ों को निर्भय होकर लूटता हुआ वह उत्तरीय अमेरिका के पश्चिमी किनारे पर जा पहुँचा। इस लूट-मार में उसको बहुत-से सामुद्रिक नक़शे मिल गए। इन नक्शों के सहारे इँगलैंड को आगे चलकर बहुत ही अधिक लाभ पहुँचा। वह अमेरिका के पश्चिमी किनारे से लौटकर न्यू ऑरलियन में पहुँचा और भारतवर्ष की ओर रवाना हुआ। वह भारतवर्ष, मलाका, चीन आदि में घूमता हुआ, १५८० में, इँगलैंड के अंदर पहुँच गया।

उसकी यात्रा तथा सफलता को सुनकर एलिज़बेथ ने उसे 'नाइट' की उपाधि दी। सारी आंग्ल-जाति ड्रेक को सम्मान की दृष्टि से देखने लगी। उसके बाद उसकी देखादेखी, १५७६ से १५८८ तक, अन्य बहुत-से आंग्लों ने सामुद्रिक यात्राएँ कीं, जिनके नाम ऊपर दिए जा चुके हैं।

(४) **फ्राबिशर**—१५७६ से १५७८ तक फ्राबिशर ने

इँगलैंड के उत्तरीय भागों का पता लगाया। ग्रीनलैंड को खोजने-वाला यही समझा जाता है। यही कारण है कि ग्रीनलैंड के पास की एक खाड़ी का नाम 'फ़्राबिशर' है।

(५) **कैवांडिश**—इसने १५८६ से १५८८ तक सामुद्रिक यात्राएँ कीं। स्पेनी यात्रियों को इसने बहुत ही अधिक लूटा और कई स्थानों पर आग लगा दी। यह स्पेनियों को लूटकर और ख़ूब अमीर होकर इँगलैंड लौट आया।

(६) **जॉन डेविस**—इसने १५८८ में तीसरी बार समुद्र-यात्रा की। समुद्र के यात्रियों में ड्रेक से दूसरे नंबर पर इसी की गणना की जाती है। ग्रीनलैंड के पास, इसी के नाम पर, एक 'जॉन डेविस स्ट्रेट' है।

(७) **रैले** (Raleigh)—इसका विचार स्पेनियों के सदृश ही अमेरिका आदि देशों में उपनिवेश बसाना था। इसका वर्णन आगे चलकर किया जायगा।

(३) इँगलैंड और स्पेन का युद्ध

इँगलैंड और स्पेन का युद्ध (१५८४)—स्पेनी लोग ड्रेक को डाकू से भी बढ़कर बुरा समझते थे। उसने स्पेनी-राज्य के ख़ज़ानों को लूटा और स्पेनियों की संपत्ति पर डाका मारा था। फ़िलिप ने ड्रेक को रानी से माँगा।

कारण, वह ड्रेक को उसके अपराधों का दंड देना चाहता था।

इन्हीं दिनों जेजुइट लोगों का झुंड इँगलैंड पहुँचा था। आंजो-विवाह का मामला भी इसके कुछ ही दिनों के बाद शुरू हुआ था। रानी ने ड्रेक को 'नाइट' (Knight) बनाया था। वह उसके साहस और उत्साह के कामों को बहुत पसंद करती थी। यही कारण है कि उसने फ़िलिप का कहा नहीं माना, ड्रेक को उसके सिपुर्द नहीं किया।

स्पेनी दूत के इँगलैंड से बाहर निकाले जाने के उपरांत फ़िलिप ने आंग्लों की संपत्ति को लूटना शुरू किया। उसके साम्राज्य में जहाँ कहीं आंग्ल रहते थे, उनके साथ बहुत ही बुरा व्यवहार किया गया।

रानी ने इसका बदला लेने के लिये ड्रेक और फ़्राबिशर को तैनात किया। इन दोनों सामुद्रिक वीरों ने, १५८५ में, वीगो (Vigo)-नामक स्थान को लूटा। ये लोग वेस्ट-इंडीज़ की ओर शीघ्र ही रवाना हुए। १५८७ में मेरी की हत्या होते ही स्पेन ने इँगलैंड से खुल्लमखुल्ला लड़ना शुरू कर दिया। फ़िलिप ने अपने जहाज़ों को एकत्रित किया और इँगलैंड पर हमला करने की पूरी तैयारी की। ड्रेक चुपके-ही-चुपके केडीज़ (Cadiz) में जा पहुँचा और स्पेन के जहाज़ी बेड़े में आग

लगाकर बहुत-से जहाज़ डुबो आया। इससे फ़िलिप के क्रोध की सीमा न रही। उसने १५८८ में एक और जहाज़ी बेड़ा (Armada) तैयार किया और इँगलैंड पर हमला करने का मौक़ा देखने लगा।

इँगलैंड पर फ़िलिप के आक्रमण करने का उपाय—फ़िलिप अपने जहाज़ी बेड़े को फ़्लांडर्स में रवाना करना और वहाँ से ही पारमा की सेना को इँगलैंड के किनारे पर उतारना चाहता था। फ़िलिप को यह आशा थी कि इँगलैंड में स्पेनियों के पहुँचते ही आंग्ल-कैथलिक लोग विद्रोह कर देंगे और स्पेनियों के साथ आ मिलेगें। मेरी के मरते ही फ़िलिप ने इँगलैंड पर आक्रमण करने का अच्छा मौक़ा पाया। उसने आंग्ल-राज्य पर अपना अधिकार प्रकट किया, क्योंकि जॉन ऑफ़् गांट की ओर से ट्यूडरों की अपेक्षा वही नजदीकी राजा था। रानी स्थल में स्पेनियों से लड़ने से डरती थी, क्योंकि उसके पास कोई स्थायी सेना न थी। अतः उसने स्पेनियों को इँगलैंड में उतरने से रोकना चाहा। आंग्लों को सामुद्रिक युद्ध में आत्म-विश्वास था। हाकिंस तथा ड्रेक के पास अच्छे-अच्छे लड़ाकू जहाज थे। स्पेनियों और आंग्लों के जहाज़ी बेड़े में जो भेद था, वह इस प्रकार दिखाया जा सकता है—

स्पेनी बेड़ा	आंग्ल-बेड़ा
(१) स्पेनियों के जहाज़ बहुत बड़े, जल के ऊपर उठे हुए और भारी थे, पर शीघ्र-गामी न थे।	(१) आंग्लों के जहाज़ भी काफ़ी बड़े थे, परंतु स्पेनियों से छोटे ही थे। उनका बहुत-सा भाग जल में निमग्न रहता था। वे हल्के और तेज़ चलनेवाले थे।
(२) तोपें, बंदूक़ें और बारूद थोड़ी थी।	(२) हथियारों से ख़ूब सुसज्जित थे।
(३) स्पेनी जहाज़ व्यापार तथा बोझ उठाने ही के योग्य थे। वे लंबी यात्रा नहीं कर सकते थे।	(३) केवल लड़ने के लिये ही बनाए गए थे।
(४) स्पेनियों का प्रधान सामुद्रिक सेनापति था ड्यूक मैडीनासिडोनिया (Medina-Sedonia)। इसके	(४) आंग्लों का सामुद्रिक सेनापति लॉर्ड हावर्ड था। इसकी मातहती में ड्रेक, हाकिंस और

मातहत जो सेनापति थे, वे सामुद्रिक युद्धों को न जानते थे।	फ़ाबिशर आदि सेना-पति थे। ये लोग बीसियों बार सामुद्रिक युद्धों में स्पेनियों को पराजित कर चुके थे।
(५) इसमें सिपाही बहुत ही अधिक थे और मल्लाह बहुत ही कम।	(५) इनमें सिपाही थोड़े थे और मल्लाह बहुत अधिक। अतः इन्होंने शीघ्रगामी होने के कारण स्पे-नियों को तंग करना ही सोचा और बरा-बरी की लड़ाई से अपने को बचाया।
(६) सिपाही और मल्लाह साधारण योग्यता के थे।	(६) आंग्लों के जहाज़ सामुद्रिक योद्धाओं से भरे हुए थे।

दोनों ओर के जहाज़ी बेड़ों को देखने से स्पष्ट है कि आंग्ल अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होने के कारण तथा शीघ्रगामी

जहाज़ों और ड्रेक, फ्राबिशर आदि के सुप्रबंध तथा साहसी कार्यों से स्पेनियों पर शीघ्र ही विजय प्राप्त कर सकते थे। वास्तव में यही हुआ।

स्पेनी बेड़े का नाम अजेय आर्मेडा (The Invincible Armada) था। स्पेनियों को अपने जहाज़ी बेड़े के बड़े होने का बहुत ही घमंड था। दैवसंयोग से आरंभ से ही इस बेड़े पर विपत्ति-पर-विपत्ति पड़ने लगी। लिसबन (Lesbon) से मे में यह चला। परंतु तूफ़ान के कारण आगे न बढ़ सका। १६ जुलाई को स्पेनी आर्मेडा आंग्ल-चैनेल (English Channel) में पहुँचा और सामुद्रिक तूफ़ान के कारण डोवर की ओर बह गया। आंग्लों ने अपने जहाज़ी बेड़े के द्वारा स्पेनिश आर्मेडा पर पीछे से हमला कर दिया। सप्ताह-भर तक युद्ध होता रहा। आंग्ल वायु के प्रवाह के अनुकूल अपने जहाज़ी बेड़े को रखते और स्पेनी आर्मेडा पर बुरी तरह से चोट पहुँचाते थे। आर्मेडा के एक-एक जहाज़ को आंग्लों ने काट दिया और बहुत-से जहाज़ों को अपने क़ाबू में कर लिया। लाचार होकर स्पेनी आर्मेडा ने अपना लंगर कैले (Calais) में डाल दिया। आंग्लों ने बहुत-सी नावों में आग लगा दी और उनको स्पेनी जहाज़ों के बीच

में छोड़ दिया। इससे स्पेनियों के बहुत-से जहाज़ जल गए, और उनको कैले छोड़कर भागना पड़ा। आंग्लों ने भागते
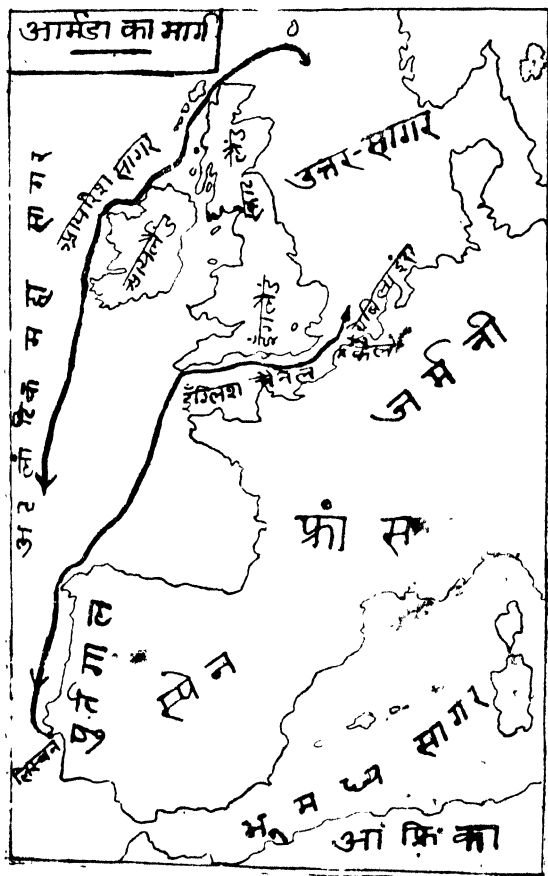
अजेय आर्मडा का मार्ग

हुए आर्मडा का बुरी तरह पीछा किया । लाचार होकर स्पेनियों ने आंग्लों से भयंकर युद्ध किया । यह युद्ध ग्रेबिलाइंस (Gravelines) पर, २६ जुलाई को लगातार ६ घंटे तक होता रहा । इस युद्ध के अनंतर उन्होंने नियम-पूर्वक पीछे हटना शुरू किया और अनुकूल वायु की प्रतीक्षा की । बहुत समय तक प्रतीक्षा करने पर भी जब उन्हें माफ़िक़ हवा न मिली, तो उन्होंने स्कॉटलैंड का चक्कर लगाकर, आयर्लैंड के समीप से, लिसबन पहुँचने का विचार किया । इस यत्न में उनके आधे जहाज़ नष्ट हो गए और वे इँगलैंड पर हमला न कर सके ।

इँगलैंड की विजय का परिणाम—आर्मडा की पराजय से इँगलैंड एक भयंकर विपत्ति से बच गया । वहाँ प्रोटेस्टेंट मत सदा के लिये स्थिर हो गया । इसी युद्ध से इँगलैंड एक नौ-शक्ति-संपन्न राज्य बन गया, उसके व्यापार और उपनिवेशों की नींव पड़ गई । स्कॉटलैंड और इँगलैंड की एकता का बीज भी इसी विजय से उत्पन्न समझा जाता है, क्योंकि यदि फ़िलिप इँगलैंड का राजा बन जाता, तो जेम्स की मातहती में दोनों देश एक दूसरे से जुड़ न सकते । इस पराजय से स्पेन की शक्ति क्षीण हो गई । योरप में कैथलिक मत का फैलना रुक गया । हालैंड सदा के लिये फ़िलिप

के अत्याचारों से छुटकारा पा गया। योरप के इतिहास और इँगलैंड के जीवन में इस युद्ध का बहुत बड़ा स्थान है। ऐसा समझा जाता है कि नवीन इँगलैंड की नींव इसी विजय से पड़ी।

फ्रांस का हेनरी चतुर्थ (१५८९)—फ्रांस पर इँगलैंड की विजय का बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा। उस देश के कैथलिकों और काल्विनिस्टों का झगड़ा अंतिम सीमा तक जा पहुँचा। कैथलिक लोगों ने हेनरी तृतीय का सत्यानाश कर दिया और स्पेन के फ़िलिप को अपना नेता नियत किया। कुछ ही दिनों बाद हेनरी को किसी कैथलिक ने मार डाला। उसकी मृत्यु के बाद बाबून का ड्यूक हेनरी चतुर्थ के नाम से फ्रांस के सिंहासन पर बैठा। यह बुद्धिमान्, चतुर और एलिज़बेथ के समान ही धार्मिक सहिष्णुता का पक्षपाती था। इसने नैंटे की उद्घोषणाओं (Edicts of Nantes) के द्वारा फ्रांस में भी धार्मिक सहिष्णुता का प्रचार किया। धीरे-धीरे योरप के सम्राटों में इसने एक उच्च स्थान प्राप्त कर लिया। इसने रानी एलिज़बेथ से मित्रता का व्यवहार किया और दश वर्षों तक दोनों ही स्पेन की शक्ति को नष्ट करने का यत्न करते रहे। १५९८ में फ़िलिप ने फ्रांस से संधि की और संधि के बाद ही वह मर भी गया। इसकी मृत्यु के बाद स्पेन की शक्ति सर्वथा नष्ट हो गई।

स्पेन के साथ युद्ध (१५८६-१६०३)—एलिज़बेथ की मृत्यु तक इँगलैंड और स्पेन का युद्ध चलता ही रहा। ये सब युद्ध समुद्र पर ही हुए। इन युद्धों में इँगलैंड ने सफलता नहीं प्राप्त की, क्योंकि स्पेनी लोग भी आंग्लों के समान ही समुद्र-युद्ध में निपुणता प्राप्त कर चुके थे। १५८९ में ड्रेक ने लिसबन पर आक्रमण किया, परंतु कृतकार्य न हो सका। १५९१ में लॉर्ड टॉमस हावर्ड ने अज़ोस (Azores) पर आक्रमण किया। स्पेनी बेड़े के शक्तिशाली होने के कारण उसको पीछे लौटना पड़ा। हावर्ड का रिवेंज (Revenge)-नामक एक जहाज़ सर रिचर्ड ग्रैनविल (Sir Rechard Grenville) के पास था। यह स्पेनी जहाज़ों के बीच में फँस गया। ग्रैनविल ने स्पेनी जहाज़ों को चीर-फाड़कर निकल जाने का यत्न किया और कई घंटे बहुत ही भयंकर युद्ध हुआ। उसने घायल होकर हार मानी। स्पेनी लोग उसे पकड़कर अपने एक जहाज़ पर ले गए। थोड़ी ही देर में यह वीर मर गया। इस युद्ध की कहानियाँ बहुत दिनों तक आंग्लों को उत्तेजित करती रहीं।

१५९५ में ड्रेक और हाकिंस ने वेस्ट-इंडीज़ पर धावा मारा। स्पेनी लोग पहले ही से तैयार थे। इसका परिणाम यह हुआ कि इन दोनों को ख़ाली हाथ लौटना पड़ा। इसके अगले ही साल फ़िलिप ने केडीज़ पर दूसरा 'आर्मेडा' तैयार किया। लॉर्ड हावर्ड

(४) एलिज़बेथ और आयर्लैंड

यह पहले ही दिखाया जा चुका है कि हेनरी अष्टम ने आयर्लैंड को इँगलैंड के अधीन रखने के लिये क्या-क्या उपाय किए। हेनरी के बाद मेरी के समय तक इसी प्रकार के उपाय किए गए; परंतु सफलता किसी को भी न प्राप्त हुई। एलिज़बेथ बहुत ही कंजूस थी। वह आयर्लैंड को वश में तो करना चाहती थी, परंतु उसके लिये रुपए नहीं ख़र्च करना चाहती थी। इसलिये उसने औपनिवेशिक शैली ग्रहण की। रानी मेरी ने आयर्लैंड के जो प्रांत जीते थे, उनका नाम किंग्स-काउंटी और क्वींस-काउंटी रक्खा। इन काउंटियों में दो शहर भी बसाए गए। उनमें एक का नाम 'फ़िलिप्स-टाउन' और दूसरे का नाम 'मेरी-टाउन' रक्खा गया।

रानी एलिज़बेथ कैथलिक मत के विरुद्ध थी। उससे पहले के आंग्ल-राजा लोग आयरिश सरदारों ही के द्वारा आयर्लैंड का शासन करते थे। परंतु १५५८ से १५६७ तक जो-जो घटनाएँ हुईं, उन्होंने रानी को इस बात के लिये विवश किया कि वह आयरिश सरदारों के द्वारा आयर्लैंड का राज्य और शासन करे। उत्तरीय आयर्लैंड के अलस्टर (Ulster) प्रांत में 'ओ'नील' (O'Niel) नाम का एक

प्रसिद्ध कुलीन वंश था। हनरी अष्टम ने इस वंश को अपने क़ाबू में रखने के लिये अल्स्टर के ज़मींदार ओ'नील को अर्ल की उपाधि दी। जब वह अर्ल बहुत ही बूढ़ा हो गया, तो उसने हेनरी अष्टम से प्रार्थना की कि मेरी अर्ल की उपाधि पुश्तैनी बना दी जाय। उसके सबसे बड़े पुत्र को उसकी नीति पसंद नहीं थी। वह आंग्ल-राजा की दी हुई उपाधियों को घृणा की दृष्टि से देखता था। उसने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर उसको ज़मींदारी से निकाल दिया और जिन-जिन भाइयों ने विरोध किया, उन्हें भी यमलोक पहुँचा दिया। ओ'नील-वंशवालों ने उसको अपना नेता बनाया और अल्स्टर को स्वतंत्र कर लिया। एलिज़बेथ ने उस वीर पुरुष को अपने वश में करना चाहा, परंतु सफल न हो सकी। १५६७ में सर फ़िलिप सिडनी के पिता सर हेनरी फ़िलिप ने उस वीर के साथ युद्ध किया। आयर्लैंड के दुर्भाग्य से ओ'नील को एक विरोध रखनेवाली जाति के सरदार ने मार डाला। इसके बाद अल्स्टर इँगलैंड के हाथ में आ गया।

रानी ने अर्ल ऑफ़ एसेक्स को अल्स्टर का शासक नियत किया। उसने वहाँ पर आंग्ल-प्रोटेस्टेंटों को बसाया। परंतु शासन के काम में वह कृतकार्य नहीं हो सका। अल्स्टर

वहाँ की एक असली पुरानी जाति के ही हाथ में चला गया।

एलिज़बेथ के शत्रुओं ने आयर्लैंड को अपना अड्डा बनाना चाहा। फ़िलिप ने सिपाही और पोप ने पादरी आयर्लैंड भेजे। उन्होंने आयरिशों को रानी के विरुद्ध भड़का दिया। मनूस्टर (Munster) में भयंकर विद्रोह हो गया। इस स्थान में स्कैट्स जैरल्ड का वंश रहा करता था। इनके नेता का नाम अर्ल ऑफ डेस्मंड (Desmond) था। रानी ने मंस्टर-प्रांत के साथ बड़ी क्रूरता का व्यवहार किया। उसने उस प्रांत को उजाड़ दिया और वहाँ पर अँगरेज़ों को बसाया। उन्हीं को वहाँ की सारी भूमि बाँट दी। परंतु, फिर भी, बहुत थोड़े आंग्ल आयर्लैंड में गए। जो वहाँ बसने लगे, उनको आयरिशों ने बहुत अधिक सताया। यह उपनिवेश भी वहाँ असफल ही रहा। यह होने पर भी रानी की क्रूरता और भय से बीस वर्षों तक आयर्लैंड में शांति रही अर्थात् आयरिशों ने सिर नहीं उठाया। परंतु उसका परिणाम यह हुआ कि इस क्रूरता से तंग आकर उन लोगों ने आपस में एकता बढ़ानी शुरू कर दी। इस संगठन के कारण १५९८ में आयर्लैंड में फिर विद्रोह हो गया। विद्रोहियों का नेता शान का भतीजा था। अलस्टर और मंस्टर में भी विद्रोह हो गया, क्योंकि मंस्टर में डेस्मंड पहुँच गया था।

इस विद्रोह का दमन करने के लिये रानी ने अर्ल ऑफ़ एसेक्स को भेजा। यह योग्य पुरुष नहीं था। इसलिये विद्रोह के दमन में इसको सफलता नहीं मिली। यह रानी की आज्ञा के विना ही इँगलैंड को लौट गया। रानी को इसने अपने ख़ूनी कपड़े दिखाए और अपनी कठिनाइयों तथा कष्टों का वर्णन किया। सब सुनने के बाद रानी ने इसे क़ैद कर दिया, पर कुछ दिनों के बाद छोड़ भी दिया।

अवधि समाप्त होने पर रानी ने इसे शराब का एकाधिकार (Monopoly) नहीं दिया। इस पर इसने विद्रोह करने का यत्न किया। परंतु किसी भी आंग्ल ने इसका साथ नहीं दिया।

रानी ने एसेक्स के बाद लॉर्ड माउंट ज्वॉय (Lord Mountjoy) को आयर्लैंड भेजा। इसने अपनी शक्ति और निर्दयता से विद्रोह को शांत कर दिया। ओ'नीलों ने चिरकाल तक अलस्टर में आंग्लों का विरोध किया; परंतु रानी की मृत्यु से पहले उनको भी इँगलैंड की अधीनता माननी पड़ी। लॉर्ड माउंटज्वॉय की निर्दयता ने आयरिशों के हृदयों को घायल कर दिया। उन्होंने आंग्लों से घृणा करनी शुरू कर दी और अपने को उनके पंजे से निकालना चाहा।

(५) एलिज़बेथ के अंतिम दिन

आयर्लैंड-विजय के उपरांत आंग्ल-जनता का ध्यान

स्कॉटलैंड और वेल्स को अपने साथ मिलाने की ओर गया। विलियम मार्गन (William Morgan) ने वैल्श (Welsh)-भाषा में बाइबिल का अनुवाद किया। इससे वेल्स में भी इँगलैंड का प्रोटेस्टेंट मत ही फैलने लगा। स्कॉटलैंड पहले से ही प्रोटेस्टेंट था। अतः इन धार्मिक युद्धों के दिनों में स्वाभाविक रूप से ही आंग्लों से स्कॉच-लोगों की मित्रता हो गई। एलिज़बेथ की मृत्यु होने पर लोग स्कॉच राजा जेम्स षष्ठ को ही इँगलैंड का भी राजा बनाने के लिये उद्यत हो गए।

सेसिल एसेक्स और रैले—स्पेन-विजय के बाद आंग्लों की समृद्धि दिन-दूनी रात-चौगुनी बढ़ने लगी। आयर्लैंड जीता जा चुका था। पोप और जेजुइट लोगों का कुछ भी भय न था। इँगलैंड समुद्र का स्वामी था। यही कारण है कि हंसों के समान ही उसने भी योरप के व्यापार को अपने हाथ में करने का यत्न किया।

एलिज़बेथ बुड्ढी हो गई थी। उसके मित्र और बंधु भी अब जीवित न थे। ऐसी दशा में शोक के कारण वह एकांत में ही रहना पसंद करती थी। १५९८ में बर्ले की भी मृत्यु हो गई। उसने अपने पुत्र सर राबर्ट सेसिल को सब राज-काज सौंप दिया। एसेक्स और रैले ने स्पेन से युद्ध

जारी रखने का यत्न किया। मगर राबर्ट सेसिल ने बुद्धिमानी से इस काम को नहीं किया। बुढ़ापे के दिनों में एसेक्स से रानी नाराज़ हो गई थी। उसने उसे मरवा तो डाला, पर उसके दिल को बड़ा धक्का पहुँचा।

बुढ़ापे के दिनों में प्रजा के प्रति रानी का व्यवहार कठोर एवं क्रूर हो गया था। विट्गिफ़्ट ने प्यूरिटन लोगों को व्यर्थ ही सताना शुरू किया। रोमन कैथलिकों पर भी किसी तरह की दया नहीं की गई। कारागार अपराधियों से भर गए।

एलिज़बेथ और पार्लिमेंट—रानी के राज्य-काल में लोक-सभा ने फिर शक्ति प्राप्त करना आरंभ किया। इसका मुख्य कारण यही था कि लोक-सभा के सभ्य धर्मांध और सुधारों के पक्षपाती थे। कैथलिकों को तंग करने के लिये लोक-सभा ने रानी को धन की बहुत ही अधिक सहायता पहुँचाई। बहुत-सी बातों के लिये लोक-सभा ने रानी को तंग भी बहुत ज्यादा किया। वे बातें ये हैं—

(क) विवाह करने के लिये

(ख) प्यूरिटन लोगों को अधिकाधिक अधिकार देने के लिये

(ग) विदेशों में रहनेवाली प्रोटेस्टेंट जातियों को सहायता देने के लिये

रानी इन तीनों बातों से घबराती थी। इसीलिये उसने लोक-सभा के बहुत कम अधिवेशन किए। ४५ वर्षों में केवल १३ बार लोक-सभा के अधिवेशन हुए। सभा को वश में रखने के लिये रानी ने कुछ नए-नए 'बरों' को भी प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दे दिया। वह उन 'बरों' से अपनी इच्छा के अनुकूल ही प्रतिनिधि चुनवाती थी। महामंत्री भी लोक-सभा का सभ्य था, इसलिये वह लोक-सभा को रानी के अनु-कूल रखता था। जो सभ्य कुछ स्वतंत्रता प्रकट करते थे, उन्हें रानी क़ैद करवा देती थी।

१५९७ में लोक-सभा ने रानी से प्रर्थना की कि वह एकाधिकारों को हटा दे। एकाधिकार (Monopoly) का अर्थ है किसी चीज़ के बेचने का अधिकार केवल एक ही मनुष्य को देना। ऐसा होने से एकाधिकार पानेवाला उस चीज़ को मनमाने भाव पर बेचता और जनता को अत्यधिक मूल्य देना पड़ता था। तरह-तरह की चीज़ों के बेचने के अधिकार दिए जाते थे, जिससे आवश्यक वस्तुओं के दाम बहुत बढ़ गए थे। ऊपर लिखी हुई प्रर्थना पर रानी ने ध्यान नहीं दिया। १६०३ की लोक-सभा ने एकाधिकारों की सूची पढ़ी। एक सभ्य ने

पूछा कि "इन एकाधिकारों में क्या रोटी का बेचना शामिल नहीं है? अगर इसका कुछ प्रतिकार न किया गया, तो इसका भी एकाधिकार हो जायगा।"

सभ्यों के शोर मचाने पर रानी ने एकाधिकारों को हटाना मंज़ूर कर लिया। इस पर सभा ने रानी को धन्यवाद दिया। १६०३ के मार्च की २४ ता० को रानी की मृत्यु हो गई।

सन	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५८८	स्पेनी आरमेडा की पराजय
१५९१	रिवेंज की समुद्री लड़ाई
१५९६	केडीज़ की विजय
१५९७	एकाधिकारों के विषय में लोक-सभा का रानी से पहला झगड़ा
१५९८	आयर्लैंड का विद्रोह
१६०१	एकाधिकारों के विषय में लोक-सभा का रानी से दूसरा झगड़ा
१६०३	एलिज़बेथ की मृत्यु

नवम परिच्छेद

ट्यूडर-काल में इँगलैंड की सभ्यता

(१) इँगलैंड की राजनीतिक दशा

ट्यूडर-काल में ही इँगलैंड मध्य-युग (Middle Ages) से नवीन युग में प्रवेश करता है। सब तरफ़ परिवर्तन-ही-परिवर्तन हुआ। विद्या-विचार ने नवीन रूप प्राप्त किया और धर्म में भी नए ढंग का परिवर्तन आ गया। एलिज़बेथ ने इँगलैंड में अपनी धार्मिक सहिष्णुता (Religious Toleration) का प्रचार किया। इँगलैंड को उसने एक ऊँचे स्थान पर पहुँचा दिया। उसी के राज्य में विद्या तथा विचार ने स्थिर उन्नति प्राप्त की और उसी ने पुराने इँगलैंड को नया इँगलैंड बना दिया।

ट्यूडर-एकतंत्र राज्य—ट्यूडर-राजों ने इँगलैंड की शासन-पद्धति को स्थिर रूप दे दिया। उन्होंने प्रजा को प्रसन्न करके, अपनी योग्यता से, स्वेच्छाचारी राजा का रूप धारण किया। उनके स्वेच्छाचार से इँगलैंड को अच्छी तरह मालूम पड़ गया कि उसकी शासन-पद्धति में कहाँ क्या दोष है। इसका मुख्य कारण यह था कि ट्यूडर-राजों ने आंग्ल-शासन-

पद्धति की धाराओं को नहीं तोड़ा। उन्होंने लोक-सभा सरीखे शक्तिशाली एंजिन को अपने क़ाबू में कर लिया और उससे मनमाने ढंग से काम लेना शुरू कर दिया। उनके स्वेच्छाचार का विरोध किया जा सकता था। मगर सवाल तो यही था कि विरोध करता कौन? हेनरी अष्टम ने पुराने चर्च का सत्यानाश कर दिया था। उसने बिशपों की शक्ति को भी मिटा दिया था। लॉर्ड लोग गुलाब-युद्ध में लड़कर पहले ही ख़त्म हो चुके थे। जो लॉर्ड बच गए थे, उनमें भी वह सामर्थ्य न थी, जिससे वे ट्यूडर-राजों के स्वेच्छाचार को कम कर सकते।

यह सब होने पर भी ट्यूडर-राजों का स्वेच्छाचार हेनरी अष्टम के बाद ही समाप्त हो जाता, यदि आंग्ल-सिंहासन पर एलिज़बेथ-सी बुद्धिमती, चतुर और राज-नीति-निपुण स्त्री राज्य करने के लिये न बैठती। एलिज़बेथ ने आंग्ल-जनता को अपने विरुद्ध उठने का अवसर ही नहीं दिया। वह उसी धर्म को पसंद करती थी, जिसके प्रचार के लिये आंग्ल-जनता उत्सुक थी। कैथलिक लोगों के विरोधों और षड्यंत्रों से उसकी शक्ति और भी अधिक बढ़ गई। वह आंग्ल-जनता की आँखों का तारा बन गई। उसने स्पेन के आक्रमण से इँगलैंड को बचा दिया। उसको नौशक्ति-संपन्न भी बनाया। इसी से

जनता ने उसको और भी अधिक प्यार करना शुरू किया। सारांश यह कि हेनरी सप्तम ने आंग्ल-प्रजा को गुलाब-युद्धों (Wars of the Roses) के बाद शांति दी और अत्याचारी लॉर्डों के बल को घटाया, जिससे जनता कृतज्ञ हो उसकी स्वेच्छाचारिता की परवा नहीं करती थी। आगे एलिज़बेथ के समय इँगलैंड की असीम उन्नति हुई और जनता समृद्धिशालिनी बनी, जिसमें रानी की स्वेच्छाचारिता चल गई। ऐसी दशा में रानी अगर लोक-सभा को मनमाने ढंग पर चला सकी, तो उसमें आश्चर्य ही क्या है ?

ट्यूडर-राजों के समय में लोक-सभा—अभी लिखा जा चुका है कि ट्यूडर-राजों ने लोक-सभा का विरोध नहीं किया। उन्होंने लोक-सभा को अपनी इच्छा के अनुसार चलाया। एलिज़बेथ के राज्य के अंतिम दिनों तक लोक-सभा ने चूँ तक नहीं की। रानी ने जैसा कहा, वैसा ही कर दिया। ट्यूडर-काल में लोक-सभा का पहला रूप नहीं रहा। वह राजा की दासी बन गई। ट्यूडर-राजों ने पुराने ज़माने की लॉर्ड-सभा को भी सर्वथा, सब तरह से, बदल दिया, उसकी उद्दंडता और उच्छृंखलता को बिलकुल मटियामेट करके उसे एक धार्मिक सभा का रूप दे दिया। इसको धर्म-संशोधन की ही अधिक चाह थी। हेनरी अष्टम के समय में लोक-सभा के अंदर धार्मिक

पादरियों की संख्या कम हो गई और लार्डों की संख्या बढ़ गई। १५३९ में तो बिशपों की संख्या नाम-मात्र को ही रह गई। प्राचीन काल में लॉर्ड-सभा के अंदर पुराने घरों के उद्दंड स्वेच्छाचारी बैरन लोग थे। किंतु ट्यूडर-काल में उनमें के वे ही बैरन सभ्य रह गए, जो चर्च-संपत्ति को लूटकर अमीर बने थे। पुराने घरानों के लार्ड तो गुलाब-युद्ध के समय बहुत कुछ निर्बल हो चुके थे। नए लॉर्डों में वह वीरता और अभिमान न था, जो हावर्ड, नैविल और पर्सी आदि घराने के लॉर्डों में था। रसेल, कैवांडिश और सैसिल आदि ट्यूडर-काल के लॉर्ड नाममात्र को ही लार्ड थे। उनमें शासन और न्याय करने की शक्ति बहुत ही कम थी। राजा की इच्छाओं के अनुसार ही उनको चलना पड़ता था।

हेनरी अष्टम ने लोक-सभा के सभ्यों की संख्या बहुत ही अधिक बढ़ा दी थी। उसने वेल्स, चैशायर तथा अन्य नए-नए बरों (Boroughs) के लोगों को भी लोक-सभा में प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दे दिया था। इससे राजा की शक्ति कुछ वर्षों के लिये बहुत ही अधिक बढ़ गई।

राजा और लोक-सभा—ट्यूडर-काल में राजा और प्रजा का बहुत कम विरोध हुआ। इसका मुख्य कारण यह था कि दोनों ने ही अपने-अपने कामों को समझ लिया था।

राजा लोक-सभा के कामों में हस्तक्षेप नहीं करता था और लोक-सभा भी राजा के काम में विशेष रूप से हस्तक्षेप नहीं करती थी। लोक-सभा का मुख्य काम नए-नए नियमों का बनाना और राज्य-कर लगाना था। राजा का काम उन नियमों पर प्रजा को चलाना और राज्य-कर एकत्र करना था। इसका परिणाम यह हुआ कि सब तरफ़ राजा की शक्ति बढ़ गई। स्थानीय तथा मुख्य राज्य में राजा का ही दबदबा था; वह जिस प्रकार चाहे, शासन करे। यह राजा पर ही निर्भर था कि कौन-से राज्य-नियमों पर चलने के लिये प्रजा को विशेष रूप से बाधित किया अथवा न किया जायगा। इसी शक्ति के सहारे एलिज़बेथ इँगलैंड में धार्मिक सहिष्णुता की नीति को चला सकी और हेनरी तथा मेरी ख़ून की नदियाँ बहाने में सफल हो सके। परंतु प्रजा ने किसी का भी विरोध नहीं किया; क्योंकि जो कुछ वे करते थे, वह लोक-सभा के नियमों के अनुकूल ही होता था।

राजा तथा मंत्री—ट्यूडर-काल में राजा लोग आप अपने मंत्री रहे। उन्होंने राज्य की बागडोर पूर्ण रूप से अपने ही हाथ में रक्खी। कहाँ युद्ध करना है और कहाँ नहीं, इसका निश्चय वही लोग करते थे। जनता इस मामले में कुछ भी दख़ल नहीं देती थी, और न दे ही सकती

थी। यह सब होने पर भी शासन का काम इतना बढ़ चुका था कि उसको प्रत्यक्ष रूप से स्वयं करने में ट्यूडर-राजा असमर्थ थे। यही कारण है कि उन्होंने अपनी नीति के अनुसार मंत्रियों को चुना और देश के शासन का बहुत कुछ भार उनके ऊपर डाल दिया। मंत्री प्रायः पुराने राजघराने के लोग ही होते थे। वे मौजी होते थे, इसी कारण राजा लोग उन पर अधिक विश्वास नहीं करते थे। वे बहुत सोच-समझकर दो मनुष्यों को चुन लेते और उन्हीं से गुप्त बातों के बारे में सलाह करते थे। एलिज़बेथ के समय में वे दोनों मंत्री राष्ट्र-सचिव (Secretaries of State) के नाम से पुकारे जाते थे। राष्ट्र-सचिव प्रायः साधारण जनता में से ही चुने हुए होते थे। वे अक्सर नीच वंश के ही हुआ करते थे। अपने परिश्रम, बुद्धिमानी और चतुरता से ही वे उक्त उच्च पद पर पहुँच जाते थे। स्वामी का हित ही उनका मुख्य उद्देश होता था। उन्हीं के क्लर्क तथा अधीन शासकों से इँगलैंड के आधुनिक 'सिविल सर्विस' का उदय समझा जाता है, जिस पर आजकल आंग्ल-साम्राज्य का सारा-का-सारा भार है।

मंत्रणा-सभा (The Council)—विशेष-विशेष अवसरों और कठिनाइयों में राजा अपनी मंत्रणा-सभा से ही गुप्त परामर्श करता था। राजा की वही गुप्त सभा आजकल प्रिवी-

कौंसिल (Privy Council) के नाम से प्रसिद्ध है। बहुत पुराने ज़माने में प्रिवी-कौंसिल के स्थान पर कांसिलियम आर्डिनिरियम (Concilium Ardinirium) नाम की सभा ही राजा को सलाह दिया करती थी। यह सभा इस प्रिवी-कौंसिल से बड़ी होती थी, इसीलिये गुप्त मंत्रणा के काम के लायक़ नहीं थी। ट्यूडर-राजों की गुप्त सभा में २० से भी कम सभ्य होते थे। वे भिन्न-भिन्न विचार रखते थे और उनकी योग्यता भी भिन्न-भिन्न हुआ करती थी। ऐसा इसलिये होता था कि राजा भिन्न-भिन्न मामलों में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों से सलाह ले और उचित निर्णय पर पहुँच सके। ट्यूडर-काल में इस सभा की प्रधानता बहुत बढ़ गई थी। सभा के सभ्यों के लिये दिन-भर काम-ही-काम था। इसी कारण बहुत-से राज-नीतिज्ञ पुरुष ट्यूडर-काल को गुप्त सभा का काल भी कहते हैं। यहाँ पर यह स्मरण रखना चाहिए कि गुप्त सभा के पास किसी प्रकार की भी शक्ति न थी। उसका मुख्य काम राजा या रानी को सलाह देना ही था। किंतु यह राजा या रानी पर ही निर्भर था कि वे कहाँ तक उनकी सलाह के माफ़िक काम करें।

राजा की इच्छा के अनुसार कार्य और प्रबंध करना भी इसी सभा का कार्य था। सारांश यह कि ट्यूडर-काल में

इँगलैंड की मुख्य शासक-सभा गुप्त सभा ही थी। गुप्त सभा समय-समय पर राजा की आज्ञाओं को प्रजा के आगे प्रकट करती थी। उन आज्ञाओं को एक प्रकार से नवीन राज्य-नियम कहें, तो कुछ अनुचित न होगा। कभी-कभी लोक-सभा इन आज्ञाओं से चिढ़ भी जाती थी, क्योंकि नए-नए राज्य-नियमों का बनाना लोक-सभा का काम था। अक्सर ऐसा भी होता था कि गुप्त सभा अपने कार्यों से लोक-सभा के अधिकारियों पर भी हस्तक्षेप करती थी।

स्टार-चेंबर तथा स्थानीय सभाएँ (Star Chamber and the Local Councils)—ट्यूडर-राजा लोग बड़े-बड़े अपराधियों का न्याय-निर्णय एक विशेष सभा के द्वारा किया करते थे। इस सभा में बड़े-बड़े जज तथा राज्याधिकारी आते थे। सभा-भवन की छत में तारों के चित्र थे, इसी से इस सभा का नाम स्टार-चेंबर अर्थात् 'तारक-न्यायालय' था। ट्यूडर-काल में शांति तथा राज्य-नियम की स्थापना में, इस सभा ने बड़ा भारी भाग लिया। यही सभा बड़े-बड़े राजद्रोहियों का निर्णय करती थी। स्टार-चेंबर के समान ही भिन्न-भिन्न ज़िलों में राजकीय न्यायालय स्थापित किए गए थे। यार्क-नगर में उत्तरी न्यायालय (Council of the North) और लडलो

(Ludlow) में वेल्स-न्यायालय (Council of Wales) बहुत अच्छी तरह से अपना काम करते रहे। इन सभाओं में पादरियों का निर्णय नहीं होता था। इसीलिये एलिज़बेथ ने हाई कमीशन-न्यायालय (High Commission Court) स्थापित किया और उसी में पादरियों के अपराधों का फ़ैसला करना शुरू किया। पादरी लोग हाई कमीशन-न्यायालय के कट्टर शत्रु बन गए। वे इसे अपनी स्वतंत्रता का नाश करनेवाली समझते थे। ट्यूडर-काल में उल्लिखित सब न्यायालय बहुत अच्छी तरह से अपना काम करते थे। शांति और नियम की स्थापना करने में इन्होंने बहुत कुछ किया। इसमें कुछ संदेह नहीं कि इन न्यायालयों के कारण भी ट्यूडर राजों का स्वेच्छाचार पूरी तरह से बढ़ा और प्रजा उस स्वेच्छाचार को नहीं रोक सकी।

स्थानीय राज्य—ग्रामों का प्रबंध ग्रामीणों के ही हाथ में था। ट्यूडर-काल में प्राचीन ग्राम-सभाएँ सर्वथा बलहीन हो चुकी थीं, परंतु, फिर भी, राजा ने बहुत-से लोगों को यह अधि-कार दे रक्खा था कि छोटे-छोटे झगड़ों का फ़ैसला वे ख़ुद कर लिया करें। प्रबंध तथा निर्णय का काम ग्रामीणों के हाथ में होने से ग्राम-वासियों को बहुत ही अधिक लाभ पहुँचा। वे शासन, न्याय और राज्य-नियम को कुछ-कुछ समझने लगे। स्टुवर्ट राजों के प्रति जब विद्रोह हुआ, तब इन ग्रामीणों ने

लोक-सभा को बहुत ही अधिक सहायता पहुँचाई। यह स्थानीय स्वराज्य का ही परिणाम था।

राजा के सिपाही—ट्यूडर-राजों ने सिपाहियों की सहायता के विना ही स्वेच्छापूर्वक देश का शासन किया। उस ज़माने में इँगलैंड के अंदर स्थायी सेना नहीं थी। कुछ इने-गिने चुने हुए सिपाही होते थे, जो राजा के शरीर-रक्षक के तौर पर काम करते थे। कुछ थोड़ी-सी और आंग्ल-सेना भी थी, जो कैले, वारिक (Warwick) तथा अन्य आवश्यक दुर्गों की रक्षा करती थी। हेनरी अष्टम ने अपने अंतिम दिनों में विदेशी सेना को अपने यहाँ रक्खा था। उसकी मृत्यु होने पर वह सेना इँगलैंड से हटा दी गई।

इँगलैंड में यह राज्य-नियम था कि देश पर कोई विपत्ति पड़ते ही हरएक आंग्ल को सैनिक के तौर पर काम करना पड़ता था। एडवर्ड षष्ठ तथा मेरी के बाद इन सैनिकों का स्थिर रूप से एक सेनापति नियुक्त किया जाता था, जिसे लॉर्ड लेफ़्टिनेंट कहते थे। लॉर्ड लेफ़्टिनेंट के नीचे डिपुटी लेफ़्टिनेंट होता था, जो ग्रामीण न्यायाधीशों के समान ग्रामीण सेनापति का काम करता था। सारांश यह कि न्याय के समान ही सैनिक प्रबंध में भी ग्रामवासियों का यथेष्ट भाग था।

ट्यूडर-राजे इँगलैंड को नौ-शक्तिशाली बनाना चाहते थे। उन्होंने जहाज़ों को बड़ा और अच्छा बनाने का यत्न किया। स्पेनी आरमेडा के आक्रमण के समय तक इँगलैंड के पास बहुत जहाज़ नहीं थे। यही कारण है कि राज्य को उस युद्ध में व्यापारी जहाज़ों से बहुत अधिक सहायता लेनी पड़ी।

(२) इंगलैंड की सामाजिक दशा

विद्या और विचारों की उन्नति के साथ-साथ लोगों की सामाजिक उन्नति भी हुई। विहारों, मठों तथा चर्चों की संपत्ति लुटने से इँगलैंड की सामाजिक दशा में क्रांति आ गई। ग़रीब आदमियों को चर्च के दान और अन्न का सहारा था। चर्च की संपत्ति नष्ट होने से वे लोग अन्न-पानी के लिये निःसहाय हो गए। लोगों में भेद-भाव पहले की ही तरह बना रहा। ग्राम-वासियों का आचार-व्यवहार साधारण आंग्लों से भिन्न था। व्यापारी लोग दिन-दिन अमीर होते जाते थे। वकीलों और डॉक्टरों ने ख़ूब धन कमाना शुरू किया। समाज में इन लोगों की स्थिति भी बहुत ही ऊँची थी। हेनरी अष्टम के डॉक्टरी कॉलेजों (Colleges of Physicians and Surgeons) ने अच्छी उन्नति की। लोग अपने लड़कों को डॉक्टर बनाने के लिये ख़ुशी मे हर समय तैयार रहते थे। इसी कारण इन कॉलेजों में विद्यार्थियों की संख्या दिन-

दिन बढ़ती ही चली गई। इस पर अभी प्रकाश डाला ही जा चुका है कि व्यापार दिनोंदिन उन्नत हो रहा था। व्यापार की उन्नति से व्यापारियों की समृद्धि का कुछ ठिकाना नहीं रहा। समृद्धि के कारण उनको राजनीतिक अधिकार अधिकाधिक प्राप्त हो गए। आंग्ल-जनता उनको मान्य-दृष्टि से देखने लगी।

एलिज़बेथ ख़ुद भी व्यापार से लाभ उठाती थी। ड्रेक ने जो लूटें की थीं, उनमें उसका भी हिस्सा था। ज़मीनों की क़ीमत दिन-ब-दिन चढ़ रही थी। ज़मीनें ख़रीदने में लोग बहुत ही अधिक चढ़ाचढ़ी करते थे। पूँजी लगाने का यह एक बहुत अच्छा ढंग समझा जाता था। देश में बेकारी पहले की अपेक्षा बहुत ही कम हो गई। भिखमंगों ने भीख माँगने का पेशा छोड़कर काम करना शुरू कर दिया। ज़मीनों पर गेहूँ की खेती की जाने लगी। देश की आबादी पहले की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गई। लोगों ने योरपियन राष्ट्रों से काश्तकारी का काम सीखा और भूमि पर नई-नई चीज़ें बोना शुरू किया। आयलैंड में प्रवासियों और रोज़गारियों की संख्या दिन-दिन बढ़ने लगी। कारण, वहाँ पर लोगों को धन लगाने का अच्छा मौक़ा था। इसका परिणाम यह हुआ कि आयलैंड में किसानों और रोज़गारियों ने ख़ूब धन कमाया।

एलिजाबेथ की मृत्यु से पहले आयर्लैंड में आलू की खेती शुरू हो गई थी।

ग्रामीणों और नागरिकों के परस्पर मिलने से पुरानी गिल्ड (Giuld) की प्रथा टूटने लगी। कारीगर लोगों ने रुपए पाकर ज़मीनें ख़रीदीं और कारीगरी का काम छोड़ दिया। अशिक्षित ग्रामीण लोग कारीगरी के कामों को बड़ी तेज़ी से करने लगे। इससे इँगलैंड में उच्च कोटि की कारीगरी का नाश होने लगा। उसे रोकने के लिये रानी ने १५६३ का प्रसिद्ध राज्य-नियम (Act of Apprentices) पास किया। इसके अनुसार उन सब लोगों को व्यापार-व्यवसाय के काम करने से रोक दिया गया, जिन्होंने सात साल तक गिल्डों के नीचे काम न सीखा हो।

इस समृद्धि तथा उन्नति के साथ-साथ छोटे पादरियों की समृद्धि और उन्नति सदा के लिये रुक गई। चर्चों की संपत्ति लुट जाने से उनके लिये अपने परिवार का पालन करना भी कठिन हो गया! कवि ने ठीक कहा है—नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।

दरिद्र-संरक्षण-नियम (Poor Law)—१५६३ में ही रानी ने उन ग़रीबों की रक्षा के लिये उपाय किया। उसने १६०१ में 'दरिद्र-संरक्षक' नियमों को पास कराया। इन

नियमों के अनुसार हरएक पैरिश में एक-एक निरीक्षक नियत किया गया, जिसका मुख्य काम जनता पर राज्य-कर लगाना था। इस राज्य-कर के द्वारा दरिद्र लोगों को सहायता पहुँचाई जाती थी—उनको खाना-पीना और कपड़ा आदि बाँटा जाता था। १८३४ तक इसी प्रकार दरिद्र लोगों की रक्षा की जाती रही। १८३४ के बाद नए नियम बनाए गए, जिनके द्वारा दरिद्रों की दशा और भी सुधारी गई।

भोग-विलास की वृद्धि—इँगलैंड की आर्थिक उन्नति का सबसे बड़ा चिह्न यह भी था कि ट्यूडर-काल में लोगों की रहन-सहन बहुत ही अधिक उन्नत हो गई। प्राचीन काल में ग़रीब लोगों के पास खाने-पीने को काफ़ी था। अमीर, ताल्लुक़दार, लॉर्ड और ड्यूक लोग ही भोग-विलास का जीवन व्यतीत करते थे। किंतु ट्यूडर-काल में साधारण लोगों को भी भोग-विलास का जीवन व्यतीत करने का अवसर मिला। लोगों के मकान पहले की अपेक्षा बहुत ही अच्छे बन गए। घरों में धुआँ बाहर निकालने के लिये वेंटिलेटरों (Ventilaters) और चिमनियों का प्रयोग किया जाने लगा। लोग चम्मच-काँटे से भोजन करने लगे। उँगलियों के सहारे भोजन करना दिन-ब-दिन छूटने लगा। अमेरिका का पता लगने के बाद तमाखू पीना भी इँगलैंड में बढ़ गया। आंग्ल लोग इतना मांस

खाते थे कि उसे रोकने के लिये राज्य ने शुक्रवार को मांस खाना बंद करा दिया। कपड़ों का तो कहना ही क्या है। उन दिनों लंबे-लंबे कालर लगाने का आम फ़ैशन था। कपड़े बहुत ही लंबे-चौड़े होते थे।

(३) साहित्यिक दशा

ट्यूडर-काल में इँगलैंड में शिक्षा की बहुत ही अधिक उन्नति हो गई। पुराने धर्मवालों की जो पाठशालाएँ तोड़ी गईं, उनकी जगह पर नए-नए कॉलेज और स्कूल खोल दिए गए। हरएक सभ्य नागरिक के लिये कुछ-न-कुछ विद्या पढ़ना आवश्यक हो गया। योरप का विद्यापीठ इटली था। जो आंग्ल विद्या-प्रेमी होते थे, वे इटली अवश्य जाते थे। पुराने ढर्रे के लोगों का विश्वास था कि विदेश में जाने से लोगों की फिज़ूल-ख़र्ची बढ़ जाती है और वे लोग स्वतंत्र विचार के हो जाते हैं। यह सब होने पर भी लोगदिन-दिन अधिक संख्या में विदेश को जाने लगे। सामुद्रिक पुलिस के स्थापित होने से यात्रियों को लूट-मार का भय बहुत ही कम हो गया। इँगलैंड में पक्की सड़कें बन गई थीं। लोग एक जगह से दूसरी जगह बग्गियों में आने-जाने लगे। ट्यूडर-काल में भी पहले को ही तरह घोड़े की सवारी का फ़ैशन प्रचलित था। लोग घोड़े पर चढ़कर इधर-उधर जाना बहुत अधिक पसंद करते थे।

ट्यूडर-काल में गृह-निर्माण की विद्या में भी ख़ूब तरक़्क़ी हुई। चर्चों में गान-विद्या की अच्छी उन्नति हो रही थी। काव्य और साहित्य की उन्नति की ओर भी लोगों की रुचि दिन-दिन बढ़ती जाती थी। लेकिन चित्रों के बनाने में अभी तक आंग्ल लोग बहुत पीछे थे। हेनरी अष्टम ने आंग्ल-चित्रकारों को पेंशनें देना शुरू किया। उसके समय में इँगलैंड के अंदर अच्छे-अच्छे चित्रों के बनाने का काम विदेशी चित्रकार ही करते थे। दृष्टांत के तौर पर हेनरी अष्टम के राज्य में निम्न-लिखित विदेशी शिल्पकार और चित्रकार थे—

(१) इटैलियन शिल्पकार टारिगिएनो (Tarigiano)

(२) जर्मन चित्रकार हाल्बिन (Halbein)

एलिज़बेथ से पहले आंग्ल-साहित्य की उन्नति बहुत कुछ रुक चुकी थी। हेनरी अष्टम के समय में प्रेस ने कुछ-कुछ उन्नति की और मोर ने 'युटोपिया' (Utopia) नाम की पुस्तक लिखकर अपूर्व प्रसिद्धि प्राप्त की। लेकिन एलिज़बेथ के राज्य-काल में आंग्ल-साहित्य ने अपूर्व उन्नति की। रानी के समय में निम्न-लिखित लेखकों ने ख़ासी प्रसिद्धि प्राप्त की—

(१) एडमंड स्पेंसर (Edmund Spenser)

(२) शेक्सपियर (इँगलैंड का कालिदास) (Shakespeare)

(३) जेम्स बर्बेज (सबसे प्रसिद्ध नट) (James Burbage)

(४) क्रिस्टोफ़र मार्लो (नाटक-लेखक) (Christopher Marlowe)

(५) रिचर्ड हूकर (गद्य-लेखक) (Rechard Hooker)

(६) सर फ्रांसिस बेकन (निबंध-लेखक) (Sir Francis Bacon)

(७) हालिंशाड (राज्य-वृत्तांत-लेखक) (Hollinshed)

(८) हाक्लिट (यात्रा-वृत्तांत-लेखक) (Haclayt)

ट्यूडर-राजों का वंश-वृक्ष

एडवर्ड तृतीय

|

जॉन आव् गांट

\+ स्वीन्स्लिनफ़ोर्ड की कैथराइन

ओवन ट्यूडर + स्त्री, फ़्रांस की कैथराइन चार्ल्स षष्ठ की लड़की और हेनरी पंचम की विधवा स्त्री

जॉन बोफ़र्ट सॉमर्सेट् का अर्ल

(२) (१)

जास्पर ट्यूडर बैड्फ़ोर्ड का अर्ल

एडमंड ट्यूडर रिचमंड का अर्ल + स्त्री, मार्गरेट बोफ़र्ट

|

हेनरी सप्तम १४८५—१५०९ + स्त्री, यार्क की एलिज़बेथ

|

हेनरी अष्टम १५०९-१५४७

आर्थर प्रिंस ऑव्-वेल्स मृ० १५०२

मार्गरेट स्त्री, (१) जेम्स चतुर्थ स्टिवर्ट (स्कॉटलैंड का राजा) (२) आंगस का अर्ल।

मेरी स्त्री, (१) फ़्रांस के सम्राट् लूइस १२वें की (२) सफ़क के ड्यूक चार्ल्स ब्रांडन

एडवर्ड षष्ठ १५४७-१५५३

मेरी १५५३-१५५८

एलिज़बेथ १५५८-१६०३

फ़्रांसिस, स्त्री, हेनरी ग्रे सफ़क का ड्यूक

*

❀ †

(१) जेम्स पंचम स्कॉटलैंड का राजा

(२) मार्गरैट स्त्री, लेनाक्स का अर्ल

लेडी जेन ग्रे, स्त्री, लार्ड गिल्फ़र्ड डड्ले

लेडी कैथराइन ग्रे — लार्ड बोशांप

(१) की संतान: कामज पुत्र मोरे का अर्ल जेम्स स्टुवर्ट

(२) की संतान: हेनरी स्टिवर्ट स्त्री + डार्नले का अर्ल

स्कॉटलैंड की रानी मेरी +

जेम्स षष्ठ (स्कॉटलैंड का राजा)
या जेम्स प्रथम (इंगलैंड का राजा)
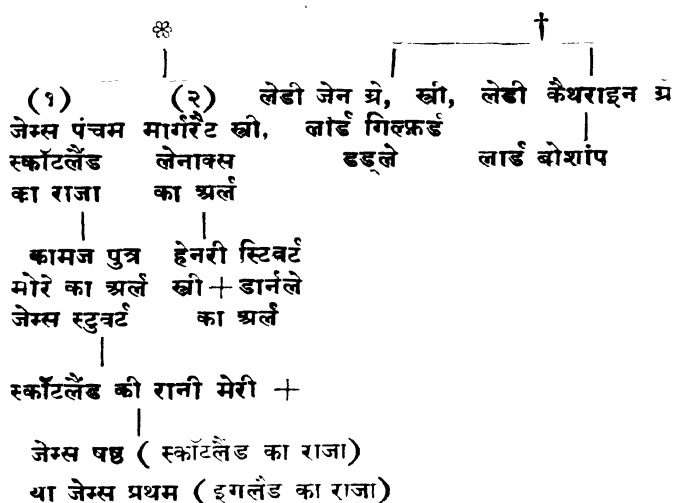
द्वितीय अध्याय

स्टुवर्ट-वंश का राज्य

प्रथम परिच्छेद

जेम्स प्रथम (१६०३—१६२५) और दैवी अधिकार (Divine Right)

(१) उत्पात का स्रोत

स्कॉटलैंड के राजा छठे जेम्स के इँगलिस्तान के राज्य पर आने से इँगलैंड के इतिहास ने नया रूप धारण किया। स्कॉटलैंड का छठा जेम्स इँगलैंड के इतिहास में प्रथम जेम्स के नाम से लिखा जाता है। जेम्स का यह विश्वास था कि एलिज़बेथ के बाद इँगलिस्तान के राज्य का वंश-परंपरागत यथार्थ उत्तराधिकारी मैं ही हूँ। वह राजा का दैवी अधिकार मानता था; अर्थात् कोई जाति किसी व्यक्ति को राजा नहीं बना सकती, राजा तो ईश्वर ही बनाता है। यह ईश्वर-कृत नियम है कि देश के राज-वंश में उत्पन्न हुआ राजकुमार ही उक्त देश का राजा बने। अँगरेज़-जाति राजा के दैवी अधिकार-संबंधी इस सिद्धांत को अब पूर्ववत् नहीं मानती थी। वह राजा को नियुक्त करना अपना अधिकार समझती थी। इस तरह अँगरेज़-जाति और

जेम्स के बीच ऐसा मत-विरोध होने के कारण दोनों में झगड़ा होना स्वाभाविक ही था। यह उत्पात तब तक रुका रहा, जब तक जेम्स पार्लिमेंट के नियमों के अनुसार ही अँगरेज़ों पर शासन करता रहा। इसमें संदेह नहीं कि सबसे पहले जेम्स ने ही दैवी अधिकार-रूपी उत्पात का बीज इँगलैंड में बोया। आगे चलकर इसका भयंकर परिणाम यह हुआ कि उसके उत्तराधिकारी प्रथम चार्ल्स को अँगरेज़-जाति ने सूली पर चढ़ा दिया और कुछ समय के लिये एक-सत्तात्मक राज्य को उखाड़कर प्रजा-सत्तात्मक राज्य स्थापित कर दिया।

सबसे पहले दो बातों में अँगरेज़-जाति और जेम्स की मुठभेड़ हुई। पहला विषय था धर्म और दूसरा था राज्य-कर। प्यूरिटनिज़्म (Puritanism) और कर-संबंधी विरोध जेम्स की विदेशी नीति के कारण उत्पन्न हुए। इन दोनों बातों पर लिखने के पहले उस समय की योरप की राजनीति पर कुछ शब्द लिख देना आवश्यक प्रतीत होता है। एलिज़बेथ की मृत्यु के समय स्पेन का राजा फ़िलिप तृतीय था। फ़िलिप का पिता एलिज़बेथ के प्राणों का ग्राहक शत्रु था। इसी तरह फ़्रांस में हेनरी चतुर्थ का राज्य था, जिसने नैंटे (Nantes) की घोषणा द्वारा, राज्य के कैथलिक होने पर भी, फ़्रांस में

जेम्स प्रथम

धार्मिक सहिष्णुता (Religious toleration) की घोषणा कर दी थी। जर्मनी में भी लगभग आधी सदी से हरएक राजा धर्म-ग्रहण करने के विषय में स्वतंत्र था। जर्मनी का कोई भी सम्राट् प्रोटेस्टेंट न था; पर उनमें से किसी ने भी धर्म-ग्रहण के मामले में जनता को विवश भी नहीं किया। ऐसे समय में नीदरलैंड स्पेन से अलग होना चाहता था, क्योंकि वहाँ के लोग प्रोटेस्टेंट थे और स्पेन के लोग कैथलिक। योरप के प्रोटेस्टेंट स्पेन से डरते थे, क्योंकि वह कैथलिक मत फैलाने के लिये अत्यंत उत्सुक था। स्पेन की ही तरह

आस्ट्रिया भी कैथलिक मत को पसंद करता था और चाहता था कि संपूर्ण योरप में कैथलिक मत ही रहे। सम्राट् हेनरी चतुर्थ राजनीति में अत्यंत निपुण था, इसी कारण उसे बहुत पहले ही मालूम हो गया था कि योरप को आस्ट्रिया से अधिक डरना चाहिए, न कि स्पेन से। स्पेन शक्ति-रहित था, पर आस्ट्रिया नहीं।

सन् १६१० में सम्राट् की मृत्यु हो गई। योरप की राजनीति ने एक नया ढंग पकड़ा। सम्राट् का उत्तराधिकारी फ़र्दिनंद (Ferdinand) कैथलिक था। वह योरप में अपने ही मत को फैलाना चाहता था। ऐसे विकट समय में बोहेमिया (Bohemia) ने फ़र्दिनंद को अपना राजा न माना और प्रोटेस्टेंट-मतावलंबी पैलेटाइन फ्रेडरिक* (Frederick Palatine) को अपना राजा चुन लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि फ़र्दिनंद ने बोहेमिया पर चढ़ाई कर दी। योरप के कुछ राष्ट्रों ने तो फ़र्दिनंद का साथ दिया और कुछ ने बोहेमिया का। इस तरह प्रायः संपूर्ण योरप में युद्ध की धूम मच गई। यह युद्ध १६१८ में शुरू हुआ और ३० साल

---

*उन दिनों जर्मनी कई छोटे-बड़े रजवाड़ों में विभक्त था। इन राजों में सबसे बड़ा राजा पैलेटाइन (Palatine) अर्थात् प्रधान कहलाता था और उसका राज्य पैलेटिनेट (The Palatinate)

तक जारी रहा। इसी से योरप के इतिहास में इस युद्ध को 'तीससाला युद्ध' कहते हैं। यद्यपि उक्त युद्ध का आरंभ उत्तराधिकार के झगड़े से हुआ था, और उत्तराधिकार का झगड़ा ही इस युद्ध का मूल कारण था, तथापि उसने शीघ्र ही धार्मिक झगड़े का रूप धारण कर लिया। इसी युद्ध में इस बात का निर्णय होना था कि आगे चलकर योरप में कौन-सा धर्म प्रबल रहेगा।

ऐसे भयंकर समय में फ्रांस की दशा विचित्र थी। फ्रांस का राजा लुईस तेरहवाँ बालक था, इसलिये संरक्षक-सभा ही वहाँ शासन का सारा काम करती थी। संरक्षक-सभा के सभ्य परस्पर एक दूसरे की बढ़ती को न देख सकते थे और इसी कारण उनमें सदा झगड़े होते रहते थे। १६२१ में लुईस तेरहवें ने राज्य-शासन की बागडोर अपने हाथ में ली और कार्डिनल रिशल्यू (Cardinal Richelieu) को अपना मुख्य मंत्री बनाया। रिशल्यू ने धीरे-धीरे सब ज़मीदारों और मांडलिक शासकों को अपने वश में कर लिया। सारांश यह कि तीससाला युद्ध (The thirty years' war) में फ्रांस ने जो भाग लिया, उसका कारण धार्मिक विचार नहीं था। वह अपने सभी प्रांतों में अपना प्रभुत्व मनवाने के लिये ही इस भयानक लड़ाई में शामिल हुआ। तीससाला युद्ध में इँगलैंड की क्या

नीति रही, इस पर कुछ लिखने के पहले अँगरेज़ी-राज्य की आंतरिक दशा पर कुछ लिखना ज़रूरी जान पड़ता है।

(२) प्यूरिटन और कैथलिक तथा राज्य-कर

जेम्स के राज्यारोहण के बाद दो षड्यंत्र रचे गए। उनमें एक मुख्य और दूसरा गौण था। गौण षड्यंत्र का उद्देश यह था कि राजा को क़ैद करके, उसे कैथलिक मत पर चलने और राज्य में उसी मत का प्रचार करने के लिये विवश किया जाय। किंतु मुख्य षड्यंत्र का मतलब यह नहीं था। उस षड्यंत्र की रचना करनेवाले लोग अर्बेला स्टुवर्ट (Arbella Stuart) को राजगद्दी पर बिठाना चाहते थे। प्रधान मंत्री राबर्ट सेसिल ने दोनों ही षड्यंत्रों का पता लगा लिया। अपराधी लोग फाँसी पर लटका दिए गए। सर वाल्टर रैले से सेसिल की शत्रुता थी। इसलिये उसने यह प्रकट किया कि षड्यंत्र में रैले भी शरीक़ है। इसका परिणाम यह हुआ कि रैले लंदन-टावर में जन्म-भर के लिये क़ैद कर दिया गया और सेसिल सदा के लिये राजा का दाहना हाथ हो गया।

सभी दलों ने जेम्स को राजा स्वीकार कर लिया था। कैथलिक लोग समझते थे कि जेम्स प्रोटेस्टेंट होकर भी अपनी माता मेरी पर प्रोटेस्टेंटों के अत्याचार को स्मरण कर उन

कठोर नियमों को हटा देगा, जो उनके विरुद्ध प्रचलित थे। जॉन नॉक्स (John Knox) के प्रैसबिटेरियन संप्रदाय में जेम्स की शिक्षा हुई थी, इसी से प्यूरिटन या डिसेंटर लोगों को विश्वास था कि वह हम लोगों के कष्टों को अवश्य दूर करेगा, क्योंकि जॉन नॉक्स के प्रोटेस्टेंट अनुयायी, जो प्रैसबिटेरियन कहलाते थे, एक प्रकार के प्यूरिटन ही थे। जेम्स जब स्कॉटलैंड से लंदन जा रहा था, तब प्यूरिटन लोगों ने इसी विचार से उसे एक प्रर्थना-पत्र (Milleury Petition) दिया, जिसमें कुछ भ्रम-मूलक प्रथाओं और कर्मकांड (Ritual) को बंद करने की बात लिखी थी। उसका परिणाम यह हुआ कि जेम्स ने १६०४ में हैंपटन-कोर्ट (Hampton Court) के अंदर एक सभा की और उसमें प्यूरिटन और कैथलिक, दोनों दल के लोगों को बुलाया। राजकीय चर्च के बड़े-बड़े पादरी नेता भी वहाँ उपस्थित हुए। परंतु वहाँ कोई विशेष निर्णय न हुआ; केवल प्रार्थना-पुस्तक में कुछ थोड़े-से परिवर्तन किए गए। स्कॉटलैंड के प्यूरिटनों के बीच जेम्स प्रथम की शिक्षा-दीक्षा होने से इस संप्रदाय के अनुयायियों को बड़ी आशा थी कि वह जब राजा होगा, तो हमारे मतानुसार इँगलैंड के राजकीय चर्च में सुधार कर देगा, जिससे हमें

उस चर्च से अलग न होना पड़ेगा। हैंपटनकोर्ट के शास्त्रार्थ में प्यूरिटन पादरियों ने राजा से बहुत बहस की। इससे उसने अपनी विद्वत्ता का अपमान समझा। वह अपने को बड़ा विद्वान् समझता था और विद्वान् था भी। योरप के राजों में उसकी जोड़ का विद्वान् दूसरा न था। इसी से वह ईसाई-देशों में सबसे बड़ा पंडित-मूर्ख (The most learned fool in Christiandom) कहलाता भी था। ऐसे अभिमानी के मुँह लगकर प्यूरिटनों-प्रतिनिधियों ने बड़ी मूर्खता की। इनके पक्ष की दृढ़ता को देखकर वह इनसे बहुत बिगड़ा। फिर ये लोग कहते थे कि धर्म की व्यवस्था के लिये इन पादरियों की कोई आवश्यकता नहीं है। जेम्स इस मत के विरुद्ध था उसका पक्ष था—No Bishops, No Kings अर्थात् धर्म की व्यवस्था में यदि बिशपों की अनावश्यकता स्वीकार कर ली जाय, तो फिर किसी दिन राज-प्रबंध में राजा की अनावश्यकता का प्रश्न उठेगा। सारांश यह कि जेम्स ने प्यूरिटनों से चिढ़कर और उन्हें अधिकारी-पद का विरोधी समझकर उनकी एक न सुनी। कैथलिकों का हित करना तो उसकी सामर्थ्य के बाहर था, क्योंकि इँगलैंड के राजकीय चर्च (The established Church of England)

की रक्षा करना उसका कर्तव्य था। राज्याभिषेक के समय उसे इस बात की शपथ-पूर्वक प्रतिज्ञा करनी पड़ी थी कि मैं राजकीय चर्च की रक्षा करूँगा।

प्यूरिटन लोग इससे संतुष्ट न हुए। इस कान्फ्रेंस से और तो कुछ फल न निकला; इतना अवश्य हुआ कि नए ढंग से बाइबिल का अनुवाद करने के लिये आज्ञा दे दी गई। अस्तु, १६११ में राज्य की ओर से बाइबिल का नया अनुवाद प्रकाशित हुआ और अँगरेज़-प्रोटेस्टेंटों ने हृदय से उसका स्वागत किया। यह संस्करण अब तक अँगरेज़ों के यहाँ पढ़ा जाता और प्रामाणिक संस्करण। (Authorised edition) कहलाता है।

रोमन कैथलिक लोग जेम्स से बहुत ही अधिक रुष्ट थे, क्योंकि उनके विरुद्ध जो कठोर नियम थे, वे पहले की तरह बने ही रहे। उन कठोर नियमों से तंग आकर उन्होंने एक भयंकर काम करना चाहा। १६०५ के नवंबर की ५वीं तारीख़ को पार्लिमेंट का अधिवेशन था। गाइ फ़ाक्स (Guy Fawkes) को नेता बनाकर बहुत-से रोमन कैथलिकों ने राजा, राजदरबारी और सारे प्रतिनिधियों के सहित पार्लिमेंट को बारूद से उड़ा देने का प्रबंध किया। दैव-संयोग से सेसिल को इसका भेद मालूम हो गया। ४ नवंबर को तलाशी ली गई। गाइ फ़ाक्स पकड़ा गया।

पर्लिमेंट-भवन के नीचे एक घर से खोदी हुई सुरंग में बहुत-से बारूद के पीपे मिले। इस षड्यंत्र का पता लगने से जेम्स कैथलिकों से बहुत डर गया। उसने उनको दबाने के लिये और भी कठोर नियम बनाए।

(३) जेम्स और उसके मंत्री

जेम्स प्रथम दयालु, विश्वासी और विद्वान् था। वह शांति-प्रिय भी था। किंतु दुर्भाग्य-वश अँगरेज़ों के रीति-रिवाज और स्वभाव को वह ठीक-ठीक नहीं समझता था। राज्य का काम-काज तो अपने कृपा-पात्रों पर छोड़ देता था और आप शिकार और अध्ययन में ही अपना समय बिताना पसंद करता था। इसके साथ ही 'राजा के दैवी अधिकार' का भूत भी उसके सिर पर सवार था। इसका परिणाम यह हुआ कि इँगलैंड-जैसे स्वतंत्रता-प्रिय देश में वह शासन के काम को सफलता-पूर्वक न कर सका। जेम्स योरप की राजनीति को अच्छी तरह समझता था। पर उसमें वह पूर्ण रूप से भाग नहीं ले सका, क्योंकि उसे अँगरेज़ों के स्वभाव का पूर्ण परिचय प्राप्त न था। इसी कारण वह अक्सर ऐसी बातें कर बैठता था, जिनसे व्यर्थ ही गड़बड़ मच जाती थी। वह अहंमन्य भी बहुत था।

लॉर्ड सेसिल की मृत्यु होने पर जेम्स ने अपने कृपापात्रों (Favourites) का सहारा लिया। उन सबमें मुख्य राबर्ट कर

(Robert Carr) था। यह जाति का स्कॉच्, बहुत ही सुंदर और वीर था। पर इसमें सबसे बड़ा दोष यह था कि यह मोटी बुद्धि का था—साधारण-से-साधारण बात को भी नहीं समझ पाता था। ऐसी दशा में कर ने सर टॉमस ओवर्बरी का सहारा लिया और उसकी मंत्रणा पर चलने लगा। कर की स्त्री ओवर्बरी से शत्रुता रखती थी। उसने अपने नौकरों से ओवर्बरी को क़ैद कराया और क़ैदख़ाने में मरवा भी डाला। उसकी मृत्यु के दो वर्ष बाद तक दिन-ब-दिन कर की शक्ति बढ़ती गई। इन्हीं दिनों उसने घमंड में आकर और लोगों से अच्छा व्यवहार न किया। यह बात इस दर्जे तक पहुँच गई कि जेम्स भी उससे कुछ-कुछ तंग आ गया। दैव-संयोग से एक दिन ओवर्बरी की मृत्यु का रहस्य सबको मालूम हो गया। लार्ड-सभा में कर तथा उसकी स्त्री पर अभियोग चलाया गया, जिसमें उन दोनों को मृत्यु-दंड की आज्ञा हुई। जेम्स ने दया करके दोनों को क्षमा कर दिया, पर कर को भिन्न-भिन्न राज्य-पदों से सदा के लिये हटा दिया।

कर के अधःपतन के उपरांत जेम्स ने जार्ज विलियर्स (George Villiers) को अपना कृपा-पात्र बनाया। यह एक लफंगा स्कॉच था, पर देखने में अच्छा रंगीला-गठीला जवान था। कपड़े उधार लेकर राजा से मिलने गया था। उसके रूप-यौवन को देख-

कर जेम्स ने उसे मुसाहब बना लिया। वह इस सफलता से अभिमान में चूर हो गया और दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करने लगा। कुछ भी हो, जेम्स ने इसको धीरे-धीरे नव सेनापति तथा पहले दर्जे का अर्ल और कुछ ही समय बाद बकिंघेम का ड्यूक (Duke of Buckingham) भी बना दिया। अन्य योग्य लोगों ने बकिंघेम की कृपा से अपने को उच्च पद पर पहुँचाना शुरू किया। फ्रांसिस बेकन इसी की कृपा से चांसलर के उच्च पद पर पहुँच सका।

(४) जेम्स और परराष्ट्र-नीति

जेम्स तथा उसके कृपा-पात्रों का ध्यान विदेशी नीति पर बहुत ही अधिक था। जेम्स को स्पेन से भय था। इसीलिये उसने १६०४ में स्पेन से संधि की और फ्रांस से भी पहले की ही तरह मित्रता क़ायम रक्खी। १६१० में फ्रांस का हेनरी चतुर्थ मर गया। इसका पुत्र बच्चा था, इसलिये हेनरी चतुर्थ की विधवा स्त्री ही फ्रांस का शासन करने लगी। वह स्पेन और कैथलिक दल के पक्ष में थी।

स्पेन अँगरेज़ों की सहायता चाहता था। जेम्स ने इस अवसर को अपने हाथ से खोना उचित न समझा। उसने स्पेन के राजा फ़िलिप की तृतीय पुत्री इन्फ़ैंटा मेरिया (Infanta Maria) से अपने पुत्र चार्ल्स के विवाह का

निश्चय किया। १६१६ में इस विवाह के लिये पत्र-व्यवहार शुरू हो गया। ऐसे ही समय में धन की आवश्यकता आ पड़ी, जिसके कारण जेम्स ने एक ऐसा काम कर डाला, जो उसे न करना चाहिए था। सर वाल्टर रैले अपनी यात्राओं के दिनों में गायना की सैर कर चुका था। क़ैद के दिनों में उसकी कल्पना-शक्ति ने उसको यह सुझाया कि गायना में बहुत ही अधिक सोने की खानें हैं। उसने जेम्स से प्रार्थना की—"मुझे इस क़ैद से छोड़ दीजिए। मैं आपको बहुत ही अधिक धन दूँगा।" धन के लोभ में फँसकर उसने रैले को क़ैद से छोड़ दिया और दक्षिण-अमेरिका में जाने की आज्ञा दे दी। साथ ही उससे यह भी कह दिया कि इस महान् यात्रा में वह ऐसा कोई भी काम न करे, जिससे वहाँ के स्पेनियों से झगड़ा हो पड़े और वे हमसे रुष्ट हो जायँ। रैले ने राजा की सब शर्तों को मानकर दक्षिण-अमेरिका की ओर प्रस्थान किया। स्पेनी लोग गायना को अपना प्रांत समझते थे और इसी कारण रैले की इस यात्रा से असंतुष्ट थे। रैले ने दक्षिण-अमेरिका पहुँचते ही पहले की तरह स्पेनियों पर आक्रमण किया; पर अपने साथियों के कायरपन से इस आक्रमण में वह सफल नहीं हो सका। उसको इँगलैंड लौटना पड़ा। स्पेनिश राज्य ने जेम्स से रैले की बहुत ही शिकायत की और उसको दंड देने के लिये जेम्स से आग्रह

किया। जेम्स स्पेन को ख़ुश करना चाहता था, इसलिये उसने १६०३ के पुराने दंड के अनुसार रैले को फाँसी पर लटका दिया। रैले को फाँसी दी जाने से अँगरेज़ों में बहुत ही असंतोष फैला। वे जातीय नेता या जातीय 'हीरो' (वीर) की तरह उसका सम्मान करने लगे।

जेम्स योरप के कैथलिकों और प्रोटेस्टेंटों से एक-सा व्यवहार करना चाहता था। धर्म के कारण किसी से विरोध करना उसे अभीष्ट न था। यही कारण है कि उसने एक ओर अपनी पुत्री का विवाह जर्मनी के एक प्रिंस के साथ किया, जो एक प्रोटेस्टेंट था और दूसरी ओर वह अपने पुत्र का विवाह एक स्पेनी राजपुत्री के साथ करना चाहता था, जो कैथलिक थी।

इसी समय बोहेमिया में लोगों ने सम्राट् फ़र्दिनंड के धार्मिक अत्याचारों से असंतुष्ट होकर जेम्स के दामाद फ्रेडरिक को, जो प्रोटेस्टेंट था, अपना राजा चुना। इसका परिणाम यह हुआ कि योरप में एक भीषण युद्ध छिड़ गया, जो 'तीस-साला युद्ध' के नाम से विख्यात है। फ्रेडरिक को यह आशा थी कि जेम्स तीससाला युद्ध में उसका साथ देगा। मगर जेम्स ने ऐसा नहीं किया। कारण, उसे धार्मिक युद्धों से घृणा थी। इसका परिणाम यह हुआ कि फ्रेडरिक अपनी स्थिति को

देर तक स्थिर न रख सका। उसको बोहेमिया के साथ ही अपने प्राचीन राज्य से भी हाथ धोना पड़ा। इससे जर्मनी के लोगों को बहुत ही अधिक चिंता हो गई। अँगरेज़-जनता ने स्वयंसेवक बनकर जर्मनी को सहायता पहुँचाना शुरू किया; मगर जेम्स के कानों में जूँ तक न रेंगी। इसी अवसर पर स्पेनियों ने स्पेन की राजपुत्री इनफ़ैंटा के साथ इँगलैंड के राजपुत्र के विवाह की बातचित करने के लिये जेम्स को उत्तेजित किया। जेम्स ने भी इस ओर अपना ध्यान दिया। उसका विचार था कि ब्याह का मामला शुरू करके वह किसी उपाय से फ्रेडरिक का उद्धार कर दे। पर स्पेनिश लोग उससे चतुर थे। वे कब जेम्स का कहना मानने लगे। प्रश्न तो यह था कि यदि वे उसका कहा मानकर फ्रेडरिक को बोहेमिया आदि प्रदेश दिलाना भी चाहते, तो जर्मन-कैथलिक लोग कब माननेवाले थे। असल बात यह थी कि स्पेनियों ने जेम्स को धोखा देकर अपना मतलब साधने का ढोंग रचा था। जेम्स अच्छी तरह से बेवक़ूफ़ बनाया गया। उसने स्पेनियों से शादी के मामले में जब जल्दी करने को कहा, तो उन्होंने टालमटूल शुरू की। उन्होंने कहा—"तुम अँगरेज़ कैथलिकों को पहले पूजा-पाठ करने की पूरी स्वतंत्रता दे दो, तब हम तुम्हारे पुत्र के साथ इनफ़ैंटा का विवाह कर देंगे।" यह ऐसी बात थी,

जो जेम्स की शक्ति के बाहर थी। बकिंघम जेम्स के पुत्र चार्ल्स को इसी मतलब से अपने साथ स्पेन ले गया कि व्याह का मामला पूरे तौर पर तय हो जाय। स्पेन जाने पर चार्ल्स को मालूम हुआ कि स्पेनी मेरे पिता को धोखा दे रहे हैं। इस पर उसको बहुत ही क्रोध आया। उसने अपने पिता को स्पेन के साथ युद्ध करने के लिये उत्तेजित किया।

जेम्स ने फ्रांस के साथ संधि करके अपने दामाद फ्रेडरिक को बोहेमिया आदि प्रांत दिलाने का यत्न किया; परंतु इसमें वह सफल न हुआ। उसने अपने दामाद को जो सहायता पहुँचाई, उससे भी कुछ फल न निकला।

(५) इँगलैंड की राजनीतिक दशा

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि स्कॉटलैंड का ही राजा जेम्स प्रथम के नाम से इँगलैंड के राज्यासन पर बैठा था। जेम्स के कारण इँगलैंड और स्कॉटलैंड परस्पर शांति-पूर्वक मिल गए। जेम्स दोनों ही देशों को स्थिर रूप से सदा के लिये परस्पर मिला देना चाहता था। इसी प्रयोजन से उसने कुछ-कुछ अँगरेज़ों के फ़ैशन और रस्म-रिवाज़ों को ग्रहण कर लिया और स्कॉटलैंड में भी उनका प्रचार किया। इससे स्कॉच् लोगों का रुष्ट होना स्वाभाविक था। अँगरेज़ भी जेम्स के व्यवहार से अधिक संतुष्ट न थे, क्योंकि उनको किसी प्रकार का भी नया

परिवर्तन पसंद नहीं था। अँगरेज़ों को बड़ा डर यह था कि कहीं स्कॉच् लोगों के कारण उनकी शासन-पद्धति में फेर-फार न हो जाय। कुछ भी हो, जेम्स ने यह नियम कर ही दिया कि इँगलैंड में स्कॉच् और स्कॉटलैंड में अँगरेज़ विदेशी न समझे जायँ और दोनों देशों में परस्पर समान रूप से व्यवहार हो। इस नियम को १६०७ की पार्लिमेंट ने मंज़ूर न किया। इस पर उसने न्यायाधीशों का आश्रय लिया और उनसे यह व्यवस्था ले ली कि उसके अँगरेज़ी-सिंहासन पर बैठने के अनंतर जो स्कॉच् उत्पन्न हुआ हो, उसे अँगरेज़-नागरिकों के सभी अधिकार प्राप्त हैं। इतना ही नहीं, उसने अँगरेज़ी-धार्मिक संस्थाओं के समान ही स्कॉच्-धार्मिक संस्थाओं का निर्माण किया। छुट्टियों के दिन भी वे ही नियत किए, जो ट्वीड के दक्षिण इँगलैंड में प्रचलित थे। इससे स्कॉच लोग बहुत ही क्रुद्ध हो गए। उनके क्रोध को देखकर उस समय यही मालूम पड़ता था कि इँगलैंड और स्कॉटलैंड का आपस में मिलना अभी शताब्दियों की बात है।

(६) अल्स्टर का बसाया जाना

जेम्स के इँगलैंड के सिंहासन पर बैठने के पहले ही ट्यूडर-राज-वंश ने आयर्लैंड को जीत लिया था। जेम्स को ही सारे आयर्लैंड और ग्रेट ब्रिटेन का पहला राजा

समझना चाहिए, क्योंकि इसके पहले किसी भी अँगरेज़ राजा का स्कॉटलैंड, आयर्लैंड, वेल्स और इँगलैंड पर पूर्ण रूप से एकाधिपत्य न था। आयर्लैंडवाले कैथलिक थे। उन्हें अपने ऊपर अँगरेज़ों का आधिपत्य बिलकुल पसंद न था। वे समय-समय पर विद्रोह मचाकर स्वतंत्रता प्राप्त करने का यत्न किया करते थे। १६०७ में हीरोन के अर्ल ने विद्रोह करके अँगरेज़ों को आयर्लैंड से निकाल देने का यत्न किया, परंतु उसे सफलता नहीं मिली और देश से भागना पड़ा। उसकी रियासत को अँगरेज़ों ने ज़ब्त कर लिया और उस पर अल्स्टर का प्रसिद्ध उपनिवेश बसाया। इस उपनिवेश ने रोमन सैनिक-उपनिवेश का काम किया और आयरिश लोगों के स्वतंत्र होने में सर्वदा के लिये बाधा डाल दी। इससे जहाँ इँगलैंड को लाभ पहुँचा, वहाँ कुछ विकट समस्याएँ भी उसके सिर पर आ खड़ी हुईं।

(७) वर्जीनिया तथा अन्य उपनिवेशों की स्थापना

जेम्स के शासन-काल में इँगलैंड के राज्य का विस्तार दूर-दूर के देशों तक हो गया। अटलांटिक के पार बहुत-से अँगरेज़-उपनिवेश बस गए। १६०७ में वर्जीनिया का उपनिवेश अँगरेज़ों ने बसाया और उसके एक नगर का नाम 'जेम्स-टाउन' रक्खा। इस उपनिवेश की शासन-प्रणाली

एक प्रकार से प्रजातंत्रात्मक थी। कुछ ही वर्षों के बाद लॉर्ड बाल्टिमोर (Lord Baltemore) ने वर्जीनिया के पास ही मेरीलैंड-नामक उपनिवेश बसाया और १६३२ में चॉर्ल्स प्रथम से अधिकार-पत्र (Charter) प्राप्त कर स्वयं उसका मुख्य स्वामी बन गया। १६२५ में बार्बडास-नामक अँगरेज़ी-उपनिवेश बसा। इस उपनिवेश के लोगों ने नीग्रो दासों के द्वारा अपने यहाँ खेती का काम आरंभ किया।

वर्जीनिया के उत्तर में 'न्यू इँगलैंड' नाम का उपनिवेश बसाया गया। समथ-नामक उपनिवेश को उन अँगरेज़ों ने बसाया, जो इँगलैंड की धार्मिक बाधाओं से तंग आकर देश के बाहर चले गए थे। १६२० में मैसाचूसैट्स-नामक प्रांत में भी वे लोग बस गए और उन्होंने उसकी राजधानी का नाम 'बोस्टन' रक्खा। अमेरिका के उत्तरीय भाग में जो उपनिवेश बसाए गए, उनके बसानेवाले लोग प्रायः व्यापारी, भठियारे और किसान आदि ही थे। उनमें कोई बड़े ज़मींदार नहीं थे। परंतु दक्षिणी भाग के उपनिवेशों के बारे में यह बात न थी। उनमें बड़े-बड़े ज़मींदार लोग बसे थे, जो नीग्रो लोगों से ही खेती का काम कराते थे। इस भेद के होने पर भी समग्र अमेरिका में प्यूरिटन लोग ही अधिक थे। ये कैथलिक मत के विरोधी और प्रजातंत्र राज्य के पक्षपाती थे।

सत्रहवीं सदी के मध्यभाग तक इन अँगरेज़ों ने ख़ूब उन्नति की और इँगलैंड की कीर्ति को दूर-दूर तक फैलाया।

(८) जेम्स और पार्लिमेंट

जेम्स के समय में अँगरेज़ों में बड़ा भारी परिवर्तन हो गया। अब वे राजा के स्वेच्छाचार को ज़रा भी नहीं पसंद करते थे। उनको राजा के अनुगत होकर चलना बिलकुल ही नापसंद था। इसका कारण क्या था ? ट्यूडर-वंशी राजा तो इनसे भी बढ़कर स्वेच्छाचारी थे; पर आंग्ल-जनता उन्हें बहुत मानती थी। एलिज़बेथ के शासन-काल तक तो जनता ने राजा को मनमानी करने दी ; पर जेम्स के तख़्त पर बैठते ही उसका रुख़ बिलकुल बदल गया। बात यह थी कि प्रथम ट्यूडर-राजा हेनरी सप्तम के समय के पूर्व जनता अँगरेज़-ज़मींदारों के द्वारा बहुत पीड़ित रहती थी। इस पर २५ वर्ष तक 'गुलाब-युद्ध' चला, जिससे प्रजा को बड़े-बड़े कष्ट उठाने पड़े और वह यही मनाने लगी कि कोई ऐसा राजा हो, जो उसे जमींदारों के अत्याचारों से बचाकर शांति-पूर्वक रहने दे। हेनरी सप्तम ऐसा ही राजा था। इसलिये जनता बहुत काल तक बड़ी राजभक्त रही ; पर धीरे-धीरे लोग पुरानी आपत्तियों को भूलते गए और अब उन्हें राजों की निरंकुशता असह्य मालूम होने लगी। साथ ही धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त

कर लेने के साथ-साथ उन्हें राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने की भी चाट पड़ी। राजा के ईश्वर-प्रदत्त अधिकार के विषय में भी उनका विश्वास उठता गया और अंत में जेम्स प्रथम के बाद चार्ल्स प्रथम को उन्होंने मार भी डाला। इससे जान पड़ता है कि पार्लिमेंट की शक्ति दिन-दिन बढ़ती ही गई। इन सब परिवर्तनों के कारण राजा और प्रजा का झगड़ा अनिवार्य हो गया।

जेम्स था विदेशी, उसको अँगरेज़ों के स्वभाव का ठीक-ठीक ज्ञान न था। शिक्षित, योग्य, दयालु और ईमानदार होने पर भी वह प्रजा-प्रिय न बन सका। उसके स्वभाव में हठ की मात्रा बहुत ही अधिक थी। अँगरेज़ लोग भी अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिये पूर्ण रूप से दृढ़ थे। इसका परिणाम यह हुआ कि जेम्स से पार्लिमेंट की नहीं पटी। एलिज़बेथ किफ़ायत-पसंद थी, परंतु जेम्स में यह बात न थी। उसको बारंबार पार्लिमेंट से धन माँगना पड़ता था, और धन के बदले में पार्लिमेंट को अधिकार देने पड़ते थे।

जेम्स के समय में सबसे पहली पार्लिमेंट का अधिवेशन १६०४ में हुआ। १६११ तक उसके प्रतिनिधि नए सिरे से नहीं चुने गए। पहले अधिवेशन में ही पार्लिमेंट ने जेम्स के प्रति अपने अधिकारों को प्रकट किया और धन देने के बदले बहुत-सा उपदेश दिया। इससे तंग आकर जेम्स ने

न्यायाधीशों से सलाह ली और आयात-निर्यात-कर की दर तथा कर लगनेवाली चीज़ों की संख्या बढ़ा दी। जनता ने १६१० में राजा का विरोध किया और नवीन राज्य-करों को अनुचित ठहराया। इससे राजा और प्रजा में झगड़ा बढ़ गया। जेम्स ने १६११ में पार्लिमेंट को बर्ख़ास्त ही कर दिया।

उसने तीन साल तक पार्लिमेंट से धन नहीं माँगा और राज-काज चलाया। उसकी आर्थिक स्थिति यहाँ तक बिगड़ गई थी कि १,००० पौंड के बदले में ही उसने 'बैरोनेट' की उपाधि लोगों को बाँटना शुरू कर दिया। लाचार होकर उसको पार्लिमेंट की बैठक करनी ही पड़ी। परंतु उसको पार्लिमेंट से पूरी सहायता नहीं मिली और बेकार झगड़ा बढ़ गया। इतिहास में यह पार्लिमेंट 'ऐडेल्ड पार्लिमेंट' (Addled Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है। ऐडेल्ड (Addled)—एग (Egg) का अर्थ सड़ा हुआ अंडा होता है, अर्थात् वह अंडा, जो निकल जाता है। इसीलिये ऐडेल्ड पार्लिमेंट का अर्थ हुआ व्यर्थ जानेवाली पार्लिमेंट, जिससे कुछ मतलब न निकला। उसके बाद सात साल तक जेम्स ने पार्लिमेंट का अधिवेशन ही नहीं किया और चुपचाप काम चलाता रहा।

फ़्रेडरिक को सहायता पहुँचाने की इच्छा और तीससाला युद्ध के झमेलों को तय करने के उद्देश से जेम्स ने १६२१ और १६२४

में पार्लिमेंट की बैठकें कीं। जेम्स ने धन की सहायता माँगी और साथ ही यह भी कहा कि जहाँ तक हो सकेगा, मैं युद्ध नहीं करूँगा। इस पर पार्लिमेंट ने उसको वही पुराना उत्तर दिया कि पहले हमारी शिकायतों को दूर करो, तब हम सहायता देंगे। उसके सभ्य पहले ख़ासकर एकाधिकारों (इज़ारों—Monopolies) को हटाना चाहते थे, क्योंकि सर गाइल्ज़ माप्सन ने राज्य से शराब का इज़ारा प्राप्त करके लोगों में मद्यपान की प्रवृत्ति बहुत अधिक बढ़ा दी थी। इसी प्रकार की अन्य बुराइयाँ भी एकाधिकारों के कारण उत्पन्न हो गई थीं। प्रजा इन बुराइयों को दूर करना चाहती थी। बेकन एकाधिकारों के पक्ष में था, इसलिये उस पर पार्लिमेंट में रिश्वत लेने का मुक़दमा चलाया गया। उसने अप-राध स्वीकार कर लिया। इस पर पार्लिमेंट ने उसको पदच्युत करके क़ैद कर लिया; पर राजा ने उसे शीघ्र ही छोड़ दिया।

लॉर्ड बेकन (Lord Bacon) इँगलैंड का लॉर्ड चांसलर (Chancellor) अर्थात् न्यायविभाग का प्रधान अधिकारी था। वह वादी और प्रतिवादी, दोनों से उपहार (Present) रूप में अच्छी रक़म तो ले लेता था, पर न्याय ठीक-ठीक करता था। इससे देनेवाले बड़ी शिकायत किया करते थे। बेकन ने रुपया लेना तो स्वीकार किया; पर उसका कहना था कि मैं न्याय ठीक-ठीक करता और यह रुपया विद्योन्नति

के कार्य में लगाता हूँ, इसे अपने उपयोग में नहीं लाता। एक दिन बेकन गाड़ी में बैठा जा रहा था, बर्फ़ की वर्षा हो रही थी। उसके मन में आया कि शीत से मांस आदि भोज्य पदार्थों के सड़ने पर कुछ असर होता है, या नहीं। उसने तुरंत एक मुर्ग़ी का पेट चीरा, बाहर से बर्फ़ लाकर भरा और सी दिया। बर्फ़ गिरते समय बाहर जाने से उसे ऐसी शीत समाई कि वह बीमार होकर मर ही गया। बेकन अपने समय का दर्शन-शास्त्र का मौलिक एवं अद्वितीय विद्वान् था (Experimental philosophy) अपने मौलिक विचारों के कारण यह दर्शन-शास्त्र के इतिहास में अमर रहेगा। उक्त घटना के पाँच वर्ष बाद ही बेकन की मृत्यु हुई थी।

बेकन और इज़ारों के मामले में जेम्स ने लोक-सभा का कहना मान लिया। इस पर पार्लिमेंट ने जेम्स को धन की सहायता दे दी। कुछ ही महीनों के बाद पार्लिमेंट का फिर अधिवेशन हुआ। सभ्यों ने जेम्स को यह सलाह दी कि वह अपने लड़के की शादी किसी प्रोटेस्टेंट-मत को माननेवाली कन्या से करे। इस पर जेम्स को क्रोध आ गया। उसने पार्लिमेंट को बर्ख़ास्त कर दिया। १६२४ में फिर पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ। इज़ारों को राज्य-नियम (क़ानून) के विरुद्ध ठहराया गया। कोषाध्यक्ष पर मुक़द्दमा चलाया गया। इसी

बीच में वृद्ध राजा जेम्स २७ मार्च, १६२५ को परलोक सिधारा।

(६) इगलैंड की आर्थिक दशा

जेम्स प्रथम के समय में अँगरेज़ों का व्यापार पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गया था। फ़िलिप द्वितीय की मृत्यु के उपरांत हालैंडवालों ने सिर उठाया और पुर्तगालवालों का व्यापार अपने हाथ में कर लिया। उनकी सफलता देखकर अँगरेज़ों ने भी अपनी एक ईस्ट-इंडिया-कंपनी (The East India Company) बनाई। इस कंपनी ने सन् १६०० में एलिज़बेथ से प्रमाण-पत्र प्राप्त किया और भारत आदि देशों से व्यापार शुरू किया।

हॉलैंड से कब यह सहा जा सकता था। भारत में अँगरेज़ों और डचों (Dutches) में घोर शत्रुता हो गई। एक दूसरे का जानी दुश्मन हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि १६२३ में अंब्यॉयना (Amboyna) के छोटे-से द्वीप में डचों ने अँगरेज़ों का क़त्लेआम कर दिया। पर भारत में अँगरेज़ों के पैर जम गए। उन्होंने मुग़ल-सम्राट् से कोठी (Factory) खोलने का अधिकार-पत्र (फ़र्मान) प्राप्त किया। १६१२ में सूरत में और १६३९ में मदरास में अँगरेज़ों की व्यापारी कोठियाँ खुल गईं। डचों ने 'केप ऑफ़ गुडहोप' (Cape of

Goodhope) पर प्रभुत्व प्राप्त किया और उसे बंदरगाह बनाया। सेंट हेलेना (St. Helena)-द्वीप को अँगरेज़ों ने अपने ठहरने का स्थान बनाया। धीरे-धीरे ईस्ट-इंडिया-कंपनी (E. I. Company) का व्यापार और शक्ति बढ़ती गई, जिसका उल्लेख आगे चलकर किया जायगा।

जेम्स के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ निम्न लिखित हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६०३	जेम्स प्रथम का राज्याभिषेक
१६०५	बारूद-षड्यंत्र (Gunpowder Plot)
१६०७	वर्जीनिया में अँगरेज़ी-उपनिवेशों की स्थापना
१६१०	अल्स्टर में अँगरेज़ों का उपनिवेश और जेम्स प्रथम का पार्लिमेंट-विसर्जन
१६१४	एडिल्ड पार्लिमेंट (The Addled Parliament)
१६१८	रैले को फाँसी और तीस साल का युद्ध
१६२१	बेकन का अधःपतन
१६२४	स्पेन के साथ युद्ध
१६२५	जेम्स प्रथम की मृत्यु

द्वितीय परिच्छेद

चार्ल्स प्रथम (Charles I) (१६२५-१६४९)

(१) चार्ल्स प्रथम का राज्यांधिरोहण और स्वभाव

जेम्स प्रथम का पुत्र चार्ल्स 'चार्ल्स प्रथम' के नाम से इँगलैंड की राजगद्दी पर बैठा। उस समय उसकी अवस्था पच्चीस वर्ष

चार्ल्स प्रथम

की थी। सुंदर, प्रभावशाली और गंभीर होने पर भी उसमें ज्ञान और दूरदर्शिता की कमी थी। वह शर्मीला, घमंडी, संसार से अनभिज्ञ, रूखा और शक्की मिज़ाज का था। यद्यपि वह जान-बूझकर झूठ नहीं बोलता था, तथापि सत्य भी शायद ही कभी बोला हो। इसी कारण मित्र और शत्रु, कोई कभी उस पर किसी तरह का विश्वास न रखता था। वह बहुत ही अधिक गंभीर था, और यह गंभीरता इस हद तक जा पहुँची थी कि मानो हँसना उसने छोड़ ही दिया हो। वह न तो किसी की बात को ठीक-ठीक समझता था और न ख़ुद ही ठीक तौर से बोल पाता था। वह अपनी कल्पनाओं में ही मस्त रहता था। हठी तो वह परले सिरे का था। विद्या-प्रेम, पवित्र आचार तथा गंभीरता आदि गुणों को देखकर कुछ लोग उसके अनन्य भक्त थे। परंतु अँगरेज़-जनता के साथ उसका संबंध सर्वदा खींच-तान का ही रहा। इसका एक मुख्य कारण यह भी था कि जनता के साथ उसकी तिल-भर भी सहानुभूति नहीं थी। वह लोक-मत की रत्ती-भर परवा नहीं करता था। बकिंघेम से (Duke of Buckingham) उसे विशेष अनुराग था। मंत्रियों को हमेशा यह शिकायत बनी रही कि वह अपने जी की बात नहीं बताता। इसलिये राजा की स्थिर नीति क्या थी, यह बताना कठिन था। उसकी स्त्री हैनिरिटा (Henrietta) कैथलिक

और धूर्त थी। उसका चार्ल्स पर बहुत ही अधिक प्रभाव था।

(२) इंगलैंड में राजनीतिक परिवर्तन

चार्ल्स के राजसिंहासन पर बैठने के समय इँगलैंड और स्पेन में लड़ाई हो रही थी। चार्ल्स अपने बहनोई फ़्रेडरिक का फिर से उद्धार करना और स्पेनियों से लड़ना चाहता था। इसी मतलब से उसने डेन्मार्क के राजा क्रिश्चियन को इस शर्त पर सहायता देने का वचन दिया कि वह जर्मनी के प्रोटेस्टेंटों का पक्ष लेकर सम्राट् तथा कैथलिक-लीग पर आक्रमण कर दे। चार्ल्स को पार्लिमेंट से धन मिलने की बहुत अधिक आशा थी। कारण, वह कैथलिकों के विरुद्ध लड़ना चाहता था।

१६२५ में प्रथम पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ। पार्लिमेंट ने इस शर्त पर राजा को धन देना मंजूर किया कि वह बकिंघेम को सारे राज्य के पदों से अलग कर दे। इस पर चार्ल्स बहुत ही कुपित हो गया। उसने पार्लिमेंट की बैठक बर्ख़ास्त कर दी। वह बिना किसी प्रकार की आर्थिक सहायता के ही योरप के युद्ध को चलाने के लिये तैयार हो गया।

चार्ल्स तथा बकिंघेम ने अँगरेज़ी-व्यापारी जहाज़ों से लड़ाई के जहाज़ों का काम लेना शुरू कर दिया; बहुत-से

आदमियों को ज़बरदस्ती सैनिक बनाया । सेसिल उस सेना का सेनापति बनाया गया । उसे स्पेनियों के सोने-चाँदी से लदे हुए जहाज़ पकड़ने की आज्ञा दी गई । साथ ही यह आज्ञा भी दी गई कि वह स्पेन के कुछ नगरों को भी जीत ले । उसने केडीज़ (Cadiz) के प्रसिद्ध क़िले को शीघ्र ही जीत लिया और खाद्य सामग्री पास न रहने पर भी स्पेन-विजय के लिये रवाना हो गया । राह में अँगरेज़-सैनिकों को बहुत-सी शराब की बोतलें मिल गईं । भूखे तो वे पहले ही से थे, इसलिये उन्होंने शराब पीकर ही अपना पेट भरा । आख़िरकार सेसिल भी हैरान हो गया और उन बेहोश, बदमस्त सैनिकों को लेकर जहाज़ पर लौट आया । इस घटना के बाद उसने स्पेन-विजय का विचार बिलकुल ही छोड़ दिया और चुपचाप इँगलैंड को लौट पड़ा । इस युद्ध के कारण चार्ल्स ऋणी हो गया । उसने जो मूर्खता की थी, उसका फल उसको मिला । पार्लिमेंट और स्पेन, दोनों से एक साथ ही झगड़ा करने की योग्यता और शक्ति न होने पर भी उसने इसी को पसंद किया । यही कारण है कि न तो वह स्पेन को ही जीत सका और न पार्लिमेंट को ही अपनी इच्छा के अनुसार चला सका ।

१६२६ में उसने फिर दूसरी बार पार्लिमेंट का अधिवेशन किया। इस बैठक के बुलाने में उसने चतुरता से काम लिया। प्रथम अधिवेशन में जो लोग विरोधी दल के नेता थे, उनको उसने 'शेरिफ़' या मंडल-शासक बना दिया। यह इसीलिये कि ये प्रतिनिधि बनकर पार्लिमेंट में न आ सकें। किंतु इस चतुरता में भी वह सफल न हुआ। अधिवेशन के आरंभ ही में सर जॉन इलियट (Sir John Eliot) ने कहा—"राज्य के कुप्रबंध की जाँच की जाय और बकिंघेम पर अभियोग चलाया जाय, क्योंकि उसने इँगलैंड का सत्यानाश और शाही ख़ज़ाने को ख़ाली कर दिया है। उसकी फ़िज़ूलख़र्ची, उसकी फ़िज़ूल दावतें, उसके शानदार मकान और भोग-विलास के सामान में राज्य की सारी आमदनी ख़र्च हो गई है। उसी के कारण इँगलैंड पर अगणित कष्टों का भार आ पड़ा है। इस कारण उस पर अभियोग चलाना अत्यंत आवश्यक है।" इस पर चार्ल्स ने इलियट को क़ैद कर लिया। परंतु जब पार्लिमेंट ने इलियट के विना अधिवेशन करना स्वीकार न किया, तो चार्ल्स ने विवश होकर उसे छोड़ दिया। इसके बाद पार्लिमेंट ने बकिंघेम को राज्य के पद से हटाने के लिये भी चार्ल्स से अनुरोध किया। इस पर चार्ल्स ने क्रुद्ध होकर पार्लिमेंट को ही बर्ख़ास्त कर दिया।

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि चार्ल्स धन के अभाव से विदेशी नीति में सफल नहीं हो सका। स्पेन ज्यों-का-त्यों शक्तिशाली बना रहा। चार्ल्स उसका कुछ न बिगाड़ सका। डेन्मार्क के राजा क्रिश्चियन ने, १६२६ में, जर्मन-कैथलिकों पर आक्रमण किया। मगर चार्ल्स की सहायता न पाने के कारण बुरी तरह से उसकी हार हुई। बेचारा चार्ल्स भी क्या करता? जब उसको पार्लिमेंट-सभा ने सहायता ही नहीं दी, तो वह उसको कहाँ से सहायता पहुँचाता। इन सब घटनाओं से दुःखित होकर उसने 'ला रोशेल' (La Rochelle) के ह्यूगेनो लोगों के विद्रोह करते ही फ्रांस पर आक्रमण कर दिया। इस काम में धन की ज़रूरत थी, इससे विवश होकर उसने अँगरेज़ी-प्रजा से धन लेना शुरू किया। अँगरेज़ी-क़ानून के अनुसार राजा प्रजा को, धन देने के लिये, विवश नहीं कर सकता था। रिचर्ड तृतीय के समय से ही यह क़ानून था कि राजा किसी से भी ज़बरदस्ती धन नहीं ले सकता। चार्ल्स ने जजों से सलाह ली। जजों ने उससे कहा—"लोगों को बाधित करके ऋण लेने में कुछ भी बुराई नहीं है।" इस पर चार्ल्स ने धनाढ्य अँगरेज़ों से बलात् ऋण (Forced Loans) लेना शुरू कर दिया। अस्सी आदमियों ने ऋण देना अस्वीकार किया। इस पर उसने उनको जंगी

क़ानून (मार्शल लॉ) के अनुसार क़ैद में डाल दिया। इलि-यट भी इन्हीं क़ैदियों में था। जो अँगरेज़ निर्धनता के कारण ऋण न दे सकते थे, उनको सैनिक बनने के लिये विवश किया गया। वे योरप में युद्ध करने के लिये भेज दिए गए।

इन क़ैदियों में पाँच नाइट भी थे, जिन्होंने राजा की इस आज्ञा को अँगरेज़ी-क़ानून के विरुद्ध बतलाया। उन्होंने अपने तईं न्यायाधीश के सामने उपस्थित करने का यत्न किया। इस यत्न में उन्हें सफलता भी हुई। राजा ने उनमें से केवल डार्नेल-नामक व्यक्ति को न्यायाधीशों के निकट नहीं भेजा। न्यायाधीश भी राजा से डर गए, इसी से उन्होंने डार्नेल के छुटकारे के लिये राजा पर कुछ ज़्यादा ज़ोर नहीं डाला। अस्तु। इस संपूर्ण घटना का फल बहुत ही अच्छा हुआ। राजा को यह मालूम पड़ गया कि पार्लिमेंट का सहारा मिले विना विदेशी राष्ट्रों से लड़ना बहुत ही कठिन है। राजा ने पाँचों नाइटों को छोड़ दिया और पार्लिमेंट को तीसरी बार बुलाया।

सन् १६२८ में पार्लिमेंट का तीसरा अधिवेशन बड़े समा-रोह के साथ हुआ। सर टॉमस वैंटवर्थ (Sir Thomas Went-worth) ने इलियट के ही समान लोक-सभा में बड़ा जोश

दिखलाया। इन दोनों के नेतृत्व में अँगरेजों ने यह प्रण किया कि हम लोग अपनी स्वतंत्रता और संपत्ति की रक्षा करेंगे और राजा को स्वेच्छाचार अर्थात् मनमानी नहीं करने देंगे। वैंटवर्थ बकिंघम से बहुत ही असंतुष्ट था और इसी कारण उसको रज्य के सभी पदों से हटाना चहता था। इसके साथ ही उसने पार्लिमेंट के सामने यह प्रस्ताव रक्खा कि आगे से किसी भी अँगरेज़ को विना वारंट के नहीं पकड़ा जा सकता और न किसी अँगरेज़ से, उसको विवश करके, ऋण ही लिया जा सकता है। इलियट इससे भी कुछ आगे बढ़ गया। उसने एक अधिकार-पत्र (Petition of Rights) का मसविदा तैयार किया और उसमें चार्ल्स के निम्न-लिखित कार्यों को ग़ैरक़ानूनी ठहराया—

(१) पार्लिमेंट की आज्ञा या मंज़ूरी के विना धन लेना
(२) लोगों को विवश करके उनसे ऋण लेना
(३) व्यापारी जहाज़ों को सैनिक बेड़े का रूप देना
(४) नए-नए राज्य-कर को लगाना
(५) विना कारण लोगों को क़ैद करना
(६) ग़रीब अँगरेज़ों को सैनिक बनने के लिये बाध्य करना
(७) देश में मार्शल लॉ जारी करना

अँगरेज़ी-इतिहास में यह अधिकार-पत्र बहुत ही अधिक

प्रसिद्ध है। आरंभ में चार्ल्स ने टालमटूल की, लेकिन अंत को हारकर उसे उक्त अधिकार-पत्र पर हस्ताक्षर करने ही पड़े। हस्ताक्षर करते ही लोक-सभा ने उसे बहुत ही अधिक धन दे दिया। अधिकार-पत्र प्राप्त करने की प्रसन्नता में सारे इँगलैंड के भीतर छुट्टी मनाई गई। गिरजों में घंटे बजाए गए। सब ओर खेल-तमाशों की धूम मच गई। इन्हीं बातों से मालूम पड़ता है कि उस समय लोग स्वतंत्रता के कितने भूखे थे।

पार्लिमेंट से धन प्राप्त करके चार्ल्स ने अपनी सेना ला रोशेल की ओर भेजी। उस समय फ़्रांस के राजा लुईस १३वें की शक्ति बहुत ही अधिक बढ़ गई थी। उसने प्रोटेस्टेंट लोगों के बड़े-से-बड़े क़िले को घेर लिया था। सारे प्रोटेस्टेंट अँगरेज़ी-सेना की प्रतीक्षा कर रहे थे। दैवसंयोग से पोर्टस्मथ की ओर जाते समय बकिंघम को फ़ैल्टन (Felton)-नामक एक अँगरेज़ ने मार डाला। अँगरेज़ फ़ैल्टन से बहुत प्रसन्न हुए। इस पर चार्ल्स के क्रोध की आग भड़क उठी। अँगरेज़ों से उसका संबंध और भी खींच-तान का हो गया। राजा ने फिर पुरानी नीति का अनुसरण और प्रजा की स्वतंत्रता का अप-हरण करना शुरू किया।

सन् १६२९ में चार्ल्स की तीसरी पार्लिमेंट का दूसरा अधिवेशन हुआ। पार्लिमेंट ने अधिकार-पत्र के झगड़े को

उठाकर राजा को बहुत भला-बुरा कहा। उसका कहना था कि राजा ने कुछ क़ानून-विरुद्ध चुंगी (Custom Duties) लगाई है। इस पर राजा ने पार्लिमेंट के एक सदस्य को क़ैदख़ाने में डाल दिया। कारण, उस सदस्य ने राज्य-कर देना अस्वीकार किया था। पार्लिमेंट ने राजा के इस कार्य को अपनी स्वतंत्रता में हस्तक्षेप करना समझा और उस सभ्य को क़ैद से छुड़ाना चाहा। उसी समय चार्ल्स ने आर्मीनियन दल के कुछ पादरियों को बिशप बना दिया। प्यूरिटन लोग इससे बहुत ही ख़फ़ा हो गए। यह झगड़ा यहाँ तक बढ़ा कि राजा ने पार्लिमेंट का अधिवेशन बंद करना चाहा। मगर हॉलैंड और वैलंटाइन ने पार्लिमेंट-भवन के द्वार बंद कर दिए; राजकर्मचारी को बाहर ही से लौटा दिया। सदस्यों ने अध्यक्ष को कुर्सी से नीचे उतारकर बिठा दिया, क्योंकि वह डर के मारे सभा-विसर्जन कर देना चाहता था। इलियट ने प्रस्ताव उपस्थित किए और लोक-सभा ने उनको पास किया। इन प्रस्तावों के अनुसार वे सब लोग देश-द्रोही ठहराए गए, जिन्होंने धर्म में ऐरियन (Arrian) लोगों को दाख़िल किया और राजा को व्यापार का कर दिया था। इसके उपरांत पार्लिमेंट का विसर्जन कर दिया गया। चार्ल्स ने इलियट से नाराज़ होकर उसे टावर में क़ैद करके, उसके साथ कठोर

व्यवहार किया। इसका परिणाम यह हुआ कि वह तीन साल के बाद अंत को क्षय-रोग से मर गया।

तीसरी पार्लिमेंट के विसर्जन (Provogation) के साथ ही चार्ल्स के राज्य की प्रथम यवनिका गिरी और दूसरी उठी, जिसने १६२९ से १६४० तक नित्य नवीन दृश्य दिखाए। उसके पतन के साथ ही इँगलैंड ने एक भयंकर नए युग में प्रवेश किया, जिसका वर्णन आगे चलकर किया जायगा।

(३) चार्ल्स का स्वेच्छाचारी राज्य (Rule without Parliament)

सन १६२९ से १६४० तक चार्ल्स ने पूर्ण रूप से स्वेच्छाचारी राज्य किया। पार्लिमेंट भी अपने अधिकारों की रक्षा का पूर्ण प्रयत्न करती रही। पार्लिमेंट में ट्यूडर-काल की अपेक्षा बहुत ही अधिक परिवर्तन हो गया था। उसके सभ्यों की यह इच्छा थी कि पार्लिमेंट की इच्छा के अनुकूल काम करनेवाले व्यक्ति ही राजा के मंत्री बनें। किंतु राजा को यह पसंद न था। जब कभी पार्लिमेंट राजा से किसी मंत्री को हटाने के लिये कहती थी, तभी राजा क्रुद्ध हो जाता और इस बात को अपने अधिकारों में हस्तक्षेप करना समझता था। उसका ख़याल था कि पार्लिमेंट अब देश के शासन की क्षमता भी अपने ही हाथ में लेना चाहती

है—उसका इरादा है कि राजा को एक कठपुतली बना दे। इसका परिणाम यह हुआ कि राजा और प्रजा का झगड़ा चरम सीमा तक पहुँच गया। किसी को भी यह ख़याल नहीं था कि यह झगड़ा देश को कहाँ ले जायगा। इसमें संदेह नहीं कि इस झगड़े के दो ही परिणाम हो सकते थे—या तो चार्ल्स लुईस १३वें की तरह स्वेच्छाचारी राजा बन जाता, या अँगरेज़ी-पार्लिमेंट की शक्ति अनंत सीमा तक बढ़ जाती और राजा एक खिलौना-मात्र रह जाता। चार्ल्स ने इन ग्यारह वर्षों में जिस तरह स्वेच्छाचारी राज्य किया और अपने अधिकारों को लोक-सभा के हस्तक्षेप से बचाया, उसका वर्णन आगे दिया जाता है।

पार्लिमेंट को धता बताकर चार्ल्स ने सबसे पहले धन एकत्र करने का उपाय सोचा। इस उद्देश से उसने संपूर्ण राज्य के व्यय को घटा दिया। फ़्रांस और स्पेन से युद्ध बंद कर दिया और उनसे संधि कर ली। परंतु जर्मनी से तीस वर्ष चलनेवाला युद्ध जारी ही रहा। दैवसंयोग से स्वीडन के राजा गस्टॉवस अडल्फ़स (Gustavus Adolphus) ने, और उसकी मृत्यु के बाद लुईस १३वें (Louis XIII) के मंत्री रिशल्यू ने प्रोटेस्टेंट-मत के उद्धार का यत्न पहले की ही तरह जारी रक्खा।

संधि करने के बाद भी चार्ल्स को राज्य-कर से इतना धन नहीं मिला, जिससे वह ठीक ढंग पर राज-काज चला सकता। उसने किसी-न-किसी प्रकार राज्य-नियमों को तोड़ना शुरू किया और उन नियमों के नए-नए अर्थ निकालकर धन प्राप्त किया। उसने व्यापार के करों को बढ़ा दिया। शाही ज़मीन और नए जंगल बढ़ाने में भी उसने किसी तरह की कमी नहीं की।

इँगलैंड में, प्राचीन समय में, एक प्रथा यह थी कि एक निश्चित आमदनी से अधिक आमदनीवाले ज़मींदार को 'नाइट' (Knight) की उपाधि लेनी पड़ती थी, जिसके लिये कुछ फ़ीस भी देनी पड़ती थी। यदि उपर्युक्त व्यक्ति नाइटों की उपाधि न ले, तो उस पर जुर्माना होता था। जब लोगों में नाइटों की अधिक क़दर न रह गई, तब ज़मींदारों ने नाइट बनना छोड़ दिया। इनमें बहुत-से ऐसे ज़मींदार भी थे, जो नाइट बनने के उपयुक्त होने पर भी नाइट न बने थे। अपनी आय बढ़ाने के लिये चार्ल्स ने उन पर जुर्माना कर दिया। इतना ही नहीं, उसने बहुत पुराना जहाज़ी कर (Ship Money) फिर से बाँध दिया और इस तरह समुद्र-तट-वासियों से धन लेना शुरू कर दिया। इन उपायों से जो धन प्राप्त होता था, वह सब जहाज़ों के बढ़ाने में ही ख़र्च होता था,

जिससे इँगलैंड के व्यापार को धक्का न पहुँचे। जहाज़ी कर वसूल करने में उसने पूर्ण सफलता प्राप्त की। आगे यह कर केवल तट-वासियों से लिया जाता था। इस सफलता से उत्साहित होकर उसने देश के भीतरी भाग पर भी यही राज्य-कर लगा दिया। किंतु समुद्र-तट पर न रहनेवालों ने जहाज़ी कर देने से इनकार किया। राजा उसे ज़बरदस्ती वसूल करने लगा।

चार्ल्स के इन ऊपर लिखे कामों से जनता बहुत ही अधिक असंतुष्ट थी। सारे इँगलैंड पर जहाज़ी कर लगते ही देश-भर में खलबली मच गई। इलियट के परम मित्र और पार्लिमेंट के सभ्य हैंपडन (Hampden) ने जहाज़ी कर को, क़ानून के विरुद्ध कहकर, देने से इनकार कर दिया। १६३८ में उस पर राज्य की ओर से मुक़दमा चलाया गया। न्यायाधीशों ने डर के मारे राजा के पक्ष में फ़ैसला दिया और जहाज़ी कर को क़ानून के अनुकूल ठहराया। कुछ हो, जनता पर इस निर्णय का बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा। राजा और राजकर्मचारियों से असंतुष्ट जनता जहाज़ी कर के वसूल होने में बाधाएँ डालने लगी।

चार्ल्स ने धन एकत्र करने के समान ही धर्म में भी पूरे तौर से स्वेच्छाचारिता से काम लेना शुरू किया। प्यूरिटन

लोग पार्लिमेंट के पक्ष में थे। इस कारण चार्ल्स उनका जानी दुश्मन हो गया। वह लॉड (Laud) का शिष्य था, इस कारण ऐरियन (Arrian) दल पर पूर्ण श्रद्धा रखता था। इसी से प्यूरिटन लोग उससे और भी अधिक चिढ़ गए। ऐरियन लोग राजा के दैवी अधिकार मानते थे। यही कारण है कि चार्ल्स ने १६२८ में लॉड को लंदन का बिशप बनाया और १६३३ में आर्चबिशप ऐबट (Abbot) के मरने पर उसको कैंटबरी का आर्चबिशप बना दिया। लॉड ने भी राजा का साथ अच्छी तरह से दिया और समय-समय पर उसको उचित सलाह देता रहा।

लॉड बहुत ही विद्वान् था। उसके आचार-विचार उच्च और शक्ति अपरिमित थी। वह धार्मिक संस्था की हालत को सुधारना चाहता था। उसमें एक ही कमी थी और वह यह कि वह दुनियादारी नहीं जानता था। इसी कारण वह जनता के स्वभाव को न पहचान सका और चार्ल्स ही की तरह भूलें करता गया। प्यूरिटन लोग स्वतंत्र विचार के थे। वे पुराने रस्म-रिवाज़ और संस्कारों में शिथिलता चाहते थे। लॉड को कब यह स्वीकार हो सकता था। इसका परिणाम यह हुआ कि प्यूरिटन लोगों को धार्मिक बातों के लिये मजबूर किया गया। भला प्यूरिटन लोग कब इसे मंज़ूर कर सकते

थे ? इसके साथ ही उन्हें यह भी संदेह हो गया कि शायद प्रोटेस्टेंट-मत के नाम पर वह कैथलिक मत का ही प्रचार न करता हो। रानी के कैथलिक होने के कारण उनका यह संदेह पक्का हो गया। कुछ समय तक देश में भीतर-ही-भीतर आग सुलगती रही। लॉड ने चर्च की शक्ति को बढ़ाना शुरू कर दिया। उसने अपराधियों को कठोर दंड भी दिया। स्टार-चेंबर ने भी राजा की इच्छाओं के अनुकूल ही निर्णय किया। एलेग्जेंडर लेटन (Alexander Leyton) नाम के एक डॉक्टर ने बिशपों के विरुद्ध एक पुस्तक लिखी थी, इसलिये उसे कोड़े लगवाए गए, उसके कान कटवा लिए गए और वह क़ैद कर लिया गया। इसी तरह विलियम प्रीनन (William Prynne) को तत्कालीन नाटकों के विरुद्ध पुस्तक लिखने के कारण कारावास-दंड दिया गया। यह क्यों ? इसलिये कि रानी को नाटकों का बड़ा शौक़ था और वह ख़ुद कभी-कभी खेल में पार्ट लिया करती थी। अधिकार-पत्र (Petition of Rights) लेते समय सर टॉमस वेंटवर्थ (Sir Thomas-Wentworth) ने जो वीरता प्रकट की थी और लोक-सभा का साथ दिया था, उसका विस्तार के साथ वर्णन किया जा चुका है। बकिंघेम के मरने के बाद उसमें आकाश-पाताल का अंतर हो गया। लॉड के साथ रहने से राजा में

उसकी भक्ति हो गई। बेकन की तरह उसका भी यह विचार हो गया कि अशिक्षित पार्लिमेंट से देश की वह उन्नति नहीं हो सकती, जो एक शिक्षित और स्वेच्छाचारी राजा से हो सकती है। चार्ल्स ने भी वैंटवर्थ को अपनाया। शुरू में उसने उसको उत्तरीय सभा (The Council of the North) का प्रधान और उसके बाद आयर्लैंड का शासक बना दिया। वैंटवर्थ ने दृढ़ता से आयर्लैंड का शासन और साथ ही देश के व्यापार-व्यवसाय एवं कृषि की उन्नति करने का यत्न भी किया। उसने लॉड के सिद्धांतों और विचारों को आयर्लैंड में फैलाया।

आयर्लैंड की ही तरह स्कॉटलैंड पर भी अँगरेज़ी-राज्य का प्रभाव पड़ा। चार्ल्स ने स्कॉटलैंड के चर्च को अँगरेज़ी-चर्च के साथ मिलाने का यत्न किया और स्कॉटलैंड को पूर्ण रूप से इँगलैंड बनाना चाहा। परंतु यह काम बहुत कठिन था। १६३३ में चार्ल्स एडिनबरा पहुँचा और वहाँ उसने अपना राज्याभिषेक करवाया। लॉड भी राजा के साथ था। उसने एडिनबरा में एक नई बिशपरिक (Bishopric) स्थापित की। १६३७ में स्कॉटलैंड के प्रैसबिटेरियन धर्म में सुधार करवाने अर्थात् उस देश में भी आंग्ल-धर्म (Church of England) चलाने का यत्न किया

गया । उन्हें भी अँगरेज़ों की प्रार्थना-पुस्तक स्वीकार करने के लिये विवश किया गया । स्कॉच लोग इस प्रार्थना-पुस्तक को रोमन कैथलिक मत की पुस्तक समझते और उसे बहुत ही घृणा की दृष्टि से देखते थे ।

उक्त नवीन प्रार्थना-पुस्तक का पढ़ना अनिवार्य किए जाने के कारण सारे स्कॉटलैंड में क्रोध की आग भड़क उठी । वहाँ के निवासी विद्रोह करने के लिये तैयार हो गए । एडिनबरा के 'सेंट गाइल' नाम के चर्च में पादरी ने ज्यों ही नवीन प्रार्थना-पुस्तक पढ़ी, त्यों ही लोग शोर-गुल और दंगा करने लगे । स्कॉच् जनता और सरदार राजा के विरुद्ध उठ खड़े हुए । ग्रामीणों, पादरियों, नागरिकों और सरदारों की भिन्न-भिन्न चार सभाएँ बन गईं । वही स्कॉटलैंड का शासन करने लगीं । ग्लॉसगो में स्कॉच् लोगों ने एक बड़ी भारी जातीय सभा की। राजा ने जब इस सभा को बर्खास्त करना चाहा, तो सभा के सभ्यों ने उसकी आज्ञा नहीं मानी । उन्होंने राजा से कह दिया कि तुम्हें हमारे धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है ।

चार्ल्स इस कठिन समस्या को न हल कर सका । न तो उसके पास सेना ही थी और न धन, जिसके बल पर वह स्कॉट-लैंड की स्वतंत्रता को मिटाता । अतएव उसने अँगरेज़ों

को स्कॉचों के विरुद्ध भड़काने का यत्न किया। परंतु अँगरेज़ बिलकुल न भड़के। उन्होंने स्कॉच् लोगों का पूरे तौर पर साथ दिया। लाचार होकर चार्ल्स ने इधर-उधर के गँवार तथा अशिक्षित लोगों को इकट्ठा किया और स्कॉच् लोगों से लड़ने के लिये यात्रा कर दी। स्कॉचों की सेना बहुत सुशिक्षित थी और उसमें एलेग्ज़ैंडर लैस्ले-जैसे योग्य आदमी थे, जो युद्ध-कौशल में अपने समय में एक ही माने जाते थे। परिणाम यह हुआ कि १६३९ के युद्ध में चार्ल्स बुरी तरह पराजित हुआ। यह युद्ध इतिहास में प्रथम "बिशप-युद्ध" के नाम से प्रख्यात है। चार्ल्स ने स्कॉच् लोगों से संधि कर ली [यह संधि वारिक (Warwick) की संधि के नाम से प्रसिद्ध है] और स्कॉच् लोगों की शिकायतों को उन्हीं लोगों के द्वारा दूर करने का प्रण किया।

इस संधि के बाद ही चार्ल्स ने वैंटवर्थ को आयर्लैंड से बुला लिया। उसको 'स्टैफ़ोर्ड का अर्ल' (Earl of Strafford) बनाया और सारी कठिनाइयाँ उसके सामने रक्खीं। वैंटवर्थ बहुत ही समझदार तथा नीति-निपुण आदमी था। उसने चार्ल्स को सलाह दी कि विना पार्लिमेंट की सहायता के स्कॉच् लोग न दबाए जा सकेंगे। इस पर उसने (ए)प्रिल, १६४० में पार्लिमेंट का अधिवेशन किया। हैंपडन तथा जान पिम (John Pym)

के नेतृत्व में लोक-सभा ने राजा से स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि हम सहायता देने के लिये तैयार हैं, बशर्ते कि आप हमारी शिकायतों को दूर कर दें। राजा को यह मंजूर न था, अतः उसने इस चतुर्थ पार्लिमेंट को भी बर्खास्त कर दिया। इतिहास में यह 'क्षणिक पार्लिमेंट' (Short Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है।

पार्लिमेंट से सहायता न पा सकने पर चार्ल्स ने फिर सेना एकत्रित की और स्कॉटलैंड पर चढ़ाई करने की तरकीब सोची। ज्यों ही यह समाचार स्कॉच् लोगों को मालूम पड़ा, उन्होंने इँगलैंड पर आक्रमण कर दिया। चार्ल्स प्रत्येक स्थान पर उनसे पराजित हुआ। लाचार होकर उसने उनसे संधि कर ली। यह संधि 'रिपन की संधि' (The Treaty of Ripon) के नाम से पुकारी जाती है। रिपन की संधि के अनुसार राजा ने स्कॉच् लोगों को पूरे तौर पर धार्मिक स्वतंत्रता दे दी। इससे स्पष्ट है कि यह द्वितीय बिशप-युद्ध राजा चार्ल्स के लिये प्रथम बिशप-युद्ध की अपेक्षा भी अधिक भयंकर सिद्ध हुआ। रिपन की संधि में चार्ल्स ने यह प्रण किया था कि मैं स्कॉच्-सेना को पूरी तनख्वाहें दे दूँगा। इससे उसकी आर्थिक दशा और भी बिगड़ गई। लोक-सभा से डरकर उसने यार्क-नगर में लार्ड लोगों की एक महासभा की। लार्डों ने उसको पार्लिमेंट

का अधिवेशन करने की सलाह दी। "मरता क्या न करता"—इस न्याय के अनुसार ३ नवंबर, १६४० को उसने पाँचवीं पार्लिमेंट बुलाई, जो इतिहास में 'लॉंग पार्लिमेंट' (Long Parliament) के नाम से प्रख्यात है।

(४) लाग पार्लिमेंट का अधिवेशन

ऊपर लिखा जा चुका है कि ३ नवंबर, १६४० को वेस्ट-मिंस्टर में सब पार्लिमेंट के सभ्य एकत्र हुए। उन्होंने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि राजा के शासन में जब तक पूरे तौर पर सुधार न कर लेंगे, तब तक इस सभा को विसर्जित न होने देंगे।

सभा ने सबसे पहले राजा के मंत्रियों पर आक्रमण किया और उनको दोषी ठहराया। वैंटवर्थ तथा लॉड पर अभियोग चलाए गए। वैंटवर्थ का कोई भी अपराध सिद्ध न हुआ, क्योंकि उसने जो कुछ किया था, राजा की आज्ञा से किया था, और राज्य के मामलों में राजा की आज्ञा पालन करने से उन दिनों किसी को दंड नहीं मिल सकता था। जब पार्लिमेंट ने देखा कि क़ानूनी रीति से उसको दंड देना असंभव है, तो उसने वैंटवर्थ के विरुद्ध यह प्रस्ताव पास किया कि वह देश-द्रोही है और उसे फाँसी दी जाय। राजा को भी लाचार होकर फाँसी की आज्ञा पर सही करनी पड़ी। लॉड को भी

उसने कुछ समय के लिये लंदन-टावर में क़ैद कर दिया। इसके अनंतर 'लाँग पार्लिमेंट' ने राजा के संपूर्ण ढंग को ही बदलने का यत्न किया। उसने हाई कमीशन का न्यायालय, कोर्ट ऑफ् स्टार चेंबर तथा अन्य स्वच्छंद न्यायालयों को बंद कर दिया और उन्हें ग़ैरक़ानूनी ठहराया। पिम को क़ैद से छुड़ाया। डार्नेल तथा हैंपडन आदि के विषय में न्यायाधीशों ने जो निर्णय किया था, उसको ग़ैरक़ानूनी कहकर पलट दिया। पार्लिमेंट ने त्रैवार्षिक नियम (Triennial Act) पास किया। अभी तक पार्लिमेंट का अधिवेशन राजा की इच्छा पर निर्भर था। अब इसके अनुसार तीन वर्षों के बीच में कम-से-कम एक बार उसका अधिवेशन होना आवश्यक हो गया। साथ ही यह भी नियम बनाया कि लाँग पार्लिमेंट तब तक विसर्जित (Dissolved) नहीं की जा सकती, जब तक वह स्वयं ही विसर्जित होना न मंज़ूर करे।

इन ऊपर-लिखे क़ानूनों के बनाने के बाद लोक-सभा ने चर्च की ओर अपना ध्यान दिया तथा हैंपडन की सलाह से 'रूट एंड ब्रांच बिल' (Root and Branch Bill)-नामक प्रस्ताव पेश किया गया। इसके अनुसार पादरियों की शक्ति का सर्वथा चकनाचूर हो जाना और पादरियों को साधारण लोगों

के कमीशन के अधीन रहना निश्चित होता, किंतु इस प्रस्ताव पर लोक-सभा के सभ्य दो दलों में बँट गए। अतः यह प्रस्ताव अभी पास नहीं हुआ था कि लोक-सभा के सभ्य छुट्टी पर चले गए।

पार्लिमेंट के सभ्यों के तितर-बितर होते ही चार्ल्स स्कॉटलैंड जा पहुँचा। दैवी घटना से स्कॉचों को एक षड्यंत्र का पता लगा, जो इसलिये रचा गया था कि स्कॉच् नेताओं को किसी-न-किसी तरीक़े से मार डाला जाय। स्कॉचों ने राजा को ही इस षड्यंत्र का मूल समझा। परंतु उसने स्पष्ट शब्दों में यह कह दिया कि मुझको इस षड्यंत्र का कुछ भी ज्ञान नहीं है। जो कुछ हो, इस षड्यंत्र के कारण राजा की बहुत ही अधिक बदनामी फैल गई। लोगों का उस पर से बिलकुल ही विश्वास उठ गया।

इसी समय आयर्लैंड में विद्रोह की आग भड़क उठी। वैंटवर्थ की सख़्ती से लोग बहुत ही तंग थे। उसके वहाँ से हटते ही उन्होंने अँगरेज़ी-राज्य की कठोरता से अपने को बचाना चाहा। आयरिश लोगों ने अँगरेज़ों पर ख़ूब अत्याचार किए। हज़ारों अँगरेज़ नवयुवकों को उन्होंने जान से मार डाला। इस विद्रोह में भी लोगों ने चार्ल्स का हाथ समझा। परंतु उनको इसका कोई दृढ़ प्रमाण नहीं मिला।

१६४१ ई० में पुनः पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ। राजा के विरुद्ध जो-जो किंवदंतियाँ उड़ी थीं, पार्लिमेंट ने उनसे लाभ उठाने का यत्न किया। उसने एक दस्तावेज़, जिसका नाम Grand Remonstrance था, तैयार किया और उसमें चार्ल्स के सारे अत्याचार लिखे तथा चार्ल्स को इस बात पर विवश किया कि उसके सब मंत्री लोक-सभा के विश्वास-पात्र व्यक्ति ही होने चाहिए। बहुत विवाद के अनंतर पिम तथा हैंपडन ने लोक-सभा से इसे पास करवा लिया।

ऊपर लिखा जा चुका है कि धर्म-विषयक प्रश्न पर लोक-सभा के अंदर दो दल हो गए थे। उक्त लेख के प्रश्न पर तो दोनों दल एक दूसरे से लड़ ही पड़े। यही कारण है कि यह बहुत थोड़ी ही सम्मतियों से पास हुआ।

चार्ल्स ने इस झगड़े से लाभ उठाया। उसने ३ जनवरी, १६४२ को लॉर्ड किंबोल्टन तथा पार्लिमेंट के पाँच सभ्यों पर देश-द्रोह का अपराध लगाया। इन पाँच सभ्यों में पिम तथा हैंपडन भी सम्मिलित थे। यहीं पर न रुककर वह स्वयं लोक-सभा के भवन में गया और सभा से कहा कि पाँचों सभ्यों को मेरे सिपुर्द करो, क्योंकि उन्होंने देश-द्रोह किया है। पाँचों को राजा की शैतानी पहले से ही

मालूम थी, अतः वे लंदन-नगर में छिप गए थे। पार्लिमेंट के काम में राजा का हस्तक्षेप करना पार्लिमेंट की स्वतंत्रता और अधिकार के विरुद्ध है, अतएव राजा के बाहर निकलते ही सभ्यों ने "अधिकार, अधिकार" की पुकार से सभा-भवन को गुँजा दिया और पाँचों सभ्यों को राजा के हाथ में देने से इनकार कर दिया। सभ्यों ने वेस्टमिंस्टर से हटकर लंदन-नगर में शरण ली और वहीं पर सभा का अधिवेशन करना शुरू किया। लंदन-निवासी सभा के पक्ष में थे, अतः सभ्यों को राजा के स्वेच्छाचार से कुछ भी भय न था।

राजा ने बहुत ही अधिक यत्न किया कि वह पाँचों सभ्यों को किसी तरीक़े से पकड़ ले, परंतु वह अंत तक सफल न हो सका। लंदन-निवासी बहुत ही शक्तिशाली थे। उन्होंने पाँचों सभ्यों को केवल सुरक्षित ही नहीं रक्खा, बल्कि वे उनको पार्लिमेंट की उपसमितियों में भी प्रतिदिन भेजते रहे। एक सप्ताह के बाद वे लोक-सभा में आकर बैठे। जब यह बात चार्ल्स को मालूम हुई, तो उसने यह समझ लिया कि लंदन-निवासी उसको अपना राजा नहीं मानते। इस अपमान से क्रुद्ध होकर वह हैंपडन-कोर्ट में चला गया और रत्नादि संपत्ति लेकर रानी नीदरलैंड को चल दी, जिससे वह वहाँ से अपने पति को सहायता पहुँचा सके।

(५) राजा तथा प्रजा का युद्ध

चार्ल्स प्रजा तथा पार्लिमेंट से युद्ध करने के लिये तैयार था और वे अपने-आपको बचाना चाहती थीं। यही कारण है कि १६४२ के पहले छः महीनों में कोई भी युद्ध नहीं छिड़ा। "लॉर्ड-सभा से पादरियों को अलग कर देना चाहिए"—लोक-सभा के इस प्रस्ताव को भी बड़ी ही कठिनता से चार्ल्स ने मंजूर किया। कुछ ही समय के बाद सभा का मिलीशिया बिल (Militia Bill) नामक दूसरा प्रस्ताव राजा के सामने आया। इसका मतलब यह था कि जल तथा स्थल के सेना-पतियों को आगे से पार्लिमेंट स्वयं ही चुनेगी। जब राजा ने इस प्रस्ताव को मंजूर न किया, तो सभा ने सारे देश में यह घोषणा कर दी कि अब आगे इस प्रस्ताव को सभा की आज्ञा के अनुसार राज्य-नियम ही समझा जाय। इतने ही पर सभा ने संतोष नहीं किया। उसने राजा की स्वीकृति के लिये 'नाइंटीन प्रॉपोज़िशंस' (Nineteen Propositions) अर्थात् उन्नीस प्रस्ताव भेजे, जिनके अनुसार राजा की सारी शक्ति प्रजा के हाथ में चली जाती और राजा एक कठ-पुतली के सदृश पार्लिमेंट का खिलौना बन जाता। किंतु उसने इन प्रस्तावों को मंजूर न किया और स्वयं धन तथा सेना इकट्ठी करना शुरू किया। २२ अगस्त को नाटिंघेम (Nott-

ingham)-शहर में अपना शाही झंडा खड़ा करके वह अपने पक्ष के लोगों को बड़ी शीघ्रता से एकत्र करने लगा।

राजा तथा प्रजा के इस गृह-युद्ध (Civil War) में सारी अँगरेज़-जाति दो समान भागों में विभक्त हो गई। चार्ल्स को यह देखकर बहुत ही खुशी हुई कि जनता के एक बड़े भाग ने पूरे तौर पर हमारा साथ दिया है। हाइड (Hyde) एवं फ़ॉकलैंड (Falkland) के निवासियों तथा लोक-सभा के एक तिहाई और लॉर्ड-सभा के आधे के लगभग सभ्यों ने राजा का पक्ष लिया। ये लोग 'केवेलियर' (Cavalier) अर्थात् अश्वारोही के नाम से प्रसिद्ध हुए, क्योंकि ये प्रायः अमीर थे और अश्वों पर चढ़कर लड़ते थे। पार्लिमेंट के पक्ष प्यूरिटन के बहुत छोटे-छोटे बाल रखते थे, इसलिये वे 'राउंडहेड' (Round-head) या गोल सिरवाले कहलाए। दोनों ही दलों के लोग यह कहते थे कि हम प्राचीन शासन-पद्धति के पक्ष में हैं। पादरी लोग तो खुल्लमखुल्ला पार्लिमेंट के विरुद्ध थे। एक-मात्र प्यूरिटन लोग ही पार्लिमेंट के लिये जान देने को तैयार थे। कौन-कौन लोग राज-दल में थे और कौन-कौन प्रजा-दल में, इसका वर्गीकरण करना कठिन है। पर इसमें संदेह नहीं कि ग्रामीणों तथा लॉर्डों का अधिक अंश राज्य-दल में और मध्य-श्रेणी के अँगरेज़ तथा व्यापारी और व्यवसायी पार्लि-

मेंट-दल में सम्मिलित थे । भौगोलिक विचार से यदि राज-दल तथा प्रजा-दल का वर्गीकरण किया जाय, तो यह साफ़ ही है । दक्षिण-पश्चिम के प्रांत, वेल्स तथा उत्तरीय प्रांत राजा के और लंदन तथा उसके आसपास के मंडल पार्लिमेंट के पक्ष में थे । जो कुछ हो, लोक-सभा के पास धन था, किंतु राजा के पास धन की कमी थी । वैसे ही राजा के पास शिक्षित सैनिक तथा अश्वारोही थे, परंतु लोक-सभा के पास ये बहुत कम थे ।

१६४२ का पहला युद्ध—मिडलैंड में चार्ल्स के अनुयायियों की संख्या बहुत थी । उसने लिंडसे के अर्ल (Earl of Lindsey) को मुख्य सेनापति नियत किया और प्रिंस रूपर्ट (Prince Rupert) को अश्वारोहियों का सेनापति बनाया । राजा का विचार था कि लंदन के दक्षिणी भाग पर सबसे पहले आक्रमण करूँ ; परंतु पार्लिमेंट के सेनापति एसेक्स (Essex) की चतुरता से उसको ऑक्सफ़ोर्डशायर (Oxford Shire) तथा वारिकशायर (Warwick Shire) की सीमा पर स्थित 'एजहिल' (Edgehill)-नामक स्थान पर ही लड़ाई करनी पड़ी । प्रिंस रूपर्ट ने पार्लिमेंट की अश्वारोही सेना पर पूर्ण विजय प्राप्त की ; परंतु पार्लिमेंट की पैदल सेना ने हार न खाई । उसने राजा की पैदल सेना को पूरी

तरह से नीचा दिखाया। रात होते ही एसेक्स पीछे हट गया। इससे ऑक्सफ़ोर्ड पर राजा का प्रभुत्व स्थापित हो गया। इसको अपना मुख्य स्थान बनाकर राजा रेडिंग (Reading) होते हुए लंदन (London) की ओर रवाना हुआ। ब्रैंटफ़ोर्ड में पहुँचते ही उसे लंदन-निवासियों की सेना लड़ने को तैयार मिली। किंतु उसे उस सेना से लड़ने की हिम्मत न हुई, इसी से वह ऑक्सफ़ोर्ड में फिर लौट आया।

१६४३ का दूसरा युद्ध—१६४३ के दूसरे युद्ध में पहले-पहल राजा की जीत हुई। ऑक्सफ़ोर्ड तथा लंदन के मध्य-स्थित 'शालग्रो' (Chalgrow) और फ़ील्ड में दोनों दलों का युद्ध हुआ। इस युद्ध में हैंपडन घायल हुआ और मारा गया। इसकी मृत्यु से पार्लिमेंट-दल को बहुत बड़ा धक्का पहुँचा, क्योंकि पिम पहले ही मर चुका था। ऐसे ही कष्टमय समय में राजा के सेनापति अर्ल न्यूकासिल (New Castle) ने लॉर्ड फ़ेयरफ़ैक्स (Fairfax) तथा उसके पुत्र सर टॉमस फ़ेयरफ़ैक्स को 'एडवाल्टनमूर' (Edwalton Moor) में पराजित किया। स्ट्राटन-(Stratton)-नामक स्थान पर जो युद्ध हुआ, उसमें भी राज-दल ही विजयी रहा। इस प्रकार हल (Hull)-नगर को छोड़कर सारे यार्कशायर (Yorkshire), कार्नवाल (Cornwall), डेवन

Devon), सॉमरसेट (Somerset) तथा विल्टशायर (Wiltshire) के प्रदेश राजा के हाथ में आ गए। ग्लॉ-स्टर (Gloucestor) को छोड़कर सैवर्न (Severne)-घाटी के सब नगर भी राजा के ही क़ब्ज़े में आ गए। ब्रिस्टल (Bristol) ने राज-दलवालों के लिये अपने दरवाज़े खोल दिए। पश्चिम में समथ ने लोक-दल का अभी तक साथ न छोड़ा था।

गृहयुद्ध

राज-दलवालों ने समथ, हल तथा ग्लॉस्टर की विजय में अपना सारा ज़ोर लगा दिया। ग्लॉस्टर के घेरे में राजा स्वयं ही उपस्थित था। इधर पार्लिमेंटवालों ने ग्लॉस्टर को सहायता पहुँचाने के लिये एसेक्स को ससैन्य भेजा। एसेक्स का आना सुनते ही राजा भाग गया और ग्लॉस्टर-नगर राजा की क्रोधाग्नि में पड़ने से बच गया। एसेक्स लंदन की ओर लौट रहा था, राह में उसको न्यूबरी (Newbury)-नामक स्थान पर राज-दल से लड़ना पड़ा। यह युद्ध २० सितंबर (१६४३) को हुआ। इसमें राज-दल का नेता फ़ॉकलैंड मारा गया और लंदन-निवासियों की पूरी जीत हुई। यह युद्ध इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है, क्योंकि इसी युद्ध के अनंतर राज-दल कमज़ोर पड़ गया और लोक-दल की शक्ति बढ़ गई।

न्यूबरी तथा ग्लॉस्टर के युद्ध के बाद, साल के अंत तक, कोई नया युद्ध नहीं हुआ। इँगलैंड के पूर्वी प्रदेश में प्यूरिटन लोगों का ज़ोर था। युद्ध छिड़ते ही पूर्वी प्रदेश के सारे ज़िलों का एक सम्मेलन बन गया, जो 'पूर्वी सम्मेलन' के नाम से पुकारा जाता है। पूर्वी सम्मेलन ने प्यूरिटन लोगों की एक सेना बनाई, जिसके नेता ऑलिवर क्रांबैल (Oliver Cromwell), लॉर्ड किंबोल्टन तथा प्रलंब-पार्लिमेंट (Long Parliament) के कुछ सदस्य थे। वास्तव में 'पूर्वी सम्मेलन तथा

उसकी सेना का मुख्य नेता ऑलिवर क्रांबैल ही था। उसकी सेना ने विंस्वी-युद्ध में उसी दिन लिंकनशायर को फ़तह किया, जिस दिन न्यूकासिल को हल-नगर का घेरा छोड़ने के लिये विवश होना पड़ा।

दो वर्ष के युद्धों के अनंतर पार्लिमेंट तथा राजा ने बाहर के लोगों से सहायता माँगने का यत्न किया। सौभाग्य से योरप के राष्ट्र 'तीससाला युद्ध' में फँसे हुए थे। इसी से कोई भी इँगलैंड में अपनी सेना न भेज सका। इस दशा में चार्ल्स ने आयर्लैंड से और पार्लिमेंट ने स्कॉटलैंड से सहायता माँगी। दोनों ही देशों ने कुछ ख़ास-ख़ास शर्तें मान लेने पर अपने-अपने पक्ष-वालों को सहायता पहुँचाई।

१६४४ का तीसरा युद्ध—सन् १६४४ के शुरू होते ही दोनों दलों ने फिर नए सिरे से लड़ना शुरू किया। आयर्लैंड ने जो सेना राजा के पास भेजी, वह राजा तक नहीं पहुँच सकी। पार्लिमेंट ने उसको इधर-उधर ही तितर-बितर कर दिया। स्कॉट-लैंड की सेना बहुत ही शिक्षित थी। वह किसी-न-किसी उपाय से पार्लिमेंट-दल के पास पहुँच ही गई। उस सहायता के पहुँचते ही प्यूरिटन सेनाओं ने यार्क में न्यूकासिल तथा उसकी सेना को चारों तरफ़ से घेर लिया। मंचेस्टर (Manchester) तथा क्रांवैल भी पार्लिमेंट-दल की सहायता के लिये पहुँच गए।

इधर चार्ल्स ने न्यूकासिल की सहायता के लिये प्रिंस रूपर्ट को भेजा। २ जुलाई (१६४४) को मार्स्टनमूर (Marston Moor) का प्रसिद्ध युद्ध हुआ। इसमें राज-दल पराजित हुआ और सारा उत्तरीय इँगलैंड पार्लिमेंट-दल के प्रभुत्व में आ गया।

ऐसे उत्तम समय में एसेक्स ने कार्नवाल पर आक्रमण कर दिया। इस प्रयत्न में उसकी सारी सेना नष्ट हो गई। क्रांवैल तथा मंचेस्टर को न्यूबरी के दूसरे युद्ध में एसेक्स की सुस्ती के कारण पूरी सहायता नहीं पहुँची, इससे उनको इस युद्ध में भी सफलता न प्राप्त हुई। दैव-संयोग से स्कॉटलैंड में मांट्रोज़ (Montrose) के अर्ल जेम्स ग्राहम (James Graham) ने राजा का पक्ष लिया और उत्तरीय स्कॉटलैंड से बहुत-सी सेना इकट्ठी कर ली। इसने लोक-दल के पक्षपाती कैंबल लोगों (Campbells) को बुरी तरह से हराया।

इस घटना से पार्लिमेंट-दल घबरा गया, क्योंकि उत्तरीय स्कॉटलैंड के लोग लड़ाई तथा वीरता में अपना सानी न रखते थे। परिणाम यह हुआ कि सभी लोक-दल के पक्षपाती एकत्रित हुए। उन्होंने असंगठन को ही अपनी पराजय का मुख्य कारण समझकर सर टॉमस फ़ेयरफ़ैक्स को सारी सेना का मुख्य सेनापति नियत किया और ऑलिवर क्रांवैल को उसका सहायक सेनापति तथा अश्वारोहियों का मुख्य सेनापति बनाया।

१६४५ का चौथा युद्ध—१६४५ के युद्ध में इस संगठन का महत्त्व प्रकट हुआ। नेसबी (Naseby)-नामक स्थान पर १४ जून को पार्लिमेंट-दल के साथ राज-दल का भयंकर युद्ध हुआ। इसमें क्रांवैल की सेना जीती। सितंबर (१६४५) में मांट्रोज़ का अर्ल भी पराजित हुआ और वह योरप को भाग गया। इससे चार्ल्स बिलकुल निराश हो गया। वह स्कॉटलैंड पहुँचा, परंतु वहाँ उसको कुछ भी सहायता न मिली। स्कॉच लोगों ने उसको क़ैद कर लिया। इन्हीं दिनों पार्लिमेंट के भीतर फूट पड़ गई। धार्मिक मामलों में पार्लिमेंट के सभ्य दो दलों में विभक्त हो गए। जो स्कॉच्-चर्च के पक्ष में थे, वे प्रैसबिटेरियन, और जो इसके विरुद्ध थे वे इंडिपेंडेंट के नाम से पुकारे जाने लगे। क्रांवैल तथा उसके सैनिक प्रैसबिटेरियन-मत के विरुद्ध थे। इसका परिणाम यह हुआ कि पार्लिमेंट-दल में झगड़ा तथा युद्ध आरंभ हो गया।

१६४८ का गृह-युद्ध—१६४८ में अँगरेज़-प्रैसबिटेरियन लोगों ने स्कॉचों से मित्रता की। इनकी सेना लंकेशायर तथा कंबरलैंड की ओर से आगे बढ़ी और उसने राजा को क़ैद करने का यत्न किया। परंतु क्रांवैल ने प्रेस्टन (Preston) तथा वारिंगटन (Warington)-नामक स्थानों पर स्कॉचों तथा अँगरेज़ों की सम्मिलित सेना को बुरी तरह से परास्त किया।

इससे सारा इँगलैंड प्यूरिटन लोगों के अधिकार में आ गया।

सेना के लोग धर्म के संबंध में सहिष्णुता (Toleration) चाहते थे और इसीलिये वे प्रलंब-पार्लिमेंट के असहिष्णु सदस्यों से नाराज़ थे। इसी से ६ दिसंबर, १६४८ के दिन कर्नल प्राइड् (Col. Pride) नाम का एक फ़ौजी अफ़सर पार्लिमेंट-भवन में पहुँचा और उसने लोक-सभा के सारे प्रैसबिटेरियन सभ्यों को बाहर निकाल दिया। यह घटना इतिहास में Pride's Purge (प्राइड का रेचक) के नाम से प्रसिद्ध है। क्रांवैल तथा उसके सैनिकों ने चार्ल्स पर मुक़द्दमा चलाया। लोक-सभा के ५३ सभ्यों ने मिलकर १३५ सभ्यों की एक न्याय-समिति बनाई और ब्रैडशॉ (Bradshaw) को उसका प्रधान चुना। इस न्याय-समिति का एक सभ्य क्रांवैल भी था। विचार के समय १३५ में से केवल ६३ ही सभ्य आए। इन सभ्यों के सामने २० जनवरी (१६४६) को चार्ल्स पर मुक़द्दमा चलाया गया। उस पर अत्याचारी, देश-द्रोही तथा घातक होने के अपराध लगाए गए। चार्ल्स ने उत्तर देने में अपना अपमान समझा और वह चुपचाप शांत भाव से खड़ा रहा।

न्यायालय ने उसको फाँसी का दंड दिया। अपनी स्त्री और बाल-बच्चों से प्रेम-पूर्वक मिल लेने के बाद, ३०वीं

जनवरी को, राजा चार्ल्स ह्वाइटहॉल-पैलेस (The White-hall palace)-नामक महल में मार डाला गया। मृत्यु के समय लोगों के सामने उसके सारे गुण प्रकट हुए। उसके धैर्य, उसकी शांति और पवित्रता को देखकर लोगों ने रोना शुरू कर दिया। चर्च तथा शासन-पद्धति के लिये जो-जो आदमी शहीद हुए हैं, उनमें उसका नाम भी लिखा गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६२५	चार्ल्स प्रथम का राज्याधिरोहण
१६२८	अधिकार-पत्र (The Petition of Right)
१६२९	चार्ल्स का तृतीय पार्लिमेंट को विसर्जित करना
१६३३	लॉड को कैंटर्बरी का आर्चबिशप बनाना
१६३८	हैंपडन का अभियोग
१६४०	प्रलंब-पार्लिमेंट का अधिवेशन
१६४१	स्ट्रैफ़ोर्ड को फाँसी
१६४२	एजहिल का युद्ध
१६४३	न्यूबरी का युद्ध
१६४४	मार्स्टनमूर का युद्ध
१६४५	नेस्बी का युद्ध
१६४८	द्वितीय गृह-युद्ध (Civil War)
१६४६	चार्ल्स प्रथम को फाँसी

तृतीय परिच्छेद

इँगलैंड में प्रजा-तंत्र तथा संरक्षित राज्य (Commonwealth and the Protectorate)

(१६४९-१६६०)

चार्ल्स की फाँसी के बाद हाउस ऑफ् कामंस ने लॉर्ड-सभा तथा राजा, दोनों को ही जनता की स्वतंत्रता का नाशक ठहराकर अकेले आप ही राज-काज चलाने का इरादा किया। किंतु प्रबंध का कार्य बहुत ही अधिक अनुभव के बिना सुगमता से नहीं हो सकता, यह विचार कर हाउस ऑफ् कामंस ने उक्त कार्य ४१ सभ्यों की एक स्थायी राष्ट्र-सभा (Council of State) को सौंप दिया। उक्त राष्ट्र-सभा को प्राचीन प्रिवी-कौंसिल (Privy Council) का स्थानापन्न कहा जा सकता है। क्रांवैल के चित्त में शुरू से ही वेनिश तथा हॉलैंड के सदृश ही इँगलैंड में भी कुलीन-तंत्र राज्य (Oligarchy) स्थापित करने की इच्छा थी। इसके साथ ही वह प्यूरिटनों के लिये धार्मिक सहिष्णुता (Religious toleration) तथा देश में शांति स्थापना का इच्छुक था। चार वर्ष तक इँगलैंड में एक-मात्र प्रतिनिधि-

सभा ही शासन का काम करती रही। इन वर्षों में शत्रुओं ने इँगलैंड को किस प्रकार घेरे रक्खा और इँगलैंड ने भी संपूर्ण शत्रुओं को किस प्रकार परास्त किया, इसका इतिहास अति रोचक है। अतएव अब उसी पर कुछ प्रकाश डालने का यत्न किया जायगा

(१) युद्ध

चार्ल्स के वध से सारे योरप में आतंक छा गया था। रूस, फ़्रांस तथा डच-प्रतिनिधि-राज्य (Republic) ने इँगलैंड के प्रतिनिधि-तंत्र राज्य (Common wealth) को अनुचित ठहराया और उसके राजदूत अपने यहाँ रखने से इनकार कर दिया। स्कॉटलैंडवालों ने भी अँगरेज़ प्रतिनिधि-तंत्र राज्य का साथ नहीं दिया और चार्ल्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स द्वितीय को अपना राजा मान लिया। आयर्लैंड के राज-पक्षपाती दल ने स्कॉचों का साथ दिया और डच-प्रनिनिधि-तंत्र राज्य ने चार्ल्स द्वितीय को, अपने पिता के वध का अँगरेज़ों से बदला लेने के लिये, सेना आदि के द्वारा सहायता पहुँचाई।

इन ऊपर-लिखी बाह्य विपत्तियों के सदृश ही अँगरेज़-प्रतिनिधि-तंत्र राज्य आंतरिक बिपत्तियों से त्रस्त था। चार्ल्स के वध के अनंतर राज-पक्षपाती दल की सहानुभूति प्रतिनिधि-तंत्र राज्य से नहीं रही। अँगरेज़-जनता का पूर्व राजा के

प्रति जो भाव हो गया था, उसका अनुमान तत्कालीन 'राजकीय मूर्ति' (Kingly Image)-नामक पुस्तक से किया जा सकता है। यह किंवदंती थी कि मारे जाने के पहले चार्ल्स की बनाई हुई कविताएँ इस पुस्तक में मौजूद हैं। लेवलर्स (Levellers)-नामक आदर्शवादियों के एक संप्रदाय ने प्रतिनिधि-तंत्र राज्य के विरुद्ध सेना तथा जनता को भयंकर रूप से भड़काया। इन सब विपत्तियों के बादल चारों तरफ़ से घिरते हुए देखकर क्रांवैल ने राष्ट्र-सभा में पष्ट रूप से यह कह दिया—"इनके शीघ्रही टुकड़े-टुकड़े कर दो। यदि तुम इनके टुकड़े-टुकड़े न कर दोगे, तो ये तुम्हारे ही टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।" क्रांवैल ने लेवलर्स को शीघ्र ही दबाया और सेना में बढ़ रहे विद्रोह को भी शीघ्र ही शांत कर दिया।

(क) आयर्लैंड की विजय

१६४६ से १६५० तक

आयर्लैंड का बहुत-सा भाग कैथलिकों के हाथ में था। वे लोग राज-दलवालों के साथ मिल गए। १६४९ में क्रांवैल ने सेना लेकर आयर्लैंड पर चढ़ाई की। पहले-पहल उसने ड्रागेडा (Drogheda) तथा वैक्सफ़ोर्ड (Wexford)-नामक नगरों को फ़तह किया। संपूर्ण आयर्लैंड पर अपना प्रभाव स्थापित करने के लिये उसने ३,००० सिपाहियों को मरवा

क्रांवेल और महाकवि मिल्टन

डाला। १,००० आयरिश सिपाहियों ने एक गिरजे में शरण ली; परंतु इसने उन पर भी कोई दया न की और उनको भी मरवा डाला। अन्य नगरों की विजय में भी उसने ऐसे ही क्रूर कर्म किए। १६५० में आयर्लैंड की विजय को समाप्त करके और अपने एक लेफ़्टिनेंट को वहाँ का प्रबंध देकर क्रांवैल इँगलैंड चला गया।

क्रांवैल के द्वारा आयर्लैंड की विजय आयरिश लोगों के लिये बहुत ही हानिकर सिद्ध हुई। राज-दलवालों ने उनकी

उत्तम-उत्तम ज़मीनें छीन लीं और अँगरेज़ों तथा स्कॉचों को बाँट दीं। कैथलिक-धर्म का प्रचार रोकने का यत्न किया गया। आयरिश ज़मींदारों की जायदादें नीलाम की गईं। इन अत्याचारों का परिणाम यह हुआ कि आयरिश लोगों को अँगरेज़ों के प्रति हार्दिक घृणा हो गई।

(ख) स्कॉटलैंड से युद्ध

१६५० से १६५१ तक

स्कॉटलैंड में प्रैसबिटेरियन लोग राजा के पक्षपाती थे। उन्होंने चार्ल्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स द्वितीय को अपना राजा मान लिया था। चार्ल्स द्वितीय भी प्रैसबिटेरियन लोगों की शर्तें मानकर जनवरी, १६५१ में राज-सिंहासन पर बैठा। अँगरेज़ों की राष्ट्र-सभा ने स्कॉचों को शीघ्र ही दबाना चाहा, क्योंकि ऐसा किए विना स्कॉच्-आक्रमण से उनको स्वयं दबना पड़ता। १६५० की गर्मियों में क्रांवैल ने स्कॉटलैंड पर चढ़ाई कर दी। ३ सितंबर को उसने डनबर (Dunbar)-नामक स्थान में स्कॉच्-सेना पर एक अपूर्व विजय प्राप्त की। इस घटना से भयभीत होकर स्कॉचों ने भी इँगलैंड पर चढ़ाई करने का इरादा किया। उनका ख़याल था कि राज-दलवाले अँगरेज़ उनका साथ देंगे, इँगलैंड में आंतरिक विप्लव हो जायगा और क्रांवैल को स्कॉटलैंड छोड़कर इँगलैंड

लौटना पड़ेगा। किंतु चढ़ाई करने पर से स्कॉचों को मालूम पड़ा कि उनका ख़याल ग़लत है, क्योंकि अँगरेज़ों ने उनका साथ नहीं दिया। इसका कारण यह था कि वे पहले ही युद्ध से तंग आ चुके थे। क्रॉवैल ने स्कॉच्-सेना का पीछा न छोड़ा, और ३ सितंबर, १६५१ को 'उरस्टर' (Worcestor)-नामक स्थान पर उसको पराजित किया। इस विजय से स्कॉटलैंड में भी इँगलैंड के सदृश ही प्रतिनिधि-सभा के राज्य की स्थापना हो गई। चार्ल्स द्वितीय बहुत कठिनाइयाँ झेलकर योरप को भाग गया।

(ग) डचों के साथ युद्ध

१६५२ से १६५४ तक

ब्रिटिश-द्वीपों की विजय के अनंतर प्रतिनिधि-तंत्र राज्य ने अपना ध्यान विदेशी शत्रुओं की ओर फेरा। परस्पर व्यापारिक स्पर्द्धा के कारण डच तथा अँगरेज़ों में द्वेष था। १६५१ में प्रतिनिधि-तंत्र राज्य ने नाविक क़ानून (Navigation Act) पास किया। इस क़ानून का मतलब यह था कि इँगलैंड में आनेवाला सामान या तो इँगलैंड के जहाज़ों द्वारा आवे, या उस देश के जहाज़ों द्वारा आवे, जिस देश में वह सामान बना या पैदा हुआ है। इस नियम के विरुद्ध आनेवाला सामान ज़ब्त कर लिया जायगा। चूँकि सामान ढोने का काम डच लोगों के ही हाथ में था, इससे उन्हें बड़ी हानि हुई। इस क़ानून का

अंतिम परिणाम यह हुआ कि डचों तथा अँगरेज़ों में एक भयंकर सामुद्रिक युद्ध हुआ। आरंभ में डच ही विजयी रहे। इसका कारण यह था कि उन दिनों योरप में डच ही नौ-शक्ति में प्रधान थे। ईश्वर के अनुग्रह से इस कठिन समय में अँगरेज़ों को राबर्ट ब्लेक (Robert Blake) नाम के पुरुष ने बचा लिया। राबर्ट ब्लेक ने प्रथम युद्ध में डचों से पराजित होकर १६५३ में, पोर्टलैंड पर एक अपूर्व विजय प्राप्त की। इस विजय से डच तथा अँगरेज़ नौ-शक्ति में एक दूसरे के बराबर हो गए इससे प्रतिनिधि-तंत्र राज्य शत्रुओं से निश्चिंत हो गया। उसने इँगलैंड के आंतरिक प्रबंध पर फिर ध्यान दिया।

(२) इँगलैंड में राजनीतिक परिवर्तन

चार्ल्स की मृत्यु होने पर प्रतिनिधि-सभा में ८० सभ्य थे नियमानुसार सभा का विसर्जन करके नए सभ्यों का निर्वाचन होना चाहिए था। परंतु ऐसा नहीं किया गया। अतः इसको प्रतिनिधि-सभा कहना कुछ कठिन ही प्रतीत होता है। यही नहीं, इसके सभ्य न्याय-परायण तथा सत्य-प्रिय भी न थे। प्राय संपूर्ण शासन में गड़बड़ थी। सभ्यों के मित्र भिन्न-भिन्न राज्य पदों पर विराजमान थे। राज-पक्षपातियों तथा धर्म पर अंध विश्वास रखनेवालों पर अकारण ही अत्याचार किए जाते थे

क्रांवैल इस अवस्था को न देख सका। वह प्रतिनिधि-सभ

का नया निर्वाचन करवाना चाहता था। परंतु उससे प्रतिनिधि-सभा सहमत न थी। लाचार होकर क्रांवैल ने ये शब्द कहकर कि "मैं तुम्हारे बकवाद को बंद करूँगा; यहाँ से निकल जाओ; उत्तम सभ्यों को अपना स्थान दो; तुम जनता के प्रतिनिधि नहीं हो; ईश्वर को तुम्हारा अंत अभीष्ट है।" प्रतिनिधि-सभा को जबर्दस्ती बरखास्त कर दिया। प्रजा प्रतिनिधि-सभा से पहले से ही क्रुद्ध थी, अतः किसी ने भी क्रांवैल के विरुद्ध शस्त्र नहीं उठाए।

दिसंबर, १६५३ में राज्याधिकारियों की सभा ने इँगलैंड के भावी शासन के लिये 'राज्य का साधन' (The Instrument of Government) नाम की एक योजना तैयार की, जिसकी मुख्य-मुख्य बातें निम्न-लिखित थीं—

१—इँगलैंड, स्कॉटलैंड तथा आयर्लैंड एक ही राष्ट्र के भिन्न-भिन्न भाग हैं, अतः इन तीनों की एक ही प्रतिनिधि-सभा तथा एक ही शासक-सभा होनी चाहिए।

२—इस प्रतिनिधि-तंत्र राज्य का शासन एक ही सभा के द्वारा होगा, अर्थात् इसमें 'सभा-उपविधि' के सिद्धांत पर काम न किया जायगा।

३—तीनों देशों के प्रतिनिधियों की कुल संख्या ४०० होगी। सभ्यों का निर्वाचन धन तथा पद के अनुसार होगा। २०० पौंड से कम संपत्तिवाले व्यक्ति को 'प्रतिनिधि' चुनने का अधिकार न होगा।

४—प्रतिनिधि-सभा के ही हाथ में राष्ट्र की नियामक शक्ति (Legislative power) रहेगी।

५—प्रतिनिधि-सभा किसी एक व्यक्ति को राष्ट्र का संरक्षक (Lord protector) नियुक्त करेगी, जो राष्ट्र-सभा (Council of State) की सहायता से संपूर्ण राष्ट्र का शासन करेगा।

क्रांवैल ब्रिटिश-राष्ट्र का संरक्षक नियुक्त किया गया। उसने बहुत बुद्धिमत्ता से शासन का काम प्रारंभ किया। नवीन प्रतिनिधि-सभा ने अपनी पहली बैठक में ही सबसे पहले निर्वाचन की नवीन विधियों की आलोचना शुरू की। इस पर क्रांवैल ने प्रतिनिधि-सभा से कहा कि तुमको राज्य-साधन (Instrument of Government) के मुख्य सिद्धांत स्वीकृत करने ही पड़ेंगे। जो व्यक्ति इन सिद्धांतों को स्वीकृत न कर सके, उसको इस सभा से निकल जाना चाहिए। इस पर भी प्रतिनिधि-सभा ने जब अकारण ही क्रांवैल को तंग करना शुरू किया, तो उसने प्रतिनिधि-सभा को सदा के लिये बरख़ास्त कर दिया और एक-मात्र आप ही इँगलैंड का शासन करने लगा।

प्रतिनिधि-सभा को बरख़ास्त करके क्रांवैल ने स्वेच्छा-पूर्ण शासन शुरू किया। देश पर उसने नए-नए कर लगाए। उसने उन लोगों को पदच्युत कर दिया, जो उसकी शासन-प्रणाली की समालोचना करते थे। उसने इँगलैंड को दस ज़िलों में

बाँटकर उन पर अपने ही सैनिकों को, मेजर-जनरल (Major-General) का पद देकर, शासक के तौर पर नियुक्त किया। धर्म के मामले में क्रांवैल ने सहिष्णुता का प्रचार किया। चर्च के भिन्न-भिन्न मतवादियों को उसने स्वतंत्रता-पूर्वक राज्य के ओहदे दिए। एडवर्ड प्रथम के बाद यह पहला ही अवसर था कि उसने यहूदियों को इँगलैंड में बसने की आज्ञा दी। धार्मिक नीति के सदृश ही विदेशी नीति में भी क्रांवैल ने अपूर्व चातुरी प्रकट की। सारे योरप में उसने अपने को प्रोटेस्टेंट-मतवादियों का संरक्षक घोषित किया। इसी उद्देश से उसने, १६५४ में, डचों से संधि कर ली और प्रोटेस्टेंट-राष्ट्रों का एक संघ बनाने का यत्न किया। स्पेन तथा फ्रांस की शत्रुता थी। क्रांवैल ने फ्रांस से मित्रता करके स्पेन के सोने तथा चाँदी से भरे जहाज़ों को लूटने का इरादा किया। १६५५ में अँगरेज़ों ने स्पेनियों से जमैका-द्वीप छीन लिया। फ़्लांडर्स (Flanders) की लड़ाई में अँगरेज़ों को डंकर्क (Dunkirk) का प्रसिद्ध बंदरगाह मिल गया। इस प्रकार क्रांवैल की विदेशी नीति से योरप में इँगलैंड का दबदबा छा गया।

प्रथम प्रयत्न में एक बार असफल होकर भी क्रांवैल ने, १६५६ में, फिर एक द्वितीय प्रतिनिधि-सभा बुलाई, क्योंकि

वह प्रजा-प्रतिनिधियों की सलाह से राज-कार्य करना चाहता था। इसने १६५७ में शासन की एक नई योजना तैयार की, जिसका नाम "विनीत सलाह तथा प्रार्थना" (Humble Petition and Advice) रक्खा गया। इसने शासन में ये परिवर्तन किए—

१—क्रांवैल को इँगलैंड का संरक्षक नियुक्त किया और उसको अपना उत्तराधिकारी चुनने का अधिकार दिया।

२—प्रतिनिधि-सभा के साथ लॉर्ड-सभा को फिर से स्थापित किया।

इस नवीन परिवर्तन को चिरकाल तक देखने का अवसर क्रांवैल को न मिला। कार्य अधिक होने से उसका स्वास्थ्य ख़राब हो चुका था। ३ सिंतबर (१६५८) को उसका देहांत हो गया। यह वही दिन था, जिस दिन उसने डनबर तथा उरस्टर पर अपूर्व विजय प्राप्त की थी।

(३) क्रांवैल के पुत्र रिचर्ड का इँगलैंड पर शासन

क्रांवैल की मृत्यु होने पर उसका पुत्र रिचर्ड इँगलैंड का संरक्षक बना। प्रतिनिधि-सभा ने रिचर्ड का साथ नहीं दिया। सैनिकों के साथ झगड़ा हो जाने पर रिचर्ड ने २५ मई, १६५९ को इँगलैंड के संरक्षक-पद से इस्तीफ़ा दे दिया।

रिचर्ड के राज्य त्याग कर चले जाने पर इँगलैंड में बहुत

ही अधिक विक्षोभ हुआ। सैनिकों ने शासन-कार्य को कई प्रकार से सुधारने का प्रयत्न किया, परंतु जब सफलता न प्राप्त हुई, तो प्रतिनिधि-सभा बुलाई गई। प्रतिनिधि-सभा ने यह नियम पास किया कि "आगे से राजा, लॉर्ड लोगों तथा प्रतिनिधि-सभा के द्वारा इँगलैंड का राज्य-कार्य चलाया जायगा।" २६ मई को चार्ल्स द्वितीय इँगलैंड का राजा नियत किया गया और संपूर्ण शासन फिर पूर्ववत् चलने लगा।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६४६	प्रजा-तंत्र राज्य की स्थापना, क्रांवैल का आयर्लैंड को जीतना
१६५०	डनबर का युद्ध
१६५१	नेवीगेशन ऐक्ट
१६५२	डचों के साथ युद्ध
१६५३	राज्य का साधन
१६५५	जमैका का युद्ध
१६५७	विनीत सलाह तथा प्रार्थना
१६५८	क्रांवैल की मृत्यु
१६५६	रिचर्ड क्रांवैल का पद-त्याग

चतुर्थ परिच्छेद

चार्ल्स द्वितीय (१६६०-१६८५)

(१) चार्ल्स द्वितीय का राज्याधिरोहण (Restoration)

चार्ल्स द्वितीय का पुनरुद्धार करने के अनंतर इँगलैंड को बहुत-से झगड़े तय करने पड़े। प्रैसबिटेरियन-मत के लोगों ने राजा को बाहर से बुलाया था। राजा के इँगलैंड में पहुँचते ही राज-दल के लोग भी आ गए। सब लोगों ने मिलकर इँगलैंड में बहुत ख़ुशी मनाई।

चार्ल्स द्वितीय को जिस लोक-सभा ने बुलाया था, वह कन्वैंशन (Convention)-पार्लिमेंट के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है। इँगलैंड को विपत्ति में पड़ा हुआ देखकर जॉर्ज मांक (Monk) नाम के सेनापति ने लोक-सभा के सभ्यों को नए सिरे से एकत्र होने के लिये आज्ञा दी। कर्नल प्राइड ने जिन-जिन सभ्यों को लोकसभा-भवन से निकाल दिया था, वे भी बुलाए गए। कन्वैंशन ने बैठते ही यह प्रस्ताव पास किया कि इस समय प्रलंब-पार्लिमेंट को विसर्जित समझा जाय। इस प्रस्ताव के बाद कन्वैंशन ने चार्ल्स से ब्रेडा की घोषणा (Proclamation of Breda)प्रकाशित करवाई, जिसके अनुसार प्रत्येक

धर्म तथा विश्वास के व्यक्ति को क्षमा दी गई। कुछ ही सप्ताहों के बाद कन्वैंशन का फिर अधिवेशन हुआ। इसमें यह पास किया गया कि आगे से राजा, प्रजा तथा लॉर्डों के द्वारा इँगलैंड का शासन हुआ करेगा। साथ ही इसने 'ऐक्ट ऑफ़् इंडेमनिटी' (Act of Indemnity) नाम का क़ानून भी पास किया, जिसके अनुसार उन सब अँगरेज़ों के अपराध क्षमा किए गए, जो चार्ल्स प्रथम से लड़े थे। फिर भी, इनमें से १३ मनुष्यों को फाँसी पर चढ़ाया ही गया। ऑलिवर क्रांवैल, ब्रैड्शॉ (Bradshaw) तथा आइरटन (Ireton) आदि के शव क़बरों से निकालकर फाँसी पर लटकाए गए।

मांक की सेना को तनख़्वाह दी गई और केवल ५,००० सैनिक ही स्थायी रूप से रक्खे गए। इँगलैंड की स्थायी सेना (Standing Army) का आरंभ इसी सेना से समझा जाता है। त्रैवार्षिक नियम हलका कर दिया गया और बिशपों को फिर वे ही पुराने अधिकार दिए गए। प्रलंब-पार्लिमेंट की कुछ कारवाइयों को छोड़कर शेष सब कारवाइयाँ नाजायज़ ठहराई गईं। संरक्षित राज्य के जो नियम उचित तथा अच्छे मालूम पड़े, वे नए सिरे से पास किए गए। इन नियमों में नाविक नियम ही मुख्य था, क्योंकि इससे अँगरेज़ों की नौ-शक्ति बढ़ती थी। यही कारण है कि इसको कन्वैंशन

ने भी फिर से मंज़ूर किया। सभा ने चार्ल्स को जीवन-भर के लिये १२ लाख पौंड वार्षिक धन देना मंज़ूर कर लिया और उसको कुछ और भी अधिक धन दिया।

(२) इँगलैंड मे धार्मिक सुधार

कन्वैंशन के कार्यों के विरुद्ध लोगों में आवाज़ उठने लगी। राज-दलवालों ने सभा के कार्यों से अपना मत-भेद प्रकट किया। उनको यह पसंद न था कि एक प्यूरिटन-सभा लोगों के भाग्य का निर्णय करे। इसका परिणाम यह हुआ कि राजा ने दिसंबर में कन्वैंशन का विसर्जन कर दिया। १६६१ में नई पार्लिमेंट चुनी गई। इसने सबसे पहला काम यह किया कि चर्च का नए सिरे से सुधार कर डाला। प्रार्थना-पुस्तक तथा विषयों को नियम के अनुकूल ठहराया। जो-जो बिशप अपने-अपने पदों से हटा दिए गए थे, उनको उन-उन पदों पर पहुँचा दिया गया। बिशपों के जो स्थान ख़ाली थे, उनमें नए बिशप नियुक्त किए गए। इस काम में पार्लिमेंट को कठिनता यह पड़ी कि छोटे-छोटे मंडलों के पादरी प्रायः प्यूरिटन लोग थे, जो प्रार्थना-पुस्तक को घृणा की दृष्टि से देखते और उसे पोपों की पुस्तक समझते थे।

इस ऊपर लिखी विकट समस्या को हल करने के लिये १६६१ में स्ट्रैंड् के सेवाय (Savoy)-पैलेस के अंदर एक धर्म-

महासभा की गई। इसमें बिशप तथा प्रैसबिटेरियन-धर्म के नेता ही मुख्य रूप से बुलाए गए थे। सभा में बिशपों तथा प्रैसबिटेरियन लोगों का भयंकर झगड़ा हो गया और किसी भी तरीक़े से उनमें समझौता न कराया जा सका। इस सभा का जो मुख्य परिणाम कहा जा सकता है, वह यही था कि प्रार्थना-पुस्तक में कुछ ऐसे परिवर्तन कर दिए गए, जो प्यूरिटन लोगों को बिलकुल ही पसंद न थे।

पार्लिमेंट ने बहुत-से राज-नियम पास किए, जिनसे चर्च का पुनरुद्धार हुआ। उसने १६६१ में 'कार्पोरेशन ऐक्ट' (Corporation Act) पास किया, जिसके अनुसार म्युनिसिपिल कार्पोरेशन के सभ्यों के लिये प्रचलित चर्च के रस्म-रिवाज मान लेना आवश्यक ठहराया गया। १६६२ में ऐक्ट ऑफ़् युनिफ़ार्मिटी (Act of Uniformity) पास किया गया, जिसके अनुसार संशोधित प्रार्थना-पुस्तक का प्रयोग करने के लिये सब लोग बाध्य किए गए। जब ये राज-नियम काम में लाए गए, तो लगभग एक हज़ार पादरियों ने अपने-अपने पदों से इस्तीफ़ा दे दिया। ये लोग इतिहास में डिसेंटर्स के नाम से प्रसिद्ध हैं। १६६४ में 'कन्वैंटिकल ऐक्ट' (Conventicle Act) पास किया गया। इसके अनुसार धार्मिक मामलों के लिये कोई भी सभा नहीं की जा सकती

थी और पाँच डिसेंटर एक जगह इकट्ठे नहीं हो सकते थे। १६६५ में 'फ़ाइव् माइल्स ऐक्ट' (Five Miles Act) पास किया गया, जिसके अनुसार स्कूलों में पढ़ाने के लिये डिसेंटरों का जाना बंद कर दिया गया और उन शहरों में उनका घुसना रोक दिया गया, जिनमें वे पहले रहा करते थे। इन नियमों का परिणाम यह हुआ कि डिसेंटर लोगों से इँगलैंड के क़ैदख़ाने भर गए। जॉन बनियन (John Bunyan)-जैसे व्यक्ति वैड्फ़ोर्ड की जेल में १२ वर्ष तक क़ैद रहे। यह 'पिल्ग्रिम्स प्रोग्रैस' (Pilgrim's Progress)-नामक पुस्तक का प्रसिद्ध लेखक था। यह पुस्तक इसने क़ैदख़ाने में ही लिखी थी।

स्पष्ट है कि इस प्रकार इँगलैंड में लॉड तथा चार्ल्स प्रथम का ज़माना फिर आ गया। सबसे बड़ी बात तो यह है कि ये सारे धार्मिक संशोधन पार्लिमेंट ने स्वयं ही किए। लॉड के धार्मिक विचारों के फैलने से लोगों में राजा का महत्त्व बढ़ गया। नए-नए चर्चों ने चार्ल्स प्रथम को शहीद-बादशाह माना और उसकी तसवीर अन्य साधु-संतों के चित्रों के बीच में रक्खी जाने लगी। पादरियों ने राजा के दैवी अधिकार (Divine right) का प्रचार करना शुरू किया।

इँगलैंड के सदृश ही स्कॉटलैंड तथा आयर्लैंड के धर्म में भी परिवर्तन किया गया। रैसिसरी ऐक्ट के द्वारा वे सब

राजनियम अनुचित ठहराए गए, जो सन् १६३३ के बाद बने थे। प्रैसबिटेरियन-धर्म का नेता आर्गाईल चार्ल्स प्रथम की हत्या के अपराध में फाँसी पर चढ़ा दिया गया। इससे स्कॉटलैंड में विक्षोभ उत्पन्न हो गया और छोटे-छोटे विद्रोहों का होना शुरू हो गया। आयर्लैंड को स्वतंत्रता देने का किसी के जी में खयाल भी न था। इस देश को प्यूरिटन लोगों के उपनिवेश ने इँगलैंड के अधीन रक्खा था। अतएव वहाँ धार्मिक सुधार करना बहुत भयंकर था, क्योंकि इससे आयर्लैंड सदा के लिये इँगलैंड के हाथ से निकल जाता। इस उद्देश्य से, १६६१ में, ऐक्ट ऑफ सेटिलमेंट (Act of Settlement) पास किया गया, जिसके अनुसार प्यूरिटन लोगों से उनकी ज़मीनें न छीनी गईं और उन संपूर्ण आयरिशों और अँगरेज़ों को सांत्वना दी गई, जिनकी ज़मीनें चार्ल्स प्रथम का साथ देने के कारण छीन ली गई थीं। ऐक्ट ऑफ ऐक्सप्लैनेशन (Act of Explanation) के द्वारा संपूर्ण राज-पक्षपातियों को ज़मीनें बाँट दी गईं।

(३) इँगलैंड की राजनीतिक दशा

चार्ल्स द्वितीय ने इँगलैंड की वैदेशिक नीति वही, रक्खी, जो क्रांवैल के समय में थी। उसमें उसने किसी प्रकार का विशेष परिवर्तन नहीं किया। उसने लुईस चौदहवें के साथ

मित्रता क़ायम रक्खी। इस मित्रता में जो कुछ दोष था, वह यह कि इससे योरप में शक्ति-सामंजस्य (Balance of Power) नष्ट होता था, क्योंकि लुईस चौदहवें की शक्ति पहले ही अधिक थी। और भेद यह था कि क्रांवैल उससे प्रोटेस्टेंट लोगों को सुविधाएँ दिलाने के लिये उसे दबाया करता था, किंतु चार्ल्स लुईस के दबाव में स्वयं आ जाता और अपने ही देश में कैथलिक लोगों को सुविधाएँ कर देता था।

फ़्रांसीसियों के साथ अँगरेज़ों की संधि होने से दो फल हुए—

१—चार्ल्स ने १६६२ में डंकर्क को फ़्रांसीसियों के हाथ बेच दिया। इससे अँगरेज़ बहुत ही असंतुष्ट हो गए। लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया कि चार्ल्स लुईस को खुश करना चाहता है।

२—इसी वर्ष चार्ल्स ने पुर्तगाल के राजा की बहन—ब्रागंज़ा (Braganza) की राजपुत्री—कैथराइन (Catherine) से विवाह कर लिया। यह प्रदेश १६४० में स्पेन से जुदा हो गया था और फ़्रांसीसियों के सहारे ही अपनी स्वतंत्रता की रक्षा कर रहा था। इससे स्पेन बहुत ही क्रुद्ध हो गया, क्योंकि उसको यह विश्वास हो गया कि पुर्तगाल अब उसके हाथ

में कभी भी न आवेगा। जो कुछ हो, इँगलैंड को इस विवाह से अप्रत्यक्ष लाभ बहुत ही अधिक हुआ, क्योंकि पुर्तगाल ने विवाह में चार्ल्स को जहाँ बहुत-सा धन दिया, वहाँ जिबराल्टर के पास टंजियर तथा भारत में बंबई भी अँगरेज़ों को दे दिए। चार्ल्स ने बंबई-नगर को, जो उस समय एक गाँव था, ईस्ट इंडिया-कंपनी को किराए पर दे दिया, जिसके सहारे कंपनी ने मरहठा-साम्राज्य में प्रवेश किया और शनैः-शनैः उस पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया।

चार्ल्स इँगलैंड के व्यापार को बढ़ाना चाहता था। इसने सबसे पहला जो युद्ध किया, उसका मुख्य उद्देश्य व्यापार का बढ़ाना ही था। इन दिनों अँगरेज़ों तथा डचों का व्यापारिक संबंध दिन-पर-दिन बिगड़ रहा था। नाविक नियमों (नेविगेशन एक्ट) को फिर से प्रचलित करने के कारण हॉलैंड के लोग क्रुद्ध थे। अफ्रिका तथा उत्तर-अमेरिका में अँगरेज़ों तथा डचों का वैसे भी सदा ही झगड़ा होता रहता था। अंत को. १६६५ में, अँगरेज़-व्यापारियों की शिकायतों के कारण इँगलैंड ने हालैंड से युद्ध ठान दिया।

डचों के नौ-सेनापति रीटर (Ruyter) और अँगरेज़ों के नौ-सेनापति प्रिंस रूपर्ट तथा मांक और चार्ल्स के छोटे भाई जेम्स ड्यक ऑफ़ यार्क थे। दो बर्ष तक लगातार युद्ध

होने के बाद अँगरेज़ों ने अपने जहाज़ अपने ही बंदरगाह में खड़े कर दिए। इससे सारे समुद्र पर डचों का ही प्रभुत्व हो गया। डचों ने लंदन का संबंध सब ओर से तोड़ दिया। इँगलैंड में बहुत ही अधिक घबराहट फैल गई। ठीक इसी समय लुईस चौदहवें ने डचों को सहायता देना शुरू किया। इस पर अँगरेज़ों ने डचों से ब्रेडा (Breda)-नामक स्थान पर संधि कर ली। संधि के अनुसार 'न्यू अमूस्टर्डम' नाम के डच-उपनिवेश पर अँगरेज़ों का प्रभुत्व स्थापित हो गया। आजकल यही शहर न्यूयार्क के नाम से प्रसिद्ध है। इसके मिलने से अँगरेज़ों को बहुत ही अधिक लाभ पहुँचा।

इन्हीं दिनों अँगरेज़ों के बहुत-से उपनिवेश (Colonies) अमेरिका में स्थापित हुए। इन उपनिवेशों के कारण अँगरेज़ों का व्यापार-व्यवसाय पहले की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गया। उपनिवेशों में खेती का काम प्रायः आफ़्रिकन नीग्रो-दासों के द्वारा करवाया जाता था। उत्तरीय अमेरिका में फ़्रांसीसियों के उपनिवेश भी स्थापित होने लगे। १६६३ में लूसियाना का उपनिवेश इन्हीं लोगों ने बसाया था। पैंसिल्वेनिया, न्यू-ज़र्सी आदि उपनिशों को अँगरेज़ों ने बसाया। इस प्रकार अमेरिका के बहुत-से भाग में योरपियन जातियों के उपनिवेश स्थापित हो गए।

इन्हीं दिनों लंदन-नगर पर दो बड़ी भारी विपत्तियाँ आईं। १६६५ में लंदन के भीतर पहलेपहल प्लेग ने प्रवेश किया, जिससे बहुत-से लोग मरे। १६६६ में, शहर में, आग लग गई। इससे भी लंदन-नगर को बहुत अधिक हानि पहुँची। इन दुर्घटनाओं से क्रुद्ध होकर लोगों ने क्लेरंडन (Clarendon) से बदला लिया। यह राजा का कोषाध्यक्ष (Chancellor of the Exchequer) था। जब इस पर लॉर्ड-सभा में अभियोग चला, तो किसी ने इसका साथ न दिया। परिणाम यह हुआ कि इसको देश छोड़कर बाहर चला जाना पड़ा। यह फ्रांस पहुँचा। राजा ने इसकी जायदाद ज़ब्त कर ली। चार्ल्स के राज्य का पहला युग यहीं पर समाप्त होता है।

क्लेरंडन के निकाले जाने के बाद अँगरेज़-शासन में पाँच व्यक्तियों ने ज़ोर पकड़ा, जिनके नाम ये हैं—

१. क्लिफ़र्ड (Clifford) इसके नाम के आरंभ का अक्षर = C
२. आर्लिंगटन (Arlington) ,, ,, ,, = A
३. बकिंघम (Buckingham) ,, ,, = B
४. आश्ले (Ashley) ,, ,, ,, = A
५. लाडर डेल (Lauderdale) ,, ,, = L

शुरू के सब अक्षर मिलाकर नाम बना Cabal=केबैल

इस केबैल-मंत्रिमंडल ने संपूर्ण राज्य का कार्य बड़ी बुद्धि-

मानी से चलाना शुरू किया। इसने लुईस चौदहवें की बढ़ती हुई शक्ति को रोकना चाहा और इसी कारण स्वीडन तथा हालैंड से संधि कर ली। इसका परिणाम यह हुआ कि फ्रांस की गति रुक गई। लुईस ने इस संधि की जड़ हॉलैंड को समझा, अतएव उसने इँगलैंड से डोवर की गुप्त संधि (The Secret Treaty of Dover) की। इसके अनुसार उसने चार्ल्स को प्रतिवर्ष तीन लाख पौंड देना स्वीकार किया और उससे वचन लिया कि इँगलैंड में कैथलिक मत का प्रचार करे।

१६७२ में लुईस तथा चार्ल्स ने हॉलैंड पर आक्रमण कर दिया। चार्ल्स के पास धन की यहाँ तक कमी हो गई कि उसने राज-कोप का वह सब धन भी ख़र्च करना शुरू कर दिया, जिसे अन्य सेठ-साहूकारों ने वहाँ जमा किया था। लोग जब अपना धन माँगने आते, तो निराश होकर लौट जाते।

लुईस ने अपनी सेना से हॉलैंड को इस प्रकार घेरा कि उसकी स्वतंत्रता संकट में पड़ गई। इस पर योरपियन जातियों ने मिल-कर हॉलैंड को बचाने का यत्न किया। प्रोटस्टेंट होने के कारण अँगरेज़-जनता की सहानुभूति भी हॉलैंड के साथ ही हो गई। इन्हीं दिनों हॉलैंड के ऑरेंज-प्रदेश के स्वामी विलियम (Will-

iam of Orange) ने हालैंड का नेतृत्व ग्रहण किया। यह बहुत ही वीर, बुद्धिमान् तथा प्रजा का हितैषी था। इसने अपने जीवन का यह उद्देश बना लिया कि किसी-न-किसी तरह लुईस चौदहवें को अवश्य ही नीचा दिखाना चाहिए। इसने सारे योरप को अपने साथ मिलाने का यत्न किया।

दैव-संयोग से डोवर की गुप्त संधि का हाल जनता को कुछ-कुछ ज्ञात हो गया। अँगरेज़-जनता अपने धर्म तथा स्वतंत्रता को बचाने के लिये कटिबद्ध हो गई। फलतः केबैल मंत्रि-मंडल पर आक्षेप-पर-आक्षेप होने लगे। इन आक्षेपों से अपने को बचाने के लिये उन लोगों ने धार्मिक स्वतंत्रता देना आरंभ किया। इससे डिसेंटरों को प्रत्यक्ष और कैथलिकों को परोक्ष-रूप से लाभ होने लगा। डिसेंटर लोग समझदार थे। वे भली भाँति जानते थे कि यह स्वतंत्रता देने में राजा की धूर्तता है; वह इस स्वतंत्रता की आड़ में कैथलिक लोगों की शक्ति बढ़ाना चाहता है।

१६७३ की पार्लिमेंट में प्रोटेस्टेंट लोगों ने टैस्ट ऐक्ट (Test Act—परीक्षा-क़ानून) पास किया, जिसके अनुसार प्रत्येक राज-कर्मचारी के लिये इस शपथ का लेना आवश्यक कर दिया गया कि उसे कैथलिक-मत पर कुछ भी विश्वास नहीं है। राजा को बाध्य होकर इस ऐक्ट पर हस्ताक्षर करने

पड़े । केबैल मंत्रि-मंडल शक्ति-रहित कर दिया गया । राज्य की सारी शक्ति डैन्बी के अर्ल सर टॉमस अस्बार्न (Sir Thomas Osborne, Earl of Danby) के हाथ में चली गई ।

(४)

(क) डैन्बी का सचिव-तंत्र-राज्य

(ख) पहले ह्विग (Whig) तथा टोरी दल (Tory Party)-का उदय

पार्लिमेंट डैन्बी का बहुत अधिक विश्वास करती थी । डैन्बी ने शक्ति प्राप्त करते ही अँगरेज़ों की वैदेशिक नीति को बदलना चाहा ; परंतु चार्ल्स ने उसको ऐसा न करने दिया । चार्ल्स ने लुईस से एक और गुप्त संधि की, जिसके अनुसार उसने प्रतिज्ञा की कि मैं फ़्रांस के विरुद्ध किसी भी योरपियन राष्ट्र से संधि न करूँगा । चार्ल्स तथा उसके दरबारियों ने लुईस से घूस लेना शुरू किया और देश के हित की हत्या कर डाली । डैन्बी को यह मंज़ूर न था । इसलिये उसने अँगरेज़-सेना जमा करके फ़्रांस के विरुद्ध लड़ने का यत्न किया । यार्क की राजकुमारी मेरी का ऑरेंज के विलियम के साथ, जो प्रोटेस्टेंटों की ओर से फ़्रांस के साथ लड़ रहा था, विवाह कर दिया ।

चार्ल्स को डैन्बी की नीति पसंद न थी । उसने फ़्रांस

से, १६७८ में, निमूजेन (Nymgen) की संधि की। इन सब संधियों से भी जब फ्रांस को इँगलैंड का सहारा न मिला, तो लुईस ने क्रोध में आकर चार्ल्स तथा उसके दरबारियों की सारी कारखाइयाँ और गुप्त संधियाँ अँगरेज़-जनता के आगे प्रकट कर दीं।

लोगों ने सारा क्रोध क्लेरंडन के सदृश डैन्बी पर निकालना चाहा। इस पर चार्ल्स ने, १६७९ में, पार्लिमेंट विसर्जित कर दी। इन्हीं दिनों टाइटस ओट्स (Titus Oates) नाम के पादरी ने लोगों को यह ख़बर दी कि कैथलिक लोग राजा को मार डालने के लिये एक षड्यंत्र की रचना कर रहे हैं। यह पादरी बड़ी दुष्ट-प्रकृति का मनुष्य था। अतएव इसकी बात पर किसी को विश्वास न हुआ। यह चुप हो गया। किंतु थोड़े दिनों बाद इसने फिर ऐसी ही बात फैलाना आरंभ किया और इस बार यह सफल हुआ। इसकी सफलता देखकर बहुत-से अन्य लोगों ने भी इस प्रकार की बातों का फैलाना अपना पेशा-सा बना लिया। बेचारे निरपराध कैथ-लिक फाँसी पर चढ़ाए जाने लगे।

१६७९ में नवीन पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ। शैफ़्ट्स-सबरी (Earl of Shaftesbury) ने इस सभा का नेतृत्व ग्रहण किया। दो राज-नियम पास किए गए—

१. हेबियस कार्पस ऐक्ट (Habeas Corpus Act)—इस ऐक्ट के अनुसार राजा किसी भी अँगरेज़ को विना सम्मन के नहीं पकड़ सकता था।

२. एक्सक्ल्यूज़न-बिल (Exclusion Bill)—इस नियम के अनुसार चार्ल्स के भाई यार्क के ड्यूक को राज्याधिकार पाने से च्युत करने का प्रस्ताव किया गया, क्योंकि वह कैथलिक था।

आरंभ में 'एक्सक्ल्यूज़न-बिल' नहीं पास हुआ। राजा ने अपने भाई को बचाने के लिये जुलाई, १६७९ में पार्लिमेंट को विसर्जित कर दिया। कुछ समय पीछे नई पार्लिमेंट का संगठन हुआ। यह भी पुरानी पार्लिमेंट की तरह ही बिल को पास करना चाहती थी, इसलिये राजा ने इसका अधिवेशन ही करना उचित न समझा। बिल के पक्षपातियों ने राजा के पास एक प्रार्थना-पत्र भेजा कि वह पार्लिमेंट का अधिवेशन करे। अँगरेज़ी-इतिहास में ये लोग प्रार्थी या 'पेटीशनर' (Petitioners) के नाम से प्रसिद्ध हुए। बहुत-से लोग इस बिल को पास करने से डरते थे और राजा के अनन्य भक्त थे। ये इतिहास में 'एभोरर्स' (Abhorers) के नाम से पुकारे गए हैं। पहलेवालों को ह्विग (Whig) तथा पिछलों को टोरी (Tory) नाम

दिया गया।* इसी प्रकार का भेद चर्च में भी कर दिया गया। इँगलैंड-चर्च के पक्षपातियों को 'हाई चर्चमैन' और प्यूरिटन लोगों को 'लो चर्चमैन' नाम दिया गया।

१६७६ में स्कॉटलैंड के प्रैसबिटेरियन लोगों ने आर्च-बिशप शार्प की हत्या कर डाली और वे राजा तथा बिशपों के विरुद्ध विद्रोही बन गए। शैफ़्ट्सबरी के कहने से मन्मथ का ड्यूक जेम्स (James, Duke of Monmouth) विद्रोह को शांत करने के लिये गया और उसने बॉथवैल-ब्रिग (Bothwell-brigg) पर विद्रोहियों को परास्त किया। चार्ल्स ने ड्यूक ऑफ़ यार्क को विद्रोह-दमन के लिये भेजा था। उसने आर्गाइल के ड्यूक को स्कॉटलैंड से भगा दिया और फिर मार डाला। यह घटना १६६१ में हुई।

१६८० के ऑक्टोबर में पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ। सभा ने एक्सक्लूज़न-बिल पास कर दिया। परंतु लॉर्ड-सभा ने उसे मंज़ूर नहीं किया। तब चार्ल्स ने पार्लिमेंट विसर्जित कर दी। १६८१ के मार्च में, ऑक्सफ़ोर्ड में, पार्लिमेंट का फिर अधिवेशन हुआ। परंतु इसको भी राजा ने विसर्जित कर दिया,

---

* ह्विग और टोरी, इन दोनों शब्दों का अर्थ पहले डाकू था। दोनों पक्ष एक दूसरे को इन नामों से पुकारते थे। धीरे-धीरे ये नाम अच्छे अर्थ में आने लगे, जैसे कि हिंदू-शब्द का हाल हुआ।

क्योंकि राजा अपने भाई यार्क के ड्यूक को ही अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था, पर एक्सक्ल्यूज़न-बिल के अनुसार मन्मथ का ड्यूक उत्तराधिकारी होता। यह प्रोटेस्टेंट था, इसीलिये लोग उसे उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। किंतु वह चार्ल्स की विवाहिता स्त्री से न था और चार्ल्स इँगलैंड के सिंहासन पर एक दोग़ले को बैठाने के लिये राज़ी न होता था।

चार्ल्स ने धीरे-धीरे टोरी लोगों को संगठित किया और इस संगठन से शैफ़्ट्सबरी को नीचा दिखाया। शैफ़्ट्सबरी तथा मन्मथ डर के मारे हॉलैंड भाग गए। ह्विगों ने बेवक़ूफ़ी से एक षड्यंत्र रचा और राई-नामक मकान के सामने राजा को मार डालने का निश्चय किया। टोरी लोगों को इस षड्यंत्र का पता लग गया। इसमें जो-जो लोग सम्मिलित थे, उनको क़त्ल करवाया गया। इतिहास में यह षड्यंत्र 'राई-हाउस-षडयंत्र' (Rye House Plot) के नाम से प्रसिद्ध है।

चार्ल्स के अंतिम दिनों तक टोरी लोगों की शक्ति बढ़ी रही। फ़रवरी, १६८५ में चार्ल्स की मृत्यु हो गई। अँगरेज़-जनता ने इसकी मृत्यु पर बहुत ही अधिक शोक मनाया, क्योंकि यह अच्छे स्वभाव का मनुष्य था। इसमें जो कुछ दोष था, वह यही कि यह असदाचारी, स्वार्थी, अपव्ययी और अदूरदर्शी था। एक प्रकार से इसने इँगलैंड को लुईस चौदहवें के हाथ बेच ही दिया

था। इसने लुईस के धन पर अपने देश का धर्म बेच दिया और हर्ष के साथ इँगलैंड में कैथलिक मत फैलाना मंज़ूर कर लिया था। फिर भी यह प्रजा की सम्मति पर ध्यान देता और भरसक देश के राजनीतिक संगठन के अनुसार इँगलैंड का राज्य करता था। इसके राज्य की मुख्य-मुख्य घटनाएँ निम्न-लिखित हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६६०	चार्ल्स द्वितीय का राज्याधिरोहण
१६६२	ऐक्ट ऑफ़् युनिफ़ार्मिटी
१६६३	कैरोलीना की स्थापना
१६६५	डच-युद्ध, महालेग
१६६६	लंदन में आग लगना
१६६७	बेडा की संधि, क्लरेंडन का अधःपतन
१६७०	डोवर की संधि
१६७९	डैन्बी का अधःपतन, हेबियस कार्पस ऐक्ट
१६८०	एक्सक्लूज़न-बिल का न पास होना
१६८१	पैंसिल्वेनिया को बसाना
१६८२	राई-हाउस-षड्यंत्र
१६८५	चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु

पंचम परिच्छेद

जेम्स द्वितीय

(१६८५-१६८८)

चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के अनंतर इँगलैंड में टोरी-दल ही प्रधान था। इसलिये यार्क का ड्यूक जेम्स द्वितीय के नाम से इँगलैंड का राजा बनाया गया। यद्यपि यह अपने भाई के समान योग्य न था, तथापि सावधान-प्रकृति का सुशासक था।
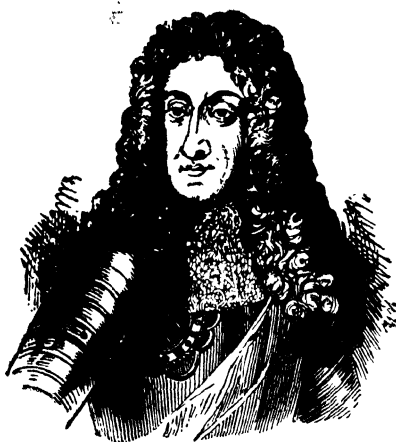
जेम्स द्वितीय

कैथलिक होने पर भी इसने प्रोटेस्टेंट-मत के अनुसार अपना राज्याभिषेक-संस्कार करवाया। इसने पहलेपहल टोरी-मंत्रियों को ही राज-काज चलाने के लिये नियुक्त किया।

जेम्स प्रजा-मत से डरता न था। उसने एकदम स्कॉचों तथा अंगरेज़ों के प्रतिनिधियों को बुलाकर पार्लिमेंट का अधिवेशन किया और उनसे यथेष्ट सहायता प्राप्त की। उसके टोरी-सभ्यों ने अपनी बहुसम्मति से जेम्स को १९,००,००० पौंड वार्षिक वृत्ति आजीवन देना स्वीकृत किया। प्रतिनिधि-सभा ने डैन्बी को क़ैद से छुटकारा दिया।

(१) राज-विद्रोह

जब ह्विग-दल ने देखा कि जेम्स के राज्यारोहण पर किसी प्रकार का झगड़ा नहीं हुआ, तो उसे बड़ी निराशा हुई। शांतिमय साधनों से नवीन राजा को वश में करना असंभव समझकर उन्होंने कुटिल मार्ग का सहारा लिया। १६८५ की गर्मियों में ह्विगों के दो दल ब्रिटेन में आए। इन दलों को सरकार ने विद्रोही क़रार दिया था। उन्होंने इँगलैंड में विद्रोहाग्नि प्रज्वलित करने का प्रयत्न किया। इन संघों में से एक संघ का नेता आर्गाइल का ड्यूक था। इसने विद्रोह खड़ा करने में पूर्ण रूप से सफलता नहीं प्राप्त की। कुछ ही समय के बाद यह राजा के आदमियों के

हाथ क़ैद हो गया और अपने पिता के समान ही फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

जून-महीने में मन्मथ के ड्यूक ने इँगलैंड में पदार्पण किया और अपने को इँगलैड का वास्तविक राजा प्रकट किया। जो कुछ हो, सॉमरसेट्-ज़िले में कुछ अधिकार प्राप्त करने पर भी वह ब्रिस्टल (Bristol) तथा बाथ (Bath) नाम के नगरों को अपने वश में न कर सका। परिणाम यह हुआ कि वह राजा की सेना से पराजित होकर पकड़ा गया, और १५ जुलाई को उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया। इसके अनंतर चीफ़ जस्टिस जेफ़रीज़ (Jeffreys) ने सारे इँगलैंड में भ्रमण किया और उसको जो-जो लोग राजद्रोही जान पड़े, उन सबको उसने कठोर दंड दिया। इस काम से प्रसन्न होकर जेम्स ने जेफ़रीज़ को 'पीयर' (Peer—लॉर्ड) बना दिया और लॉर्ड-चांसलर के पद पर नियत किया। जेफ़रीज़ ने अपना काम इस निर्दयता से किया—और कुछ लोगों की सम्मति है कि इतने अन्याय से किया—कि वह इतिहास में बहुत ही बदनाम है। उसकी अदालत को लोग 'ख़ूनी अदालत' कहते थे।

(२) धार्मिक क्रांति के लिये जेम्स का अंतिम प्रयत्न

इन दो विद्रोहों को थोड़े ही समय में सहज ही नष्ट कर

देने के कारण जेम्स समझने लगा कि मुझमें इतनी शक्ति आ गई है कि मैं लोगों की इच्छाओं का ध्यान न करके मनमाना काम कर सकता हूँ। अतएव उसने अपनी शक्ति का अनुचित लाभ उठाना आरंभ किया। वह हृदय से कैथलिक-मतावलंबी था और उसके लिये यह असह्य था कि उसके धर्म-भाई कैथलिक लोगों को राज्य का एक छोटे-से-छोटा पद भी न मिल सके, जब कि वह स्वयं इँगलैंड का राजा हो। उसने पार्लिमेंट से प्रार्थना की कि वह 'टैस्टऐक्ट' (Test Act) को हटा दे। पर उसने इसे स्वीकार न किया। निराश होकर जेम्स ने प्रतिनिधि-सभा को बरख़ास्त कर दिया, और संपूर्ण टोरी-मंत्रियों को राज-पदों से हटा दिया।

ऊपर लिखे गए कार्य करने के अनंतर जेम्स ने राबर्ट स्पेंसर (Spencer) को अपना सलाहकार बनाया। यह बुद्धिमान् तथा राजनीतिज्ञ होने पर भी अत्यंत स्वार्थी था। राजा को ख़ुश करने के इरादे से इसने इँगलैंड में कैथलिक-मत फैलाने की कोशिश शुरू कर दी।

चॉर्ल्स द्वितीय के राज्य-काल में ही इँगलैंड में इस विषय पर विशेष विवाद छिड़ा था कि किसी राजनियम को कुछ समय के लिये काम में न लाने की शक्ति (Dispensing power) राजा में है या नहीं? इसी शक्ति से काम लेकर चार्ल्स द्वितीय ने

डिसेंटरों (अर्थात् इँगलैंड के चर्च को न माननेवालों) को धार्मिक स्वतंत्रता दे दी थी।

जेम्स ने कैथलिक-धर्मावलंबी एडवर्ड हेल्स (Edward Hales) को अपनी सेना का सेनापति नियुक्त किया। धीरे-धीरे उसने अन्य राज-पदों पर भी कैथलिकों को रखना शुरू कर दिया। इतना ही नहीं, जेम्स ने कॅब्रिज-विश्वविद्यालय को लिखा कि तुम फ्रांसिस-नामक बैनिडिक्टाइन (Benedictine) भिक्षु को एम्० ए० की उपाधि दे दो। उसने ऑक्सफ़ोर्ड के मेग्डलीन कॉलेज (Magdalen College) के प्रबंध-कर्ताओं को भी इस बात के लिये विवश किया कि वे अपनी प्रबंध-कारिणी सभा का प्रधान एक कैथलिक को चुनें। आयर्लैंड का शासक भी एक कैथलिक नियत किया गया। इस प्रकार शिक्षा, सेना और शासन, सभी विभागों में जेम्स अपने सह-धर्मियों (कैथलिकों) को भरने लगा।

इन सब घटनाओं का परिणाम यह हुआ कि १६८८ में सात बड़े-बड़े बिशपों ने राजा के पास प्रार्थना भेजी कि पादरियों को पुराने नियम तोड़ने के लिये लाचार न किया जाय। जेम्स ने क्रुद्ध होकर उन पादरियों पर मुक़दमा चलाया। जजों ने बिशपो को निरपराध मानकर छोड़ दिया। यह मुक़दमा चल ही रहा था कि जेम्स के पुत्र उत्पन्न हुआ। इस घटना से

अँगरेज़ों का चित्त क्षुब्ध हो गया, क्योंकि उनको यह भय था कि जेम्स की मृत्यु होने पर उसका पुत्र भी कैथलिक मत का ही प्रचार करेगा। अभी तक जेम्स के कोई पुत्र न था। इससे लोगों को इस बात की आशा थी कि उसके मरने पर कोई प्रोटेस्टेंट राजा होगा और शीघ्र ही उनके दुःख दूर होंगे। किंतु जब जेम्स के पुत्र उत्पन्न हुआ, तो उन्हें इस बात का भय हुआ कि अब कैथलिक-धर्म राज-वंश का परंपरागत धर्म हो जायगा। कुछ लोगों का यह भी विश्वास था कि राजा के लड़का हुआ ही नहीं; षडयंत्र करके बाहर से एक लड़का महल में पहुँचा दिया गया है। इसलिये इँगलैंड के बड़े-बड़े व्यक्तियों ने जेम्स के दामाद विलियम ऑफ़् ऑरेंज को, जो प्रोटेस्टेंट था, इँगलैंड में राज्य करने के लिये बुलाया। विलियम ने अँगरेज़ों की इच्छा के अनुसार ५ नवंबर को इँगलैंड में प्रवेश किया और एग्ज़ीटर से लंदन की ओर धीरे-धीरे बढ़ना शुरू किया। इसी अवसर पर जेम्स के साथियों ने उसका साथ छोड़ दिया। उसकी कन्या एन तथा प्रसिद्ध सैनिक लॉर्ड चर्चिल (Churchill) ने भी जब उसका साथ न दिया, तो जेम्स फ्रांस भाग गया। २२ जनवरी (१६८९) को पार्लिमेंट-सभा का अधिवेशन हुआ। उसमें जेम्स की प्रवर्तित आज्ञाओं को रद् करके विलियम को इँगलैंड का राज्य सौंप दिया गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६८५	जेम्स का राज्याधिरोहण, आर्गाईल तथा मन्मथ का विद्रोह
१६८८	जेम्स द्वितीय का अधःपतन

षष्ठ परिच्छेद

विलियम तृतीय (१६८९-१७०२)

और

मेरी (१६८६—१६६४)

विलियम तृतीय

१३ फ़रवरी, १६८६ को विलियम तृतीय तथा मेरी (William III & Mary) राज्य-सिंहासन पर बिठाए गए। जेम्स द्वितीय के भागने के कारण राज्य-नियमों में बहुत परिवर्तन

की ज़रूरत थी। २२ जनवरी (१६८९) की प्रतिनिधि-सभा को राज्य-नियमानुसार वास्तव में प्रतिनिधि-सभा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि विलियम ने ही कुछ सभासदों को एकत्र करके इसका निर्माण किया था। वास्तव में वे सभासद् जनता के प्रतिनिधि नहीं कहे जा सकते थे। जो हो, इसी प्रतिनिधि-सभा (Convention) ने वास्तविक प्रतिनिधि-सभा का रूप धारण कर लिया और बहुत-से राज्य-नियम पास किए, जो इस प्रकार हैं—

(१) राज्य-नियम

१. जेम्स के बहुत-से शासन-पद्धति-विरोधी कार्यों को अनुचित ठहराने के लिये 'अधिकारों का पत्र' (Bill of Rights) फिर पास किया गया। इसके अनुसार पार्लिमेंट की आज्ञा के विना राजा के बहुत-से कार्य—जैसे स्थायी सेना रखना, प्रजा पर कर लगाना आदि—ग़ैर-क़ानूनी ठहराए गए। इसी की एक शर्त यह भी थी कि "आगे से वह व्यक्ति इँगलैंड का राजा न बन सकेगा, जो प्रोटेस्टेंट-मत का न होगा या जिसने ऐसी स्त्री से विवाह किया होगा, जो प्रोटेस्टेंट-मत को न मानती हो।"

२. अधिकार-पत्र (Petition of Rights) के द्वारा कोर्ट-मार्शल (Court-Matial—जंगी न्यायालय से) बाग़ी

सिपाहियों का विचार करना बंद कर दिया गया था। जब सिपाहियों पर शासन की कठिनाइयाँ दिखलाई पड़ने लगीं, तो पार्लिमेंट ने 'म्यूटिनी ऐक्ट' (Mutiny Act—विद्रोह के विरुद्ध क़ानून) पास किया। इस क़ानून के अनुसार छः महीने तक फ़ौजी अदालतों द्वारा सिपाहियों पर शासन किया जा सकता था। इसके बाद यह क़ानून हर साल पास किया जाने लगा। यदि किसी साल यह पास न होता, तो राजा के पास सिपाहियों को शासन में रखने का कोई क़ानूनी अस्त्र न रह जाता।

३. स्थायी सेना देश में रखने से अँगरेज़-जनता डरती थी। इसी विचार से 'एप्रोप्रिएशन ऐक्ट' (Appropriation Act) पास किया गया, जिसके अनुसार पार्लिमेंट में प्रतिवर्ष यह घोषणा की जाती थी कि "शांति के समय इँगलैंड में स्थायी सेना रखना राज्य-नियम के विरुद्ध है; इँगलैंड में शांति स्थापित करने के लिये स्थायी सेना नहीं रक्खी गई है। योरपियन जातियों में शक्ति-सामंजस्य (Balance of Power) करने के लिये ही पार्लिमेंट ने स्थायी सेना का रखना आवश्यक समझा है। अतः सेना रखने के व्यय के लिये प्रतिवर्ष पार्लिमेंट धन देना स्वीकृत करे। यदि पार्लिमेंट धन देना मंज़ूर न करे, तो स्थायी सेना बर्ख़ास्त कर दी जाय।"

पार्लिमेंट ने, १६९० में, चार वर्ष के लिये एकमुश्त धन दे

दिया। तदनंतर प्रतिवर्ष यह रक़म मंजूर करना ही पार्लिमेंट ने उचित समझा।

४. राजद्रोही लोग अपने मुक़दमों में, अपनी ओर से, वकील खड़ा कर सकें, इसके लिये १६९६ में 'राजद्रोही नियम' (Treason Act) पास किया गया। इसके पहले राजद्रोह के अभियुक्तों को वकील करने की आज्ञा नहीं थी।

५. ह्विग-दल के लोग बहुत-से लोगों को राज-कर्मचारी बनाकर उनसे अपने लिये सम्मतियाँ (Votes) ले लेते थे। इससे ह्विग-दल की शक्ति का बढ़ना स्वाभाविक ही था। इसको रोकने के लिये 'स्थान-प्रस्ताव' (Place Bill) पार्लिमेंट के सम्मुख उपस्थित हुआ। परंतु यह पास नहीं हुआ। यदि पास हो जाता, तो किसी भी राज-कर्मचारी को—चाहे वह मंत्री या कोषाध्यक्ष ही क्यों न होता—वोट देने का अधिकार न रहता।

६. विलियम की शक्ति कम करने के लिये त्रैवार्षिक नियम (Triennial Act) पास किया गया। इसके अनुसार तीन-तीन वर्ष बाद पार्लिमेंट का नवीन निर्वाचन होना आवश्यक ठहराया गया। यह राज्य-नियम जॉर्ज प्रथम का 'सप्तवार्षिक नियम' (Septennial Act) बनने के पहले तक इँगलैंड में प्रचलित रहा।

७. त्रित्व (Trinity) का सिद्धांत माननेवाले प्रोटेस्टेंट डिसेंटर लोगों को पूजा-पाठ में स्वतंत्रता देने के लिये 'सहिष्णुता-नियम' (Toleration Act) पास किया गया । हाई चर्च-दल (High Church Party) सहिष्णुता-नियम के विरुद्ध था। इसके कुछ नेता राजा के दैवी अधिकारों को न मानते थे और इस प्रकार विलियम को अपना राजा मानने को तैयार न थे। विलियम ने जब इन लोगों से राजभक्ति की शपथ लेने को कहा, तो इन्होंने शपथ न ली। इस पर उसने इन लोगों से सब राजकीय पद छीन लिए। इतिहास में ये लोग 'नानज्यूरर्स' (Non-jurors) के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन्हीं का एक दल विलियम से क्रुद्ध होकर जेम्स द्वितीय का पक्ष-पाती हो गया था । इस दल को हम आगे चलकर 'जैको-बाइट्स'❀ (Jacobites) के नाम से लिखेंगे । इन लोगों ने जेम्स से मिलकर विलियम को बहुत ही तंग किया ।

ये सब क़ानून विलियम ने इस लिये स्वीकृत कर लिए कि वह पार्लिमेंट का बुलाया हुआ था, उसके विरुद्ध नहीं जा सकता था । अधिकार-पत्र के स्वीकार कर लेने से इँगलैंड के राज्य-शासन में मानो क्रांति हो गई । राजा

❀ (Jacobite)—जैकोबस अर्थात् जेम्स के पक्षपाती । लेटिन-भाषा में जेम्स का रूप जेकोबस है ।

का बहुत कुछ अधिकार छिनकर प्रजा के हाथ में चला गया। इसी से सन् १६८८ के परिवर्तन 'इँगलैंड की क्रांति' (The English Revolution) के नाम से प्रसिद्ध है। राज्य-शासन में विशेष परिवर्तन होना ही क्रांति (Revolution) होना कहलाता है।

(२) युद्ध

आयलैंड-निवासी जेम्स द्वितीय के पक्षपाती थे। अपने राज्य-काल में जेम्स ने आयरिश कैथलिकों को कोई विशेष सहायता नहीं दी। कारण, वह नहीं चाहता था कि आयलैंड इँगलैंड से सर्वथा स्वतंत्र हो जाय। इँगलैंड से भाग जाने के बाद जेम्स ने आयरिश कैथलिकों को अपने साथ मिला लेने का यत्न किया। थोड़े-से फ़्रांसीसी सैनिकों के साथ वह मार्च, १६८९ में आयलैंड आया।

(क) आयलैंड से युद्ध

बहुत-से आयरिश प्रोटेस्टेंट जेम्स की आज्ञा पर चलने के लिये विवश किए गए। इस पर अल्स्टर (Ulster) के प्रोटेस्टेंट-निवासियों ने जेम्स के विरुद्ध हथियार उठा लिए। इस विरोध में अल्स्टर के लंडनडेरी (London-derry) तथा एन्निस-किलेन (Ennis Killen)-नामक दो नगरों ने बहुत अधिक भाग लिया। जेम्स की सेनाओं ने दोनों नगरों को चारों ओर से घेर लिया। दोनों नगरों की चहार-

दीवारी कमज़ोर थी और उनमें भोजन-सामग्री भी बहुत अधिक न थी। इँगलैंड से अन्न-भरे जहाज़ भेजे गए। परंतु वे उन नगरों तक न पहुँच सके, क्योंकि जेम्स ने नदी में एक बाँध बँधवा दिया था, जिसको पार करना जहाज़ों के लिये कठिन था। लंडनडेरी में घिरे हुए लोग चमड़े को उबालकर अपना पेट भरने लगे, पर उन्होंने आत्म-समर्पण नहीं किया। अंत में, ३० जुलाई को, एक व्यापारी जाहाज़ बाँध तोड़कर पार हो गया। इससे नगरों में भोजन पहुँच गया और जेम्स के सैनिकों में नगर-विजय का कुछ भी साहस न रहा। इसी घटना के तीन दिन बाद न्यूटन-बटलर (Newton Butler) के युद्ध में एन्निस-किलेन के प्रोटेस्टेंटों ने जेम्स की सेना को बुरी तरह से हरा दिया।

ऊपर की घटना होने के कुछ ही दिनों पीछे शांबर्ग (Schomberg) के नेतृत्व में विलियम की भेजी हुई अँगरेज़-सेना आयर्लैंड पहुँच गई। किंतु रोग फैल जाने के कारण यह सेना जेम्स के विरुद्ध कोई विशेष काम न कर सकी। १६९० में विलियम स्वयं आयर्लैंड में आया और उसने पहली जुलाई को बॉइन (Boyne)-नदी पर जेम्स को परास्त किया। इसी युद्ध में शांबर्ग मारा गया। धीरे-धीरे कैथलिकों पर विजय प्राप्त करता हुआ विलियम आयर्लैंड की राजधानी डब्लिन पहुँच गया। जेम्स भागकर फ़्रांस चला गया। आयरिश कैथ-

लिकों ने विलियम का विरोध नहीं छोड़ा और वे बड़े धैर्य के साथ लिमरिक (Limeric) पर लड़ते रहे। विलियम लाचार होकर इँगलैंड लौट आया। इँगलैंड लौटकर उसने अपने डच-सेनापति गिंकल को आयर्लैंड-विजय के लिये भेजा। गिंकल ने आयरिश लोगों से लिमरिक पर संधि कर ली। संधि की शर्तें ये थीं—

१. जो आयरिश सैनिक फ्रांस आदि देशों में जाना चाहते हैं, वे जा सकते हैं।

२. जो आयरिश कैथलिक विलियम का साथ देने की क़सम खायँगे, उनको धार्मिक स्वतंत्रता दे दी जायगी।

बड़े खेद की बात है कि अँगरेज़ों ने इस संधि के बंधन को पूर्ण रूप से तोड़ डाला और आयरिश कैथलिकों पर अत्याचार करने में कुछ उठा न रक्खा। उन्होंने आयरिश पार्लिमेंट में अँगरेज़-प्रोटेस्टेंटों की संख्या अधिक करके लिमरिक की संधि की शर्तों को रद करवा दिया, कैथलिक अध्यापकों को पढ़ाने से रोक दिया और संपत्ति-संबंधी कठोर नियमों को पहले की अपेक्षा और भी अधिक कठोर बना दिया। कैथलिक लोग अपने बच्चों को पढ़ाने के लिये फ्रांस नहीं भेज सकते थे। इतना ही नहीं, उनसे हथियार भी छीन लिए गए। कैथलिक-पुरोहितों को देश-निकाला दे दिया गया

और प्रोटेस्टेंटों का विवाह कैथलिकों के साथ होना बंद करा दिया गया। आयरिश व्यापार को नष्ट करने में भी अँगरेजों ने कोई कसर न की।

(ख) स्कॉटलैंड से युद्ध

इँगलैंड के समान ही स्कॉटलैंड में भी अशांति फैल गई। जेम्स के भाग जाने से स्कॉच्-जनता अत्यंत प्रसन्न थी। स्कॉच्
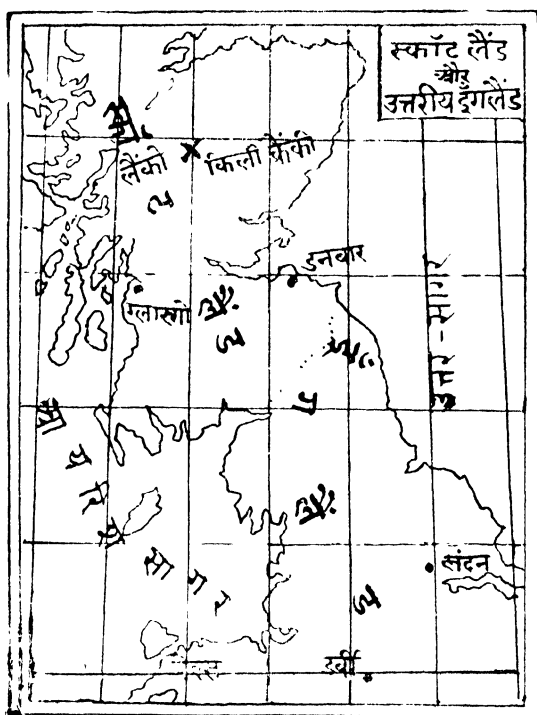
(जकोबाइट-युध्द)

पार्लिमेंट ने विलियम तथा मेरी को अपना राजा स्वीकार किया। कुछ सरदार इस परिवर्तन के विरुद्ध थे। उन्होंने विलियम के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। विलियम ने इनको किलीक्रैंकी (Killicrankie) के युद्ध में हराया। जो सरदार युद्ध से भाग गए थे, उनको १६९१ के अंत तक राजभक्ति की शपथ लेने पर अभय-दान की घोषणा की गई। दैव-संयोग से ग्लेंको (Glencoe) की घाटी में रहनेवाले मैक-आइन (Mac Iann)-नामक वंश के लोगों ने इस बात में अपना गौरव समझा कि वे सबके अंत में राजभक्ति की शपथ लें। इसका परिणाम यह हुआ कि वे नियत तिथि तक राजभक्ति की शपथ लेने के लिये न पहुँच सके। इस पर जॉन डालरिंपल (Dalrymple) ने विलियम के "राष्ट्र की रक्षा के लिये चोरों के दल का नाश करना अच्छा है" इन शब्दों का अर्थ ग्लेंको-निवासियों की हत्या के अनुकूल करके १३ फ़रवरी, १६९२ को, रात में सोते हुए ग्लेंको-निवासियों को मरवा डाला। इस भयंकर घटना से संपूर्ण स्कॉटलैंड में तहलका मच गया। लाचार होकर अपने को सुरक्षित करने के उद्देश से विलियम ने जॉन डालरिंपल को अपनी सेना से अलग कर दिया।

(ग) फ्रांस से युद्ध

विलियम के इँगलैंड का राज्य सँभालने के कुछ ही समय बाद

योरप में युद्ध शुरू हो गया। १६७८ में 'निमजन' (Nymegen) की संधि हुई थी। उसके अनंतर लुईस चौदहवें ने समीपवर्ती योरपियन राष्ट्रों को अपने आक्रमणों से तंग कर दिया था। विलियम लुईस चौदहवें का दुश्मन था। उसने इँगलैंड का राजा होना भी इसीलिये स्वीकार किया था कि उसको लुईस के विरुद्ध अँगरेजों से सहायता मिल सकेगी। अँगरेज़-जनता भी लुईस से क्रुद्ध थी, क्योंकि उसने जेम्स को सहायता पहुँचाई थी। अस्तु, १६८९ से १६९७ तक फ्रांस के साथ युद्ध होता रहा। हालैंड, ब्रैंडनबर्ग, स्पेन तथा इँगलैंड के सम्मिलित यत्न से भी लुईस पीछे न हटा और बराबर युद्ध करता ही चला गया।

नीदरलैंड में फ्रांसीसियों ने सभी युद्ध जीते। सामुद्रिक युद्ध में भी फ्रांसीसियों ने मित्र-राष्ट्रों को बहुत ही तंग किया। फ्रांसीसी सामुद्रिक सेनापति टूरविल (Tourville) ने, ३० जून, (१६९०) को बीची-हेड (Beachy Head) के पास, मित्र-राष्ट्रों का सामुद्रिक बेड़ा नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। इसी विजय से सफलता प्राप्त करके लुईस ने आयर्लैंड के कैथलिकों को सहायता पहुँचाई। उसने देश-द्रोही अँगरेज़-मंत्रियों तथा जैकोबाइट् लोगों की प्रेरणा से इँगलैंड पर आक्रमण करने का इरादा किया। सौभाग्य से १९ मई, १६९२ को सामुद्रिक सेनापति

रसेल ने 'ला होग' (La-Hongue)-नामक स्थान पर फ़्रांसीसी बेड़े को परास्त किया। इसके बाद योरप में हॉलैंड और इँगलैंड के पास ही सामुद्रिक शक्तियाँ प्रबल रह गईं। स्थल पर लुईस चिरकाल तक विजय पाता रहा। विलियम प्रत्येक सम्मुख-युद्ध में फ़्रांसीसियों से हारा, परंतु हारने पर भी उसने धैर्य न छोड़ा। वह अपनी सेना को बड़ी बुद्धिमानी के साथ एकत्र करता रहा। १६९५ में विलियम का भाग्य चमका। उसने
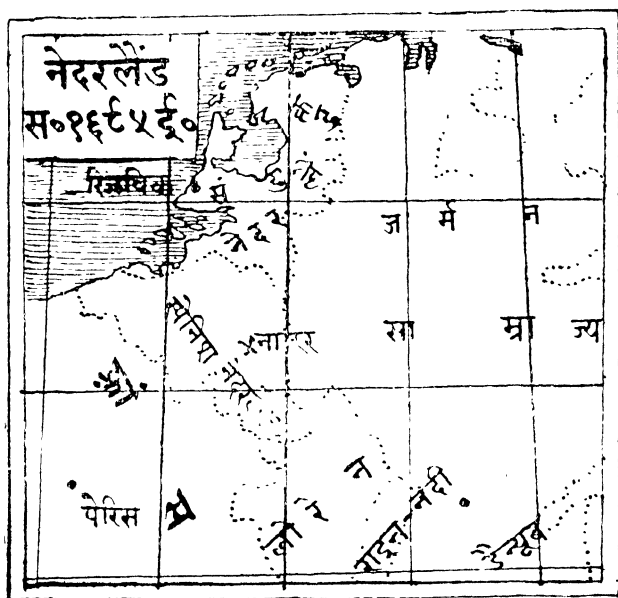
नामूर (Namur) का प्रसिद्ध दुर्ग फ़्रांसीसियों से छीन लिया। इस विजय से फ्रांस तथा मित्र-राष्ट्रों की शक्ति बराबर हो गई और किसी को भी किसी पर विजय प्राप्त करने की आशा न रही। अंत में, १६९७ में, हेग के समीप रिज़विक (Ryswick)-नामक स्थान पर दोनों दलों की संधि हो गई। संधि के अनुसार लुईस ने विलियम को इँगलैंड का राजा मान लिया; जो-जो इलाक़े फ़तह किए थे, उन्हें वापस कर दिए; और हॉलैंड के साथ व्यापारिक संबंध, पहले की अपेक्षा, अच्छे कर दिए।

(घ) ऊपर लिखे युद्धों का परिणाम

ऊपर जिन युद्धों का उल्लेख किया गया है, उनका व्यय अपने ऊपर लादना इँगलैंड के लिये असंभव हो गया। उसके लिये देश में नवीन कर बढ़ाने पड़े। उनमें एक कर भूमि-कर (Land-tax) भी था। इससे कृषक अत्यंत असंतुष्ट हो गए। किंतु इस कर-वृद्धि से भी युद्धों का ख़र्च पूरा न हुआ। तब चार्ल्स मांटेगू ने जातीय ऋण (National debt) की प्रथा डाली। इसके अनुसार रुपया स्थायी रूप से उधार लिया गया और उसके बदले में इँगलैंड ने प्रतिवर्ष ब्याज देना मंज़ूर किया। आरंभ में कुछ व्यापारियों के एक संघ ने बहुत-सा धन दिया। धीरे-धीरे इसी संघ ने बैंक ऑफ़ इँगलैंड (Bank of England)

का रूप धारण कर लिया। राज्य ने इस बैंक को बहुत-से नवीन अधिकार दिए, जो अन्य बैंकों को नहीं प्राप्त थे। यह जातीय ऋण (National Debt) लेने से राज्य में विलियम की जड़ जम गई, ।क्योंकि जिन-जिन अँगरेज़ों ने विलियम को धन उधार दिया था, वे रक़म मारी जाने के भय से जेम्स का राजा होना न चाहते थे।

विलियम का स्वास्थ्य ठीक न था। दैवयोग से १६९४ में रानी मेरी की मृत्यु हो गई। इससे विलियम को बहुत ही धक्का लगा और उसकी कठिनाइयाँ पूर्वापेक्षा अधिक बढ़ गईं, क्योंकि मेरी की छोटो बहन एन विलियम से रुष्ट थी। विलियम की मृत्यु होने पर वही रानी बनाई जाने को थी। इँगलैंड में विलियम के विरुद्ध षड्यंत्र-पर-षड्यंत्र रचे जाने ल । इन षड्यंत्रों से डरकर पार्लिमेंट ने यह निश्चय किया कि वह विलियम के बाद प्रोटेस्टेंट-मत के व्यक्ति को राजा बनावेगी। और, यदि विलियम को किसी के कारण कुछ भी हानि पहुँची, तो उसका पूरा बदला लिया जायगा।

(३) राजनीतिक परिवर्तन

विलियम बहुत ही चालाक़ तथा दूरदर्शी था। आरंभ में उसने पार्लिमेंट में ह्विग तथा टोरी, इन दोनों ही दलो में से मंत्री चुने। यहीं से वर्तमान कालीन अँगरेज़ी-सचिव-तंत्र राज्य

(Cabinet Govt.) की नींव पड़ी। जिसका वर्णन इस प्रकार है—

(क) ह्विग तथा टोरी-दलों का सम्मिलित सचिव-तंत्र राज्य

१६८६ से १६९६ तक

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, विलियम ने अपने राज्य के आरंभ में ह्विग तथा टोरी, दोनों ही दलों से मंत्री चुने थे। ह्विग तथा टोरी-दलों का यह सम्मिलित मंत्रि-मंडल १६८९ से १६९६ तक रहा। दोनों ही दलों के मंत्री परस्पर मिल-जुलकर काम करने को तैयार न थे। टोरी-दल के लोग फ्रांसीसी युद्ध के बरखिलाफ़ थे। इससे दोनों दलों के लोगो का मिलकर काम करना और भी कठिन हो गया। टोरी लोग योरपियन राजनीति से अँगरेज़ों को पृथक् रखना चाहते थे। वे स्थायी सेना का रखना अँगरेज़ों की स्वतंत्रता के लिये भयानक समझते थे। इन्हीं दिनों संडरलैंड (Sunderland) ने विलियम को यह सलाह दी कि वह एक ही दल से सब मंत्री चुने। राजा को यह सलाह पसंद आई। उसने धीरे-धीरे टोरियों को सभी राजकीय पदों से हटा दिया और उनके स्थान पर ह्विगों को चुन लिया।

(ख) ह्विगों का सचिव-तंत्र राज्य

१६९६ से १७०१ तक

विलियम ने जो राजनीतिक परिवर्तन आरंभ किया, वह १६९६

में पूर्णता को प्राप्त हुआ । १६९६ में ह्विग-दल का मंत्रि-मंडल स्थापित हुआ। यह 'ह्विग जंटो' (Whig Junto) के नाम से प्रसिद्ध है । इस दल के नेता लॉर्ड सौमर्स (Somers) सामुद्रिक सेनापति रसेल (Russel—ला-होग का विजेता), संडरलैंड, श्रूज़बरी (Shrewsbury)-मांटेगू (Montague) आदि थे । विलियम ने ह्विग-मंत्रि-मंडल की सलाह के अनुसार संपूर्ण राज-काज करना शुरू किया। १६९४ में विलियम त्रैवार्षिक नियम स्वीकृत कर ही चुका था और अब उसने १६९५ में प्रेस-ऐक्ट को भी हटा दिया । इससे संपूर्ण अँगरेज़ों को विचार-संबंधी स्वतंत्रता प्राप्त हो गई । इँगलैंड के इतिहास में यह एक अत्यंत आवश्यक घटना है, क्योंकि इसके अनंतर इँगलैंड में बड़ी शीघ्रता के साथ उन्नति होने लगी ।

इन्हीं दिनों "स्पेन-राज्य का उत्तराधिकारी कौन होगा" इस प्रश्न पर योरपीयन राजों में बड़ा भारी आंदोलन उठ खड़ा हुआ । स्पेन का राजा चार्ल्स द्वितीय निस्संतान था । उसके दो बहनें थीं । उनमें से एक आस्ट्रिया के सम्राट् लियोपोल्ड (Leopold) को और दूसरी फ्रांस के चौदहवें लुईस को ब्याही थी। लुईस की रानी क़सम खा चुकी थी कि मैं स्पेन के उत्तराधिकारी होने का अपना अधिकार छोड़ती हूँ ।

लियोपोल्ड की माता चार्ल्स द्वितीय की बुआ थी। इस दशा में बुआ के रिश्ते से लियोपोल्ड स्पेन का राज्याधिकारी था, क्योंकि उसकी माता ने कोई ऐसी क़सम नहीं खाई थी कि वह स्पेन के राज्य पर दावा न करेगी। फिर भी फ्रांस का राजा स्पेन-जैसे प्रदेश को छोड़ने के लिये तैयार न था। आस्ट्रिया के लियोपोल्ड का तो स्पेन पर वास्तविक अधिकार ही था। इँगलैंड को कठिनता यह थी कि आस्ट्रिया या फ़्रांस, किसी के अधिकार में स्पेन का राज्य जाने से योरप का शक्ति-सामंजस्य (Balance of Powers) नष्ट होता था। इस कठिनता को दूर करने के लिये विलियम ने फ़्रांस के राजा को लियोपोल्ड से लड़ने से रोका।

यह निश्चय हुआ कि स्पेन का राज्य लियोपोल्ड के नाती बैवेरिया के एलेक्टर प्रिंस को दिया जाय। यह एक छोटा राजा था और इसके पास स्पेन का राज्य जाने से शक्ति-सामंजस्य नष्ट होने का भय न था। फ़्रांस और आस्ट्रिया को भी स्पेन के वैदेशिक राज्य से कुछ हिस्से मिलने की बात तय हुई। किंतु एलेक्टर प्रिंस के मर जाने से यह संधि रद हो गई। अस्तु, फिर दूसरी संधि की गई।। इसके अनुसार लियोपोल्ड के दूसरे लड़के आर्च ड्यूक चार्ल्स को स्पेन का राजा बनाने की बात तय हुई। किंतु स्पेनवालों को इन गुप्त संधियों की ख़बर न हुई।

दैव-संयोग से यह सारी गुप्त मंत्रणा स्पेनियों के कानों तक पहुँच गई। वे लोग अपने देश को कई भागों में विभक्त करने के लिये तैयार न थे। ऐसे भयंकर समय में चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु हो गई। मृत्यु के पहले उसने अपने राज्य को आंजो के ड्यूक फ़िलिप के नाम लिख दिया। यह फ़िलिप लुईस चौदहवें का नाती था। नाती को स्पेन का राज्य मिलते देखकर लुईस ने सन् १७०० की द्वितीय विभाग-संधि की अवहेलना की। विलियम इस अवसर पर कुछ भी न कर सका, क्योंकि स्पेन के राजा ने स्वयं ही लुईस के पोते को अपना राज्य सौंप दिया था।

प्रथम विभाग-संधि तथा द्वितीय विभाग-संधि (Partition Treaty) की असफलता से ह्विग लोगों का पार्लिमेंट में ज़ोर घट गया। लॉर्ड-सभा में तो ह्विग लोगों की बहुत संख्या स्थायी रूप से थी, परंतु प्रनिनिधि-सभा में अब टोरी-दल की संख्या अधिक हो गई। सन् १७०० में विलियम ने रॉकेस्टर (Roche-stor) के अर्ल तथा लॉर्ड गाडाल्फ़िन (Godolphin) के नेतृत्व में टोरी-मंत्रि-मंडल को इँगलैंड का शासक नियत किया।

(ग) टोरियों का सचिव-तंत्र राज्य
(१७०१-१७०८)

टोरियों का मंत्रि-मंडल नियत करने में विलियम को किसी

तरह की भी खुशी नहीं हुई, क्योंकि टोरी लोग योरप की राज-नीति में दख़ल नहीं देना चाहते थे और उनको इसकी कुछ भी चिंता न थी कि स्पेन का राजा कौन हो या कौन न हो। सन् १७०१ में प्रतिनिधि-सभा का पुनर्निर्वाचन हुआ; परंतु टोरी-दल ही प्रधान रहा। उन्होंने उत्तराधिकारित्व का क़ानून (Act of Settlement) पास किया, जिसके अनुसार विलियम तथा एन की मृत्यु पर इँगलिस्तान के राज्य का राजा कौन बने, इसका निर्णय किया गया। यह नियम पास करके टोरियों ने राजा के दैवी अधिकार के सिद्धांत का परि-त्याग और जाति को ही राजा नियत करने का सिद्धांत स्वीकृत कर लिया। टोरी लोग विलियम से असंतुष्ट थे, अतः वे राजा की शक्ति को बहुत ही परिमित करना चाहते थे। इसी कारण उत्तराधिकारित्व के नियम के साथ उन्होंने निम्न-लिखित बातें और जोड़ दीं—

(१) विलियम तथा एन के बाद सोफ़िया (जर्मनी के हनोवर की रानी) की संतान इँगलैंड के राज्य पर हुकूमत करेगी।

(२) हनोवर का राजा इँगलैंड के चर्च में शामिल होगा।

(३) इँगलैंड का राजा, अपने योरप के इलाक़ों की रक्षा

के लिये, पार्लिमेंट की आज्ञा लिए विना, किसी पर-राष्ट्र से युद्ध न करेगा।

(४) पार्लिमेंट की स्वीकृति के विना इँगलैंड का राजा किसी अन्य देश में भ्रमण के लिये न जा सकेगा।

(५) कोई भी व्यक्ति, जो विदेश में अँगरेज़ माता-पिता से या इँगलैंड में उत्पन्न न हुआ हो, गुप्त सभा (Privy Council) या पार्लिमेंट में न बैठ सकेगा और न उसे जागीर ही मिल सकेगी।

(६) राजा न्यायाधिकारियों (Judges) को पदच्युत न कर सकेगा।

(७) गुप्त सभा में जो प्रस्ताव पास हों, उनसे सहानुभूति रखनेवाले लोग उन पर हस्ताक्षर करें। परंतु यह नियम एन के समय में हटा दिया गया।

(८) राज्य-पदाधिकारी या राज्य से पेंशन पानेवाले व्यक्ति हाउस ऑफ़् कामंस में नहीं बैठ सकते।

इस नियम को भी एन के समय में कुछ-कुछ बदल दिया गया। यदि यह नियम ब्रिटिश-शासन-पद्धति में विद्यमान रहता, तो इँगलैंड से सचिव-तंत्र राज्य कभी न उठ सकता।

विलियम का स्वास्थ्य दिन-दिन बिगड़ता जाता था। अपनी शक्ति के परिमित होने से वह अपने मनोरथों को भी पूर्ण करने

में सर्वथा असमर्थ था। जेम्स द्वितीय १७०१ में मर गया। लुईस चौदहवें ने जेम्स के पुत्र को इँगलैंड का वास्तविक राजा घोषित कर दिया। ऐसा करना रिज़विक-संधि की शर्तों का तोड़ना था। कुछ भी हो, लुईस की इस कार्यवाही से इँगलैंड की जनता क्रुद्ध हो गई। टोरी-दल भी फ़्रांस से लड़ने के पक्ष में हो गया। तब विलियम ने फ़्रांस तथा स्पेन के विरुद्ध बहुत-से राष्ट्रों को खड़ा कर दिया और महासम्मेलन (Grand Alliance) बनाया। प्रतिनिधि-सभा का नए सिरे से निर्वाचन हुआ और संख्याधिक्य के कारण उसमें ह्विग-दल का बहुमत हो गया। ह्विग लोगों का ही मंत्रि-मंडल चुना गया। ऐसे सुअवसर पर विलियम ८ मार्च, १७०२ को अचानक घोड़े से गिरकर मर गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६८९	विलियम तथा मेरी का राज्याभिषेक; बिल ऑफ़् राइट्स तथा टालरेशन बिल
१६९०	बयोन का युद्ध
१६९२	ला-होग का युद्ध तथा ग्लेंको की हत्या
१६९४	रानी मेरी की मृत्यु
१६९६	प्रथम ह्विग सचिव-तंत्र राज्य
१६९७	रिज़विक-संधि

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६९८	प्रथम विभाग-संधि
१७००	द्वितीय विभाग-संधि
१७०१	उत्तराधिकारित्व का नियम
१७०१	महासम्मेलन
१७०२	विलियम तृतीय की मृत्यु

था। सारे योरप में इसके युद्ध-कौशल का आतंक छाया हुआ था।

मार्लबरा टोरी-दल का था। यही कारण है कि रानी मेरी के राज्य के आरंभ में टोरियों का ही सचिव-तंत्र राज्य शुरू हुआ। नवीन सचिव-मंडल का मुखिया गॉडाल्फ़िन था। यह मार्लबरा का परम मित्र था। आय-व्यय के ऊपर दृष्टि रखने में यह बहुत ही चतुर था। गॉडाल्फ़िन ने मार्लबरा को धन की पूरी सहायता दी और उसने भी योरप को जीतने में किसी प्रकार की कमी न की।

(२) स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध (१७०२-१७१३)

(The war of the Spanish Succession)

एन के राजगद्दी पर बैठने के कुछ ही सप्ताहों के बाद योरप में स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ गया। महा-सम्मेलन में हॉलैंड और इँगलैंड का ही मुख्य भाग था। इनका साथ जर्मनी (आस्ट्रिया) के सम्राट् ने दिया, क्योंकि वह अपने छोटे लड़के अर्च ड्यूक चार्ल्स को स्पेन का बादशाह बनाना चाहता था। सम्राट् की देखादेखी ब्रांडनबर्ग के एलेक्टर ने फ़्रांस का विरोध किया। सम्राट् ने इस युद्ध में उसकी सहा-यता पाने की आशा से उसे प्रशिया के राजा की उपाधि दे दी थी। लुईस की शक्ति भी कुछ कम न थी। फ़्रांस बहुत ही

समृद्ध था। उसका शासन बहुत उत्तम रीति से होता था। फ़्रांसीसी सेना अपनी वीरता तथा युद्ध-कौशल के लिये योरप-भर में प्रसिद्ध थी। उसके सेनापति तथा राजनीतिज्ञ अपने समय में अनुपम थे। इसी से लुईस चौदहवें का राजत्व-काल फ़्रांस के इतिहास का 'ऑगस्टेन काल' (Augustain Age) कहलाता है। रोमन सम्राट् ऑगस्टेस के समय में, रोम-साम्राज्य में, जिस तरह बड़े-बड़े वीर, धीर, राजनीतिज्ञ, साहित्य-सेवी आदि विद्यमान थे, उसी तरह इस काल में फ़्रांस में भी थे। स्पेनिश नीदरलैंड पर लुईस का आतंक जमा हुआ था। यही कारण है कि हॉलैंड पर वह बेरोक-टोक आक्रमण कर सकता था। स्पेन फ़्रांस का मित्र था। कोलोन तथा बवेरिया के राजा लुईस के पक्ष में थे। इटली। भी फ़्रांस की ओर से लड़ने को तैयार था। इस प्रकार स्पष्ट है कि योरप के लिये यह कितना भयंकर युद्ध था।

प्रारंभिक युद्ध (१७०२-१७०३)

शुरू-शुरू की लड़ाइयों में कुछ भी ध्यान देने की बात नहीं है। १७०२ से १७०३ तक मार्लबरा ने हॉलैंड को आक्रमण से ही बचाया ; साथ ही बर्न तथा लाईज (Liege) को जीता भी और कोलोन के एलेक्टर को उठने से रोका भी। उत्तरीय जर्मनी में फ़्रांसीसी और बवेरियन सेनाओं ने आस्ट्रिया पर आक्रमण

किया। हंगरी में विद्रोह हो गया। अतः जर्मन-सम्राट् आस्ट्रिया की सहायता के लिये न पहुँच सका। स्पेन तथा इटली पर फ़्रांसीसियों का इस क़दर ज़ोर था कि बेचारा पुर्तगाल घबरा गया। उसने इँगलैंड के साथ मैथ्यून-संधि कर ली। इसी संधि के अनुसार पुर्तगाल ने अँगरेज़ों का व्यावसायिक (ऊनी) माल अपने यहाँ खुले तौर पर आने दिया और अपनी शराब इँगलैंड में भेजनी शुरू कर दी। अँगरेज़ों ने इस शराब पर फ़्रांसीसी शराब की अपेक्षा केवल दो-तिहाई चुंगी रक्खी। यह संधि बहुत ही प्रसिद्ध है, क्योंकि इस संधि के कारण पुर्तगाल के सारे-के-सारे व्यवसाय नष्ट हो गए तथा उसको इँगलैंड के व्यावसायिक पदार्थ ख़रीदने पड़े।

ब्लेनहम (Blenheim) की लड़ाई (१७०४)

१७०४ में मित्र-मंडल की दशा बहुत नाज़ुक हो गई। हंगरी तथा बवेरिया की सेनाएँ वियना पर आ चढ़ी थीं। जर्मन-सम्राट् को यह न सूझता था कि वह वियना की रक्षा किस प्रकार करे। एक-मात्र मार्लबरा ही उसको सहायता पहुँचाता था, परंतु वह कोसों दूर था। डच लोग अपने बचाव की चिंता में थे, अतः उसको अपने देश से बाहर न जाने देना चाहते थे। फिर भी मार्लबरा ने जर्मन-सम्राट् को सहायता पहुँचाने का पूरे तौर पर इरादा

कर लिया था। उसने शीघ्र ही राइन (Rhine) की ओर अपनी सेना के साथ बढ़ना शुरू कर दिया और बवेरिया पर आक्रमण कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि फ़्रांसीसी तथा बवेरियन सेनाएँ बवेरिया की रक्षा के लिये पीछे लौटीं। ब्लैनहम-नामक स्थान पर १३ अगस्त, १७०४ को भयंकर संग्राम हुआ। मार्लबरा ने विजय प्राप्त की। इस विजय से उसकी कीर्ति सारे योरप में फैल गई।

मित्र-मंडल की विजय

(१७०४-१७०६)

मार्लबरा ने नीदरलैंड में रैमिलीज़ का युद्ध (The battle of Ramillies) जीता। इससे सारे-के-सारे नीदरलैंड पर उसका प्रभुत्व स्थापित हो गया। आस्ट्रियन सेनापति प्रिंस यूज़ीन (Prince Eugene) ने ट्यूरिन का युद्ध (The battle of Turin) जीता और फ़्रांसीसियों को इटली से निकाल दिया। अँगरेज़ नौ-सेनापति रुक (Rooke), ने १७०४, में जिबराल्टर और १७०५ में बार्सिलोना को फ़तह किया।

आल्मंज़ा का युद्ध (Battle of Almanza)

(१७०७)

ऊपर लिखी सब पराजयों से भी लुईस तथा उसका पोता

हताश नहीं हुआ। उन्होंने युद्ध की फिर तैयारी की। दैव-संयोग से स्पेनवालों ने आस्ट्रिया के विरुद्ध विद्रोह और फ्रांसीसियों का स्वागत किया। १७०७ में इँगलैंड का मित्र-मंडल स्पेन में, आल्मंजा के युद्ध (Almanza) में, भयंकर रूप से परास्त हुआ। इससे फ़िलिप पंचम फिर मैड्रिड का स्वामी बन गया। नीदरलैंड के बहुत से दुर्गों को फ्रांसीसियों ने फिर जीत लिया। उडनार्ड की लड़ाई (Oudenarde) (१७०८) में अँगरेज़ों ने नीदरलैंड के खोए हुए दुर्गों को फिर जीत लिया। मार्लबरा तथा प्रिंस यूज़ीन ने ऊडनार्ड का प्रसिद्ध युद्ध जीता। लाइल के फ़तह करने से इन दोनों सेनापतियों को लुईस के राज्य पर आक्रमण करने का अच्छा अवसर मिला। इस पर लुईस ने संधि की प्रार्थना की; परंतु अँगरेज़ मंत्रि-मंडल ने न माना। "मरता क्या न करता" के अनुसार उसने वीरता-पूर्वक युद्ध करने के लिये फिर तैयारियाँ करना शुरू कर दिया।

मालप्लैकट का युद्ध (१७०९)

१७०९ में मार्लबरा ने मालप्लैकट (Malplaquet) की लड़ाई जीती। इसमें अँगरेज़ों को बहुत-सा नुक़सान उठाना पड़ा। १७०८ में सेनापति स्टैनहोप (Stanhope) ने माइनार्का का प्रसिद्ध द्वीप जीता और १७१० में मैड्रिड पर फिर प्रभुत्व प्राप्त किया। इसी वर्ष के अंत में ब्रिह्यूग पर स्टैनहोप

बुरी तरह से परास्त हुआ। नीदरलैंड पर अँगरेज़ों का प्रभुत्व पहले की ही तरह बना रहा। तीन ही दिनों में इँगलैंड में कुछ ऐसे राजनीतिक परिवर्तन हो गए, जिनसे उसको कुछ ही वर्षों में युद्ध बंद करना पड़ा।

(३) इँगलैंड की राजनीतिक दशा

एन के राज्याधिरोहण के कई वर्षों बाद तक गॉडाल्फ़िन तथा मार्लबरा इँगलैंड का शासन करते रहे। ये टोरी-दल के होने पर भी युद्ध के पक्ष में थे। यही कारण है कि इन्होंने ह्विग-दल के नेताओं से मेलजोल बनाए रक्खा। इन्होंने डिसेंटर लोगों के साथ भी बुरा व्यवहार नहीं किया और ह्विग-दल के लोगों को राज्यपदों पर नियुक्त किया। संडरलैंड-जैसे कट्टर ह्विग राष्ट्र-सचिव के पद पर नियुक्त हो गए और सचिव-मंडल में ह्विग-दल की प्रधानता हो गई। इससे टोरी-दल के लोग निराश हो गए। उन्होंने राजदरबारियों से मेलजोल बढ़ाकर मार्लबरा को एन से जुदा करने का यत्न किया। मिसेज़ मैशेम (Masham) ने एन पर अपना प्रेम प्रकट किया और उसको ह्विग-दल के लोगों से अलग कर दिया।

मार्लबरा ने रानी को समझाया-बुझाया और टोरियों के नेता हार्ले (Harley) को राजदरबार से निकलवा दिया। राबर्ट वालपोल (Robert Walpole) तथा अन्य कुछ ह्विगों

को उसने अपने सचिव-मंडल में मिला लिया। १७०८ से १७१० तक गोडाल्फ़िन तथा मार्लबरा ही राजकाज चलाते रहे। योरप के युद्धों से जनता घबरा गई थी। १७१० में पार्लिमेंट का जो चुनाव हुआ, उसमें टोरी-दल का बहुपक्ष था। परिणाम यह हुआ कि एन ने हार्ले से सलाह ली और सारे-के-सारे ह्विगों को राज्य के पदों से अलग कर दिया। राबर्ट हार्ले बहुत ही चालाक तथा दुनियादार आदमी था। उसमें जो कुछ कमी थी, वह यही कि वह डरपोक था और उसे व्याख्यान देने की आदत न थी। राष्ट्र-सचिव के पद पर उसने हैब्ली-सैंट जॉन को नियत किया। शीघ्र ही यह वाईकाउंट बालिंब्रोक (Vis Count Bolingbroke) बना दिया गया। यह अपने समय का प्रसिद्ध लेखक और व्याख्यानदाता था। राजनीति को यह एक खेल समझता था। इसको उसमें विश्वास न था। इन दोनों ने किसी-न-किसी तरीक़े से, १७१३ में, योरप के युद्ध को बंद किया और स्पेन तथा फ़्रांस के साथ यूट्रैक्ट (Utrecht) की संधि की, जिसकी शर्तें निम्न-लिखित थीं—

(१) एन के पश्चात् इँगलैंड का राजा हनोवर-वंश का ही कोई व्यक्ति हो।

(२) स्पेन के राजा फ़िलिप ने यह प्रण किया कि मैं फ़्रांस के राज्य पर अपना अधिकार न प्रकट करूँगा।

(३) स्पेनी-अमेरिका में अँगरेज़ ३० वर्षों तक नीग्रो बेचने का काम कर सकते हैं। फ्रांसीसियों को यह अधिकार नहीं दिया गया।

(४) दक्षिणी अमेरिका के तट पर, वर्ष में एक बार, अँगरेज़ अपना एक जहाज़ व्यापार के लिये भेज सकते हैं।

(५) स्पेन ने जिबराल्टर तथा माइनार्का और फ्रांस ने नोवा-स्कोशिया (Novascoshia) तथा न्यूफ़ाउंडलैंड अँगरेज़ों को दे दिए। सिसली का प्रदेश ड्यूक ऑफ़ सेवाय (Savoy) को मिला।

(६) फ़्रांस ने डंकर्क-नामक नगर के दुर्गों को गिराना स्वीकार किया।

(७) जेम्स को फ़्रांस में रहने से रोक दिया गया।

(८) नीदरलैंड आस्ट्रिया को दिया गया। हालैंडवालों को, दक्षिण के दुर्गों की रक्षा के लिये, उनमें अपनी सेना रखने की आज्ञा दी गई।

योरप तथा इँगलैंड के इतिहास में यूट्रैक्ट की संधि इसीलिये बहुत प्रसिद्ध है कि (१) इसी संधि से लुईस की शक्ति नष्ट कर दी गई, (२) ब्रैंडनबर्ग (प्रशिया) और सिसली (सेवाय)-नामक दो राज्यों का योरप में उदय हुआ, (३) इँगलैंड का मध्यसागर पर प्रभुत्व हो गया; उसको बहुत-से उपनिवेश मिल गए। संसार में वह नौ-शक्ति बन गया।

हार्ले (जो अब ऑक्सफ़ोर्ड का अर्ल हो गया था) तथा बालिंब्रोक की शक्ति एन के अंतिम दिनों तक स्थिर रही। यूट्रैक्ट की संधि को अँगरेज़ों ने बहुत ही पसंद किया। इँगलैंड दिन-पर-दिन समृद्ध हो रहा था। १७११ के ऐक्ट 'अगेंस्ट ऑकेज़नल कानूफ़रमिटी' (Act against occassional conformity) के साथ, १७१४ में, 'स्कीम ऐक्ट' (Scheme Act) और जोड़ दिया गया। उसके अनुसार डिसेंटर लोगों का स्कूल-मास्टर होना बंद कर दिया गया।

एन का स्वास्थ्य दिन-पर-दिन ख़राब हो रहा था। इन्हीं दिनों हनोवर की सोफ़िया (Sophia) की मृत्यु हो गई। उसका पुत्र जॉर्ज (George) था। बालिंब्रोक की इच्छा थी कि जॉर्ज राज्य पर न बैठे; क्योंकि इससे ह्विग लोगों की प्रधानता हो जाने की संभावना थी। और, ऐक्ट ऑफ़ सेटिलमेंट या उत्तराधिकार-क़ानून के अनुसार जेम्स राज्य पर न बैठ सकता था, क्योंकि वह कैथलिक था।

बालिंब्रोक ने धीरे-धीरे अपने अन्य साथियों को जेम्स के पक्ष में करना शुरू किया। ऑक्सफ़ोर्ड के साथ-साथ सीमांतों में उसका झगड़ा हो गया। एन ने बालिंब्रोक का पक्ष लिया और ऑक्सफ़ोर्ड को पदच्युत कर दिया। दैवी घटना से पहली अगस्त को एन की मृत्यु हो गई।

आर्गाईल तथा सॉमर्स के ह्विग-दल के ड्यूकों के प्रबल प्रयत्न से मंत्रणा-सभा (Privy Council) ने जॉर्ज प्रथम को इँगलैंड का राजा माना और उसको हनोवर-प्रांत से बुला लिया। रानी एन के आधिपत्य में स्कॉटलैंडवालों को रहना मंज़ूर था, परंतु वे अँगरेज़ों के धर्म, व्यापार तथा स्वभाव से असंतुष्ट थे। अत: उन्होंने एंड्र्यू फ़्लेचर (Andrew Fletcher) के नेतृत्व में इँगलैंड से जुदा होने का प्रयत्न किया। १७०३ में स्कॉच लोगों ने 'ऐक्ट ऑफ़ सिक्योरिटी' (Act of Security) पास किया। इसके अनुसार उन्होंने मेरी की मृत्यु के बाद अँगरेज़ों से भिन्न किसी दूसरे अन्य प्रोटेस्टेंट राजा को अपना राजा बनाना निश्चित किया । अँगरेज़ राजा तभी उनका राजा बन सकता था, जब वह स्कॉच-समिति द्वारा स्कॉटलैंड का शासन करे । १७०४ में इस नियम को रानी ने स्वीकृत कर लिया और उस पर अपने हस्ताक्षर कर दिए।

इन्हीं दिनों स्कॉटलैंड के अंदर एक फ़्लाइंग स्क्वॉड्रन (Flying Squadron)-नामक नया दल उत्पन्न हो गया, जो इँगलैंड-स्कॉटलैंड का मेल करवाना चाहता था। अस्तु, १७०७ में ऐक्ट आफ़् यूनियन (Act of Union) पास किया गया। उसके अनु-सार स्कॉटलैंड तथा इँगलैंड सदा के लिये परस्पर मिल गए। जेम्स प्रथम के आने पर दोनों देशों का राजा एक हो गया था; पर पार्लि-

मेंट-सभाएँ भिन्न-भिन्न थीं। ये संयुक्त-राज्य 'ग्रेट-ब्रिटेन' के नाम से पुकारे जाने लगे। दोनों जातियों के झंडों को परस्पर मिलाकर ग्रेट-ब्रिटेन का एक झंडा बन गया। स्कॉटलैंड ने १६ लार्डों तथा ४५ प्रतिनिधियों को पार्लिमेंट में भेजने का अधिकार प्राप्त किया। दोनों ही देशों को एक-से व्यापारिक अधिकार मिले। स्कॉचों को अँगरेज़-उपनिवेशों के साथ विना किसी प्रकार की रुकावट के व्यापार करने का अधिकार मिला।

सन	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१७०२	एन का राज्याधिरोहण
१७०४	ब्लैनहम की लड़ाई, ऐक्ट ऑफ़ सिक्योरिटी
१७०६	रैमिलीज़ की लड़ाई
१७०७	स्कॉटलैंड का इँगलैंड के साथ मेल
१७०८	आल्मंज़ा और ऊडनार्ड की लड़ाइयाँ
१७०९	मालप्लैकट की लड़ाई
१७१०	ह्विगों का अधःपतन
१७१३	यूट्रैक्ट की संधि
१७१४	एन की मृत्यु

अष्टम परिच्छेद

स्टुवर्ट-राजों के समय में ग्रेट-ब्रिटेन की सभ्यता

(१) इंगलैंड की आर्थिक उन्नति

स्टुवर्ट-राजों के समय में इँगलैंड के उपनिवेश दूर-दूर तक जा बसे। उसका व्यापार बहुत ही अधिक बढ़ गया। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि भारतवर्ष, उत्तरीय अमेरिका, वेस्ट-इंडीज़ तथा आफ़्रिका आदि देशों में उसकी व्यापारिक कोठियाँ तथा बंदरगाह विद्यमान थे। हालैंड तथा पोर्चुगाल को उसने व्यापार में नीचा दिखाया। फ़्रांस पर भी कई अपूर्व विजय प्राप्त की। लुईस चौदहवें ने जो उपनिवेश बड़ी ही मिहनत से बसाए थे, इँगलैंड ने बड़ी ही चतुरता से उन सबको अपने हाथ में कर लिया। व्यापार-व्यवसाय की उन्नति से इँगलैंड में मध्यश्रेणी के लोग प्रबल हो गए। ज़मींदारों की शक्ति पूर्वापेक्षा कम हो गई। राज्य ने आर्थिक प्रश्नों की ओर विशेष ध्यान देना शुरू किया। अधिक क्या कहें, राजनीति का झुकाव देश की आर्थिक उन्नति की ओर हो गया। राज्य की आमदनी पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गई। नौ-सेना की वृद्धि में बहुत-सा धन ख़र्च किया

आने लगा। बैंक ऑफ़् इँगलैंड की स्थापना से देश में बैंकों की वृद्धि दिन-पर-दिन होने लगी। राज्य को धन रखने तथा प्राप्त करने में पहले की अपेक्षा बहुत ही अधिक सुगमता हो गई। संपत्ति-शास्त्र के अध्ययन में लोग दत्तचित्त हो गए। व्यावसायिक प्रणाली (Mercantile System) के सिद्धांतों की सचाई का लोगों को ज्ञान हो गया। व्यापार-व्यवसाय की उन्नति में ही देश की समृद्धि है, इस सूत्र को सम्मुख रखकर अँगरेज़-जनता ने पग बढ़ाना शुरू किया। प्रत्येक अँगरेज़ को सोना-चाँदी प्राप्त करने की चाह थी। राज्य देश के सपक्षीय व्यापार-संतुलन को विशेष ग़ौर से देखता था। यदि व्यापारिक संतुलन (Balance of Trade) पर चोट होने लगती, तो उसका शीघ्र ही उपाय करता था।

व्यापार तथा कृषि-प्रधान होने पर भी इँगलैंड का मुख्य उद्देश उद्योग-प्रधान होना ही था। भारतवर्ष से उत्तम-उत्तम कपड़े इँगलैंड में पहुँचते थे। इधर लुईस चौदहवें ने अपने देश के प्रोटेस्टेंट कारीगरों को देश छोड़ने की आज्ञा दे दी। उन बेचारों ने इँगलैंड की शरण ली। इँगलैंड ने उनका स्वागत किया और उनके सहारे व्यावसायिक देश बनने का प्रयत्न करने लगा। हॉलैंड के इंजीनियरों ने इँगलैंड की दलदलों को

सुखाया और उसको कृषि-योग्य बना दिया। इससे इँगलैंड की कृषि में बहुत ही अधिक उन्नति हो गई।

किसान लोग अमीर हो गए। भिखमंगों तथा दरिद्रों की संख्या देश में पहले की अपेक्षा बहुत ही कम हो गई। १६६२ में ऐक्ट ऑफ़् सेटिलमेंट पास किया गया। इसके अनुसार प्रत्येक ज़िले के राज-कर्मचारी को यह आज्ञा दी गई कि वह किसी दूसरे ज़िले (Parish) के अँगरेज़ों को अपने यहाँ न बसने दे। इस नियम का यह प्रभाव हुआ कि प्रत्येक ज़िले में जन-संख्या परिमित रहो। इससे किसी भी ज़िले पर औरों के सँभालने का अधिक भार नहीं पड़ा। यह नियम बनने के पहले भिखमंगे, बेकार, दरिद्र लोग जिस ज़िले में इकट्ठे हो गए, उसो ज़िले पर खर्च का भार बढ़ जाता था। स्टुवर्ट-राजों के समय में इँगलैंड की आबादी पहले से बढ़ गई। इँगलैंड तथा वेल्स में ५० लाख की आबादी थी। एक-मात्र लंदन की आबादी ५ लाख के लगभग थी। इससे दूसरे नंबर पर ब्रिस्टल तथा नॉरिच (Norwich) के नगर थे, जिनकी आबादी ३० हज़ार से अधिक न थी।

देश के फ़ैशन, राजनीति तथा रीति-रिवाज आदि पर लंदन का बहुत ही अधिक प्रभाव पड़ा। देश के सारे छापेखाने तथा योग्य मनुष्य लंदन में ही रहते थे। लोगों को लंदन में बीमारी फैल जाने का बहुत ही अधिक डर था। शहर के पश्चिम ओर

राजा तथा अमीर लोगों के मकान थे और पूर्व की ओर व्यापारिक कोठियाँ तथा कारख़ाने। पानी का प्रबंध कठिन था। लोग टेम्स-नदी या कुँओं का पानी पीते थे। जेम्स के समय में एक न्यूरिवर-नामक कंपनी स्थापित हुई, जो हर्ट-फ़ोर्डशायर से नहर बनाकर स्वच्छ पानी ले आई। प्लेग और आग लगने के बाद भी नगर को ठीक ढंग पर न बनाया गया। गलियाँ पहले ही की तरह तंग बनी रहीं। पुलिस के ठीक न होने से शहर में डाके, चोरियाँ तथा हत्याएँ आम तौर पर होती रहीं। कुछ गुंडों के जत्थे चलते-चलते लोगों को अकारण ही तंग किया करते थे।

(२) इँगलैंड की सामाजिक उन्नति

इँगलैंड ने स्टुवर्ट-काल में आर्थिक उन्नति के सदृश ही सामाजिक उन्नति भी यथेष्ट से अधिक की। १६४२ में थिएटरों से सारा इँगलैंड भरा हुआ था। नाचने-गाने में लोगों की रुचि बहुत अधिक थी। थिएटरों में स्त्रियाँ भी पात्र बनने लगीं। टेनिस, घुड़-सवारी आदि में लोग अपने फ़ुरसत का समय बिताते थे। जुआ, घुड़-दौड़ और मुर्ग़ें लड़ाने में भी बहुत-से लोगों को आनंद आता था। मुक्केबाज़ी तथा तलवार के युद्ध में इनाम बँटते थे। फिर भी योरपियन लोग अँगरेज़ों को उजड्ड ही समझते थे।

सड़कों के ठीक न होने पर भी लोग लंदन में आया-जाया करते थे। अमीर लोग छुट्टी के दिन ऐसे मकानों में बिताते थे, जो पानी के नीचे बने हुए थे। राज्य की ओर से चिट्ठी भेजने का प्रबंध भी हो गया था। सवारी की गाड़ियाँ प्रतिदिन ५० मील चलती थीं।

कपड़ों में भी लोगों ने यथेष्ट उन्नति की थी। उनकी काट-छाँट की ओर लोगों का ज्यादा ध्यान था।

(३) इंगलैंड की साहित्यिक उन्नति

पढ़ाई-लिखाई की ओर लोगों का ध्यान पहले की अपेक्षा बहुत ही अधिक होता गया। अखबार, पैंफ़्लेट तथा पुस्तकों की छपाई में बहुत ही अधिक उन्नति हो गई थी। लोग बहुत शौक़ से अखबारों को पढ़ते थे। बेकन ने दर्शन-शास्त्र में उन्नति की और वैज्ञानिक चीज़ों के अध्ययन तथा अन्वेषण में ऐतिहासिक शैली (Inductive Method) का प्रयोग किया। विलियम हार्वे (William Harvey) ने रक्त की गति का पता लगाया। १६६२ में रॉयल सोसाइटी की नींव रक्खी गई। इसी का एक सभ्य आइज़क न्यूटन था।

विज्ञान के सदृश ही गृह-निर्माण (Architecture) में भी अँगरेजों ने उन्नति की। शिल्प-कला (Art) तथा चित्र-कला (Painting) की ओर तो लोगों का बहुत ही अधिक

ध्यान था। चार्ल्स प्रथम ने बहुत-से चित्र इधर-उधर से जमा किए। प्यूरिटन लोग इन सब बातों के विरुद्ध थे। अतएव अपने शासन-काल में उन्होंने इन विद्याओं को बहुत ही अधिक नुक़सान पहुँचाया। एलिज़बेथ के बाद नाटक लिखने की ओर अँगरेज़ों की रुचि दिन-पर-दिन कम होती गई। पर इसमें संदेह नहीं कि कविता में उन्होंने अच्छी उन्नति की। राबर्ट हैरिक (Robert Herrick) तथा जॉन मिल्टन स्टुवर्ट-काल के ही फल हैं, जिन पर इँगलैंड को विशेष अभिमान है। इस समय ड्राइडन (Dryden) ने अँगरेज़ी पद्य में बड़ी भारी उन्नति की। जॉन बनियन (John Bunyan) ने गद्य की निराली शैली निकाली। इसकी लेख-शैली बहुत ही उत्तम थी। स्टुवर्ट-काल में ही अँगरेज़ी-गद्य का पुनरुद्धार होता है। पत्र आदि के निकलने और छापेख़ानों के जगह-जगह पर होने से पुस्तकें तथा लेख बहुत जल्दी-जल्दी प्रकाशित होते थे। इससे भाषा में सरलता आ जाना स्वाभाविक ही था। ड्राइडन ने अपने लेखों के द्वारा अँगरेज़ी-गद्य को अच्छी स्थिति पर पहुँचा दिया।

कुछ महत्त्व-पूर्ण प्रश्न

१. इँगलैंड में ट्यूडर-वंश का प्रभुत्व कैसे स्थापित हुआ ? इँगलैंड में 'आधुनिक काल' का सूत्रपात कैसे हुआ ?

२. हेनरी सप्तम की विदेशी नीति क्या थी ? उसने सरदारों की शक्ति को तोड़ने के लिये किन-किन उपायों का अवलंबन किया ?

३. हेनरी अष्टम के चरित्र के विषय में तुम क्या जानते हो ? इसके शासन-काल में, इँगलैंड में, जो-जो धार्मिक परिवर्तन हुए, उनका वर्णन करो ।

४. एडवर्ड षष्ठ और मेरी के राजत्व-काल का संक्षेप में वर्णन करो ।

५. एलिज़बेथ ने इँगलैंड में धार्मिक प्रश्न को हल करने के लिये किस नीति का अवलंबन किया और उसका क्या परिणाम हुआ ?

६. एलिज़बेथ के समय में इँगलैंड की सामुद्रिक शक्ति की वृद्धि किस प्रकार हुई ? स्पेन के "अजेय आरमेडा" के विषय में तुम क्या जानते हो ?

७. रानी एलिज़बेथ का शासन-काल इँगलैंड के इतिहास में "स्वर्ण-जोग" के नाम से क्यों प्रसिद्ध है ? इस काल में इँगलैंड की जो समाजिक, धार्मिक, व्यापारिक, नाविक, औपनिवेशिक और साहित्यिक उन्नति हुई, उस पर संक्षेप में लिखकर इसे स्पष्ट करो।

८. कार्डिनल वूल्ज़े, सर टॉमस मूर, सामर्सेट्, अर्ल ऑफ़् एसेक्स और स्कॉटलैंड की रानी मेरी पर छोटे-छोटे नोट लिखो।

९. स्टुवर्ट-वंश के प्रथम दो राजों और पार्लिमेंट में पारस्परिक विरोध के क्या कारण हुए उन्हें विस्तार-पूर्वक लिखो।

१०. चार्ल्स प्रथम के समय में, इँगलैंड में, जो गृह-युद्ध हुआ था, उसका सकारण वर्णन करो। एक मान-चित्र खींचकर उसमें मुख्य-मुख्य युद्धस्थल बतलाओ।

११. चार्ल्स प्रथम के राजत्व-काल में अँगरेज़-जाति ने अपने शासकों की निरकुंशता को मिटाने और प्रजा के स्वत्वों के बढ़ाने के कौन-कौन-से प्रयत्न किए ? जिन वीरों ने इस राष्ट्रीय संघर्ष में उल्लेखनीय कार्य किया, उनके विषय में लिखो।

१२. टॉमस क्रॉवैल का इँगलैंड के इतिहास में क्या

महत्त्व है ? उसके विषय में जो कुछ जानते हो, संक्षेप में लिखो । उसकी धार्मिक नीति, विदेशी नीति, शासन-व्यवस्था और पार्लिमेंट के साथ उसके संबंध पर विशेष रूप से प्रकाश डालो ।

१३. चार्ल्स द्वितीय की नीति क्या थी ? उसके समय में, इँगलैंड में, मुख्य-मुख्य कौन-कौन-से क़ानून पास हुए और उस देश में दलबंदी का आरंभ कैसे हुआ ?

१४. जेम्स द्वितीय राजसिंहासन से क्यों अलग किया गया ? इँगलैंड को 'महान् राज्यक्रांति' का तुम क्या अर्थ समझते हो ? इँगलैंड के इतिहास में उसका क्या महत्त्व है ?

१५. 'अधिकार-घोषणा' (Declarations of Rights) के विषय में जो कुछ जानते हो, लिखो ।

१६. विलियम तृतीय की देशी और विदेशी नीति क्या थी ? उसके शासन-काल में इँगलैंड ने जिन-जिन लड़ाइयों में भाग लिया, उनका उल्लेख करो ।

१७. 'ग्लेंको' के जन-संहार के विषय में तुम क्या जानते हो ?

१८. स्पेनी उत्तराधिकार-युद्ध और मार्लबरा के विषय में जो कुछ जानते हो, लिखो ।

१९. सन् १७०१ के 'उत्तराधिकार-निर्णय' (Act of Set-

tlement) और १७०६ के ऐक्ट ऑफ़् यूनियन (Act of Union) पर नोट लिखो।

२०. स्टुवर्ट-कालीन इँगलैंड पर एक लेख लिखो।